A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 364 Subject

Name of MSS रसिकप्रिया टीका - कविप्रिया चंद्रिका

Author

Period Folios 144

Script Devnagiri Source Prithipal Singh.

Missing Folios

A. No. 364.

रसिक प्रिया टीका ; इन्द्रजीत कृत;
कवलराम द्वारा १८६४ वि० लि०
१४४ पत्रक ॥ ल० म० १४ पं० प्र० पृ०

ह० लि०

364

खास पटयाला

म बाला लाल बाग

खास ग्राम चौर जीला जां दे

घर तासील गढ्ढ शंकर मारफत

डाय वृन्दावन की व पंभिर दास को मिले

१ ।OA

फतेमगेंद्र चंद्रिका

॥१ ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः॥ दोहा॥ अथ रसिक प्रिया टीका [illegible] लिष्यते॥ दोहा॥ कनक
सरस मरकत सरस तन छवि नव अभिराम॥ तुलसी वन विहरत मुदित राधा [illegible] स्याम॥१॥ कवित्त॥ [illegible]
[illegible] जाको [illegible] के आनन समान न है कानन कनीन ऐसी [illegible] मे हेरी है॥ भूषन विभूषत अदूषत अ
नूप नितरत जामें घन स्याम की घनेरी है॥ आली अवलोकडू ति कंज निअलिन व्याज देह निज ताको अ सन करि
री है॥ नीको लग्यो जीको न अमीको पद फीको जान याते विधवा पैपर वेषरेष फेरी है॥२॥ दोहा॥ जोरपान विनती
करों मोमें मति न विसाल॥ तुमही रसिकप्रिया तिलक रचहौ परम रसाल॥३॥ रसिकप्रिया टीका प्रथम अंगपनिल
षिकी राम॥ ताते पुन संछेप सों रची भूप अभिराम॥४॥ फतेसिंह भूपाल मनि कविता मैं निज नाम फतेमगेंद्रा
A. no. 364 दिक धरत सम फझ्रु कवि मति धाम॥५॥ फतेमगेंद्र सु चंद्रिका नाम धर्यो इहि हेत॥ अर्थ प्रसिद्धांत कहे कविन सो
या में सुविदित॥६॥ जोरथान सब कविन सों विनय करूं नाच इटेरा॥ जो कछु भूल रहीज होत हां सुधारहु फेर॥७
छंद॥ जानह हैस जान भेद नायकानि के घने॥ हाव भाव भेद और रसादि भेद जे भने॥ होय सर्व अर्थ मैं समर्थ चातुरी वढे
जो सनेह सों फतेमगेंद्र चंद्रिका पढै॥८॥ अथ मंगलाचरन श्रीगनेसस्तुति॥ छप्पै॥ एकरदन गजवदन सदन व
धमदन कदन सुत॥ गौरिनंद आनंदकंद जगवंद चंद जुत॥ सुषदायक दायक सुकवित्त गननायक नायक॥ षल
घायक घायक दरिद्र सब लायक लायक॥ गुरु गुण अनंत भगवंत भव भक्तिवंत भव भय हरन॥ जै केसवदास निदानि
याको अर्थ रामचंद्र पहामी को ऊकरत हैं॥ नमस्कार न वुध॥ जौ नमेसद का अवेषत है दुषहैं अरु जिनों मे वुद्ध नहीं है॥ ऐसे सो है गुना ही तिनो को॥ का श्रीरामचंद्र जो है दंड ती को दका
दे न वारे हैं॥ फेर गजवदन क्या गजवके दै नवारे नहीं हैं॥ न्याऊ पर्व कहुं डदेत हैं॥ मदन का मद अहंकार नहीं हैं जिनो को॥ फेर कदका कसुष के देनवारे हैं॥ न सुत व्या पुत्रका हू के नहीं अजन्मा
हैं॥ फेर जगवंद का जगतु जाको वंदना करत हैं॥ ऐसे कौन ये महाजी॥ अरु चंद्रमा के संजुगत जो है वो न परिचत्र॥ अरु गौरी के पुत्र जो है गणेश जी॥ तिन सभनों को आनंद के मूल हैं॥ फे

जो॥

॥ २ सुंदर जो है बक्त्र मुख ताको स ज्ञा को परम व्योम कहते हैं मुकत स्थान ताके देन वारे हैं॥ ता के देन वारे हैं॥ दो॥ एक॥ सु कित॥ दो जो है दामनता मैं एक क्या मुख्य है सुंदर कीरत ताकी॥ फेर गन जो है वानरों के तिन के नायक क्या स्वामी हनूमान आदिक तिनों के स्वामी हैं॥ फेर बल जो है दुष्ट नायक क्या नास करन वारे रावण आदिक तिनों के नायक नास करन वारे हैं॥ फेर दरिद्र जो है सभनों के तिनों के दूर करन के नायक क्या स्वामी न से हैं॥ गुनों के विषे गरू क्या बड़ रूप तसे हैं॥ अप्रनंत क्या जिनों के अंत नहीं हैं॥ अरूप भावानः॥ भव क्या शिव जू के भगत वारे जिनों के॥ औ संसार के भय के आयु वा भव क्या जनम मरन के भय

वास निधि लंबोदर असरन सरन॥१॥ टीका॥ कवि वचन॥ गनेस जी कैसे है॥ एक है रदन दंत जिनको॥ औ गज हस्ती ताके मान है वदन मुख जिनको॥ या श्री गणेश देवता के कहि के ध्यान कियो है प्रथम॥ सर्व पदार्थों तें ध्यान मुख्य है या ते प्रथम ही कीयो॥ फेर कैसे है॥ सदन बधमद॥ सदन घर है बृद्ध के औ रु मद के॥ मद जिन के गंडस्थल तें झरत है॥ गज को मद तें सोभा है औ गजवदन कर सोई है या तें गजमुख की सोभा भई॥ किंवा सद क्या श्रेष्ठ क्रम है नब धमद क्या नहीं है बृद्ध को मद गर्ग जिन में॥ गर्व दोष लेस रहत है॥ किंवा सदसंबोधन॥ औ कवही अर्थ॥ औ न कदन कत॥ क्या नहीं है कदन नास जिनको ऐसे जो है अविनासी॥ शिव जी तिनके रूत पुत्र है॥ गौरी पार्वती के नंद क्या पुत्र है॥ शिव के पुत्र स्वाम कार्तक है औ गौरी जू तें इनहीं की उतपत है या ते गौरी के नंद भी कहे॥ औ गौरी के स्वामी शिव है या तें शिव पुत्र भी कहे॥ औ रु आनंद के कंद मूल है॥ सदा आनंद मय है॥ औ रु जग वंद चंद क्या जगत जिसको नमस्कार करत है ऐसो जो है चंद्रमा दुतिया को ताके सम्ज कहत है इन के भाल मैं भी चंद्रमा है॥ रूप के दायक है औ रु रूकित क्या मली कीरति तिसके देनवारे है औ गन महादेव के तिन मैं नायक कौन भृंगी कुमारादिक तिनों मैं नायक है॥ फेर षल दुष्ट तिनों के घाय मारनेवाले है दारिद्र क्या दरिद्र को संकट तिसके मारन वारे है॥ इन को हेतय हि ग्रंथ करबे मैं औ रु कार्ज करिबे मैं दुष्ट औ रु दारिद्र बाधक है एहो नन हीं देत सो गनेस जी इन बधकन के बाधक है या मैं विघन विनास नता कही॥ फेर सवला यक कौन नक्षत्र नापति [illegible] स्वके कर्ता तिसमै भी लायक है क्या तिन हू गनेस मनाये है तब जय संपूरन भयो है दक्ष को एप मन मनाय रूने ताते विघन भयो हतो॥ या ते सवलायकों मै भी लायक कहे॥ गुरु गुन क्या भारी है गुन जिनमें

गुनो

औरअंनंतहैजिनकोअंतनहीं किंवागुरु वडेहैं औरुगुनजिनमेंअनेतवडुतहैं॥ जिनकीगनतीनहीं॥ औरुभगनाम षट गुनोकोहै॥ संपूर्णग्यान १ संपूर्णजस २ संपूर्णश्री ३ संपूर्णवैराग्य ४ संपूर्णमोक्षसरूप ५॥ संपूर्णईश्वर्यता ६॥ ते इनमेहै याते भगवंतहैं॥ काहेते एपंचमूर्तिभगवानहीहै॥ हरि हर गौरी गनेस रवि॥ यातें भगवंत कहे॥ फेर भव जोहै महादेव तिनकी भक्तिकेसंयुक्त है॥ क्या पिताके भक्ति है॥ भव संसार किंवा जन्म तिसके भयको दूर करत है॥ किंवा भव जगत में जे भक्तिवंत है क्या सेवक है तिनके भव जन्म के भयको दूर करत है॥ ऐसे जो है देवो दरुगनेस श्री तिनकी जै होय॥ क्या सर्वके ऊपर विराजो॥ कैसे हैं फेरि केशबदास कवि ती के निवास घर की निधसंपत है॥ किंवा केशवदास कवि करत है निध जो है नव पद्म १ महापद्म २ संख ३ मकर ४ कछप ५ मुकुंद ६ कुंद ७ नील ८ षर्व ९ ए जो है नो निधो तिनके निवास है॥ औरु असरनजे है साधु तिनको सरन आश्रा है॥ ईहां जय शब्द के साथ वस्तु निर्देश्य मंगलाचरन आयो याते असीर्वादात्म मंगलाचर्न जानीये॥ किंवा एकरदन इत्यादि पदनमें सरूपगुनवरनन नतें वस्तु निर्देश्य॥ औरु जो स्तुति जो प होय वहै सो नमस्कार जो प होत ही है याते नमस्कारात्म मंगलाचर्नको आक्षेप करि लीजे॥ किंवा जगवंद में नमस्कारात्मक॥ जै होय यामें असीर्वादके दैनते असीर्वादात्मक॥ कवि की रत देवतामें प्रेम यातें देवरत भाव ध्वनि॥ जात अलंकार एकरदन गजवदन यह सरूप वर्नते॥ गुनवर्ननतें स्वभावोक्ति है॥ अलंकार औरु भी यामें है पै हम एक कहीए कल्य अलंकार कहेंगे नहीं तौ ग्रंथ बढ जाय याते औरु नहीं जिताये॥ कृष्णपक्ष अर्थ॥ जै के शब क्या के प्रान जो है श्रीकृष्ण तिनकी जै होय॥ असीर्वादात्मक मंगलाचर्न॥ कैसे कृष्ण है॥ एक जो है रदन दंत गजके वदन मुष को ताके सदन है क्या आधार है॥ कंसको कुवलया पीड नामा हाथी मारयो ताको दंत कंधपै धर लियो याते आधार कहे॥ वंदन करे यह ध्वनि निकसी

किं श्रीवृंत को मुष तें उ षे सो है जो वदन न कहते तौ काहू हस्ती के मुष को जान्यो परतो जीव तें के मुष तें उ षे सो यह प्रतीत न
होती। यातें नक्षनपद धर्यो॥ ऐसी स्तुति करवे में हेत यह कं सके नासन में वह हस्ती प्रथम विघन हुतो सो दूर कियो यामें वि
घन विनासनता कही। बुधसंबोधन है बुधपं डित फेर कृष्ण कैसे है॥ मदन कामजो है कंदनरूप नासरूप॥ शिवजू ने जराया
ते वतें नासरूप है या ही तें अनंग॥ नाम है सो है स्तुत पुत्र जिनको॥ परद्युमन कृष्ण को पुत्र है सो काम अवतार है॥ यातें कामदेव पुत्र को
कह्यो॥ या अर्थ सों रस ग्रंथ की पुष्टता भई॥ फेर कैसे है गौरी नाम ह्वी को नंद गोप की जो है गौरी श्री जसोदाजी ता के आनंद के
कंद है॥ जगवंद है ही॥ चंद्रजुत ईहो चंद मोरचं द्रकाली जे तिनके जुत है॥ साथ॥ मनुसत्त्ति से घर की अंकस कियेसि घरस
त चंद॥ किं वा अत्यंत तारीफ करिवे लायगो होय ताको भी चंद कहिये सो कौन राधाजू ता के जुत है॥ किंवा चंद के सहत
कैवे न ही संभवे लक्ष्मा तें चंद सो राधाजू को मुष लीजे ता के जुत है चंद को अर्थ वाच भयो या तें लक्षन लक्षता चंद रोप्प
मान मुष रोप्प विषय न ही या तें सा ये॥ ध्यवसा॥ साद्दस्य संबंध तें गौनी॥ किंवा चंद्रजुत को न शिवजी जो जगवंद है ति
नके आनंद कंद है यह देहरी दीपक॥ फल दायक क्या फल कहीये सुंदर जो है ष क्या अकास कौन सो जाको परम
व्योम कहत है औ सा नी जहां मुक्त होत है तिस के देनवारे है॥ कोमल कीर्ति के हेत है॥ फेर गन नायक ब्रह्मादिक कवि
न के नायक है॥ किंवा गं न ना इक ना इक यो पद कीजे ना संबोधन हे नाय कृष्ण गनना गनती में जे इक एक है ति
न्यां प्रथम है तिनों भी इक एक है प्रथम है॥ किंवा काकु स्वर सों॥ गन ही में जे मुष्य है ति नो में मुष्य ना को अर्थ नही
है अर्थ किहै॥ किंवा गुन नाम मैं मुष्य है औ कनाइक है क्या चौहट गुन जिन में पाईयत है नायक में चौहट गुन होत है सो भ
गवान ही में वनत है॥ दोहा चार दिअधिक गुन साठ है नायक में सुभरूप ते गुन तज अनंत नवरनीये जगतगाहे जमभूपइति॥

इक काम कै है

किंवा॰ कस्मीक

फेर षल कंसादिक के घायक हैं॥ दरिद्र के घायक हैं सुदामा के दरिद्र दूर किये॥ सब लायक को में लायक हैं गुरु भारी हैं गुन जिनमें औ अनंत हैं जिनको भेद नहीं पायो॥ भगवंत हैं भगा को तेज कहैं॥ भग नाम को तको लक्ष्मी को जस को सौभाग को जोन को महिमा को है सूर्य को चंद्रमा इत्यादि को है॥ भव महादेव सो भक्तिवंत हैं जिनके॥ किंवा भव जगत में जेभक्तिवंत हैं तिनके भव जन्म के भय को हरत हैं॥ औसे जो केशव कृष्ण हैं तिनकी जै होय॥ फेर दाम के घर की संपत हैं॥ औ कमाता को सर्व जगत उदर में दिखायो यातें लंबोदर हैं॥ किंवा जसुमती रसी सो माता उदर बंधन लगी सो न बंध्यो यातें लंबोदर है॥ औ असरन जिनको आश्रम नहीं काहू को तिनको आश्रा है॥ ईहां हूं देवरतिभावध्वनि॥ रसध्वनि में रस व्यंग होत है॥ भावध्वनि में केवल भाव ही व्यंग होत है यह भेद॥ मूल छप्पै॥ श्री वृषभानकुमार हेत सिंगाररूप भय॥ वास हास रस हरे मातबंधन करुनामय॥ केसी प्रति अति रुद्र बीर मा पीव त्रासकर॥ भय दावानल पान कियो वीभत्स बकी उर॥ अति अद्भुत बंच विरंचमति सो तरु संतत सोच चित॥ कहि केशव सेवहु रसिकजन नवरसमय व्रजराज नित॥ सटीका कवि को वचन॥ या छप्पै में यह भाव है दिषायो है॥ कि जानेकृष्ण सेवे ताने सर्व देवना सेवे॥ कोए कर रस नावाइष्ट को सर्व सेवत हैं औ श्रीकृष्ण में नवो रस हैं यातें हे रसिकजनो श्री व्रजराज कृष्ण नित्य नवरसमय हैं तिनहू को सेवो॥ सो दिषावत हैं॥ श्री सोभारूप किंवा लक्ष्मी सी जो हैं वृषभानकुमारि राधाजी ताके हेत तो सिंगार की रूप अनस्था में भये कृष्ण॥ औ जहां गोपीयन के वासन हरे तहां हास्यरस भये॥ औ कमाता के बंधन के प्रसंग में कृष्ण करुनारस में भये॥ कहां श्रीकृष्ण को जमलार्जुन जो दोषवृक्ष रूप ते तिनके

जमलार्जुन वृक्षरूप कुवेर के पुत्र थे तिनको देख सोक भयो यातें॥

[margin: और]

[margin: निध]

[margin: निवास]

तारके की मनमें आई ॥ सोने दोऊ कुवेर के पुत्र हू ते नारद के आपतें वृक्ष भये ये ॥ यह कथा श्री भागवत में है ॥ सो उनके
३ दोऊ कुवेर के पुत्रनि की देह त्याग की मनमें आई ॥ किए नारद के आपतें जड भये ये ॥ उहां उनके मरन को सोक सो स्था
3 ई भयो ॥ सर्व कारन उनके पूर्व जन्म के सुध आये ॥ इन विभावादिकन करि करुनारस होत भयो ॥ दोऊ कुवेर के बा
लक करुनारस के आलंबन भये ॥ उनके चरित्र और दरसताए उद्दीपन भये ॥ अश्रु सात्विक ॥ मोह संचारी भयो ॥ वैसमै
करुनारस भये ॥ दूसरी टीका में सर्व के विभावादिक कहे है ॥ ईहां यह रसनी को नहीं भासत हू तो याते याही के कहे
है ॥ और या ग्रंथ में रसन को क्रम है प्रथम सिंगार हास्यरस करुना रौद्र वीर यें हू क्रम गई हा रेतो ॥ मो इनके याक्रम सोदसक देहै
चरित्रन को क्रम नही लेनो ॥ जो यह क्रम लेते तौ प्रथम माखन चोरन लीला कहते फेर वस्त्रहरन लीला कहते
सो न कह्यो याते रसन ही को क्रम है ॥ और केसी दैत्यकें मार्यो तहां क्रोध सों मार्यो याते रौद्र रसमें भयो ॥ केसी क्रोध तो कंस को
दैत्य के सकोस चिव हू तो क्रोध सों रौद्र भयो ॥ और जब विमुख ह्वै के लत्ता प्रहार करन लाग्यो तब अति क्रोध भयो व जीरजा नके भयो
ऐ क्रोध नही आयो
याते अति पद धर्यो ॥ जब वत्सासुर को मार्यो तब उत्साह सों मार्यो तहां वीररस भयो ॥ रौद्र में और जु वीर में
समता ईतनो भेद है जहां तो समता की सुध भूल जाय तहां तो क्रोध स्थाई तें रौद्र होत है और जहां समता की सुध रहे
तहां उत्साह स्थाई तें वीर होत है ॥ केसी दैत्य जब विमुख ह्वै के लत्ता प्रहार करन लाग्यो तहां क्रोध ह्वै आयो समता सम
की सुध भूली तहां रौद्र भयो ॥ और वत्सासुर के मारन में क्रोध नही आयो उत्साह भयो है क्रीडा ही में मार लियो
याते तहां वीर भयो ॥ औ दावानल वन की अग्नि को जहां पान कियो तहां भयानक रस भयो स्थान जर जाय याते ॥ और
जहां वकी पूतना के स्तनपान करे तहां वीभत्सरस भयो ॥ जाके स्तन [illegible] करि येताके प्रानन हरि येय हा लाग

कौ ब्रह्मा छीरसागर की बात न भूल्यो जो मैं कही थी कि मैं अवतार

निंदामय भई याते वीभत्सरस भयो॥ निंदात्मक वीभत्स कोई प्राचीन ग्रंथ को मत है सो केशवने कह्यो है॥ और जब विरंच ब्रह्मा की मति बुद्धि वंचीठ गी तहां कृष्ण अतिअद्भुतरस मय भये॥ कौ विचारन लागे कि जब अ पृथ्वी भारसों दुषी होय गाय को रूप करि ब्रह्मासौं दुष कह्यो तब ब्रह्माने मेरी स्तुति करी छीरसागरमें जायके औ उपृथ्वी को दुष कह्यो तब मैं ब्रह्मा को आज्ञा दीनी कि मैं ब्रजमें अवतार लेहौं देवतान को कह्यो एरूप व्रजमें अवतरो॥ सो ब्रह्मा एक तो मेरो ईरूप है दूजे आप ही अवतार दिवायो है सो यह मेरी परीक्षा लेन आयो यह श्रीकृष्ण को अचरज भयो ब्रह्मा की भूल को॥ और रूविचारी छीरसागर की बात तो वहुत वर्षन की है अब ई हां मेरी गर्भमें स्तुति करि आयो है देवकी के मंदर में॥ अत्यंत निकट की बात भूल्यो याते अतिअद्भुत भयो॥ और रूशांतरस कैसो है संतत ध्यानिरंतररूप है शांतमें अंतर नहीं परत॥ कौ औरु रस आयके अंतर नहीं जामें पायस कत॥ अं सोप्रन लहै सो कव भयो जब सोच विचार चित को भयो तब॥ जब विचारी अवतार धारके कहा २ काज करे कहा २ करने रहे॥ तासमें उद्धवजी को ज्ञान उपदेस कियो एकादस स्कंधमें वा समय शांत भयो॥ शिं तत्व ज्ञानतें जो निर्वेद उपजत है सो शांत को स्थाई है॥ या विना जो उपजे सो संचारी है॥ ऐसे व्रजराज जो नवरसमय है क्या सर्वरस जिनके विषैं है कैसे जैसे वीजमैं मूल फूल फल इत्यादि है पै समै प्रकासित होत है ऐसे नवरस भगवानमें है सो समय २ प्रकाश भये ऐसे कृष्ण को है

औ रसकज नो नित्यं प्रतिसे वहु॥ रस वाचक कहे रसदोष आवत है पै जहां नाम कहे विना समझ न परे तहां कहे दोष नहीं ई हां नवरस मय कहे तो उनके नाम समय कहे ही चाहिये याते कहे वे सब औरु सर्व रस भी भगवान हीमें संभवे औरु में नहीं॥ पर्यायालंकार॥ एक में अनेक को वास॥ एक कृष्ण में नवरस॥ मूल दोहा नदी वैतवे

लेहौं और कहे देव की के मंदर में मैं गर्भ में क्रीड़ा करत आयो यह विकट की बात भूल्यो जो

परीक्षा लेन आयो जाते अद्भुत रस भयो॥

तीर तिहं तीरथ तुंगारन्य॥ नगर ओरछो बहु बसो धरनीतल में धन्य॥२॥ टीका॥ ओरछो नगर कैसो है बेतवे नामा नदी ताके तीर है॥
४ तुंगारन्य नामा तीरथ है पुन्य क्षेत्र॥ किं वा तीरथ है और तुंगारन्य नामा वन है॥ ऐसो ओरछो नगर बहुत बसो है। धरनीतल जो पृथी
५ तल में धन्य है॥ सुंदर है॥ ऐसे देवता कहत है धरनीतल यह बोली देवतन की है उनतें धरनीतल है यातें तलपद धर्यो॥
धंधै यह देवता हूं स्तुति करत है ओरछे की॥ मूल दोहा॥ आश्रम चारि बसै तहां चारि वर्न स्वधर्म कर्म॥ जप तप विद्या वेद विधि सब
बैठे धन धर्म॥४ टीका तहां तिस ओरछे में चारि आश्रम ब्रह्मचारी॥ गृहस्थी॥ वानप्रस्थ॥३ संन्यासी ४॥ एव बसत है॥ औ
चारि वर्न ब्राह्मन छत्री वैस सूद्र एव बसत है॥ कैसे है ए सर्व स्वधर्म कर्म है जिनके॥ फेर ओरछो कैसो है॥ जप तप विद्या॥
कीन वेद विधि में धन औ धर्म ए सर्व जा में बढत है॥ अर्थ याके ओरछो भी है ईहां एक ही कियो है॥ मूल दोहा॥ अपने अपने धर्मरत तिस
बैसदा सुषकार॥ जासो देस विदेस के रहे सबै न्रप हार॥५॥ टीका॥ चारि आश्रम औरु चारि वर्न इन सर्व की अपने अपने धर्म में
रत प्रीति है॥ औ सर्व ही सुषकारन्या सुषके करन वारे है सदा॥ याही ते जिस ओरछे सौं सर्व देस विदेस के न्रप हार रहे हैं
याते जहां धर्म है तहां ही जै है सो ओरछे सौं सर्व हार रहे कहूं के हाथ आयो नहीं॥ धर्म की प्रबलता ते॥ मूल दोहा॥ रच्यो विचार विरंच
तहं न्रप मनि मधुकर साहि॥ गहरवार कासीस रवि कुल मंडन जस जाहि॥६॥ टीका॥ तिस ओरछे को राजा विरंच ब्रह्मा ने मधु
कर साह नामा रच्यो है विचार के कहा या नगर लायक यह राजा है॥ गहरवार नामा गोत्र है॥ कासीस कासी को राजा यह विरद
है जाको॥ औ रूर विकल सूर्य के वंस को मंडन भूषन है जस जाको॥ सूर्यवंसी है॥ मूल दोहा॥ ताको पुत्र प्रसिद्ध महि मंडल दू
लह राम॥ इंद्रजीत ताको अनुज सकल धर्म को धाम॥७॥ टीका॥ तिस मधुकर साहि राजा को पुत्र महि मंडल प्रथ्वी मंडल
में प्रसिद्ध है दूलह राम नामा॥ तिस दूलह राम को इंद्रजीत अनुज छोटो भ्रात है कैसो है सर्व धर्म को धाम घर है॥ मूल
दोहा॥ दीनी ताहि नरसिंह तन मन रन जय पायिक हित की लक्ष्मन राम ज्यों बही राज सो बहु॥८॥ टीका॥ तिस दूलह रा

मनकेदके

म के तन सरीर में नरसिंह भगवान नैं रन विषै जय की सिद्धि दई है॥ याही तें जिस जुद्ध मैं जात हैं तित मैं फते पावत हैं॥ यातें रामसिंह

राजा नरसिंह को सेवक जानीयत है॥ रामसिंह नें श्रोइंद्रजीत नें हित सनेह की कों अर्थ कियो है राम लक्ष्मन की न्याई॥ तिस हि

स्यो तकी राज कै सहतहि वृद्ध भई ज्यों ज्यों हित वढ्यो त्यों त्यों राज वढ्यो॥ मूल दोहा॥ तिन कवि केशवदास सों कीनो धर्म सनेह॥ स

व सुख दै करि यह कह्यो रसिक प्रिया करि देह॥ ९॥ टीका॥ तिस इंद्रजीत नें केशव कवि सों धर्म सों सनेह कियो॥ औरु सर्व सुख दै

के यह कह्यो हम को रसिकप्रिया करि देहु॥ मूल दोहा॥ संवत सोरह सै वरष वीते अठतालीस कातक सुदि तिथ सप्तमी वा

र वरन रजनीस॥ १०॥ टीका॥ संवत सोलासै तापर अठतालीस औरु वाते॥ तिस अठतालीये की कातक सुदी सप्तमी तिथ॥ रज

नीस सोमवार ता समै रसिक प्रिया केशवदास कवि नें वनाई॥ मूल दोहा॥ अति रति मति गति एक करि विविध विवे

क विलास रसकनि को रसिकप्रिया कीनी केशवदास॥ ११॥ टीका॥ रति की गति कहा प्रीत की गति दंपतनि की॥ रति तो सखा

दिकन में भी होत है पै पूर्ण रति दंपतिन ही मैं होत है यातें अति रति कही॥ औ मति की गति कहा चतुराई की गति स्वयंदूता

विविध दिक तें सर्व॥ औरु भांत भांतनि के विलासन के विवेक का विचार हाव भावादिकन को एक कर क्या एक ठौर करि के रसिकप्रिया

वनाई है किन के लिये रसकजनों के लिये॥ अर्थ कि जे रसिक है ते या को आनंद जान है॥ मूल दोहा ज्यों विन डीठ न सो

हिये लोचन लोल विसाल त्यों ही केशव सकल कवि विन वानी न रसाल॥ १२॥ टीका॥ जैसे लोचन लोल चपल है औ

विसाल वडे है पै विना दृष्टि सोभित नही॥ तैसे ईक कवि चतुर है औ कविता भली करत है पै रसाल वानी विना नहीं सोभित॥ मू

ल दोहा॥ तातें रुचि सों सोच पचि कीजे सरस कवित्त॥ केशव स्याम सुजान को सुनत होय वस चित्त॥ १३॥ टीका॥ तातें तिसी

हेत तें रुचि अरु इच्छा सों सोच जो है विचार काव्य सास्त्र को नाम पचके क्या लीन कैके सरस रस सहित काव्य करिये॥ कौन को क

रिये केशव स्याम क्या के प्रीतम कहत है स्याम रूप रस को कहिये। कैसो कहिये रूप जा तक्या रूप भले जो है जान चतुर को नवरस के सम
रूप नाम तिन को चित्त रूप नते ई नवरस होय औ सो सब रस काव्य कहिये॥ मूल दोहा॥ प्रथम सिंगार रूप हास्य रस करुना रौद्र सु वीर भय
५ वीभत्स वषानीये अद्भुत सांत सु धीर॥१४॥ टीका॥ यह सिंगार प्रधान ये है याते कह्यो सिंगार रस रूप को अर्पन कियो है औ रूप या
रस नायक भी है॥ आगे रूप संबोधन है रूप रूप॥ सांत के सो है रूप भली जो है धीव रूप बैराग्य रूप ताको रहानी है॥ इनकी टीका
में कछु इनको विस्तार सहत अर्थ है ई हां नाममात्र ही है॥ मूल दोहा॥ नवहूं रस के भाव बहु तिनके भिन्न विचार॥ सबको के
शव राय हरि नायक है सिंगार॥१५॥ टीका॥ नवौ रसन के भाव बहुत है ग्रंथन में लिखे है तिनके भिन्न न्यारे न्यारे विचार है
पै हरि नायक जो सिंगार रस है हरि के रूप है नायक सबा भी जाके औसो जो है सिंगार रस सो सर्व को राय है क्या राजा है केशव कवि
कहत है॥ मूल॥ सिंगार रस लक्षन दोहा॥ रति मति की अति चातुरी रतिपति मंत्र विचार॥ ताही सो सब कहत है कवि कोवि
हेपत नकी द सिंगार॥१६॥ टीका॥ रति प्रीत जहा है कैसी प्रीत मति बुद्धि की जामें अत्यंत चतुराई होय॥ क्या विभावादिकन सो मिली हुई हो
य॥ औसी रति पूरण होत है सो सिंगार को स्थाई है॥ औ चतुराई पद ते मन ष्यादि कें ही जानीये॥ क्यो रति तो पशु आदिकन मे भी होत
है तहा चतुराई समेत पूरण प्रीत न ही याते न हा रस भी नहीं तहा रसाभास है॥ फेर रति कैसी होय रतिपति कामदेव ताको मंत्र
को ककार कामिन को जहा विचार होय॥ या मे जितायो काम संबंधी प्रीत होय तहा सिंगार रस है॥ औ जहा परमेश्वर में रति है
तहा भाव ध्वनि है रस न ही॥ सिंगार रस में काम संबंधी प्रीत लई है याते रतिपति शब्द धर्यो॥ मूल सिंगार भेद॥ दोहा॥ शुभ सं
योग वियोग पुन द्वै सिंगार की जात॥ प्रच्छन्न परकास करि दोऊ द्वै द्वै भांत॥१७॥ टीका॥ सिंगार द्वै भांत एक शुभ संयोग सिंगार
वामें विरह दूषन नहीं याते शुभ पद धर्यो॥ एक वियोग सिंगार है॥ फेर प्रच्छन्न प्रकास करि के ए दोऊ द्वै द्वै भांत है॥ प्रच्छन्न

संजोग प्रकास संजोग।। प्रछन्न वियोग प्रकास वियोग।। ए चारि भेद है।। मूल प्रछन्न संजोग प्रछन्न वियोग लछन।। दोहा

सो प्रछन्न संजोग अरु कहै वियोग प्रमान।। जानै पीय प्रिया कि सखि होय जु तिनके समान।। १९ टीका।। प्रछन्न संयोग क्याए

कतो पीय जानै के प्रिया नायका जानै के सखी जानै।। सखी कैसी होहि तिनै समान क्या तिन ही के दंपति निही के वरोवर

होयं।। जैसे दंपति होय ते सी योई सखी होय का हूसौं वात न जाय कहै पै एक ही सखी होय यह नेम नही तिनै समा

न पदं दियो यातें एक नायक के समान की एक नायका के समान की है सखी भी होय।। क्यो जो नाइका मानवती होय

तौ सखी नायक का के पख की वात कहै।। सो नह नायक के समान कठोर ही नायक सौं तो कठोर वोलन लगी।। यातैं है

सखी लीजे पै कठोर न समहोय।। औ कहै को नेम भी नही तीन होय एक हू होय पै अंतरंग होय सो प्रछन्न।। औ वह

रंग जहा एक होय तहा प्रकास।। औ कया ही विध प्रछन्न वियोग को प्रमान है जहा एजाने तहा ई प्रछन्न वियोग।।

दोऊन को एक ठोर लछन कियो वार वार कहे पुनरुक्त होती।। मूल प्रछन्न संजोग सिंगार सवैया।। वन में वृषभानकु

मारि मुरारि रमे रुच सौं रस रूप पिये।। कल कूजत पूजत काम कला विपरीत रची रति केलि किये।। मनि सो मित

स्याम जराय जरी अति चौकी चलै चल चारु हिये।। मषतूल के झूल झुलावत के शानमान मनो मनओंक लिये।। २०।।

टीका।। सखी को वैन सखी सौं है सखी कहि तिन्ह सों किं वाछ विकैसो जो है वृषभानकुमारि राधी औ मुरारि श्री कृष्ण सो वन में रमत हैं।। मुरारि पद

ते वह नायका निके पति जाने परे।। क्यो मुर को मारके सो राह ह आरराज के न्या लाये है याते।। नही तो औ के देत पभी वहुत मारे हुते सोई कहते

मुरारि पद यौ ही ते धर्यो जो यह सिंगार रस को पुष्ट करत है।। औ मुरारि नाम यह पिछले अवतार को लैनो।। अव तो व्रज में लीला करत

है मुर को तो द्वारका जाय मारेयो।। यह नाम पिछले ई समय को है कृष्ण देव अनादि है यातें [illegible] किये रूप सको

पियें पीवते हैं।। ई हा लछना रूप रस को पीवनो नही संभवे।। लछना तें सादर वि लोकन जानीये प्रेम की अधिकता आदि व्यंग।। फेर केसे है

का लाद्ध वि लोकें नेकर तें।। २

५ प्रीत

९ कसें सुंदर कुअत शब्द तिनो करके काम कीजे है करत चौसठ कि बाकाम की कला चतुराई ता कौं बढावत है।। तहा वाही समैं रति केल कियें बार रति केलि
करत ही में विपरीतरति रची।। विपरीता पद सौं पूरन प्रीत जि ताईं [illegible] कौं विपरीतरति वाही सौं होत है ताहा पूर्ण प्रीत होत है। सौ
२ प्रीत सिंगार को स्थाई है याते याकी पूर्णता कहि यामें सिंगाररस भयो।। ईहा स्थाई भाव की पूर्णता यह बड़ी सोभ पाई विपरीत पद को तनक दोस सो
अंगीकार कियो याते।। अन त्रा लेकार।। मनि मनि सोभित स्याम जराय जरी अति चौकी।। नायका के गल में जो जराउ पदिक सौं चढ़ी चौकी है कैसी।।
6 जामें स्वेत मनि पीत मनि लाल मनि लगी है ऐसे जड़ाय की जड़ी चौकी में मरगज ही के स्याम सोभित है क्यामनि मूर्ति के स्याम सोभित
है।। एक तो मनि मूर्ति के स्याम ही सुंदर है दूजे अनेक मणियों की सो भा सौं भिनि है याते अति सोभित कहे।। औ कमणि कहे ते जराउ
जड़ी कहे ते वर्न प्रतिकूल दूषन आवतो।। ए कार ट कार एअसर सिंगार के विरोधी है याते न कहे मनि जराय जरी ए पद धरे।। सो आ
चौकी चलै है हलत है।। चल चारु हिये क्या नायका को जो चलचं चल औ चारु सुंदर हृदय है तामें।। ताकी कैसी सोभा है मानो
केशव जो है श्री कृष्ण सो भानु को क्या अनेक सो भानु को मनकर्षं अपने सा पर्यंक गोदी में लिये मखतूल स्याम रेसम के झूला
हिंडोरे में झुलावत है।। अनेक मणि चौकी में सो सो भा है वकृत।। औ मनि मूर्ति के स्याम सो श्री कृष्ण।। ईहां दंपति आलंब।। बन औ
सरूपादि उद्दीपन।। [illegible] देखवौ औ वचन इत्यादि अनुभाव।। हृदय चंचल तें कंपादि सात्विक।। विपरीत तें रति स्थाई।। हर्षादि संचारी
इनो करि सिंगार रस भयो।। संयोग है ही।। औ सखी अंतरंग है जो रमन लीला को देखत है याते प्रछन्न।। मानो पद तें उत्प्रेक्षा लंकार
मूल [illegible] प्रकास संयोग लछन।। दोहा सो प्रकास संजोग अरु कहे प्रकास वियोग।। अपने अपने चित्त में जानत सगरे लोग।। टीका।। जाको
सगरे लोग जाने सो प्रकास संजोग।। सगरे लोग तब ही जाने जब हि काऊ सखी जान के प्रकास करि देय।। औ वियोग हू प्रकास तब ही जाको सग
मूल रे लोग जाने।। प्रकास संजोग सवैया।। केशव एक समै हरि राधिका आसन एक लसै रस भीने।। आनंद सौं तिय आनन की दुति देखत दर्पन +
त्यो दृग दीने।। भाल के लाल में बाल विलोकत ही भर लोचन लाल नवीने सासन पीय सवासन सीय हुतासन में जनु आसन कीने।।२२
टीका सखी को वैन सखी सौं।। हे सखी हरि औ राधा जु एक समैं में एक जो है आसन से प्यार पर सन मखवैठे सोभित है।। क्यो रसप्रेम तामें भीने

औ का
म है

दिये है यातें आपसमें विलोकन प्यारो है॥ ॐ हास्य पद रस ही को कहत तहां दोष है ईहां प्रेम को कहत है यातें दोष नहीं॥ तहां आनंद
के सात्विक नायिका ता के आनन मुख की दुति सोभा नायक दर्पन सीसे में देषत है॥ औ त्यों कहत तिसि प्रकार नाइका हू द
र्पन में देषत है॥ अर्थ कि दोउ दर्पन में देषत है॥ हेतु यह नायक के चित्त में यह संका है जो हम सनमुख देषहे तो प्यारी लजाय है॥ औ
र नायका को लाज है लौं जसों संमुष नहीं देषो जात॥ काम सौं देषे विन नहीं रह्यो जात॥ यातें दोउ दर्पन ही में देषत है॥ तहां श्री
कृष्ण के भाल मस्तक में जो लाल है तामें श्री राधा जू को प्रतिबिंब पर्यो सो वह दर्पन में नायक को नजर आयो॥ तिको देषि विलोकत का देषै
ई नायक ने अपन नैन तिसी के रूप सौं भर लीये पूरन करि लीये॥ अर्थ कि प्यारी ने नैन में बसाय लई॥ ॐ ईहां लसना है प्यारी को नै
नैन नमें वठाव नो नहीं संभवे लक्षना तें ताके रूप की सोभा नैनन में बसाय लई॥ अति कुंदर दीठि रूप में प्यारी लषी यातें वा रूप सौं
नैन भरे॥ ताकी कैसी सोभा है॥ मानो पिय जो श्री रामचंद्र जी तिन की सासन आज्ञा सौं सवासन क्यास हतव ख्ननके जो सीताजी है सो
कृता सन अग्नि में वैठी है॥ ईहां अर्थांतर मानी पतिकी यामें पतिव्रतिजान्यो॥ औ वह भाव हू को अग्नि नजरायस की की यामें
पतिव्रत को उत्कर्ष जितायो॥ औ ईहां हरि राधा को संजोग उहां श्रीराम सीता को संजोग है यातें समता मिली॥ औ कसीताजी श्री
राधा जू के रूप ही में मिली हुई है इनतें भिन्न नहीं याही तें अवक ही है॥ ॐ नाइक नाइका आलंबन ता से ज्यो औ दुति इत्यादि उद्दीपन॥ देष
वो अनुभाव॥ आनंद सौं दुति देषत है सो आनंद में सात्विक होत ही है यातें अनुमान सौं अश्रु सात्विक जानीये॥ लज्या संचारी॥ रस भीने यामें
रतस्थाई यो रस भयो॥ औ सषी वहरंग है तिनो ने सौं त्वकन ही जान्यो सीता की सुध भई जानी॥ सो तो नहीं है॥ क्यो जे रस कहै ते सु
षमें सम्य विरोध वार्ता याद नहीं करत॥ यातें सात्विक कही है सो सषी नैनन हीं लष्यो यातें वहरंग॥ आसन पै वैठे काहू समय देषि लि
यौ यातें प्रकास भयो॥ ॐ औ भाल श्रन्य अनेक अर्थ को है लाल के संजोग तें एक मस्तक ही को कहत है यमें अवधारन लाल व्यंजना है॥ उल्ले
षा लंकार गा नो सीता है॥ अथ प्रिया को वियोग सिंगार॥ सवैया॥ कीट ज्यो काटत कानन कान्ह सौं मानहू में कहुं आवति ऊनो॥ ताहि

१

चलेतनके चुपह्वैरहेनीकीहिकेशवएकनहूनो॥नेकऊटेपटफूटतिश्रोमसूदेषतहैकावकोवृजमूतनो॥काहूकोकाहेकोकीजे

परेषेव श्रीजैसैजीवकीनाकदैचूनो॥२३॥टीका॥नाइकाकोवचनसषीप्रति॥नायकापिछलीवातसषीसौंकहतहै॥हेसषीतूमेरेमा

नमेंभीमेरोपछकरिजोकान्हसौंऊनोषोटोवचनकहिआवतीसोमेरेकाननकोनसहातोकीटकीहेन्याईकाटतो॥ईहांकाट

७ तोश्रोरुकहिआवतीइनकोकाटतुश्रौकहिआवतिऐसोपढीयेनहीतोछंदभंगहोय॥सोताहिदेषातिसश्रीकसकोपाईके

नीकेही चलेतनकेफूटनगयेंचुपहीह्वैरहेजोफूटतेंतौइनमेंशब्दहोते॥ [बोलते] एकनहूनोकहाएजोमेरेहूनोदोयकनकानहै॥किं

भलीप्र एककानहीनहीहूनोनेत्रहूऐसेहीहै॥आगेमेरीश्रांषऐसीहुतीजोनेककहूतारतीकभीषवस्त्रओटमेंहोतीतोएफू

टती॥सोईश्रांषश्रवकवकोवृजमूतनोदेषतहैश्रवनहीफूटत॥[सषकयादेजीकेकीओव] हेसषीकिसीकोकाहेकोपरेषोतुरोमानीये आकीनहीं

ऐमभी कौनाकमेंचूनोदेकेजीवीयेतहैक्याहमहूंनिलज्जह्वैकेजीवतहै॥सषोमरपीजीवकीनाकमेंचूनोकहेनेयार्षदोषआ

याते वतौसोनकरो॥[॥] नाइकाआलंव॥आलंवनकेद्वैभेदहैजाकोआश्रयपाय केस्याईउपजेसोआश्रयआलंवनजाकोश्रा

यलेयसोविसयआलंवन॥ईहांविसयआलंवन॥वजतेंकेजवनतेंकेतइत्पादउद्दीपनवचनरूपअनुभाव॥आरतस्याई॥

काहेकोवृरोमाननोदैन्यसंचारी॥सात्वकऊपरसौंश्रानीयेविरहमेंश्रश्रुसात्वकहोतहीहैकिंवाविभावअनुभावस्याईसंचारी

इनहीसौंरसभयोसात्वककाहेकोस्याईयेयहभीमतहै॥ईहांमिलनकीआसहैयातेंरतिस्याईतेंवियोगसिंगारहै॥जहांआ १८

सानहोयतहांसोकस्याईतेंकरुनारसहोतहै॥पूर्णोपमालंकार॥कीटज्योंकाटतऊनोयामें॥श्रटेपटफूटतईहांवृत्यानुप्रा

सरसतेउदासीनश्रलंकार॥प्रियाकोप्रकासवियोग॥कवित्त॥सीतलसमीरदारचंदहूचंदहूकानिवारकेप्रोदासऐसेहीतेहरषहि

रातहैफूलनपैनायमारझारमारघनसारचंदनकोटारचितचौगुनोपरातहै॥नीरहीनमीनमुरझायजीवैनीरहीपैछीरकेछि

रकेकहाधीरजधरातहैपाईहैतेपारविचौर्योहीउपचारकरैआगकोतोडाटोआगआगहीसिरातहै॥२४॥टीकासषीवचन

हे सखी सीतल क्या चंदन ताको जो समीर पवन है क्या मलय पर्वत को स्पर्स करिके जो पवन आयो है ताको तें मो काति सते मोको टार
पवन न लगन देय उद्दीपन है॥ आगे भी चंदन पद है पुनरुक्त नही॥ तहां चंदन नही ईहां चंदन को पोन॥ हे चंद्र कासखी चंद्र तें भी
मोको निवार न्यारी कर॥ कि वा वाहर ल्यायके चंद्र को मति दिषाव दूरते चांदनी मत दिषाव॥ ऐसे ही तें क्या चंद्र चांदनी
तें दिषावनैं मोको हरष जो है आनंद ध्यान में पिय के मिलने को सो हि राल दूर होत है॥ फूलन को फेलाय डार व षेर दे
हु॥ घनसार कपूर को भी झार झार षेर देहु॥ रंग है॥ हुयो जो चंदन है ताको मीटार॥ इन तें चित्त को चोग नौ पी हा म
एक न होत है॥ वियोग की पीरा॥ दूजे ध्यान में मिलनो छूटत है यह पीर॥ तीजे रोग क छु उपाय क छु॥ चौथी पीर सखी आप
नी होय के दुष्ष देत है उनकी क्रूरता की कि वा असंषीता की पीरा॥ नीर जल ते हीन विछरी जो है मीन मछरी सो मुह काय
कर के फेर नीर ही ते जीवत है॥ नीर ते विछुरी को जो छीर दूध घिर के तौ धीरज नही धरत॥ ते मेरी पीरा पाई है कि
यो ही विना पाये ई मेरे उपचार हू लाज करत है॥ अग्नि को दाह हो जरायो जो अंग है सो आग ही तें सीतल हात है॥ ईहां सखी
गर भी जान ई लाज करत है याते वहरंग है ~~कहै नायका~~ [फेर लिखने] ~~जिनायो~~ [वचनो सो विरह आगो] नी रही नमीनें आ प्राव सोंसों ~~कहै कासख~~ [इत्याद] ॥ नाइका ने तो
सिर्फ उसीं कही पै सखीन ने जान लियो याते प्रकास॥ नायका आलंबन॥ समीरादि उद्दीप॥ वचन अनुभाव॥ रति स्थाई॥ औत्सु
क्य चिंता व्याधि मोह ग्लानि इत्यादि संचारी॥ इन सो रस भयो॥ रूष देन वारे दुष देनवारे भये याते व्याघात॥ चकार तें वृत्यानुप्रास
रस पोषक है॥ ~~इन के अर्थ~~ श्रीकृष्ण को प्रछन्न वियोग॥ केशव कृत रसिकप्रिया॥ तुमही तें॥ किधो भय का हू के भीत भयो है वे च्यो है का हू
के हाथ कै नाथ कि धो तुम का हू के साथ दयो है मेरी सौं मो सहु मान ह्वे गई हा मन नाहि कहू पठयो है सांची कहो कहि हा
र यो है का हू पै का हू हरयो कि हिरा पायो है॥ रूपाटीका सखी को वैन नायका सों॥ हे केशव श्रीकृष्ण तुमारो मन तुमही सों रूठ
र यो है अपना कि सी के भय सों भीत भयो डरगयो है॥ कि ना हे नाथ तुमारे का हू गोपांगना के हाथ वेच लियो है॥ किंवा का हू के सा

२

श्री राधा ही है दियो है॥ तुम को मेरी सौगंद है मोसे यह वार्ता वेग सौं प्रमानो अर्थ कि मो सौं सता वी कहो ई हां तुमारे विषे तुम्हा

रो मन है न ही किं वा काहू पठयो भेज्यो है॥ हे हरि तुम साची कहो कि सी पास अपनो मन हार दियो किं वा काहू ने हर ली

यो चुराय लियो किं वा हि राय गयो वि सम्मै भयो है॥ नायक आलंबन॥ विष्णु वो आदि उद्दीपन॥ ये श्राम अनुभाव॥ स्तंभा दि

सात्विक वि षादा दि संचारी रत स्थाई है ही॥ इन सौं रस भयो॥ सखी वहरंग विकल्प योग ति ही नही जानो यातें त्र पह्न॥ कि याते संदे

मूल हा लंकार॥ श्री कृस्न को प्रकास वि योग सिंगार॥ बात कहेन स्रने कछु काहू की है नैन ही को ऊ कैसे ही हेरो॥ नायक छून पि

ये कछू के स्रव छूवे न ही कर को रो कर रो॥ ल्लल उठी चन्द्र वैठी कहा उठ आवन है वेग कह्यो कपि मेरो॥ जाने को माई कहा भ

यो कान्ह को जोग संजोग वियोग कि तेरो॥ २४॥ टीका॥ सखी वचन नायका सौं॥ हे राधे आज कृस्न काहू सौं बात न ही क

हत॥ यामें रसना॥ काहू की बात स्रन तन ही यामें श्रवन॥ और उन की तरफ कोई कि सी प्रकार हेरो दृष्टि सो पै वेन ही हेर तदे

खत॥ यामें नेत्र इंद्री रोकी॥ कछू का सा तन ही॥ और कछू पी वत न ही यामें भी रसना ही रोकी जानीये॥ कोरो कोस लै और कोर

रोक रहे हो घ्रम सारा दिक इन को कर हाथ सौं छुवत न ही॥ उद्दीपन है याते॥ ईहां नास काई द्री रोकी॥ छुवन तें त्व चाइंद्री रो

की जानि ये॥ औसे पांचो इंद्री जिनोने रोकी है॥ सो ब्रजमें तो ल्लल उठी है तू क्या वैठी है निचिंत॥ यातें वेग सताबी मेरे स्रप घर छके

आव॥ तव नायका वोली हे माई श्री कृस्न को कहा भयो है जोग को संजोग है अर्थ कि जोग करन लगे है॥ वियोग कि॥

किंवा काहू को वियोग है॥ पांचो इंद्री जोग में वी वियोग में वी रोकी जात है॥ याते जोग वि योग कह्यो॥ तव सखी सखी वोली

तेरो कहा तेरो वि योग है॥ ईहां नायका ने वहरंग सखी जान बात छिपाउ सौं कही॥ और वह जानत हुती जाने तेरो कह्यो याते

प्रकास भयो॥ नाइका आलंबन विष्णु वो भोजन पान श्री कृस्न मना दि उद्दीपन॥ आगे चे ष्टा अनुभाव॥ प्रलय सात्विक॥ रत स्थाई है ही ज हता आदि

संचारी इन सौं रस भयो॥ या कवित्त को अर्थ जोग पैं और वियोग पै य ही एक लागत है भिन्न न ही याते अभिन्नार्थ स्लेषा लंका

र॥ स्रलदो हो यो प्रछन्न प्रकास करवर ने जोग वियोग अव नायक लक्षन कहत ... [illegible]

संजोग

कार योगसिंगार औ वियोग सिंगार ए उभय अत्र कास कहि के वरने कहे ॥ अब नायक के लछन कहेंगे गूढ उभय व्यंग्य अगूढ प्रकास इन

कथे के ॥ इति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री फतेसिंह विरचितायां रसिक प्रियाटीकायां फतेभूषन चंद्रिकायां संयोगवि

योग सिंगार वरननं नाम प्रथमो प्रकासः ॥ १ ॥ अथ नाइक लछन मूल दोहा ॥ अभिमानी त्यागी तरुन कोक कला न

प्रवीन भव्य छमी सुंदर धनी सुचि रुचि सदा कुलीन ॥ १ ॥ टीका ॥ अभिमानी सगर्व होय ॥ किंवा तेजस्वी होय ॥ त्या

गी होय ॥ तरुन जवान होय ॥ केल की जे कला है तिनमें प्रवीन चतुर होय ॥ भव्य को मल चित्त होय ॥ किंवा मंगलकर्ता हो

य ॥ छमी सांतवान होय ॥ सुंदर होय ॥ धनी धनवारो होय ॥ औ रुचि पवित्र होय रुच जाकी ॥ औ कुलीन कुलवान होय ॥

मूल दोहा ए गुन के सब जासमें सोई नाइक जान ॥ अनुकूल दछ सठ धृष्ट पुन चतुर विधि ताहू बषान २ टीका ॥ एक उ

न वारो नाइक नहीं ॥ ए सर्वगुन जामें पाइये सोई नाइक है ॥ ताके चारि भेद अनुकूलादिक ॥ मूल दोहा ॥ प्रगुन केसव जास

प्रीत करै निज नारि सौं परनारि न प्रतिकूल ॥ केसव मन वच कर्म करि सो कहिये अनुकूल ॥ ३ ॥ टीका ॥ मन कर के वचन कर

के कर्म कर के जो नाइक निज अपनी नारि सों प्रीत करे औ परनारनि सों प्रतिकूल है वा ॥ तिनसों प्रीत न करे सो अनुकूल ॥ अ

थ प्रछन्न अनुकूल ॥ सवैया ॥ औरु के हास विलास न भावत साधन को यह सिद्धि सुभावै ॥ बात वहै जु सदा निबहै हरि

को ऊ कहूं कछु सो धन पावै ॥ आसन वास सुवास नि भूषन केसव क्यो हू यहै वनि आवै मो बिनु पान न षात जु का न रु

वै दिकि धो यह प्रीत कहावै ॥ ४ ॥ टीका ~~नाइका सषी प्रति कहत है~~ ॥ कहूं प्रथम सषी नायक को ज्ञात तो ॥ कैसो तेरो हाय प्रिय ना न

षात तासों नाइका कहत है ॥ हे सषी उनको मेरे बिना औरन जे है नाइका तिनके हास चारि प्रकार के मंदहास कलहास अति

हास परहास ए ॥ औरु विलास कटाछ औ रुन के सो जिनको नहीं भावत क्यों आप सुंदर है औरु कामी अरु नहीं या ते ॥ सो यह

भीनि वहै क्यो सा धुन औ ष्ट पुरुषन को यह सुभाव प्रसिद्ध है ~~क्यो वे और नके हास विलास~~ नहीं इनके पागन तें प्रीत न होत है ॥

ही

६ साधु कहनेमें भया औद्य मी जानीये॥ औ साधु रूभाव हीमें मनक रिप्रीत जानी॥ औरु सदाको अर्पस्त्रुदायनी वात भी
उनके है करे वही है जो मोसों हे अर्प कि मेरे विना औरु सों वार्ता नहीं करत यह भी सदा निवहै इसके त्यागने को हद कोई कहू
१ सोध षवर नही पावे गो॥ प्यारी हीसौं वार्ता कहत है यामें वचनो करि प्रीत॥ याही वार्ता को निवाहत है यातें क्रम मानी जाने
हर कोई भेद नहीं पावत ईहाके लक लाज वीन जाने॥ औ आसन विछौना वास्त्र वस्त्र रू वास रू गंध॥ न को अर्प नही॥ इनकी
नाही क्यों मेरे विना इनको अनक्के वो सो भी कोहू किसी प्रकार वन आवै॥ अर्प कि इनको वनवौ तो कठन है पै किसी प्रका
र वन आवे॥ प्यारी विना नाइक आसनादि को ग्रहन नहीं करत प्यारी के निकट करत है यातें कर्म करि के प्रीत है॥ आसनादि ग्रह
नतें रूच रूच जाने॥ भूषनोतें धनी जाने॥ औरु मेरे पान कहता हाय विना जो कान्ह षात नही सो यह उनको वैरमो लोक हावगै
किप्रीतक हावत है॥ यह नहीं निवहै यातें प्रीतके अगटै मोको लाज आवैगी॥ फेर वोलनो हसनो भै सो नही होयगो॥ सोय हवैर
है प्रीत नहीं॥ वैरीको काम दुषदैवो है सो यामें मोको दुष होत है उनके दुषतें॥ षान त्यागनतें त्यागि॥ कान्हतें तकन कलीन जानीये॥
औरु जा सषीने उपम आयक सो फेर जासों नाइकाने नाइककी प्रीत कही सो अंतरंग है यातें प्रछन्न॥ आसनादि कौं निज घर ही में वन
तहै यातें स्वकीया॥ काम लाजतें मध्या॥ औरु गुन सौं नाइक नहीं वंच्यो स्वभाव ही सौं वस है यातें स्वाधीनपतिका नहीं॥ लेसाल
कार प्रीतगुनता में दोष ठहरायो वैरसी भई यातें लेसालंकार॥ मूल प्रकास अनुकूल सवैया॥ केशव सूधे विलोचन सूधी विलोकन कै अ
विलोके सदाई॥ सूधीये बात सुनै समझै कहि आवत सूधीये बात सुहाई॥ सूधी सी हासी सुधानिध सो मुष सोध लई वसुधा की सु
धाई॥ सूधे सुभाव सवै सजनी वस कैसे किये अति टेढे कन्हाई॥ ५॥ टीका॥ ईहां एक तो अभिमानी यह नाइकको लक्षन ही है॥ औ क
हूं जे अनुकूल है पर स्त्री की ओर नही चितवत यातें वह कोऊ सषीनैं टेढो रू भाव समझ्यो सो प्रियाजू सौं प्रानक ह्यो तै टेढे कन्हाई कै
सेवस किये तासौं नाइकाक हत है हे सषी जिनके विलोचन नेत्र सूधे है॥ प्यारी विन अंजन नहीं पावत यातें सूधे है॥ ईहां कर्मकर
के प्रीत जानी॥ औ धर्मी भी जाने सूधे नेत्रनतें॥ औ सूधी विलोकन दृष्टि करिकै सदा विलोके देषत है॥ कटाक्षन सौं प्यारी हूं को देषत है

को श्रीसमझतहे

सुधीद हैं भवजाने औ सुधीये वार्ता सुनत हैं औ सुनकी टेढी वार्ता बातरमें नहीं आवत अभिमानी है। औ सुधीये वार्ता जिनको
सुहाई सुंदर कहु भी आवत है॥ ध्यारी विना कोई चतुराई की वार्ता नहीं कहत याते वचनो कर प्रीत जानी॥ सुधीयो सुहाई कहत
है याते केलकलामें प्रवीन है। औ हासी भी सुधीसी है सुधा निधपूर्ण चंद्रमासो मुष है अर्थ सुधो है पूर्ण चंद्रमा सुधो होत है या
ते मुष भी सुधो है पाँनन की अरुनताए लो आदि की नासए सिंगार प्यारी विना नहीं करत याते सुघोक सो॥ औ सुंदरहू यामें जा
ने चंद्रसो मुष कहे तें॥ औ नाइकने वसु धाप्र थ्वी की जो सुधाई है सुधता सो जिनोने सोधके विचार के लई है ग्रहन करी है॥ टेढाई
नहीं ग्रहन करी याते सुचिरुच॥ औ धनी भी जाने सर्वज्ञ प्यीके कहनते॥ हे सजनी जितने सूधे सुभाव है सर्व जिनके वस है अर्थ किसी
से नहीं॥ ईहां टेढे सुभाव त्यागनते त्यागी॥ औ मन कर के प्रीत भी जानी सूधे सुभावनते॥ तेने टेढे कु स्म अत्यंत क्यो क
हें॥ क्रिसनें तरुन कुसीन जानिये॥ औ सुनाइक तो टेढे नहीं सुधेई हैं पै यह सषी वहरंग है सुभावतें महलमन हीं याते टेढे कहे॥ ता
सैं नायकाने पिय को अनुकूलत्व जितायदियो याते प्र का स भयो॥ उतरा लंकार दोहा उत्तर में जह लषि परे प्रश्न सु उत्तर जान तियके
उत्तरतें लख्यो सषि को प्रश्न सु जान॥ १॥ मेरे तो ना हन चंचल कनौ चन ना हन के प्रा वधा नी सुहाई॥ जानौं न भूषन भेद के भाव निभूल
हूमें न हिमो हव हाई भोरे हू ना चितयो हरि ओर त्यो घेर करे रहभाल लुगाई॥ रंचक तो चतुराई न चित्तमें कान्ह भये वस काहेते माई॥ ८॥
ईहा जो सषी कि सं का होय नाइका गुनवती है याते वस भये सो नाइ का गुनो को अभाव वतावत है॥ हे सषी उनके वस करवे को चंचलने त्रगी
हिये क्यो उनके चंचलने है सो चंचलने ते चंचलने का ही सों वस होत है॥ सो मेरें नहीं है॥ औ कान्ह वस भये हैं सो काहे ते भये यह मैं नहीं जानत॥
यामें सुंदरस्त्री आप ही ते वस जाने अनुकूल है याते॥ औ सु उनकी सुंदर वानी है ताके वस करवे को मेरी सुंदर वानी चाहिये॥ सो मेरी वानी भी
सुंदर नहीं॥ ईहां सुंदर वानी भव जाने औ वचनो कर प्रीत जानी॥ औ सुमें भूषनो को भी नहीं जानत होए कहा पहरीयत हैं वेई पहरायदे
त है यामें धनी जाने औ कर्म कर प्रीत जानी॥ औ सु उनके वस करवे को भावन के भेद चाहिये क्यो वे सर्व जानत हैं तोते भावन के भेद जान
नो ने मैं हैं नहीं चहाई कवी यामें सर्म॥ विना जानो न यह पद सर्व ठोर सुलगाईये भूषनो की औ भावन के भेदन की मेरे में भूल है ताको भी मैं नहीं

मोको सु
मरतो

सुहाई

जानत हो औ रूनहि जो है नाही करनी के सी नाही जामें मोहन की चहाई है [illegible] जिन [illegible] (क्या) में मोहे वह जानते हैं ऐसी नाही को मैं नहीं

१० जानत॥ अर्थ॥ मोहे चहाय के नाही करनीय है तीन को सुभाव है सो भी मैं नहीं जानत॥ याअर्थ में भूषनो केस धार दैन में सभी जाने॥

त्यो औ हरि॥ औरें क्या सर्व दिसा की तरफ में भूल कर के वी नहीं चितयो क्या देष्यो॥ एक ओर की तरफ देषत हो अर्थ यह मेरी सुधी दृष्टि है चंच

लनहीं॥ औ लुगाई इस प्रकार घेर निंदा करत है जिस प्रकार तूं करत है॥ किं वा त्यो क्या। तिस प्रकार दृष्टि की ओर में भूल कर भी न ही

10 देष्यो जासें ए लुगाई या भांत निंदा करें॥ अर्थ कि कदा क्षन सौ नहीं देष्यो॥ ई हा निंदा लुगाई करत है नाइकन ही गनतैं यामें अभि

मानी॥ औ उन के वस कर वे को चतुराई चाहिये सो मेरे चित्त में रंच कपो री भी चतुराई नहीं॥ औ उन के चित्त में चतुराई है यामें केलक

लाप्रवीन जाने॥ औ कान भये वस या को अर्थ कान्ह तो मेरे वस भये हैं पै का हे ते माई सो हे माई सषी का हे ते वस भये यह मैं न हीं जा

यामें त्यो जाने नत॥ तैं वस षी ने जान्यो आपही ते वस है अनकूल है [illegible] कान्ह पद ते लक्षन कुलीन जाने॥ [illegible] औ मन करके वस जाने॥

चित्त पद ते॥ औ वह रंग सषी को अपने पिय को अनकूल ता प्रकास कियो याते प्रकास अनकूल॥ औ रूवस करवे के कारन न ही औ

हेतो का वसें अर्थ याते विभावना लंकार॥ अथ पदस्मलक्षन॥ मूल दोहा॥ पहले सो हिय हेत अरस हन वड़ाई कान॥ चित्त व लेहूं नाच लै दसन लक्षन

रजो जान ६ टीका॥ पहलो सो यामें तैं यह ध्वनि निकसत है कि अनेक विवाह ता जाके होय पै सर्व में पहलो ई सो हिय में हेत सनेह राषै पहलो

ई सो अरु पहलोई सो सहज सुभाव॥ औ अपनम ही व डाई अपनम सी कान सर्व ते तीये राषै॥ चित्त के च लेते भरिशवा तौ नाच देसो दक्षन॥ मूल

वक्ष्न दसन कवित्त॥ हरि सेहित सों अनमूल हून कीजे मन होतो कदि हीय हू ते होत हित हानिये॥ लोक में अलो कान्ह जानी के हूं को लागत है सीता

ता को हूतगीत के से उरूआनीये॥ आपन जो देषियत सोई साची के रो राय का नन की कुनी साची क वहू न मानिये॥ जो कल की कल टार ये यौ ही

उलटावत है आज वौ ते वै से कान्ह का लक्रीन मानीये॥ १ टीका॥ का हू ने नाइक की तरफ तें नाइका के मन में भ्रम पायो है सौ नाइका मन को समझावत है हे

मन हरि सरूषे जो है हित तुम्हि वहित के राषन वारे तिन सौं [illegible] मूल तें भी अमन कीजे॥ (क्यों) [illegible]

ईहा [illegible]॥ हरि तितन कुन औ कुलीन जानिये॥ हित पद में ब मी औ अपन सो सनेह जानीये॥ यो तें अमको हातौं (कर) क्या दूर करा [illegible] हिंहूं ते (यु) हृदय हूं ते

[illegible]॥ क्यो वे हृदय की सर्व पावत हैं (औ) याके कियै हित की हानहो तहै॥ औ अमदूर कर सैतम (यु) जाने हिय की पावत है यामें केलक लाप्रवीन जाने॥

औ लोक जो है जगत तामें अलो क अपजम नी के [illegible] अर्थ एकष [illegible] को भी आय लागत है पै सी ता जन को जो हे दूर हरू मानता के अपज को गीत [illegible]

कै से उरू में ल्याई ये हन मान जीजती है उन में अपजस नहीं मैं से ई हश में अपजस नहीं॥ नीके या में संदर॥ अपजस नहीं यामें सच कुच औ अपम सीव

१ सो मो घनसौं तो अपने ईवस दिषाई देत है ... यहां सो चाकरी

उपाई जानीये॥ औ मा घनसौं जो दिषाई देत है सोई साची है॥ कानन का षोटे मानन मुष तिनकी कही वार्ता साची नही मानीयत॥ अर्थ य
ह भले न की मानीये बुरेन की न मानीये॥ वैस देषनतें त्यागी॥ औ प्रथम सी कान जानीये॥ गोकल की जे है कुलटा बुरी स्त्री सो ए यों ही का झूठ ही उ
मेरे सा प वतहीम — लटावत है अर्थ कि मिथ्या ई दोष लगावत है आज ताई तौं वे सेई है काक जैसे प्रथम हुते का लके की वार्ता कोई जानत नही कैसे ह्वै जाय॥ कुलटा
दोष लगावत हे तिन को मन में नही आवतें याते अभिमानी॥ औ प्रथम सो सहज जान्यो औ दक्षन प्रष्ट भयो॥ मन सौं वचन यातें पक्ष (?) को
वे ... सौ॥ — कुलटा में धृष्ट सठ जाने है दक्षन नही जाने याते ईहा हू प्रघ (?)॥ कुलटन के कहे चित्त चलायमान जान्यो नाइका ने कह्यो वे सेई है यामें ए बातें चलायमा
न नही जानी यों चित्त चले हू नाच ले यह लक्षन॥ सीता जू के दूत को दृष्टांत दियो याते दृष्टांतालंकार॥ मूल ग्रन्थ का सदक्षन (?)॥ चित्त चोंप चितैवे की जे सीये है अरु वै
सेई भात ऊरात घने॥ अरु तैसेई कोमल बोल गुपाल के मोहत है तिह भांत मैंने गुनते सेई हास विलास सबै हुते जै मेई के प्राव कौन गने सखि नेक हि मा
न बंध के आधीन है सापरतीक हि धोसर पने॥ र॥ टीका॥ ईहा जे जे बातें सषी पूछत है नाइका तेते वाते वतावत है॥ सषी ने प्रथम पूछ्यो हो ते दे देषवे की चो
हे सषी — प उन को वैसी नही॥ नाइका ने कह्यो उन के चित्त में मेरे चितैवे की देषवे की जो चोप है चाह मासों स्नेह में भी मेरो रोस में भी वैसी यो है जैसी प्रथम हुती॥ ईहा ष
सी जाने और प्रथम सो हित जान्यो॥ फेर सषी ने पूछ्यो अब तो सो न ही कहत॥ नाइका ने कह्यो मोतें वा ही प्रकार घने बहुत करत है कोई उपाय पारी न पा
वैसी वातनतें॥ यामें भव्य (?)॥ औ प्रथम सो सहज जान्यो॥ फेर सषी ने पूछ्यो अब तो सो कोमल बोल नही॥ नायका ने कह्यो गोपाल हू कस के कोमल वच
गोपाल तैं तनु कुलीन॥ — न तैसे ई है॥ यामें कचकचौं॥ औ प्रथम सो सहज जान्यो॥ फेर सषी ने कह्यो अब तो मो वैसी भात नही मोहत॥ नाइका ने कह्यो तिसी भात मेरे मन को
मोहत है यामें केहक (?)॥ फेर सषी ने पूछ्यो तो सो वैसे हास विलास नही॥ नाइका ने कह्यो हास विलासन के गुन किंवा गुन औ हास विलास सर्व ते
सेई है जैसे प्रथम हुते॥ गुनोतें केल कला प्रवीन॥ औ प्रथम सी वडपाई जानी॥ हास विलासनतें धनी॥ कौन गने या को अर्थ मेरे विना औरु कौन
है औ सी जाको वे गने मो ही को गनत हैं यामें अभिमानी॥ फेर सषी ने कह्यो वे तो मान वधू के आधीन है तब नाइका ने कह्यो हे सषी तू सो मान वधू
औ दूसरी के आधीन उन को कहत है सो सापरतीक प्रत्यक्ष कहत है विरुद्ध भ्रमें कहत है॥ अर्थ यह प्रत्यक्ष तो मेरे ई वस है यामें त्यागी॥ औ प्रथम की का
न जानी॥ औ मान वधू के आधीन कहन तें चित्त चलायमान जान्यो नाइका ने वे सेई कहे यामें चित्त चले हू नाच लेयां लक्षनतें दक्षन भयो॥ ईहा स बीव
हार है जो मने क भात की चिंता (सं की) करत है याते॥ सो सषी प्रथम तो अनुमान सौं अनुकूल जानत हुती॥ मान वधू के आधीन देष धृष्ट सठ जाने॥ फे
र नाइका के वचनोतें दक्षन [struck] जाने॥ औरु नाइका ने तो प्रथम से गुन कहे कछू दक्षन नही जिताये॥ सषी ने बुझ सौं दक्षन जाने याते अका
स॥ औ नाइका के उत्तर तें सषी के भ्रम जाने यामें उत्तरालंकार॥ अन्यच॥ वहि अंतर गूढ अगूढ निरंतर कांमकला कुलको न गने कहि के प्राव हास वि
लास सबै प्रतिपोर न है रसरीत सने जिनको जिय मेरे ही जीय जिये सषी का पसनो मेच प्रेम घने॥ तिनसौं कहि मान वधू के आधीन है सापरतीक कि

११ धारूपते॥१०॥टीका॥ नाइकासषी सों कहत है हे सषी वह जो है वहर तंसा लम्रालिंगनादिमें अंतर जो है अंतरत तस्पितति जिक इत्याद
म्रागेक हेंगे॥ म्रहह रूपी म्रगूढ प्रगट सो सर्व मोसों निरंतर है उनोकी क्याइनमें अंतर न हीपर्यो॥ म्रौ काम कलाके जो है कुल तिन्हसों
भी निरंतर है कामकी कला कैसी है कौन है हम ऐसो जो उनको गनै उनो में बेई चतुर है॥ यामें केलकला प्रवीन॥ म्रौ प्रथमसी बड़पाई जानी
॥ कहि के प्राव याको म्रर्थ कहदे जो है के प्राव म्री कृष्णमो सो वार्ता सो भी निरंतर है क्या बातीमें भी अंतर नहीपर्यो ईहा वार्ता को म्रध्याहा
र कीजे॥ के पाव कवि को म्रर्थ नीको नहीं॥ कृष्णको नी को है॥ याही तें लहन कुलीन जाने॥ बातीकहनतें वचनों करि प्रीत जानी॥ याहीते
प्रथमसों हरजान्यो हर सौं बातीमें अंतरो नही पाय सकतो हां मतें सुंदर विलासतें धनी॥ याही कर्मकरके प्रीत जानी॥ म्रौ रूप्रतिघोस
क्या दिन रूप्रतिघो सो जिनको रूप म्रनुराग बढत है॥ यामें रूप भी॥ म्रौ रू वे रीतमें सने मिले हुये है कुरीत नही जानत यामें सुचि रूपवी॥ म्रौ रू
जिनको जीव मेरेई जीव सौं जीवत म्रर्पवि मेरेई म्रानंद सों जिनको म्रानंद होत है ~~यामें भव्या~~ ई हो जो को रू कहे जे शानाइ का है सोन ही॥
क्यों जे शाक नि शावि ना नही होत॥ म्रौ रूच तुरनकी जिन जिनसों प्रीत होत है तेते जानत है हमही सों म्रत्यंत प्रीत है या तें कहत है मेरेई जि
यसों जिनके जियजियत है॥ यामें भव्य॥ म्रौ प्रथमसों सहजमें म्रौ मनकर प्रीत जानी॥ म्रौ हे सषी मनकर के वचनकरके कर्मकरके एक सो
ई जिनको घनो प्रेम है यामें म्रभिमानी॥ म्रौ प्रथमसों हित जान्यो॥ म्रौ रूसा परतीक तो मेरेई वस है यामें त्यागी॥ म्रौ प्रथमसी का न जानी॥ म्रौ
सषी के कहे चित्त चलमान जान्यो॥ म्रौ नाइका ने कह्यो मेरेई वस है यातें चित्तचलै हूनाचलै यह लक्षन जान्यो॥ यातें दक्षन भयो॥ म्रौ वि हरे गस
षीने दक्षनता जानी यातें प्रकास॥ उत्तं लोकार जैसे पहले कवि महमें जिताय म्राये है तेसी भाति॥ दूसरी टीका में विस्तार सों सर्व वार्ता है यामें संछे
पसों म्रानीहे॥ म्रथ सठ लक्षन॥ मुषमें मीठी बातें कहे है निपट कपट जियजान जाहन हरम्रपराधको सठ करता हि वषान॥१२॥ टीका॥ मुषे
पर तौ मीठी वार्ता कहे किंवा मीठी वार्ता मुषही सों कहे म्रौ रू जियमें निपट म्रतिसय कपट होय॥ मीठी वार्ता को म्रर्थ लक्षना सौं कपटाई
जानीये॥ म्रौ जानचतुर होय उक्त कमि लावनमें॥ म्रौ रू जाको म्रपराधको डर न होय ताको सठ कहिये॥ मानी नाइक म्रौ चतुर नायक
इनको विश्राम भी सठही में है यातें जान पद धर्यो॥ म्रथ प्रच्छन्न सठको उदाहर्न॥ सवैया रूचपंकजचंदनवंदनकंचनरंचनरोच
नहूकी वची कहिये किहकारनको इनि लाइक का परभा मनि भौ हे नची म्रनमानत हो म्रषियाल विलोलिए नाह नरा तके रो परची
तनतेरे वियोगतच्यो तरुनी तिह मान हमो हियमा हत ची॥१३॥ नाइक नाइका की लालम्रा से देष मुषमीठी वार्ता कहत है॥ पंकजरक

है ताकी
वात नहि
मानीति
स

कमल को नाम ईहां साध्यवसाना लक्षना करियें कज पद तें नायक के नैन लीजे ॥ पंकज रोपमान है नैन रोप्य विषय नहीं यातें साध्यवसाना
लक्षना है ॥ हे प्यारी कुच जो है लाली मेरे नैन कमलन की औ मेरे रक चंदन की ईहां लिलाई के प्रसंग सौं रक चंदन ही लीजे ता की लि
लाई औ मेरे वंदन सिंदूर की लिलाई कंचन खने ता के कुंकुम लीजे तिन की लिलाई रोचन क्या गोरोचन ता के तिलक लिला की
ई रंच कहता रती कभी नहीं रची ॥ अर्थ किइन सर्व की लिलाई तेरे नैनन में परी है ॥ ईहां कमल नैन तें सुंदर ॥ चंदन प्रिय है या
सु कहुवा ॥ वंदन प्रिय है ईहां नाम के संबंध सौं कुलीन जानीये ॥ वंदन नमस्कार को नाम भी है ॥ कंचन तें धनी ॥ औ ईहां अनुरवा
रस हत वर्नमाधुर्ज गुन के जिता वनवारे है यातें उपनागर का वृत्त है ॥ हे प्यारी मेरे पास कहिये किस कारन तें तेरी लाल आंषे हैं ईहां
रोस टार के बुलायो चाहत है यातें क्षमी ॥ औ मृदु मीठी बात जानीये ॥ औ कोकनद तें लाल आंषे देष के जो में रोसक हों तो इ तें सा ने
पक को क्या कोन है कोई भी नहीं है ॥ यामें अभिमानी ॥ औ हे भामनी स्त्री रोस में आनके तेरी भौहे किस परें च ही है अर्थ किका हू
पर नहीं च ही यातें रोस तो कोन ही है ॥ सूधे अर्थ में व्यर्थ नामा दोष है यातें ऐसे अर्थ कीजे ॥ सो हे प्यारी ए तेरी लाल आंषन को
लष के देष के मैं अनुमानत हौं क्या अनुमान करत हो एरा तको जो रोष क्रोध है मेरे आन आवन को नामें नहीं रची क्या नहीं रंगी ॥
क्यों रोस तो है ही नहीं यातें ॥ मैं अनुमान करनते केलक लाज वीन जाने ॥ हेतकनी तेरे वियोग कर मेरो हियत प्यो तहां ए तेरी आंषे कुती
ता विषे मानो नची है लाल भई है ॥ तेरे वियोग सौं तन तप्यो यामें त्यागी ॥ सो यह वचन झूठो है पै जा के वस हू ते वा को त्याग के आ
ये है वो त्यागी है ॥ तन तपन तें तरुन जानीये ॥ औ मो हियमें त चीय हव चन झूठो है पै सुसा मद को है यातें म व्य जाने ॥ औ इन ही
च नो में नि पट कपट जान्यो ॥ क्यो नाइका के संमुष की लिलाई की उत्प्रेक्षा करी सत्य नहीं कही यातें ॥ हियमें अधिक कपट जान्यो ॥ मैं
सु औ सापराध ह्वै निसंक वचन कहे यामें जाहन रू अपराध को यह लक्षन जान्यो यो सठ भयो ॥ चतुराई की जुक्ति तप ही है
नाइका नाइका के वचनो तें अग्रज ॥ हे तउत्प्रेक्षालंकार मानो पद तें ॥ मूल अकास सठ ॥ कवित्त ॥ कानन के रंग रंग नैनन के डोलो
संग मातामंगर स ता के रस ही समाने हौ औ कम हक हां कहो मूह है गैजा न जाऊ पो हम हक के शो दासनी के कहि जाने हो ॥ तन

आनमन आनक पट निधान कान्ह साची कहो मेरी आनका है ते जाने हो वे तो है बिकानी हाथ मेरे होति हारे हाथ तुम ब
१२ जनाथ पहा थे कौन बोब काने हो ॥ १२ ॥ टीका ॥ सषी नाइक सौं कहत है तुम पांचो इंद्रीन कहि चंचल हौ ॥ कानन के रागमें रंगे हो जहा काहू
12 ऐसे ते कोई सुंदर नाइका की नीत हा चले जात हौ जो कोऊ कछु कहत है सोई करतु हो यामें अवजानो ॥ सो नैनन के संग को लत हो जो टी को
को जोहि अर्थ कि
देषत हौ वाही के संग लागजात हो यामें त्यागी जाने ॥ नासा संग को अर्थ नासा इहै अगजा के अैसे सोंध मरता के समान हो कवा मुषबास
के आधीन है ॥ यामें सुचि रुच ॥ अौ रसना को जो है रस तामें समाये हो ॥ रसना को रस तुमारे विषै वजुत है मीठे वचन कहत
हो यामें चमी ॥ अौर तुमारी गूढ कहता छिपी जो है इंद्री संभोग इंद्री ताको मैं कहा केहा तुम क्या गूढ हो जानजाहु ॥ किं वामे
की गूढ हौ गूढ इंद्री बात कहाक हो अर्थ यह ~~[illegible]~~ मो पै न हीकु ही जात ॥ आप ही जानजाहु ॥ प्रौढ रूढ क्या वके अतिरूहौ
ने तुमसकेने तुम
किं वाइ सर्व तुमको जानत है अौर मैं नीके कर जाने हो ॥ अष्ट करजाने हौं ॥ प्रौढ रूढ मैं केलक लागवीन ॥ नीके कहन तें सुंदर ॥ तुमारे
नवाजन तनमें आन अौक है अौ मनमें अौक है ॥ हे कान्ह तुम कपट के निधान स्थान हो ॥ ~~तुम को मेरी आन है संमंद है मेरे पास सची~~
मंओरकर गानिहै ~~कहो ॥ किं मेतु तुम कहो अर्थ कि नित तुम करे तो वा को मैं पास पता वै ॥ संगाय तु तुम काहू~~ सी ने नहीं करत ॥ अौर तुम साची कहो
रूठ मत कहो मेरी आनतें क्या मेरी रूगं धते का है को करे होई हा सषी के कहनते यह जानी परी काहू अपमनाइकने सषी सौं कह्यो हुतो
हम तेरी रूगं धते करत है ~~[illegible]~~ यातें सषी ने कह्यो मेरी आनतें का है को करे हो मिथ्या ही बोलत हो ॥ यामें आहन रूअ
पराध को यह लछन ॥ अौर वह जो नाइका है सो तो मेरे हाथ विकी है क्या मेरे वस है तब नाइक बोले हो मे तेरे हाथ हौ क्या तेरे
वस हौ ईहाम षमीठी बात जानी ॥ फेर सषी ने कह्यो हे व्रजनाथ तुम किसके हाथ विके हो अर्थ कि [illegible] काहू के हाथ विके हो नहीं
यामें अभिमानी काहू के वस न ही यातें ॥ व्रजनाथ तें धनी ॥ रूढ शब्द तें प्रकाश जानीये ॥ सठ पूछ ही है ॥ सषी के उत्तरतें उत्तरालं
कार ॥ मूल धष्ट लछन दोहा लाजन गारी मारकी छाड़दये सब त्रास देष्यो दोषन मानई धष्ट सु केशावदास ॥ १४ ॥ वार्ता जाको
गारी की अौ मार की लाज न होय ॥ अौ जाने सर्व त्रास भय छाड दिये होय ॥ अौर देष्यो जो है दोषता को न माने ॥ सु को अर्थ सो धष्ट है ॥

बातें तकनु कवी कानाते

अथ अष्टम छंद सवैया नेह भरे लै लै भाजत भाजन कौन गनै दधि दूध मठाए गारी दयेतें हसै बरजे घर आवत है जनु बोल पठाए॥
लाज की ओर कहा कहौं के आवजे रुनी येते हम बेगुन ठाए॥ भामी पियै इन की मेरी माई को एह रिस आछौ गाठ अठाए॥५ टीका
नाइका सखी सौं कहत है॥ नेह सनेह तिस के भरे हुये औसे को न सम्षा तिन को अपने कौं ले कर के॥ ले भाजत भाजन क्या भा
जनो के लै के भाज जात है॥ कैसे भाजन है दूध के दधि दही के मूठा छा छ के ए भाजन किंवा ए संबोधन॥ सो जि नर्वेलै भा
को जत है तिन को कौन गने अर्थ कि बहुत भाजन लै भाजत है लै भाजन के प्रयोजन यह नाइक धृष्ट है जिन की नारी टारत है ति
न को मान होत है सो जब उन को रीझि जानत है तब बुलाय के निमित्त उन की प्यारी न कनि को लै के भाजत है तब वे बोल परत
है॥ उन के बोलकन वे की चाहना है याते सिंगार रस पुष्ट है॥ ई हां अनेक सषा संग लागे फिरत है यामे धुनी॥ आप संग न ही लागत या
त्यागी॥ औ जिन को देष नई या का मान त्याग कर रीझत हैं ढिठाई सहमत है याते ढंदर॥ औ रुसा परा ध देष वे तो मान करत है एव
लावत है ई हां दे षो दो षन मानई यह लक्षन भी जान्यो॥ औ गारी दयेते हसत है यामे भव्य॥ क्यो स षदायक है याते॥ याही में गा
अयोग्य लाज सें ही की लाजन हीय ह लसन॥ औ बरजे तें घर औसे आवत हैं यामे क्षमी॥ औ न रजन भी एक लाहन [illegible] है ताको नही मानत यामें मार की
लाजन ही यह लसन॥ औ कहून की लाज की बातों मैं कहा कहौं मो देहू लाजन ही आवत त जानत ही हैं अपने ई काम सौं काम है या अर्थ कि इनको लाजन ही
में के लक लाप्रवीन जाने॥ लाज पद भी सिंगार को है॥ औ लाज संचारी है या की कहे बिना प्रतीत न होती याते कहा जहा कहे बिना
जानीये तहा कही ये तो रस दोष है॥ औ कजे इन मे गुन औ रुननें स्नीयत है जे ते सर्व हुए (स्पित है इन मैं किंवा निश्चे है॥ ई हा स्र
च रुच॥ हे माई याते इन की कौन भामी पिये कहा इन को पस को न करे॥ ~~स्रो सखी ने कहे ग पस्र को जो इन को तू इन को पस कर~~
~~न सखी ने कह्यो इन को पस को न करे~~ एह रितो आछो गाठ क्या आछो प दार प तिन कर आठा ए है क्या आछो गाठ जिन की ठिका
ने पर न हीं आछो गांठ आगे कहेंगे॥ ह रितें तकन औ कुलीन जाने॥ औ रु आछो गाठ कर आठा ए है का हू की किसी बार्ता की सें जान ही
समत यामें अभिमानी औ धृष्ट हृदये सब आसय ह लक्षन भी जानीये॥ सखी मे तरंग है जासो लाज की वार्ता कही याते अथ भामी
शब्द ते लो को [illegible] अलंकार॥ मत आछो गांठ दोहा मनसा वाचा कर्मना बिहसन चित न न लेष॥ च सन चातुरी आतुरी आछो गा

ठविते पर२९टी०का॥ मनसामनको व्योपार॥ वाचा बानीको॥ कर्मना क्रियाको॥ विहसन मंद हास॥ चितवन अरु मसौं देषना
२३
13
चलनमें इगमन॥ चातुरी औरुके चित्तको प्रसन्न करबो॥ आनुदीदीन ह्वैवो ए आठो गाटकामके प्रगटकरनकारी है सो इनमें वि
नठ कानै है जैसी चाहियै तैसी नहीं॥ मूल ग्रकास घट ष्ट सवैया॥ सोहकों सोच सकोच न पाच कोंमोलत साह भयेम कर चोरी॥ वेनन
वेचकताई रची रतनै ननके संग जोलत जोरी॥ लाज करै नमैरै हित हानतें आनन औरे प्रियजानके भोरी॥ नाहन केश्रवसा षजिने
वक जेसिन सौं दुछवे भषको री॥ १७ टीका॥ आठो गांठके नाम अ पम दोहामें कहे है याहीतें अ पम कवित्तमें न हीं जितायें यामें चित
जिनको: वतहै॥ नाइकाम षी सौं कहत है॥ हे सषी मैं हैं तो यातें हैं हम औरु पास नहीं जाहुगो पैरहत नहीं॥ सो यह न ही विचारत सो इनके दूर
करे नाइका जरोक है॥ यातें सोच विचार नहीं है॥ रहत नहीं यामें त्यागी॥ बुरे कहन को गनत नहीं यामें लाज गारीकी नहीं यामें यह
लक्षन जान्यो॥ सोच मनको काम ही है यामें मनसा॥ औरु इनको पंचन कीसं कोच लज्या नहीं औरे हे हत उगत है सकुचत नहीं॥ यामें
विहसन॥ पेचनमें वेठनलें कुलीन जाने॥ ~~औरु इनको पंचन~~ औरु चोरी करिके साह भये मोलत है॥ औरु ई हासा हतें धनी औरु चतु
चतुराने॥ चोरी तें तरुन जाने॥ मोलनमें चलन जानी॥ औरु वेननमें वचकता की ~~...~~ रची है सर्व मान नीतिको वचन कारिठ
गत है॥ ईहा वाचा॥ ठगनतें समी॥ कोमल वचन कहरि सटारत है यातें॥ औरु नैननुके संग ही मोलत है जित कोनैन जात है तित ही
कोजात है॥ काहू की संका नहीं करत॥ यामें चितवन॥ औरु मुलजाने॥ औरु मोरकी लाज नहीं यह भी लक्षन याहीमें जानीये॥ औरु लाज
नहीं करत यामें कर्मना॥ औरु हित ~~...~~ नहीं करत॥ क्यों जानत है नाइका मेरे रूपपै रीझी है यामें मंदहास॥ औरु देषोदोष
नमानई यह लक्षन भी जान्यो॥ औरु हे सषी औरु इनको जीयमें भोरी जानके क्या मुग्धा जानके फेर आय के अहत है॥ ईहा हट आव
नमें हीनता आगटत है यातें आतुरी॥ भोरी जानन वेते चातुरी॥ औरु के लक ला प्रवीन जाने॥ औरु जिनको साष नहीं है जैसे जो है तिन
सौं बुकके क्या व्यर्थ वचन कहके अपने भषको कौन दुषवैदु षावे री सषी॥ जैसे नैन सौं मोन ही भली है॥ साष को गनत नहीं यामें
अभिमानी जाने॥ औरु पोचनकी सकुचन हीं यामें ध्वनि यह इनकी बात पाचन हू में प्रसिद्ध है यातें प्रकास॥ पंचमी विभावना लंकार॥
चोरीके कर्मतें साहकी उतपत्त विरुद्धतें कार्ज यातें॥ मूल दोहा बरनत कवि नाइक सबै नाइक हम अनु सार॥ तव यान नाइकनाइका
मन अरु वचन तप्रकार॥ १८॥ टीका॥ कवि नाइक श्रेष्ठ कवि॥ सर्व नाइक मनकू लादिक॥ सो इसमन सार वरनो जैसे वरने है सब सर्व

गुन लाय इनो नाइका स्वकीया है ताको बहुत प्रकार करके कह्नो ॥ इति श्री मद्राजाधिराज महाराजा श्री फतेसिंह विरचतायां रसिकप्रिया टीकायां फते
मर्गेंद्रचंद्रकायां चतुर्विधनाइक वर्णनं नाम द्वितीयो प्रकास ॥२॥ अथ कवित्त ॥ तामरस दाम अभिराम पद्मा कर में रूप अवलोक अकला नी तक
चानी है ॥ अथ मगराज फने पूरव डरे फन की ज्वाल में निसा लगा लपी रसरसा नी है ॥ कीने सोक भौ कनम लोक हिय कोक निके दीरघ दिवा
कर की दीपति विलानी है ॥ कहे साखम दनदी जे अंबर बड नरा धे सब निसा संभव दिव मनि तजानी है ॥१॥ अथ नाइका जाति ॥ मूल दोहा ॥ अथ
म पद्मनी चित्रनी जुवती जात प्रमान ॥ बहुरसंषनी हस्तनी केशव राय वषान ॥१॥ वार्ता ॥ सुगम ॥ पद्मनी लक्षन मूल दोहा ॥ सहज सुगं
ध सरूप शुभ प्रेम पुन्य सुष दान ॥ तनु तनु भोजन रोस रति निंद्रा मान वषान ॥२॥ वार्ता ॥ जिसमें सहज की सुगंध होय ॥ सहज को सरूप
होय ॥ सहज की शुभ होय ॥ सहज को प्रेम होय ॥ सहज को पुन्य होय ॥ सहज की सुषदाइक होय ॥ और जामें तनीव सुतनु क्या सूक्षम
होय तन सरीर ॥ औ भोजन ॥ औ रोस क्रोध ॥ रति प्रीत ॥ औ निंद्रा नीद ॥ मान ए व सू सूक्ष्म होय ॥ मूल दोहा ॥ सलज सबुद्धि उदार म
दुहास वास सुविसेग ॥ अमल अमोम अनंग भू पद्मनि हाटक रंग ॥२॥ वार्ता ॥ सलज क्या लाज सहित होय ॥ सबुद्ध क्या बुद्धि सहि
त होय ॥ उदार दान को सुभाव होय ॥ मदु कोमल हास्य होय जाको ॥ औ वास वस्त्र सुचि पवित्र होय अंगरा में जाके ॥ अमल निर्मल
अलोम रोम नंतेर हत जाकी अनंग भूजो न होय ॥ फेरि पद्मनी को हाटक स्वर्न सो वरन होय ॥ पद्मनी को उदाहरन कवित्त ॥ हस
त कहत बात फूल से झरत जात ओठ अरु हाव भाव को कहै सी क दिका ॥ पन्नग नगीक मादि आभरी सुरी निहारि वारि डारौ किन्न
री मरी गवार नाइका ॥ तापै हौ कहा कहौं गाउ बलजाउ के शोभा पर चीवि धुरक षंज लोचनकी तारिका ॥ भौर से भ्रमत अभिलाष
सौ अभात दिव्य चंपे की सी कली वृषभान की कुमारिका ॥३॥ वार्ता ॥ कहूं श्री कृष्ण ने सषी सौं कह्यो इतौ तूं मो को श्री राधा जू को मिलाव
तब सषी कहत है है हरि राधका ऐसी है जब हसत है और जब बात कहत है तब जाके फूल से झरत है यामें कोमलता स्वेतता सुवा
स तातानी परत है कोमल हसन में मृदु हास जान्यो ॥ कोमल बचन ते प्रेम जान्यो फूल करन तें सुषदाइक ॥ औ सुगंध ताजानी ॥
और जामें गूढ छिपे हुये भर बहुत हाव भाव है ॥ कोकजो है काम सास्त्र ताकी कारिका सी है ॥ जामें आभूर पोरे होय अर्थ बहुत हो

१४ दसो कादिकाक हिये औसी है हावभाव जामें वहत है आपसरुस्म है॥ हावभावनतें सब ढुजानी॥ केकरीततें अमंलता॥ कारका
14 की उपमातें तनतनु जान्यो॥ फेरु कैसी है पंनगी सर्पन की औ नगी पर्वतन की जे है कुमारि पुत्री पार्वती इत्यादिक॥ आसुरी असु
रन की सुरी देवतन की सो जिसरा धाजी को निहार के क्या देख के सर्व मे जापर वार देउ॥ औ किंनरी किंनरन की नरी मनुष्यन
की जे गवार नारि है सो क्या है अर्प कि कछु नहीं जिन के तन में सोभा किये ते भी ऐसी नहीं होत॥ पंनगी वारन में स्तस्म मोजन॥ नगी
में तनु रोम॥ आसुरी में तनु रति॥ सुरीन में तनु निंद्रा॥ किंनरी वारन में तनु मान जान्यो॥ नरी गवार कहे सहज सरूप जान्यो॥ औ फेरु
कैसो राय कुसम मे तुमारे रूप परसौं वलजाउ॥ तिस राधिका के पास मैं कहो को है के जाउ मेरे पास तो पहु च्योन ही जात वा को कोउ प्रभा
व है ईहा प्रत्यवान जानी॥ वह तो विध ब्रह्माने एक अद्वितीय व्र[illegible]ज के नैनन की तारिका पतली रची है॥ लक्ष्माकरि व्रज के लो
गन के नैनन की तारका जानीये॥ अर्थ कि तारिका का हुतें लई न ही जात या में मिलनो दुर्लभ जितायो॥ औ सलज हू जानी॥ औरु कैसी है
साष भातन के क्या बोलन के मिलन के हसन के वैठन के इत्यादिक जे है अभिलाष सर्व के सो वा पै भौरुन की न्याई भ्रमत है पै परे का
रि के न ही होतु क्यो नाइका दिव्य सुंदर चंपे की कली सम है चंपकली पै भौरु वैठत न ही याते॥ ऐसी वृषभानु जी की कुमारका पुत्री श्री
राधा जी है॥ अभिलाषनतें सुभ जानी॥ दिव्यतें सुचरुच॥ चंपकलीतें हाटकवर्न औ तन की सहज सुगंध जानी॥ वृषभानु की पुत्री तें
उदारता जानी॥ या ही में जितायो मेन्ह्न अधिक वार्ता वासों कैसे कहो वह तो राजा की पुत्री है॥ औ कलीते श्रेष्ट तरप द्मनी जानीये॥ औरु
पद्मनी को मलनी की उपमा है सो एक देस वर्ति है॥ क्यो असाधारन धर्म है साधारन धर्म नहीं दोऊन में॥ सो सहज सुवास औ रमको
ला गो यह तो पुष्प कर्म दोऊन में है सो जा की ऐसी देह है ताही के एक सुभाव जानो॥ याते सब कु उदारादि कलसन चैतन वाई का ही में कहे
कमलनी में नहीं है॥ औरु हसवो फूलनसु बोसु भाव वरननतें सुभावो क्ति अलंकार॥ अलचित्र मीलक्षन॥ दोहा॥ नृत्य गीत कविता
रुचे अचल चित्त चल दृष्ट॥ वह रति अति रति तिलरत गोल मधुकरा घकी सृष्ट॥४॥ वार्ता॥ नृत्य नाच वो गीत गायवो॥ औ कविता एजा
को रुचै या भावे॥ औ चित्त जा को अचल निश्चल होय॥ दृष्ट चल चंचल होय॥ औरु वह रति जो है सात तिन में जा की अत्यंत रति

प्रीति होय॥ और कुंजा को संकर तको जो है जल कामजल ता में मधु सहेत ता की सुगंध की दूसर चमा होय॥ पुनः मूल दोहा॥ विरल रोम तन मदन मद कमल सुभाव
लसत कलह कुवास मित्र चित्र प्रिय चित्रनी वरनो केसवदास॥ ६॥ और कमदन्यक हु जो न सो सूक्ष्म होय और ता पै विरल कप्यो ये बार होय॥ तिन पै
बार कहे संषनी में लक्षन मिलत है याते सूक्ष्म को अर्थ कीजे॥ और कसे पूर्ण जो है कुवास सुगंधै सो जाको भावत होय॥ और कि मित्र को चित्र प्रिय अति
प्यारो होय॥ ऐसे चित्रनी को वरनो॥ मूल चित्रनी को उदाहर्न॥ बोलवो बोलन को सुनबो अविलोकन को अविलोकन जो ते॥ नाचवो गा
यवो बीन बजायबो रीझ रिझायको जानत तो ते राग विरागनि के परिरंभन हास विलास मिलै तर रति कोते॥ तो मिलतो हरि मित्र हु को सखि ऐसे
चरित्र जो चित्र में होते॥ ७॥ टीका॥ नाइका मित्र को चित्र देषत है तासों सषी कहत है॥ जो ते गुन साक्षात में देषे हुते सो चित्र में कहा है को
न से गुन चतुराई समेत बोलवो और बोलनि को सुनबो और कुअविलोकन क्या चतुराई सौं देषवो॥ सो तू या चित्र में अविलोकन के
क्या देषत तो ते कोऊ पै जो गुन साक्षात में हुते सो चित्र में कहा है॥ बोलवे में कविता विलोकवे में चंचलदृष्टि जानी॥ और नाचवो
गायवो रीझवो और नाइक को रिझायवो॥ सो इन बातन को को जानत तो ते कहा सो सौं अधिक कौन जानत है तू ही जानत है कि ए गुन सी
या में नहीं॥ इहां नाचवे में नृत्य॥ गावन में गीत॥ रीझवे में अचल चित्त जान्यो॥ रिझावन में विरल रोम और मधु की सुगंध जानी॥ और कनि
के क्यानी के सुंदर जे है नाइक तिनसौं राग प्रीत सौं परिरंभन मिलनो विराग जो रावरी सौं मिलनो और हास विलासन तें मिलनो ए सर्व
चित्र में गुन रति को कहा रती भरू हू ते होते तो हे सषी हरि मित्र कौं कौन मिलते तो चित्र ही सौं मिलि रहते जो ऐसे चरित्र चित्र में होते॥ सो है नहीं
याते मित्र को चित्र मिल यह भावार्थ॥ परिरंभन तें वहू रत में प्रीति रति जानी॥ हास विलासते भावत सकल सुवास यह जान्यो॥ चित्र
देषनतें मित्र चित्र प्रिय है यह जान्यो॥ और चित्रनी चित्र समान कही है पै ए लक्षन चेतन ही में बनत है चित्र जड में नहीं इहां हूं एक दे
सवर्ति उपमा है अरु साधारन धर्म है॥ जो तो परते संज्ञो नालंकार॥ मूल संषनी लक्षन॥ दोहा॥ कोप सील को विद कपट सत्र ल सर्व लोम सरीर॥
अरु नव सन न षदा नख चिलिज निसंक अधीर॥ ८॥ वार्ता॥ कोप को सील सुभाव होय जा को॥ कपट में कोविद प्रवीन होय॥ और कुंजा को म
त ल क्याग ल सहत और सलोम रोम न के सहतैं होय॥ अरुन लाल जो है वसन वस्त्र और नखां को दान तिनमें जाके रुच होय॥ निलज लज्या
हीन होय॥ निसंक निर्भै होय॥ अधीर धीरज तें रहत होय॥ पुनः मूल दोहा॥ शाग गंध गत मार जल तत पत भूर भग हो ता॥ सुरत तार न अति
सरीर

१४ संषनीवरनो कछिजनलोय॥११॥ छागवकरा ताकी गंधके सहत जाको मार जलक्या कामजलहोय॥ श्रो भग जाकी भरवजुतत तहोय॥
श्रो ऊरतिकबिके श्रत्यंत श्रारतक्या दुषित होय॥ श्रैसे संषनीको वरनो॥ मूल संषनीको उदाहर्न॥ जात नहीकदलीकी ग
15. लीन भली विधसौं वदरी मुह लावे चाहेन चंपकलीकी थलीनलनी मलनीकी दिसान सिधावे॥ जेको ऊके शवनाग
लवंग लता लवलीं श्रवलीन चरावे॥ षारकदाषचषायमेरे को ऊऊ दिहि ऊटकटारो ई भावे १०॥ टीका॥ सषी रवचन
संषनीकी बात ऊटनी पै नारकेकहत है। हे सषी ऊटनी कदली जे हैं केले तिनकी गली मैं नही जात॥ संषनीकदलीसी हैं जंघा
जिनकी तिनपै नही जात॥ फेर ऊटनी भली प्रकार सौं वदरी वेर तिनको मुष लगावत है॥ संषनी वेरनसे रोम है जिनके ति
नको मुह लावत है॥ फेर ऊटनी चंपकलीकी जो स्थली है ताको नही चाहत॥ संषनी चंपकलीसी नाइकानिको नही चाहत॥ फेरव
ह मलनी जो है मलीन ऊटनी सो नलनी कमलनीकी दिसा तरफको न सिधावे क्या नही जात॥ संषनी नलनीसी पदमनी ताकी
तरफ नही जात॥ फेर ऊटनी केसी है नाग लवंग लता कहि नाग लता पानन की वेल लवंग लता लौगन की वेल॥ श्रौरु लव
ली लापचीया तिनकी श्रवली पंगति तिनमें भी कोई वाको जायके चिरावे पै वे वाको नही भावत॥ संषनी को इनके समान सु
गंधवती जे नाइका ते नही भावत॥ फेर ऊटनी को षारक छुहारे श्रौ दाष इनको ऊचषायमेरो पै ऊ दिहकहता ऊटनी को ऊ
टकटारो कंटियारी बूटी सोई भावत है॥ संषनी को षारकदाषतें मधुरभाषनी नाइका नही भावत॥ कंडयारीतीषन भावत
है॥ इहां संषनी हसनी इनके सुभाव तियनसम नही पसू वो समहे सोई उदाहर्न में कहे॥ श्रनुक्तिश्र लंकार॥ श्रथ हस्तनील
छन॥ सरल श्रंगुरी चरन मुष श्रधर भ्रकुटि कटि कुच बोल मदन सदन रद कंधरा मंदचाल चित लोल॥ ११॥ वार्ता॥ एतें श्रंग जा
केसरल मोटे होय॥ श्रंगुरी चरन मुष श्रधर भ्रकुटी कटकमर॥ बोल॥ मदन सदन जोन॥ रद दंत॥ कंधरा कंधो॥ श्रौ
लोल रुआकी मंद चाल होय॥ चित्तचंचल होय॥ मूल पुनः दोहा॥ खेद मदन जल दुरद मद गंध तम्फरे केस॥ श्रतितीछन वहु लो
मतन मनहस्तिनियह भेस॥ १२॥ वार्ता॥ खेत श्रसेद श्रौ मदनजल काम जल एद्रुरद हाथी मद समान गंध वोरहो पजाके॥

औभूरे जाके केस होय॥ औरु अल्पंत तीक्षन जाके तन पर बहुत रोम होय॥ औसे हस्तनी को भेस बरनो॥ उदाहर्न सवैया॥ सब
देह भई दुरगंध मई मति अंध भई दुख पावत कैसे॥ कंचुक सालस सें लोम बिसाल से हैं श्रुति ताडन के श्रम बोलन जैसे॥ अलि जे प
मलनी नलनी तज के करनी के कपोल नि मंडत है से॥ छित छाक दे राज सिरी बस पाप निरे यद राज बिराजत जैसे १३ टीका॥
कवि को बचन॥ हस्तनी को हु पनी कदि के बरनत है॥ कैसी है दोऊ॥ सर्व देह जिन की दुर्गंध षोटी कगंध तिससो मई मिली
हुई भई है॥ तिन पै मति अंध कै से दुख पावत है॥ मति के अंधे पकु ष हस्तनी पर औ मति अंध भ्रमर हुपनी पर एक के से दुख
पावत है अर्थ यह सुख न ही पावत॥ फेर दोऊ कैसी है जिन के रोम साल कांटे तिनोसें भी बिसाल दीर्घ से है॥ औ श्रुति कंबू
कान तिन को ताडन क्या पी रा दे नवारे बोल है जिन के॥ औनेसे षोटे है॥ फेरि अलि भ्रमर के स मान जे है मलनी मलीन पुरु
ष ए दोऊ नलनी को तज के॥ नलनी के दै अर्थ एक कमलनी ता को तो भ्रमर तज के॥ दूजो अर्थ पदमनी ता को मलनी पु
रुष छाक के ते दोऊ करनी के कपोलनु पर कैसे तिस प्रकार नायक के मंडत है सो आप पावत है॥ करनी के दै अर्थ॥ कदि हाथी
ता के नी के श्रेष्ट कपोलन पर तो भौर॥ हुपनी को अर्थ के हे दूषन है को वाके कपोरन में मद नही होत॥ याते हाथी के करे
दूजो अर्थ करनी हस्तनी ता के कपोलन पर मंडलनी पुरुष ए दोऊ ते से सोभित है कैसे जैसे षोटे न्याय के कुरन वारे राजा
छिति अथ्वी की राजश्री राज बिभूतता को छाक के पाप के बस भये निरे पद नर्क स्थानन में बिराजत है ऐसे मलि ये मलनी
पुरुष राजत है॥ दृष्टांत अलंकार॥ हस्तनी के स्कुत तन को बनाव बरन्यो है मिरे हु ये गन जे हा मे होय वा को मिश्र नायक
हत है॥ दृष्टांत अलंकार॥ अथ परकीया लक्षन॥ दोहा॥ संपति बिपति जु मरन में सदा एक मन हार ताही स्वकीया जानीये
मन क्रम बचन बिचार॥ २४॥ वार्ता॥ स्वकीया कैसी होय संकेस्यानि रूप होय पति जाके व्या वेद रीत सें बिवाह कियो होय॥ और क
बिपति के बिषे अपने पति को मन बच कर्म करि के सदा को आपे सुखदायक होय वे वा कदि के औ स्वामि करि के॥ औरु मरन हु में

पतिको सुखदायक होय क्या उत्तमा तिदेय सो स्वकीया ॥ मूल दोहा ताना इक की नाइका ॥ पुनि तीन प्रमान ॥ स्वकी
या परकीया अवर स्वकीया परकीया न ॥ १४ ॥ वार्ता ॥ ता नाइक की कहा चतुर विचनाइका जो पाछे कहि आये है तिन नायिका
इकाअं थन मे तीन प्रमान है ॥ एक स्वकीया दूजी परकीया तीजी न स्वकीया न परकीया सो कौन सामान्या जानीये ॥ यामे
रस नही याते नाम नही कह्यो ॥ यह दोहा प्रथम दोहे के की ठौर पढनो ॥ मूल अथ स्वकीया भेद ॥ मुग्धा मध्या प्रौढा गति
तिनके तीन विचार ॥ एक एक की जानीये चारि अनुहार ॥ १५ ॥ वार्ता तिस स्वकीया को ॥ ति अवस्था करि के तीन भेद है मुग्धा मध्या
मध्या २ प्रौढा ॥ के दिए एक एक के चारि अनुहार है ॥ यो बारह भेद है ॥ मूल मुग्धा भेद दोहा ॥ नवल वधू नव जोवना नवल अनंगा ॥ ना
मा ॥ लज्या लिये जु रति करे लज्या प्राय सु वाम ॥ १६ ॥ वार्ता ॥ ए चारि भेद मुग्धा के है ॥ नवल वधू १ नव जोवना २ नवल अनंगा ॥ ३ ॥ औ जो लज्या को
लिये ह्यये रति को करे सो लज्या प्राया मुग्धा ॥ मूल नवल वधू मुग्धा लक्षन ॥ दोहा ताही सो मुग्धा नववधू कहत सयाने लोय दिन दिन दूनी दुति
है बरनन सके कवि कोय ॥ १७ ॥ वार्ता ॥ ताको मुग्धा नववधू कहत है सयाने क्या कवि लोक जे है ते ॥ जाकी दिन दिन दूनी दुतिसो भाव है ॥ जैसे
कौन कवि है जो बरनन सके ॥ उदाहरन सवैया मोहवो मोहन की गति को गति ही पढि वैन कहा धो पढैगी औप उरोजन की उपजे दिन का हि मढै
गी यान मढैगी ॥ नैननि की गति गूढ चलाचल केप्राव दास प्रकास चढैगी माई कहा यह मायगी दीपति जो दिन द्वैक इहि भाति बढैगी ॥
१८ टीका ॥ दिन प्रति दुति को बढती देष के सषी स षी सो कहत है ॥ हे सषी मोहन जो है श्री कृष्ण तिनकी गति जो है अवस्था ताके मोह
वे को एक यानै गति क्या चाल ही पढी है सी षी है ॥ और कु मधुर वचनो मे क्या नहीं पढैगी धो को वितर्क अर्थ ॥ और कु या के उरोज जो है कु
च तिनकी औपजो है उपमा सो दिन प्रति उपजत है ॥ सो यह उपमा कासो ढकी जायगी औ गीया चोली ता सौ तो नम ढैगी क्या न ही ढकी
जायगी ॥ और कु या के नैनन की गत अरू गूढ कहत है ताछिपी हुई चलाचल क्या चंचल है सो प्रागट्य तै नैनन की गति प्रकास कहिये कान
तहा ताई बढ जायगी ॥ हे सषी इतनी तो दीपति या मे माई है क्या समाई है जो यह दीपति द्वैक दिन इसी प्रकार बढैगी तो कहा मायगी क्या
कहा समावैगी तन मे तो न ही समावैगी ॥ दिन प्रति दुति बढनते नवल वधू मुग्धा भई ॥ औ कुतन आधार कु समौ दीपति आधेय आधि
क होनी है याते अधिकालंकार ॥ मूल नव जोवना लक्षन ॥ दोहा सो नव जोवन भूषिता मुग्धा को यह वेस बाल दसा निकसे जहां जोवन को पर

बैस॥ २०॥ वार्ता॥ सो मुग्धा नवजोबन भूषिता है जाके तन में जोबन को आवनो होय॥ औ बालदसा क्या बाल अवस्था ताको
निकसबो होय॥ दोऊ जामे होय याही को वयसंधि कहत हैं॥ मूल॥ कवित्त केशन फूलनचीभ कुटी कटिल दनितंब लई बड़ वा
ली बैननि सोच सकोच रू नैन निछूट्याई गति की चलवाली॥ यो सिक धीरधरै न धरौ अब लै तुम को मिलवो मेन माली॥ वाके
अपाननि कारन को ऊरु आये हैं जोबन के अवताली॥ २१॥ टीका॥ नाइक ने अपम सखी को कह्यो जू तो तूं मोको नाइका को मिलावत
बसखी का कोल करि कहि कहत है॥ हे के शव कूक सखी वा नाइका की भकुटी भौंहै प्रफुल्लित है के न नची है नहीं नची॥ औ कबा की क
बकुटिका
लीक्यौ
टि कमर के वजूत का लकी जो वा लक अवस्था की तरफ जु ती सो नितंबो मे लूट लई है नहीं लूटी॥ औ रू वा के बचनो में सोच क्विचारु
नहीं है॥ नेत्रनि में सकोच रह्या है नहीं है॥ औ रू गति चालकी जो चलन चाली चे चलाई है सो छुटि गई है नहीं छूटी॥ किंवा गति अ
वस्था कौं न सीवा लक अवस्थाति सकी जो है चल चेचल वाली क्या चाल सो छुटि गई है नहीं छुटी॥ तुनके लिये चालको चा
ली पड्यो॥ हे कृस्न यो सिक क्या एकदिन तुम धीरज को धरो॥ न धरौ अब क्या अबही मोको न पकरो वाके स्यायवे के निमित्त
॥ हे वनमाली श्रीकृस्न लै तुमको क्या तुमारे को लै लगी है कहत हौ अबही मिलाव॥ सो मैं वाको मिलवो क्या मिलावती हौं तुमे एक
दिन धीरधरौ॥ एक दिन के अवसर से मे जोबन को आगम वालदसा को निकसवौ जानीये॥ वा नाइका के ऊरु मे जो बन के जो है अ
कौन
नाली चु बदारे कुच सो ~~आवे हैं उनोने~~ अयानपन के निकारवे को आये है अ जो अयानपन को निकास्यो नहीं याते कालीमत
करो॥ अब ताली उपमान तिनोते कुच उपमेय जाने याते रूपकातिसयोक्ति अलंकार॥ का को निहरू है॥ मूल नवलअनंगा लक्षन
दोहा॥ नवल अनंगा होय सो मुग्धा के पावदास बढले वो सैवाल विधि हिसै तैसे मविलास॥ २२॥ वार्ता सो नवल अनंगा मुग्धा है॥ जो
वालक की विधि बढले औ वां ले है से औ तैसेक्या करे॥ सवि लास सा पविलास के॥ मूल उदाहर्न॥ चेच रान हूजे नाप अंचलन घू
जै हाप सो बैनेक सारका औ सक तौ सनायो जू॥ मंद करो दीप द्रुति चंदमुख देखि यत दोरके इसाय आऊ द्वार त्यो दिषायो जो अ
स्याम कुम पामेज्यु॥ २३॥ टीका॥ सखी नाइका की वार्ता सखी सौ कहत है॥ हे सखी नाइका ने नाइक सौ ऐसे वचन रैन मे कहे॥ हे नाथ

१२ चंचल मत हूजीये ॥ मेरे अंचर वस्त्र को अपने हाथसों न स्पर्श करिये ॥ क्यों नेक कहूं तार तीक्सा शिकासोय लेय ॥ औरु रू कहो है तो तो सो तो सुबा
17 य दियो है ॥ औरु दीपक की जो है दुति सोभा सो मंद करत हो क्यों या में चंद्रमा सो मुष मेरो दिषाई देत है याते ॥ औरु द्वार त्यों दिषायो कहा द्वार की
तरफ जो दिषाई देत है सो भी दोस कछु राय आवो ॥ किं वा मुष को मोष की जे अर्पके लिये ॥ गुरु लघु लघु गुरु होत है जिज्ञासा अनसार ॥ मोष जो
है मोघा ता में चंद्रमा की दुति दिषाई देत है सो छिपाय आवो वह मोघा द्वार की तरफ दिषायो नाइकाने अंगुरी सों ॥ किंवा दिषायो नाम कोई
झरोषे को कहत है ॥ द्वार की तरफ जो है झरोषा ता के जे हैं मुष क्या छेक तिन को मेदु राय आऊ क्यों इन में चंद्रमा की दुति दिषाई देत है
याते ॥ किं वा झरोषे में चंद्रमा के मुष की दुति लीजे ॥ औरु मृगज मृगन के बालक ॥ मरालहंसन के बालक इन्कों मैं बाहर निकास देत हो ॥
हे के प्राव कुरुस जो तुम को नीको लग्यो है सोई मो को भायो है पै प्रपमर और कार्ज में करि लेवो ॥ ईहा बाल विध को बोलवो जान्यो क्यों रुक
सार कालो बोलत है मृगज मराल बाल नाहीं जानत इन को निकार देनो जो नाइकाने कह्यो या में बाल विध को बोलवो जान्यो ॥ हे सषी
जैसे जो छलके निवास घर नाइका के वचन सुने तिन को विलास सो रुनके नाइक ने सुरत संभोगतें सौं गुनो क्या मानें तगुनो सुषपायो है
तो सुरत सुष नैं पायो क्यों छल करभाज गई याते ॥ छल के वचनों में सुर जान्यो ॥ औरु जिन को रुनके सौ गुनो सुष पायो सो वचन ध्वनि
सौ मुसकान के सहत जानीये या में हसबो ॥ विलास पद वीच ही है ॥ औरु अंचर को स्पर्श न ही चाहियो याते मुग्धा ॥ या ही तें य लवो जान्यो क्यों
मुग्धा को खेल प्रिय होत है ॥ याते जान्यो खेल ही में चंचल चित्त भये पर एवं वचन कहे ॥ औरु छल कर भाज वोई छ सा ध्यो याते पायो तिन्न लंका
र ॥ मूल लज्या प्राय रति मुग्धा को लक्षन दोहा मुग्धा लज्या प्राय रति वरनत कविइ हरी त ॥ करे जु रति मति लाज सौ पति हिव ढावै प्रीत ॥ २५ ॥
वार्ता लज्या प्राय रति जो मुग्धा है ता को कवि इह रीत सो वरनत है जो अत्यंत लज्या सौ नाइक सौं रति करे औ पति को प्रीत लव ढावे ॥ मूल या
को उदाहर्न ॥ सवैया ॥ वो लीन हौं वे वुलाइ रहे हहरि पाय परे कहूं औ लिये गोड़ी ॥ के प्राव मेटवे को भर अंक घुमाय रहे जक मैं न फिरयो री ॥
तरधै चितैवे को केतो किये सिर चाप उनाय अंग छ निठो री ॥ मै भर चित्त तऊ चितयो न रही गहिने न निसा जनि गो री ॥ २६ ॥ टीका ना
हरि इकासषी सों कहत है ॥ हे सषी वे जो हैं श्री कृस्न सो मो को वुलाय रहे ॥ पर मैं न ही वोली ॥ फेर मेरे पायन में परे ॥ औरु मो जी भी ठोरी कहा फोरी
पसारी मेरे आगे कहा ज्यो यह वात हमै मांगी दे हु तं वो लह म सो पर मैं न ही बोली ॥ ईहा वुलाये वोलती तो पायन पर वौन होतो पाय परे
वोलती तो झोली पसार वो न होतो ॥ याते मन वोलन नें पति को प्रीत व ढाई ॥ औरु हे सषी मेरे संग भेट वे को कहा मिलवे को श्री के प्राव
जो है श्रीकृस्न मो को भर अंक को गोदी में लैके मेरी जक जो है संका सो घुमाय रहे क्या मो सौं कह्यो ते भी हम सौ मिलयह मिलवे की संका

ईहां अेक मे नाइका आइ तो आलिंगन नामाव हरतक री जानीये अंतरतन ही करी क्यो लसनमें अति लाजपद धरयो है याते अंतरतन
हीं वनत॥ औ मेरो मुष अपने सन स्रुष राष वेके लिये कित नोई जतन नाइकने कियो॥ अपने दो ऊ अंग ठनिसो तो मेरी ठोडी उठाई
औरु ऊपरते मेरे। सिर को चाप लियो दवाय लियो॥ बाये दाये दो ऊ हा पकरि के यास कार मेरो मुष सनमुष राष्यो॥ पर मैने तऊ का
ता तो भी चित भर के नाइक की तरफ नही चितयो क्या नही देष्यो॥ लाजनि को अर्थ लाज सोंनी सषी अपने नेननि को मंगो ही कहता
गोठ निमें दे रही॥ अर्थ किनी चाई मुष राष्यो॥ लज्या कारन नी चो मुष राषवो कारज॥ कारन कारज में लज्या संचारी के हे रस दोष केनाम
नही॥ लाजतें लज्या आय रति मुग्धा भई॥ औ बुलावन के हेत बुलायवो इत्यादि किये वोलवो का जन भयो याते विसे षोक्ति अलंकार॥ अर
अ पमुग्धा को सपन दोहा मुग्धा सोय रहे नही पिय संग स्रुनडू स्रुजान॥ जो कयो ह सो वै सषी स्रुषन दिता हि समान॥ २८॥ वार्ता॥ मुग्धा नाइ
का पियके संग नही सोय रहै॥ हे स्रुजान चतुर तुम सनो॥ औरु जो कयो ह कहता किसी प्रकार सषी नाइक संग स्रुवावै॥ तौ के समान करो
मरा वर औरु कोई नही॥ उदाहर्न॥ पाव परे मनुहार करे पालिका पर पाय धरे भय भीनि॥ सोयाई कहि के प्रान के से हू कोर हू कोर क सोहन की ने
साहस कै मुष सौं मुष ह्वै छिन में हरि मानुस वे स्रुष लीने॥ एक उसास हि के उससे सकरे ईस्रु गंध विदा करि दीने॥ २९॥ टीका॥ सषी २ वचन
हे सषी नाइक नाइका के पाइ छुमें परे औरु सर्व मनुहार करे अर्थ जो कह्यो सो मान्यो तव नाइकाने अपने चरन पलिका पै क्यासे ज्या पर नाइक कीरे
धरे॥ भय भीने नरके सो सनुगत है॥ औरु नाइका कोर कोर क्या करोह कर दोह सो हे स्रुगंदे तिनके किये तेंतव सोइ गई तव नाइक ने
साहस धीरज करके औरु अप नो मुष नाइका के मुष सों छुवा यके क्या मुष चुंबन करके एक छिन में हरि ने सर्व स्रुष मान लियो॥ भ्रुति आद
की सोहै नो सर्व करी क्र तो मुष चुंबन की सो हन्नक री कृती याते मुष चुंब्या यह ध्वनि सो जान्यो॥ कौ नाइका को जो उसास आयो वो एक ही उस
स के उससे कहिये छोडे से नाइक ने सगरे ई स्रुगंध विदा कर दिये॥ अर्थ यह एक उसास ते अैसी स्रुगंध फैली वा मे सपूर्ण स्रुगंधा पाये
स्रुषमान बे में उसास हेत क स्रुगंध है याते दूषन नही॥ किं वा का कोन कदि करन है सगरे ई स्रुगंध विदा कर दिये नाही विदा करे॥ सगरे ई स्रु
गंध जो इनने पाये है नाइका के स्वास तें ईहा मुष वास की अधक ता तें पद्मनी जानी ये॥ ~~पायपर वौ इत्यादिक ... नायका~~
~~... करीये को॥~~ औ रूपा य पर वौ इत्यादि उपाय सषी ने किये याते सषीको सवा मवो जान्यो॥ औ सं नेस्रु ष पूरन कर न में स्रुषन दिता हि समा
न यह लसन जान्यो॥ औ पाय परवौ आदि कारन पलंग पै चरन धरवौ कारज भयो याते हेत अलंकार॥ मल मुग्धा को सवेन दोहा मुग्धा सरत
[illegible]

करै नहीं रूपने रूप समान॥ छल बल कीने होत है रूप सोभा की हान॥ २९॥ वार्ता॥ मुग्धा नाइका सपने में भी रूप समान के पिय के संग रू
१८ र त जो है संभोग सोन करे॥ औरु छल अपवा बल करते जो वा सौं नाइक सुरत करे तो रूप की औरु सोभा की हान होत है॥ यथा कवित्त॥ रूप
18 दैसखीन बीच दै कैसी हु याप के सवाय कछू सुखाय वस की नीच रख रहू है॥ कोमल सम नाल का ही मल्लिका की मालिका ही बाल का जु नारी मीरु
मान रुके परूहै॥ जानै न भयो बिभात कै रावरू नै को वात देखो आन गात जात भयो कि घो अरु है॥ चित्र सी जु राखी यह चित्र नी बिधि जगत
कहा धो नए रस कयामें को नरूहै॥ २९॥ टीका॥ सखी नाइक सौं कहत है॥ हे हरि तुम ने सखीन को रूप देखे औ बीच दैके औरु जु है
दिवाय के औ कछू आम स्त्री की वस रूप बनायके औरु बायक दिके वस करी है वरवश जोरावरी सौं॥ किंवा सखी याने रूप देकर के औ
क्या बीच अंतरा दे कदिवै कछू औरु वार्ता को मिस करि के औ सो है दिवाय के औ कछू वाय के औरु वायके नाइका तुमारे वस करी॥ सो
यह वरवस जोरावरी है क छु रस नहीं॥ फेर नाइका के ही अनाल का कमल की के हमाम को मल॥ औ मल्लका चवे ही तिस की मा
ऐसे लिका माला के सम॥ ऐसी बालका नवोढा नाइका जो तुमारे नैमीं कुमारी क्या मसल डारी सो यह मनुष्य जात हूती कि परूहूती
औरु यह बिभात प्रात हु कार भयो नहीं जानत अचेत है॥ हे केशव इस वार्ता को तो कौन रूहै॥ तुम या को आनके गात सरीर देखो
हाय लगाय के॥ यामैं तें अरु जो है जीव सो जात भयो है किं घो है को॥ यह जो है चित्र नी नाइका बिचित्र रूदर है गत अनरूपा जा की
सो तुम्हाने चित्र सी कहा देखा ते रहत जो क छिरा खी है तौ तुम मने दे पास कहो हे नए नवीन नै सकुपा में को न जोर रस है अर्थ कि कोई रस
नहीं॥ सखीन को बीच दै वस करी इत्यादि पद तें मुग्धा॥ बनायके करी या में छल॥ जोरावरी सौं करी या में बल॥ मींड डारनमें सोभा
की हान जानी॥ चित्र सी कहे रूप की हान जानी॥ (बिषमालंकार)॥ ऐसी नाजक नाइका सौं न करत नहीं ऊ बित हूती मीरुवो उचित न
हूतो सो कियो यातें बिषमालंकार॥ मूल मुग्धा को मान॥ दोहा॥ मुग्धा मान करै नहीं करै तो रूठन हु रूजान॥ ज्यो हर पाय कछु पाई ये
ज्यो हरपे अस्नान॥ ३०॥ वार्ता मुग्धा नाइका में वुद्धि की सामर्थ नहीं होत याते मान नहीं करत॥ औरु जो करे तो हे रूजान चतुर तु
म रूनो॥ तिस के मान को भय दिखाय के यां या भांत कछु कहई ये जैसे आजानी बुद्धि हीन डर जाय ऐसे॥ यथा कवित्त॥ बोले न बाल
बुलावत हू न परवे सखि लिखै मन प्रेम पगे सौं॥ आप नो हाथ बिलोक छिनोक कहीं तव के प्रात बुद्धि सिखै सौं॥ छोटी वनी निघु रेखा लि
खी जगमा मुकी रखस कैनजले सौं॥ जे मन तें बो ल मसोन प नो अकुल्या य कही॥ पिय कैसी है देखो इ॥ टीका सखी रव चन॥

हे सषी वाल षी नाइक सों बुलायो हू ते न ही बोलत है।। नषन की रेषा भुवन छ्वी में लिषत है।। मानो प्रेम का पत्र पै यो परषवो
करत है कि नाइक में के सो प्रेम है।। तब नाइक ने अपनो हाथ देषर के केशाव कलसने था र्ता कही वृक्ष की विसेषता।।
हमारे हाथ में विधव्र ह्माने द्वै रेष लिषी है एक छोटी एक बड़ी।। तिन में जो आयु की उमर की रेषा है सो कोन सी है लेषो
क्या लेषा है जामें।। उमर का।। यह बोल नाइक को नाइका तें प्रेम सों सह्यो नहीं पस्यो।। अकुलाय करके क्या व्याकुल कै
करके यह वार्ता कही है पिय कैसी है रेषा वह तब नाइक बोले देषो कहा दे ब लेहु।। ईहाथल सों मान घुमायो याते
मुग्धा को मान पर्यायोक्ति अलंकार।। इति मुग्धा।। अथ मध्या भेद दोहा।। मध्या आरूढ जोवना प्रगल्भा वचमा जान।।
प्राड्भूत मनोभवा कररत विचित्रा जान।। २२ वार्ता ए चार भेद मध्या के है।। मूल आरूढ जोवना लसन दोहा।। म
ध्या आरूढ जोवना पूरन जोवन वंत।। भाग सुहाग भरी सदा भावत है मन कंत।। २३ वार्ता।। जो नाइका पूरन जोवन
केस हत होय भाग औ सुहाग सौं भरी होय सो आरूढ जोवना मध्या है।। यथा कवित्त।। वेद को सो भाग भाल भ्रकुटी क
मान ऐसी मैन के से पैने सर नैननि विलास है नासिका सरोज गंध वाह से सुगंध वाह दासी से दसन के सो बीसुरी सो हास
है।। भाई ऐसी सी ग्रीव भुज पान सो उदर अरु पंकज से पाय गति हंस कैसी आसकै है देषी है गोपाल एक गोप का मैं देवता सी सो
ने सो सरीर सब सौंधे कैसी बास है।। २४।। टीका।। नाइक सषा प्रति नाइका की स्तुति करत है।। हे सषी चंद्रमा को जो है भाग अर्द्ध
वंत ताके सम जाको भाल सम लसत है।। भ्रकुटी भौंहे है कमान के सम है।। औरु नैन जो है काम देव तिसके पैने तीछन जो है सर बान तिन
के सम नैन जाके नैननि के विलास कटाक्ष है।। औरु जिसकी नासिका के जो है सुगंध वाह कृता स्वास सो कैसे है सरोज जो है कमल ता
को जो है गंधवाह पवन ताके सम है।। किंवा कमल सी नासिका है औ ताकी पवन के सम स्वास है।। दैर्घो अनार ताके बीज से दस
[illegible] सपहास है जाको।। औ भावै ऐसी सी ग्रीवा कपोत की ऐसी सी मीवा है औ भुज है।। औ कपान सो जाको उदर है।। किंचन
[illegible] औरु पंकज सम कमल से पाय चरन है जाके।। हंस की गत

19

॥ दिवागनाही है औरु जाको सर्व सरीर स्वर्न सो है जामें सो धे के समान बास रूग रहे है। अंग अपने सर मैन के यामें काम जान्यो ॥ बीजुरी
सी हासी तें लाज जगी ॥ याते मध्या ॥ नीके अंगन तें आरूढ जोवना ॥ नाइक ने रूतिकरी याते भावत है म नकै तय लक्षन लग्यो ॥ आ
दास ॥ वचन निमांझ उराहनो देय दिखावे त्रास ॥ ३५ ॥ वार्ता ॥ जो नाइक को वचनो मेंउराहनो देय ॥ औ त्रास भय को दिखावे ॥
सो प्रगल्भ वचना ॥ यथा ॥ सवैया ॥ कान्ह भले जू भले हे ढंग लागे भले भये नैननि के रंग ॥ रागे ॥ जानत हौं सबही तुम जा
टे कैसे देखें दु देख्यो अभागे ॥ ३६ ॥ टीका नाइक सौ नाइका के वचन ॥ देखौ कहा तुम भले हौ ॥ औरु भले ढंग में का भले अ
भासें लगे हो ॥ औरु नैननि के रंग में तुम भले रागे क्या रंगे हो ये आस क्त भये हौ ॥ इन वचनो में उराहनो औ विपरीत लक्षनाहै ॥ नैननि
में लालच लागो ॥ अर्थ यह जैसे तुम लालच में लागे परा चीन कै जात हौ ऐसे सर्व ही को जानत हो ॥ याते जाऊ नही क्या जाते कोन
तनको नही अहो जाऊ चले हरि क्या हे हरि चले जाहु यामें त्रास दिखायो ॥ जहां दिन ही नित यही जात हौ व मवाये क्या वख्त पहर एक तहां
ती को चले जाहु ॥ यामें त्रास दिखायो ॥ औ स्वकीया जानी ॥ बख पहर बौ निज घर ही में बनत हे ॥ औ ईहां कहा देखत है हो ॥ घो
खे परे क्या काहू के से सेपरे हो ॥ मैं वह नही हो ॥ वह को उ औरु कैहै ॥ उ भटे से क्या गिरत सें कहा देखत हो ॥ अब आगे देखु जहा
तुमारे देखवे को स्था न है सो आगे है ॥ भले भले में वीप्सालंकार ॥ मूल प्रादुर्भूत मनोभवा मध्या लक्षन ॥ दोहा प्रादुर्भूत
मनोभवा मध्या के हो न बालि ॥ तन मन भूषित सोभिये केशव काम कलानि ॥ ३७ ॥ वार्ता ॥ जाको काम की कलान सौं तन औ
मन भूषित होय अत्या सोभायमान होय ताको प्रादुर्भूत मनोभवा मध्या कहिये ॥ यथा ॥ सवैया ॥ आज में देखी है गोप सुता इक
हौ यन ऐसी अहीर की आई देखत ही रहिये दुति देह की देखें औरु न देखी सुहाई एक ही वंक बिलोकन उपर वारों बिलोक बि

लोक निकाई केशवदास कलानिधसो वर बूझीये काम कि मेरो कन्हाई ॥ ३८ ॥ वार्ता ॥ कोई वह रंग सषीने कह्यो अत्यंत सुंदरता
इका देषी है सो जानत नही कौन की स्त्री है सो वाकी सुति नाइका की धाय सौं कहत है ॥ हे सषी ब्रज में एक गोप की सुता पुत्री देषी
है ॥ ऐसी सुंदरता अहीर की पुत्री नही होत ॥ देव सुता सी हुती ॥ जाकी देह की दुति को सोभा को देषत ठेई रहिये ॥ औ जिसके देषे
ते और छबी सुहाई सुंदर वाके सम मैने नही देषी ॥ औरु जाके एक ही वंक विलोकन पर क्या एक ही कटाक्ष पर विलोक क्या देषके
तीन ही लोक की निकाई सोभा को मै वार देवौ ॥ औरु मेरे अनमान में तो यह आवत है कै तो वाको वर कलानिध चंद्रमा र
जीये ॥ चंद्रमा की स्त्री हुती ॥ कै वाको वर कामदेव बूझीये ॥ काम की स्त्री हुती ॥ तब धाय बोली मेरो कन्हाई वाको वर मेरो क
ह्यो है याते सुकीया ॥ सुंदर ताते मध्या ॥ वंक विलोकनतें तन मन भूषित काम कलानिय हलसन जान्यो याते प्रौढ[illegible]
मध्या ॥ उत्तरार्ध सो कार धाय के उत्तर तें ॥ अथ विचित्र सुरता मध्या ॥ दोहा ॥ अति विचित्र सुरत ताकी तो जाको सुरति विचित्र ॥ बरनत
कविकुल को कठन सुनत सुहावै मित्र ॥ ३९ ॥ टीका ॥ जाको सुरत संभोग विचित्र क्या सुंदर होय सो विचित्र सुरता मध्या
औरु सुनत ही मित्र को सुहावै क्या रुचै ॥ बरनन ते जुसे कविकुल को कठन होय ॥ यथा कवित्त ॥ केशोदास सविलास मंद हा
स जुत अवलोकन अलापन को आनंद अपार है ॥ वहरति सात अरु अंतरति सात पुन रति विपरीत निको विविध विचार है छू
टजात लाज जहा भूषन सुदेस केस टूट जात हार सब मिटत सिंगार है ॥ कूजत कूजद उठे रति कूजत निसुनषग सोई तो सुरत
सषी और विवहार है ॥ ४० ॥ टीका ॥ नाइका को वचन सषी प्रति ॥ हे सषी सोई सुरत संभोग है जो मैं तेरे पास कहत हो ॥ औरु तो
दंपति व्यवहार मात्र है ॥ जहां दंपतिन को सविलास क्या कलासन के सहत औ मंद हास के सहत अविलोकन देषवो होय अस
र ॥ औरु याही प्रकार जहा आलापन कहिये बोलबो ताको अपार आनंद होय ॥ फेर सुरत कैसो होय सात तो है बहरत आलिंगना
दिक ॥ औ सात जे हैं अंतरत स्थिति तिर्जकादिक ॥ फेर रति क्या सहत रति ॥ औ विपरीत रति इन सर्व को महा विविध व्यापार
विचार है ॥ फेर बहरतो में तो लाज छुट जाय ॥ अंतरतो में भूषन छूट जाय ॥ सहज रति में हार टूट जाय ॥ विपरीत रति में हार टूटे

जाइ॥ एसर्व सिंगार जामें मिटजाइ॥ सोजभी तियको भूखन है याते यह भी सिंगार जानीये॥ फेर रति के जे है कृत्रत शब्द कृएत मएत भूष
20 नो के तिनको रूनके खग जो है पसी सोकू नरउठे क्योपसी जाने को रूप सीवोरतहै॥ याको नामरतिहै औरु कविद्वारमात्र है॥ ईहा ऐसी रूहत
सैकीयाही की होलहै याते स्वकीया औरु रत विध्यचित्रा जानी॥ लाज भूटवो कहत है याही तैं यामें लाज जानीयत है याते मध्या भई॥ दा
सविलास हाव यामें व्रत्यान प्रास॥ मूल वहरति सात दोहा॥ आलिंगन चुंवन परस मर्दन नषरददान॥ अधरपान सो जानीये वहरति
सात रूजान॥ ४१॥ वार्ता॥ आलिंगन अंकभरवौ॥ परस स्पर्स करनो॥ मर्दन कुचनको मसलवो॥ रद दान अधरषंडन॥ औरु स्क
गम॥ मूल अंतर रत सात दोहा॥ स्थिति तिर्ज क सनमुष विमुष अधउरूधउ जान॥ सात अंतर तिसम कीये के राव राय रूजान॥ ४२
वार्ता॥ स्थिति इत्यादि आसन जानीये॥ मूल षोडस सिंगार॥ दोहा॥ सोरह ईसिंगार सुभ सोरह रूरति समान वुध विवेक वल सम
कीये के राव राय वषान॥ ४३॥ वार्ता सोरह जे है सिंगार है सो सोरह जे है रूरति संभोग सात वहरति सात अंतर रति एक सहज रति
एक विपरीत रति॥ ए सोरह रूरति सोरह सिंगारन के सम है॥ वुध औ विवेक विचार इनके वल करिके संम कीये के राव कहने॥
© यथा॥ कवित्त॥ प्रथम सकल शुचि मंजन अमल वास जावक सुदेस केश पास को सुधारवौ अंगराग भूषन विविध मुषवास
रागकजल कलित लोल लोचन निहारवौ वोलन हसन मृदु चलन चितौन चारु पल पल प्रति पतिव्रत प्रति पारवौ केसो
दास सविलास करहु कुवर राधे इह विध सोरह सिंगारन सिंगारवौ॥ ४४॥ टीका॥ नाइका से याते प्रात ह काल उठी है तावो स
षी कहत है हे राधे तू सोरह जे है सिंगार तिनको सिंगारवौ क्या वनायवो करौ॥ सषीनको नीके नहीं आवत याते आप सिंगार कु
प्रथम तो सकल सुचि कहा अंगमें उवटो आदको॥ मज्जन सनान॥ २॥ अमल निर्मल वास वस्त्र॥ ३॥ औ जावक सो षकोरंग पाय
न में लावनो॥ ४॥ औरु सुदेस सुंदर जो है केस पास वारनको संवूह ताको वनावनो॥ ५॥ औरु अंगराग कहा अंगनिको रागरं
गवो यामें पांच सिंगार प्रथम मांगमें सिंधूर ६॥ फेर वोर वनावनो॥ ७॥ फेर तिलक वनावनो॥ ८॥ फेर महदी रचायवो ९॥ फे
र अरगजा लगावनो॥ १०॥ औ रूभूषण गहने विविध कहा है भांत के फूलनके ११॥ स्वर्नके १२॥ औ मुषवास लायची इत्यादि॥ १३
मुषराग कहा मुषको रंगावौ यामें पे॥ दंतनको रंगावौ १४॥ अधर रंगवो वीरी १५॥ औरु कजल सौं कलित क्या संजुक्त लो लं

४ सो नाइका जानतौ

चलनैनतिनसौं निहारवौ देषवौ ४५ ॥ एसो रहसिंगारहै तिनको सविलास ॥ कासा याविलासके इहविध याइसप्रकार करौ ॥
इन भावन सौं सिंगार नीके लागतहै कौन है भाव ॥ म्रदु कोमल वोलने करके ॥ औ कोमल हसने करके ॥ औ चारु कपाल सुंदर व
लने करके औ सुंदर चितौन देषने करिके इनौ करिके सिंगारन कौ करौ ॥ औ फल पलर प्रति क्या पलर में पति व्रत धर्म जो है ता
प्रति पारवौ करौ यासौं भरि सिंगार सो हलत है ॥ ए सोरह सिंगार सिंगार सोरह स्फुरत समै है याते स्फुरत विचित्रा कोऊ जो उदाहर
कहेमें पतिव्रततें स्वकीया ॥ द्विविध भूषन स्फुरत में टूटे है तिनको सषी कहतहै सिंगार यामें लाजतें मध्या ॥ सिंगार पद भूषन
पहरनमें है याते रसदोष नहीं भयो ॥ चकार तें वृत्यानुप्रास ॥ मध्या स्फुरतांत सवैया ॥ सुंदरता पय जावक पावक पीके हियेन षचंद नये
चंदन चित्र सुधा विष अंजन टूट सवै मनि हारगये है केशव नैनिनि नींद मई मदरा मद घूमत मोह भये है केलके नागरी नागर प्रातउजागर
सागर वेष भये है ॥ ४५ ॥ सषी वचन दंपतिनि को सागर को रूप वरन्यो ॥ हे सषी दोऊनमें जो सुंदरता है सो पय दुग्ध है ॥ औ रु नाइकाके पा
इनमें नाइकके भालमें जो जावक लाषको रंग लग्यो है सोई पावक अग्नि है ॥ औ रु पीके हियेन ष क्या नाइकाके हियेमें जो पियाके नष है सो
ई चंद्र है नये नवीन दुति याके ॥ इ जो भाव पियाके हियेमें जो नष है सो चंद्र है सकलंक दिसमता ॥ औ रु दोऊनतनमें जो चंदनके चित्र है सोई सुधा
अवृत है ॥ रंगकर समता ॥ नाइकाके नैननिमें नाइकके अधरमें जो अंजन है कज्जल है सोई विष है रंग करके ॥ औ रु स्फुरतमें मणीके जे हार सो च
वे में टूट गये ते है कोस्पर्श है दोऊनके अंगमें ॥ हे सषी नागरी नाइका नागर नाइक केल करिके उजागर सागर जो है षीर सागर ताके समत भये देष
है ॥ औ मुग्धाके स्फुरतांतमें सुरतानहीं होत ॥ प्रौढाके स्फुरतांतमें हारन को टूटवौ नहीं वनत ॥ क्यौ प्रौढा तो प्रति काम सौं पियको भेटत है मध्यामे
टवेसौं संकोच करत है याते जानीये मणियोंके हार रतिकेलमें षैचत टूटे है याते मध्या को स्फुरतांत है ॥ औ रु मोह भये घूमत है संका औ भयन
सौं मये क्यौं कहिये घूमत है ॥ ईहां सील करके समता ॥ रूपकालंकार समुझके लषकतें ॥ औ रु नैननिमें जो नींद मई है क्याँ मिली है सोई मदरा को मद है ता सौं मोह
त है कवि धीरा ॥ ४६ ॥ टीका ॥ सागरी मध्यां कहा चार प्रकार की जो मध्या है सो तीन विधि है ॥ धीरा १ अधीरा २ धीराधीरा ३ ॥ औ रु मुग्धाके
नागर उपमेय प्रथम सागर उपमान पाछे है याते धर्म वाचक लुप्ता नहे ॥ औ रूपका
ई किं वा मगए लिजे हार दूटमी थो सब है पीमें ... सोई इत नौ

धीरादिक भेद क्यों न होय॥ उत्तर॥ मुग्धा में लज्जा की साम्य सों नहीं होत यातें धीरादि भेद नहीं होत॥ मूल दोहा॥ धीरा वोले वक्र विधि वा-
नी विषम अधीर॥ प्रिय सों देय उराहनो सो धीरा न अधीर॥४९॥ वार्ता॥ जो वक्र विध क्या टेढी भांति सों वोले सो धीरा॥ जो विषम कठोर वा-
नी कहै सो अधीरा॥ जो नाइक सों उराहनो देय सो न धीरा न अधीरा॥ वह धीराधीरा॥ धीरा जथा॥ कवित्त॥ ज्यों ज्यों हुलास सों के-
शव दास विलास निवास हिये अवरेष्यो॥ त्यों त्यों वढ्यो उर कंप कछू भ्रम भीत भयो किधौं सीत विसेष्यो॥ मुद्रित होत सखी वरही मेरे
नैन सरोजन साच के लेष्यो॥ तैं जु कह्यो मुख मोहन को अरविंद सो है सु तौ चंद दे देष्यो॥५०॥ टीका॥ सापराध नाइक कों देखि के नाइका स
खी प्रति कहत है॥ हे सखी तैं तो मोहन को मुख अरविंद कमल सो कह्यो हुतो सो तो मैं चंद्रमा सो देष्यो कमल नहीं॥ सो ज्यों मैने हुलास
सों क्या आनंद सों नाइक को मुख विलास को निवास घर कमल सम हिये में अवरेष्यो विचार्यो॥ त्यों त्यों मेरे उर में कंप वढ्यो तम
यो॥ सो चंद्रमा के देषे तें कंप होत है सो इन के देषे कंप भयो॥ तौ भी मैंने वार्ता टारी कि मेरे मन को कछू भ्रम भयो है कि मेरो मन
भीत भयो है॥ किधौं विसेष वढ्यो सीत भयो है॥ और मेरे नैन कमल इन को देषके वरही क्या जोरावरी मुद्रित होत है क्या संकुच
त है॥ तव मैंने नैन सरोज निने क्या नैन कमल निने साच के क्या सांचकर के लेष्यो जान्यो कि चंद्रमा ही है सो चंद्रमा देष कमल मुंद
त ही है [illegible] ॥ यां सों कोच की अधिकाई जनाई है कि सनमुख ही न ही देष्यो आत या भांत धीरा वोले सो कह्यो॥ कोई चंद्रमा को
कलंक को अर्थ भी काढत है॥ वक्रोक्ति अलंकार वक्र विध वोलत है कंप को कारन को पहै सो न कह्यो और ही कह्यो यातें॥ मूल॥ अ
धीरा को उदाहर्न॥ लाल कोसो गज सच कल वलवीर कोसो मात कोसो मुह महा मोह मन भायो है थल सो अचल सील अनल सो चल
चित्त जल से अमल तेज तेज कोसो गायो है॥ केशोदास सव सत अकास के प्रकास घो षघट घट घर घस्यो रघ मोह्यो है रति की
सी रति नाथ सत रति नाथ को सो कहो के सो राय कहौ कौन पहपायो है॥५१॥ वार्ता॥ [illegible] तुम मेरे पास कहौ जो वोलत हे सो [illegible]
[illegible] कहो या कहौ कैं [illegible] ते पायो है क्या [illegible] सी ष्यो॥ तुमारो तो तात पिता नंद ताके समान गात सरीर है ध्वनि यह नंद वृद्ध है वाको
सिथल गात है त्यो तुमारो सिथल गात है॥ औ वलवीर वलभद्र तिन के समान वल है तुम में ध्वनि यह वल भद्र मद रात मतवारे हैं

स्रवलनिस्मल को ४ सोये वातेमनतक

सोतुमहू मलवादे है ॥ मातासम मुषहै कहूं कहूं चिन्ह है वेंदी क आलइत्यादि ॥ सो मो को अत्यंत भायो है नीको लगो है । विपरीतलसंनातें अनभायो आनीये ॥ अरो
रूप लषधी ताके समतें तुमारो सील सुभाव है अथ्वी कोई छीपे कोई विगारो वाके जाने कछु नही त्यो तुमसो कोई भलाई करो कोई बुराई करो तुमारे भावे कछु न
ही ॥ अनिल पवन ताके सम चलचंचल चित्त है पवन सुर्व ठौर जात है त्यो चित्त भी तुमारो जात है औरु जल के समान तुमारो अमल क्या चलनो है जलनी
म चगामी है त्यो तु हू है ॥ तेज तुमारो तेज अग्नि के सम है अग्नि सर्वभक्षी है तैसेई तुमहौ ॥ औरु तुमारो धेक निंदाको जो है घोषशब्द सो आकास के प्रकास सम
मवसत है ॥ आकासको प्रकास सर्व ठौर है तैसेई तुमारो अपजस सर्व ठौर है घर२ में घर२ में घनो बहुत छायो है ॥ सर्व तुमारी निंदा करत है ॥ किंवा आकास
के प्रकास विषे जो वसदा है घोष अहीरन को ग्राम तामें तुमारो धेक अपजस घर२ घर२ में बहुत छायो है ॥ फेर रति काम की स्त्री ताके सम तुमारी
रति प्रीत है रति की पूर्ण प्रीत नही क्यो कामसंग नही जरी तैसेई तुमारी पूर्ण प्रीत नही ॥ रूप तुमारो रतिनाथ काम के सम है सर्व को दुषदाई है ॥ हे केसोराय
श्रीकृष्ण एबाते तौ इनइन तें सीषी है औरु मेरे पास जो झूठ बोलत हो सो यह झूठ कोन तें सीषे हो ॥ नाइका को इतनोई वचन है सो कठोर है यातें अधीरा भई
नंदा धेक घनो कहनमें भी अधीरा ॥ औ सुक्ति में तें निकसी यातें वाज उक्ति अलंकार ॥ एक श्रीकृष्ण को अनेक भांतसों कह्यो यातें उल्लेष ॥ मध्या धीराधीरा
कौ उदाहर्न ॥ कान्ह भले जू भले समुझाई हो मोह समुद्र की ज्यो उमग्यो है के श्राव आपनो मान कसो मन हाथ पराये दे कौने लख्यो है ॥ नैननि हीमिलवो करिये
अवबैननि को मिलवौ क तोरसो है जाय कस्यो तुम जैसे सषीन को ए हो गुपाल मै जैसे कस्यो है ॥ ५० ॥ टीका ॥ नायका नायक प्रति कहत है हे कान्ह तुम भले हो
आछे हौ ॥ औरु मैं तुमाने भली समझाई अर्थ कि भली षबरदार करी ॥ नही तो मो में तुमारो मोह समुद्र की न्याई उमग्यो हो क्या उमग्यो थो सो तुमाने षबरदार क
री अब तें तुमसो मोह न कीजे ॥ हे केशव कृष्ण आपनो कहता तिहारो मन मानकसो है क्या कठोर है यामें उदासीनता ॥ औ अमोल है यामें प्रीत दोऊ बातनतें धीराधी
रा भई ॥ सो तुमारो मन पराये हाथ है सषीन सों बाते जाय कहत हो ॥ यातें मन उनके हाथ दियो ॥ सो तुम मैं जो चाहो कि मन को फेर लेहि तौ दे के किसने लख्यो है ॥ पायो है ॥
काहू नेन ही पायो ॥ अब तें तुमसो नैननि ही सों मिलनो कीजे ॥ औरु बैन को क्या वचनो को मिलवो तोरह्यो ॥ क्यो जैसे तुमने सषीनसौं यह जाय कस्यो किं नाइ
कामो को ए हो गुपाल कहत है ए हो नीच संबोधन गोपाल पशुपाल ॥ सो मैं तुमसो ऐसे कस्यो है नही कस्यो ॥ किंवा मैं नैन न ही मिलीये बैनको मिलवो
रह्यो ऐसे मैं तुमसो कछु कह्यो है मकरवे में प्रीत औ तम याही नामक हौ ऐसे ई तुम सों कहि पे यामें उदासीनता दोऊ भांत कस्यो यातें धीराधीरा ॥ भले कहन में उदा
हर्न ॥ मोह समुद्र ज्यो उमग्यो यामें पूर्णोपमालंकार ॥ अल अपप्रौढा भेद दोहा रूनिस मनरस को विवाचित्र विभ्रमा आति अतिअका मिति नाइका लक्ष्य दूत रूस

२२

भांति॥५१॥ वार्ता॥ ए चारि भेद प्रौढा के है॥ मूल॥ रामस्तर रस को विदा लक्षन॥ दोहा॥ सो समस्तर रस को विदा को विदक हत वखानि जो रस भावै प्रीतमैं ताही रस की दानि॥५२॥

22 वार्ता॥ सो नांइका समस्तर रस को विदा है. को विद पंडत जा को ऐसे कहत है जो नसो रस प्रीतम को भावै सोई रस की दानि क्या दैन वारी होय॥ मूल यथा कवित्त॥ देषी है

मुग्धो संग एक गोपिका अनूप रूप सो नेतें सलोनी वास सोंधे तें सवाई है सो भाही रूभाय अवतार लियो घनस्याम किधो यह कमनी कि कामिनी कै आई है देवी कौ उदान

वीन मानवी न होय ऐसी मानवी न हाव भाव भारती पढाई है केशो दास सबै मरूव साधन की सिद्धि यह मेरे जाने मैन हीसों मैन का की जाई है॥५३॥ सषी को वैन नाइका

सों॥ हे गोपाल कृस्न यह गोपकार कमें अनूप रूप क्या सुंदर रूप नारी देषी है॥ याके समद्र जीमही॥ स्वर्न तें सलोनी सुंदर है क्यो स्वर्न पीन है औ कठोर है॥ फेर अ

धिक कृयामें वास सुगंध सौंधे तें सवाई है॥ क्यो सौंधो लगाये सोधे की सुगंधन ही आवत सरीर की आवत है॥ सो किधो सो भाही ने सुभाय कर के अवतार लियो है

अथवा हे घनस्याम कृस्न यह कामनी स्त्री दामनी वीजुरी कै के आई है अथवा को देवी है देवांगना है ~~ऐसी~~ ~~वा को उ~~ औ दानवी दैत्य कन्या औ मानवी क्या मनुष्य

न की कन्या ए सर्व ऐसी न ही होत जैसी यह है॥ फेर कैसी है मानवी न क्या भासो मानवी न नई है और हाव भावन सौं मानो भारती सरस्वती ने पढाई है॥

अथवा दानवी न की औ मानवी न वीन की नं होय ऐसी भा अर्थ इन की भा सो मा ऐसी न ही होत॥ और वीना सी हाव भावन सौ सरस्वती ने मानाप ढाई है॥ फेर कैसी

है सर्व सुषन के जे है साधन तिन की यह सिद्धि है अर्थ कि सर्व तप याही ते नाइक को शाविहोत है॥ यातें प्रौढा औ समस्तर रस को विदा को लक्षन जान्यो॥ और मेरे जाने

तो यह मैन काम हूसों उतपत हुई मैनका अपसरा ता की पुत्री है॥ किधो पद तें संदेहालंकार॥ मूल चित्रविभ्रमा लक्षन॥ दोहा अतिविचित्र विभ्रम सदा प्रौढा प्रगट वषा

नि॥ जा की दीपति दूतिका पिय हसि लावै आनि॥५४॥ वार्ता॥ जा की दीपति रूपी दूतिका नाइक को आन मिलावै ता को चित्रविभ्रमा कहिये॥ मूल यथा सवैया॥ हे गतिमं

द मनोहर के प्रावमानंद के हहियै उलहे है॥ मौ हविलासनि को मलहासनि अंग सुवासनि गाहे गहै है॥ वंक विलोकन को अविलोक सुमार कै नंदकुमार रहे है एई

तो काम के वान कहावत फूलनि के विधि भांति कहे है ५५॥ टीका॥ सषी स्वचन॥ हे सषी काम के वान तो एई कहावत है जो तिय के अंग में है औ फूलन के वान तो विधि वि

अ ने ऐसे कहे है सो भूल के कहे है॥ सो सषी वा गण नावत है॥ या की जो मंदगत है क्या मंद चाल है सो के प्राव श्री कृस्न को मनोहर है काम न के हरन वारी है यह मो

हन वान है॥ और हियेमें जो उलहे क्या उठे है कुच सो श्री कृस्न को आनंद के कंद मूल है॥ सो कुच उदीपन है औ कं मकोप्रगटावत है यातें यह संदीपन वानो है॥

और भौंहन के विलासनि सौं जो है को मलहास क्या मंद हस्वौ तिसने नाइक पकरे है चलवे को वल सोष लियो यातें यह सोषन वान है॥ और नाइका के अंग की

जो सुवास है तिस ने गाढे गहे है क्या मली प्रकार नाइक पकरे है॥ यह संताबन वान है गाढे गहे न तें अंगन में व्याकुलता होत है यातें॥ और गाढे गहे कहन ही में ध

निसौं अंग सुवास के पकरे भी जाने परत है॥ औ जे सषी या की वंक क्या वांकी विलोकन जो है चितवन ता को विलोक के क्या देष के नंदकुमार जो है श्री कृस्न सो सुमा

४ आपते हसनमें हित अनहसनमें अनहितयामे दोऊ नही ॥ औद लायेते बोलत है
निकसो ॥ मूल ॥ आकुल गुना ॥ चितवो इति ॥ वार्ता आकुल गुना को अर्थ यह, हियमें हित लगो है कि अनहित रायो है ऐसे काहू को यह समझी न परे ऐसे से आकृ
त सरूपको छिपाये रहे ॥ सो नाइका नाइक सो ऐसी बाते करत है जिनमें हित अनहित नही जाने परत ॥ सखी कहत है तेरो हित अनहित जान्यो नही परत ॥ तूं चितवा
येते क्या दिखायेते चितवौ देषत हो जो आपतें देषे तौ हित जान्यो जाय ॥ चितवायेते न देखे तौ अनहित जान्यो जाय ॥ चितवायेतें चितवत हे यामें दोऊ नही जानेप
रत ॥ औ हसाएते हसत हैं नही तो मौन रहत है बोलत नही ॥ आपते बोलनमें हित अनबोलनमें अनहित बुलायेतें बोलनमें दोऊ नही ॥ औ मनेक सौहे कि
येसों तूं नाइक के अंक में आवत है आपते आवे तौ हित सौहन कियेन आवे तौ अनहित ॥ सौह किये सौ आवत है यामें दोऊ नही ॥ औ कहूं ऐसे निकोकरत है
जैसे रोने की नया तिरउजे की रैन अधिका रात रस निहोत है ॥ रोने कीरैनमें नाइका बके हठ से आवत है ॥ आपते रति करे तौ हित नकरे तौ अनहित ॥ यामे दो
ऊ नही ॥ औ कबी रीष बादन के समय निपट हठ करत हो बन्याय जो रावरी सो षवायेते बीरी षात है ॥ सो मानो आजही गोने मुकलावे आई है आपते षानमें
हित अनषानमें अनहित ॥ यामें दोऊ नही ॥ सो हे प्यारी मोहन कृष्ण के मनमोहबे को यह जो है सिष तिषा सो कितने सि षई है सि षाई है ॥ उत्प्रेक्षा लंकार जानो ताको
पदते ॥ अन्यच ॥ हित कै इति ॥ वार्ता ॥ नाइक नाइका को परस्पर स्वैन ॥ रूगम ॥ प्रौढा अधीरा लं ॥ पति को अति ॥ रूगम ॥ उदाहर्न ॥ स- ॥ हो रूपपाय ॥ ६५ ॥
नाइका सषी सों कहत है ॥ मैं भी औतै भी बहु कहियेबहु तउपपायके देषो पै के शव श्री कृष्ण की कुटेव क्या षोटी वान सो किसी प्रकार नही जात है ॥
ताते हे सषी दंड के दिये विना साधन के संगमें भी षल जो है दुष्टता की षलता कहिमे दुष्टता सो क्यो छूटत है नही छूटत है ॥ दंड दियेते छूटत है ॥ कैसे जैसे
विषके मधुसहत की किंवा अंब्रतकी कोटन करोर पुट दै करके देषो तिसकी जो है विषमाई विषमता सो नही मिटत ताका दूर नही होता ॥ औ घटत बी
नही क्या षोरी भी न ही होतू ॥ दंड दियेविकृ मारे विन ॥ मारेते विष भी मरत है ॥ दंड में श्लेष है ॥ नाइका की औ सषी की सिक्षा नाइकने नही मानी या
तेअति अपराध जान्यो ॥ औ षल के औ विषके दृष्टांततें हित को हतन जान्यो ॥ यातें प्रौढा अधीरा ॥ अलंकार दृष्टांत ॥ मूल ॥ अथ प्रौढा धीराधीरा लं ॥ दोहा
मुषरूषी ॥ ६६ ॥ रूगम ॥ ३० म० हौ मन मैं ले ० ॥ ६७ ॥ वार्ता नाइका को बचन नाइक प्रति हे हरि तुम मन कर के मली न हो या मैं क छु सं
देह नही अब हम सो हमों है कहीये हास के जे बोल है बचन तिनको बोल बो छाडो हे के सबा ह्रस औ रुन सो तुम नेरस को रासर
सो है क्या रस सो है औ रु हम सो तुम नोरस बाद जो है विरोध सो रस सो है औ हे हरि तुमारे आरस कहीये आलस सो जै हे लोचन

तिनकोआरसीकेसोंहेकहीऐसनमुषरैकरकेऐकबारदेषहु केसेलोचनहेसकोचनवासकोचजोहैंलज्यासोजिन
मेनहीहै तुमनतोवेसेईसाजसोआजआऐहोंजैसेकाल्हआऐहुते अर्थकिइनकेजुकआऐहो सोहैपीयतमकोकाल्ह
कीसोंहेजेहेसोगंधेसोभूलगई औनाइकानेकह्योअवहमसोंवोलवोछाडो यामेतोमुषरूषीवानकही औरुकाल्ह
कीसोहेतुमकोभूलगई यामेजीयकीचाहनाजानी यातेधीराधीरायुहमई ह्यांअनुप्रास दोहरा सुहेहम्या
अनुप्रासइकवरनफिरेवहुवार ह्योंरसरासरसोरूरसफिस्योमकारनिहार इतिसुकीयाभेद अथपरकीयालछ
न मूल दोहरा सबतेपरपरसिद्धजगताकीप्रियाजुहोइ परकीयाताहोंकहेपरमसुरानेलोइ ६८ वार्ता सभतेप्र
सिद्धजगमेजोपरकहीयेपरायोपुरषुतिसकीजोप्रियाइस्त्रीहोइआइके सोपरकीयाकहावे अथपरकीयाभेद मूल
दोह परकीयाद्वेभांतपुनऊडाऐकअनूडा जिनहदेषवसहोतहेंसंततमूढअमूढ ६९ वार्ता पुनकहीऐफेर
सोपरकीयाद्वेभांतहे ऐकऊढाऐकअनूढा जिनकोदेषकेसंततकीऐनिरंतरमूढओअमूढवसहोतहे अथऊ
ढाअनूढालछन मूल दोहरा ऊढाहोइविवाहताअविवाहताअनूढ तिनकेकहोविलाससभकेसवगूढअगूढ
७० वार्ता ऊढातोविवाहताहोतहे अनूढाअविवाहताहोतहे तिनोकेगूढकहीऐगुप्तअगूढकहीऐप्रगटजो
विलासहेसोंकहतहों अथऊढाउदाहरन मूल सवैया वैठीसषीनकीसोभेसभासभहीकेसुनेननमांझवसे वु
गदोइकवेकिनढैहरिआननझेनिकसे ७१ वार्ता सषीकोवचनसषीप्रति हेसषीनाइकासषीनकीजोसभाहेतामेवेठी
केनेवानवस्याइकहेमनहीमनकेसवदासहसे षेलनदेइनषेलउतेपीअचित्रषिलावतयोंविलसें कोऊजोनेनहीट
ऊईसोभतहे औसर्वसषीनकेजेहैसुनेनकहीऐभलेनेइतिनविषेवसतहे अर्थकिसर्वताकीओरदेषतहे औरुसषीन
केहूकेतेवारताकोवस्याइकहीऐजामावरीसोकहतहे औरमनहीमनविषेहसतहै औइतोआपषेलैकोषेलनहे औ

क्या सुंदर माला के समान ह्वै रहे हैं क्या वाही के गरे लाग रहे हैं मगज ह्वै के यह उन्मादन वान ए पांच वान हैं॥ सुकुमार ते स्वकीया जानी॥ उठे कुच ये कुच हैं याते मुग्धा नहीं॥ औरु नाइक ने दुति जिन कीदे धी है यातें मध्या नहीं॥ संग ही पति नहीं फिरत है याते स्वाधीनपतिका नहीं॥ प्रौढा ही है॥ वं कवि लोन के नसभ ये याने दी पति दूति का पिय को मिलावै यह लक्षन जान्यो याते चित्र विभ्रमा भई॥ आनंदकंद उपमान याते कुच उपमेय जानें रूपकातिसयोक्ति अलंकार॥ मूल अन्या मित्र नाइका लक्षन दोहा॥ सो अन्या मित नाइका प्रौढा कहि है चित्र मनसा वाचा कर्मना त्रिलवस (कीनो मित्र)॥ ५६॥ वार्ता॥ जितने मन वच कर्म कर दिके मित्र नाइक को वस किये होय सो प्रौढा अन्या मित्र नाइका जानीये॥ मूल यथा सवैया॥ तो हित गाय व जावत नाचत वार अनेक सिंगार बनाये॥ जी उमेरा न को मान वो छाडयो री तेरो तऊ न भयो भायो॥ भावै सु तूं कर वो करि आमलि भाग वके वसतें कदिपायो॥ कानु त्यों सुधें न चाहत ना हि सु चाहति है अव पाय लगायो॥ ५७॥ टीका सखी नाइका प्रति कहत है॥ नाइका ने जाव कदै नको कसो दुतो नाइक ने कोमल वचन जानस पर्सन ही कि ये याते नाइका नीचो द्दृ कर रही तव सखी कहत है॥ हे भामनी सखी तो हित क्या तेरे लिये नाइक गावत है औ वजावत है औ नाचत है और अनेक वार अपने तन में किं वा तेरे तन में सिंगार बनायो है तेरे लिये॥ फेरि अपने जीव में आन औरु जे हैं नाइका तिन को मान वो क्या त्याग नो छोडि दियो तो ही सो प्रेम किया है॥ त्रे छा-क निशा विना नही होत सोई हां कहि शा कोई नही कही आनपद सामान्य वाची है याते नाइका जे शा नही अन्या मित्र है॥ तेरो मन भायो तो भी नही भयो॥ सो जौन सी वात तो को भावै नी की लगै सो तूं कर वो कर क्या करत्या करा॥ क्यो ते ऐसे नाइक जो वस कर पायो है सो तेरे भाग बडे हैं॥ पै जो तू अजौ भी नाइक की त्यो क्या तरफ सूधे नही चाहत क्या सरल दृष्टि कर नही देषत सो मे जानत हौ तूं पाय लगायो चाहत है यह उचित नही॥ औ उपद ते मनसा॥ गान में वाचा॥ सिंगार में कर्मना॥ यो मनसा वाचा कर्म ना यह लक्षन कहुंचा याते स्वाधीनपतिका नही॥ अन्या मित नाइका ही है॥ चाहत चाहत में यमकालंकार मूल लब्धा पति प्रौढा लक्षन दोहा॥ सो लब्धापति जानिये के पाव प्रगट प्रमान॥ कान करै पतिकुल सवै प्रभुता प्रभु हि समान॥ ५८॥ वार्ता॥ जाकी का नप ति को सर्व कुल करै औ प्रभुता व डयाई जा की प्रभु के समान होय सो लब्धापति प्रौढा है॥ मूल यथा कवित्त॥ आज विराजत है कहि के श्रव श्री वृषभानु कुमार कन्हाई वानी विरंचव हि कम कामरची जवची सुवधन बनाई संग विलोक वि लोक में ऐसी को नारि नही जिन नारिनि वाई॥ अरत बंत सिंगार सभी पति गाइ के मन मरू दरसाई॥ ५९॥ टीका॥ सखी वचन॥ हे सखी श्री वृषभानु कुमारि जो है श्री राधाजू औ श्री कन्हाई जो है श्री कृष्ण तिन के संग आज विराजत है क्या सो मिलत है॥ श्री राधाजू के सी है वानी सरस्वती ने विरंचब्रह्मा ने औ व हि कम उमर ने औ कामने नाइका रची है॥ वानी ने वो लु बोदयो॥ विरंचने आप

आपने हाथसौं बनाई॥ वहि कमने चातुर्यताकरि रची॥ कामनेप्रेम करि रची॥ जोइनतें वची बनावनी सो वधूजे है त्रीति नो नेष नाईसे वाकरिके सिंगारादि
करि सेवौ॥ किंवा विरंचनेयह नाइकावानी सौं वहि कमसौं कामकला भोगनिसौं रची है आगे वही अर्थ॥ औ हे सखी याके अंगको लि नोकके कहा देखके जिसने
नाहिं गरदनन ही निवाई अैसी नारि त्री त्रिलोक कातीनो लोकमें कोहै कौन है॥ अर्थ यह कोउ नही॥ सो राधाजू कसके संगकैसी विराजत है मानो
मूरतवंत क्या सरूपको धारे हुये जो है सिंगाररस ताके समीप सिंगारनको कि ये हुये कंदरता सोभित है॥ वधूनवनाई औ नारि निवाई इत्यादि पदनतें
कान केरपति कलसवैयह लक्षन जानोयातें लज्याधित प्रौढा॥ मानो पदतें उत्प्रेक्षा लंकार॥ सिंगाररस कौ नाम कहे बिनाई हाप्रतीतन होती यातें नामकसो
रसदोष नही॥ मूल अथ प्रौढाधीरादि भेद॥ दोहा॥ आदरमांफ अनादरै प्रगट करे हित होय॥ आकृत आपदुराव ई प्रौढा धीरा दोय॥ ८०॥ वार्ता प्रौढा
धीरादि है प्रकारकी॥ जो पियको आदर ही में अनादरै का अनादर करै औरु जाके प्रगट करनमें हितसने हहोय सो प्रौढा सादरा धीरा॥ औरु जो आपनी
आकृत क्या सरूपको छिपावै सो आकृतगुप्ता प्रौढा धीरा कहावै॥ मूल प्रथम यथा सवैया॥ आवत देषलिये उठि आगे कै केरावआपही आस
नदीनो॥ आपही पायपषारभलेजलपानीको भाजन लाईनवीनो॥ वीरीवनायके आगेधरीजव वेहरको करिवी जनालीनो वाहगहीहरि कै
सेकसो हसमैतोइतो अपराधन कीनो॥ ८१॥ टीका॥ ~~सखी सखीवचन॥~~ ईहां सर्व ठौर आदरमें अनादर है सखी रवचन॥ हे सखी नाइकाने नाइकको आव
ते देखके उठिकरके आगे है के लिये यह आदर॥ अनादर यह एमेरी ओर को न आवै याते उठ करके लिये॥ औरु आपही आसन दियो सखी निकट हुती
वा सौं न कह्यो यह आदर॥ औ मेरे आसनपे न वैठे अव यह अनादर॥ फेर नाइका आपही भलेपायनको जलसौं पषारके कहा धोयके नाइकको पानी कोपा
त्रल्याई नवीनौ नयो॥ यह आदर याहीमें नाइकको अपवित्र जितायो॥ जैसे कोउ अपवित्र को कहे यह वनो अपवित्र है गंगाजलसौ धोयके काचोई अन्य भोजन करयौ
तव सरसनार्थ गहौ अपवित्र जानीये॥ अैसे नाइकको जितायो तुम वडे पवित्र हो तुमको पानी पीवनको भी पाय धोयके दीने याते अपवित्र जाने॥ कि वानवीन
जो है भाजन ताकौं पषारके फेरि वामें पानी को पांयके नाइका ल्याई॥ यह आदर॥ अनादर मेरे पात्र कौं न छुवै यातें नयो भाजन ल्याई॥ औरु गुरी को मजाव
रचामी देवी है तातें ई र्षा भई॥ औरु वीरी वनाइके आगेधरदई॥ यह आदर है सवाद्र नहीं अधर को समर्स नहीं चाहत अंजनल गोदेषके यह अनादर॥ औ
दिवे हर दैको वीजना पंषा लेकैं करन लगी तव हरिने वाह गही क्या पकरी भंजा औरु अैसे कह्यो कित हसि॥ मैने तो कहि येते रोइतनो अपराध तो नही
कियो जितनो तैरोस कियो है॥ वीजना करनमें आदर॥ अनादर यह तुम को पसे आ के मोको पवन हुन लग्यै सैं के तव नाइकने कह्यो मैतो एतो
अपराधन दीकियो जो मेरी पवन तो स्पर्श अपवित्र मन्यो॥ औरु आदर धीरा ष्टही है॥ पंचमी विभावना लंकार विरुद्ध तें काजकी उत्पत्ति॥ आदरतें

उनैकहीयेउकोपीयनाइककेचित्तकोविलावनतहै योविलासकरनतहै सोयहवारताकोऊनहीजाननतहै
कियाकेहगहरिश्रीकृस्नकेआननमुषकोछुवैकेओरुकितनकोद्दैकेकवनिकसनतहै ओहयामेचातुर्यतात्र
थिकहै कंचुकीयकेमनकोविलावनोमनहीमनहसवी इहफेतवातकोवस्याइकहवो ओरुछपकेकृस्नकेदे
षवोऐवानैकऊदाहूमेहोतहै अनूढाअविवाहतातामेंऐविलासकहो यातेऊढाहीहै इनीयविभावनाअल
कार सषीआयतिऐमित्रकेदरसनकारनकेवाधकहैं इनकेहोतेहीकारजहोतहै याते अथअनूढाको
उदाहरन मल सवैया वेठीहुतीव्रजनारनमेवनश्रीवृषभानकुमारिसभागी षेलतहीसषीचोपरचारुम
इतिहषेलषरीअनुरागी पीछेतेकेसववोलउठेसुनिकेचितचातुरीआतुरीजागी जानीनकाहूकवेहरि
केसुरमारगहीसरसीहगलागी ७२ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीआजसुभागीकहीयेभलेभागभारी
वृषभानकीकुमारजोहेराधाजूसोव्रजकीजेनारइस्त्रीतिनविषेवेठीहुती वनिकेकियासिंगारनिकोस
जके नहाचारुकहीयेसुंदर जेहेषीनेचोपरषेलतहुती तिनमेषरीका स्नेहजोहेराधाजूसोतिसचो
परकीषेलमेअनुरागीकासनेहसहतिभई तासमेविषेकेसवजोहेश्रीकृस्नसोपीछेतेगाइवेकोस्वरको
इवोलउठे तिसकोसुनिकेनाइकाकेचितमेचतराईकीआतुरताजागी सोकिसीनेनहीजानी किकौन
समेश्रीकृस्नकेसुरकेमारगहीमोयाकीसरसीकहीयेतीरसीहगकाहरुलगी अर्थकिजेसेसहृदवेधी
कोवानसहृहीकोमारगजाइलागतहे तेसेईजिततेमीनमकोस्वरआयो तितहीकोइनचितेकेसरसीहृहृ

चलाई ह्रपकेदेषनेतेपरकीया कुमारपदतेश्रोषेलवेतेश्रनूढापरकीया धर्मलुप्तोउपमाश्रलंकार स
रसीहगमे मूल दोहरा काहूंसौंनकहेकहूंवातश्रनूढागूढ सषीसहेलीसोंकहेऊढागूढश्रगूढ ७३ वा
र्ता कविकोवचन श्रनूढाजोपरकीयाहेसोगूढकहीयेछिपीवारताकोकाहूंसौंकहूंनहीकहत श्रोरऊ
ढापरकीयाजोहेसोश्रपनीगूढकहीयेछिपीश्रोश्रगूढकहीयेप्रकाससबवारतासषीसहेलीसोंकहे उदाह
रन कवित्त केसवराइकीसोंहकके छिपएकनश्रापमैहोउपरी एकचितैमुसकाइकैनेउनवातकहेबहु
भाइभरी चाहतचकोरविलोचनभासचहूंदिसतेश्रंगुरीपसरी सषीश्राजगईहुतीगोकलहोंसभहीमि
लहैजकेचंदकरी ७४ वार्ता ऊढाकेकहिवेकोश्रहहिजोकवित्तपढ्योहे नाइकाकोवचनसषीप्रति
हेसषीकछुसोंहकके कासोंहेकरकरके श्रोछपछपके एकगोपागनाकहतहे कियहकेसवराइश्रीकृ
सनेकीहेकाकरीहे हित ऐकनकहीऐनाहीकहतहे किनहीहेयह वहश्रोरहे योंश्रापसमेसभकोहो
इकाजिहपरीमाकोदेषके श्ररूएकजेगोपांगनाहेसोइनेकहीएमेरीतरफचितैकादेषके श्रोरमुसका
इकेकामदेहसकेउनकोवारताकहतहे कैसीवारताहे बहुतभावनिसोंभरीहुई श्रथवावेईहेंबहुभाव
नसोंभरीहुई श्रोहेसषीचाहकहीएसुंदरचकोरनकेसमानजेहेनेत्रतिनसोंमेरीतरफभासकहीएदे
षकेचहूंदिसतेश्रंगुरीयसरी हेसषीश्राजमेरोकलविषेगईहुती सोमेंसर्वनेमिलकरकेंहैजकेचं
द्रमासमकरी श्रर्थकीहेजकेचंद्रमाकीतरफसर्वकीश्रंगुरीपसरतहै श्रोसर्ववांकोदेषतहे तिउमेरी

औरसर्वकीअगुरीदेषकेपसरी अजोजनयहिकैमोकोसर्वकहनलगीयोसोमोहनकीप्रीतहै
ईहांपरकीयासयष्टहीहै रूपकअलंकार हैजकोचंद्रकरीयामे मूल दोहरा जगनाइककी
नाइकावरनीकेसवदास तिनकेदरसनरसकहौंसुनोप्रछन्नप्रकास ७५ वार्ता जगनाइकजो
हैश्रीक्रस्नतिनकीनाइकाश्रीराधाजूसोकेसवकविनेवरनीहै अवतिनेकेदरसनोकोजोरसहै
सोप्रछन्नप्रकासकरकेवरननहै इतिश्रीमनमहाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचनायांरसकदृष्टयायां
नाइकाभेदवरननं नाइकाभेदवरननेनामहतीयोध्याइ २ अथदरसनवरनन मूल दोहरा ऐ
दोऊदरसैदरसहोहिसकाममसरीर दरसनचारप्रकारकोवरनतहैकविधीर १ वार्ता दोऊजोहैनाइक
नाइकाऐजहांदरसनकोदरसैवादेषै नाइकानाइककेदरसनकोअथवानाइकनाइकाकेदरसनको
देषै देषकरिकेसकामकियाकामकेसहतिसरीरहोइ सोदरसनहै ताकोकविधीरचारप्रकारवरनत
है अथदरसननाम मूल दोहरा ऐकजुनीकेदेषीऐहजोदरसनचित्र तीजोसुपनोदेषीऐचोथो
श्रवननमित्र २ वार्ता ऐकतोदरसनसोहैजोनीकेकहीऐभलीप्रकारप्रतक्षदेषीऐ सोसाषिय्या
तदरसन औजहांचित्रकोदेषवोहोइतहांहजोचित्रदरसन औजहांसुपनमेदेषवौहोइतहांतीजोसुप
दरसन औजहांश्रवणाकरसुनीऐतहांश्रवणादरसन सुपनमेऔश्रवनमैतिदेकेनेमदेषतहै यो
तेचारदरसनहीहै अथसाषिय्यातदरसन मूल दोहरा नीरभषदुतिदेहकीगईसुननतहीजा

र० स० प्रि० टी० २५

२५

ताकोदेकै आँजेकाराँगेरो फेरबीमे छिपकेजोहरिकीओरदेषोतोकह्यादेष्योकछुनदेष्यो हेसषीलाजतोनै
ननकोलाग्योहै लाजनगई रैह्यौमोग्याहाव यहनजानीकुंदीपनोकेदेषेतेलाजजातहै कछुओष
नमैनहीपाईयतयातेमोग्याहाव औरुलाजतबहीआवतहैजवकोऊदूजोदेषतहै यातेनाइकाकोदेषवो
जान्यो ऐउयाइजासषीकेआगेनाइकानेकिऐसोजानिऐबहरंगहै अंतरंगतोभेदकहिदेती सोवहरंगको
नाइकानेअपनीप्रीतजिताईवड़रोडरदेष्योतोदेषोकह्यायामे यातेप्रकास विसेषोक्तअलंकार लाजछुड़
वनकेकारनकिऐलाजकोछुटवोकारजनभयो अथश्रीकृस्नकोप्रछन्नसाछानदरसन सवैया भालगु
हीगुनलाललटैलपटीलरिमोतिनिकीसुषदेनी ताहिविलोकतआरसीलैकरिआरससोइकसारसनै
नी केसवकान्हडरैदरसीपरसीपरसोउपमामतितेअतिपैनी सूरजमंडलमैससिमंडलमैधयसीम
नोताहित्रिवेनी ६ वार्ता सषीसषीबचन हेसषीभालकहिऐमसतकतापैलालगुनसोकालालडोरे
सोगुहीगूंदीहुईजोहैस्यामलटतासोसुषदाइकमोतीनकीलरीलपटीहै कालगीहै ताहिकहिऐति
सलटकोकरहाथमैआरसीकोलैकआरससोदेषतहै कोनसारसनैनीकाकमलनैनीनाइका कैसी
हैएकहै याकेसमदूसरीकमलनैनीअैसीनही सोवहसोभाजषश्रीकृस्नेडरकेछिपकेकायाछेहोई
केदेषीतवमतिवुद्धतेभीअत्यंतपैनीतीछनउपमायरसीकाप्रापतभई केमानोसूरजकेमंडलमैससि
चंद्रमाकोमंडलहै तामैत्रिवेनीकागंगाजमनासरस्तीऐतीननदीधसीहै आरसीसूरजमंडल तामैमुष

चंद्रमंडल मोतीनकीमांगगंगा वालजमना लालडोरासरस्वती नेत्रकमलनिकेपासहूरज
चंद्रदोऊहे यातेश्रारसकह्यो श्रोदोऊनकोदरपनमेदरसनभयोयातेसाक्षातदरसन सषीश्रंतरी
गहै जिनकेश्रागेनाइकानेसीसगुल्योराष्योहै यातेप्रछन्न उत्प्रेक्षाश्रलंकार श्रोरूसकोप्रकासमाक्षा
तदरसन मूल सवैया इकतोउरश्रोरूउरोजश्रनूपमतेसमनोहरहारमहारी चित्रचलैतरुनीनिहू
कौतरुनैनकीकेसववातकहारी हितकीहितसोकहेहीवनश्रावतकौलगहोहुरीकोनकहारी श्रंचर
दैनंदलालविलोकतरीदयनोषीविलोवनहारी ७ वार्ता सषीनाइकासोकहतहे हेराधेएकतो
तेरेउरमेश्रोरुहीभातकेश्रनूपमसुंदरउरोजकुचहै श्रोरुतेसेईमहामनोहरकावहूतमनकेहरनवा
राहारहे श्रोरुतेरेउरुकोदेषकेतरुनीजेहेइस्त्रीतिनहूकोचित्तचलजातहे श्रोतरुनैनजोहैपुरषतिन
कीबाततोकाहे श्रोरुमोकोहितसनेहकीवारतातोकोहितसोकहेईवनश्रावतहे मेकौलगनाईकोन
कहारीवातमासेकेदेषनवारीहोऊ तेश्रंचरकोदेहुउतेनंदलालदेषतहे रीश्रनोषीदयविलोवनवारी
ईहांसषीनेकह्यो मेकोनकहारीकोलगहोऊ यातेयहजानीयरनहेनाइकाभीदेषतहे यातेसाक्षातद
रसन सषीवहरंगहेजोकहतहेश्रंचरकोदेहु मीनपहलेनहीजानतहुतीश्रवहीजानीहे यातेप्रकास स
मश्रलंकार हारकुचनिमेजथाजोगकेसंगते श्रथचित्रदरसन मूल दोहरा चित्रहूमेहरिमित्रकीश्रति
विचित्रगतगूढ प्रगटकामकोकलपतरुकहिनसकतमतिमूढ ८ वार्ता हरिजोहैमित्रतिनकीश्रतिवि

र॰ स॰ या॰ टी॰ २४ 24

ह कोजानेहै कैकहाके सवदेषैनाह २ वार्ता जहांनाइकानाइककोदेषत हैनहां सषीजाइयोजाइ
नहै तासमेवासषीसोसषी कहतहै हेसषीनाइककीजोहै देहकीसोभाताकीभूषसौंकहाचा
हतासो नाइकाकीजोहैनीदसुकोअर्थसुतोगई क्याहरह्वैगई अर्थकिनेअइनहीकोदेषरहे
है पलकहूनहीलगत नतहीजाइ सोतूनहीअवनजाइ जहाअववह देषैहे कादेषत हैकेस
वनाइककोक्युकिनेरेगये जैताहिकहीयेतिसनाइकाकोकोजानेकहाकहै सषीकोसषीहटाव
नहै यहनाइकाकेदेषवेकोअर्थ हूजोअर्थनाइककेदेषवेको केसवदेषनादि सषीकहतहै नाइ
काकोजहांकेसवश्रीकृस्नदेषतहैतहांतूनजाइक्युदेहकीचाहतासोजिनकीनीदजातरहीहै ताहूक
हीयेतिनकोनेदेगएकोजानेकहाकहै यहनाइककेदेषवेकोअर्थभया नीदगईयानेस्कामसरीर
जानीए अथस्यानकोप्रछन्नसाप्यातदरसन मूल सवैया कहिकेसवश्रीवृषभानुकुमारसिं
गारसिंगारसवैसरसै सविलासचितैहुतिनाइकसुरतिनाइकसाइकसेवरसैं कवहूमुषदेषनद
रपनमैंइयमासुषकीसुषमायरसै जनुआनदकंदसस्वरनचंदडरयोरविमंडलमैदरसै ५ वार्ता
सषीसषीवचन हेसषीश्रीवृषभानुकुमारजोहैश्रीराधाजूसर्वसिंगारनिकोकासारहसिंगार
निकोसिंगारकरके कैसंसिमारहै अधिकाईलिएतिनकोवचके हरिनाइकजोहैश्रीकृस्न
तिनकीनरफसविलासकहिएकटाक्षनिकेसहतचितैहै कादेषतहै कैसकटाक्षहै मानोरतना

इकजोहैकामदेवनाकेसाइकबानसेबरसतहै ईहानाइककोदेषवोध्वनिसोजानिये कियोअनदे
षनिबारेयेकटाछनहीचलत यातेजानियेनाइकभीदेषतहै श्रोहेसषीकबहूंनाइकाअपनेमुषको
दरपनसीसमेदेषतहै तासमेनाइकाकेमुषकीसुषमाकोकासोभाकोअैसीउपमापरसैहेकाप्राप
तहोतहै मानोआनंदकोकंदमूलजोहेसंपूरनचंद्रमासोरविमंडलमेकासूरजमंडलमेडुरस्योकाछि
प्योडुयोदरसैकादिषाईदेतहै दरपनसूरजमंडल मुषचंद्रमा कटाछननेओकामवाननितेदोऊनके
सरीरमेकामजानिये सषीअंतरंगहैजिनकेआगेनाइकाकटाछनिसोदेषतहैयातेप्रछन्नसाछातद
रसन उत्प्रेछाअलंकार अथश्यायाकोप्रकासमाछातदरसन मूल सवैया पहिलेतजआरसआरसी
देषचरीकचसेचनसारहिले पुनयोछगुलाबतिलोछफुलेलअंगोछेमेआछेअंगोछनके कहिके
सवमेदजिवादसोमाजइतेपरआजेमेअंजनदे वडूस्याडुरदेषोनोदेषोकहासषीलाजतोलोचनलागी
येहै ५ वार्ता नाइकासषीप्रतकहतहै हेसषीमैनेअनिविषेतेलाजछुडावनकेलियेअनेकउयाइ।
किऐयेलाजनछूटी वेउपाइगनावतहै प्रथमनोमेआरसकोतजकेआरसीमेदेषो पाछेचरीकलो
चनसारजोहेकपूरतासोचसे काकपूरनेननिकोलगायो फेरमेगुलाबसोयोछकरिके श्रोरफु
लसोतिलोछकरिकेक्याथोरेसेचीकनेकरके फेरमेआछेजहेअंगोछेवस्त्रतिनसोअंगोछे सायोछे
फेरमेदकसूरीआदिसोमाजे जिवादकेसरअतरआदिकतासोमाजे इसतेउपरंतमेअंजनजोहैकाजर

र०
स०प्रि०
टी
२५
25

ताकोदेकै ओजेकागेगेरे फेरबीमेछिपकेजोहरिकीओरदेषोतोकह्योदेष्योकछ्छनदेष्यो हेसषीलाजतोमै
ननकोलाग्योहै लाजनगई ईहामौग्याहाव यहनजानीकोहूदीयनोकेदेषतेलाजजातहै कछूओष
नमै नहीपाईयतयातेमोग्याहाव ओरूलाजतबहीआवतहैजबकोऊइजोदेषतहैयातेनाइककोदेषबो
जान्यो ऐउयाइजासषीकेआगेनाइकानेकिऐसोजानिऐबहरंगहैअतरंगतोभेदकहिदेती सोवहरंगको
नाइकानेअपनीप्रीतजितारैवडुरौडरदेष्योतोदेषोकह्यायामे यातेप्रकास विसेषाकेअलंकार लाजछुड
वनकेकारनकिऐलाजकोछुटवोकारजनभयो अथश्रीकृस्नकोप्रछन्नसाछ्यातदरसन सवैया भालगु
हीगुनलालललटैलपटीलरिमोतिनिकीसुषदेनी ताहिविलोकतआरसीलैकरिआरससोइकसारसनै
नी केसवकान्हडुरैदरसीपरसीपरसीउपमामततैअतियैनी सूरजमंडलमैससिमंडलमैदुधसीम
नोताहित्रिवेनी ६ वार्ता सषीसषीबचन हेसषीभालकहिऐमसतकतापैलालगुनसोकालालडोरे
सोगुहीगूदीडुईजोहेस्यामलटतासोसुषदाइकमोतीनकीलरीलपटीहै सालगीहै ताहिकहिऐति
सलटकोकरहाथमेआरसीकोलैकआरससोदेषतहै कौनसारसनैनीवाकमलनैनीनाइका केसी
हैऐकहै याकेसमहसरीकमलनैनीअैसीनही सोवहसोभाजषश्रीकृस्नेडरकेछिपकेवायाछेहोई
केदेषीतवमतिवुद्दतेभीअत्यंतयैनीतीछनउपमायरसीकाप्रापतभई केमानोसूरजकेमंडलमैससि
चंद्रमाकोमंडलहै तामैत्रिवेनीकागंगाजमनासरस्वतीऐतीननदीयसीहै आरसीसूरजमंडल तामैमुष

चंद्रमंडल मोतीनकीमांगगंगा वालजमना लालउरासरस्वती नेत्रकमलनिकेपासहूरज
चंदहोऊहै यातेआरसकह्यो औदोऊनकोदरपनमैदरसनभयोयातेसाक्षातदरसन सषीअंतरी
गहै जिनकेआगेनाइकानेसीसधुल्योराष्योहैयातेप्रछन्न उत्प्रेक्षाअलंकार श्रीकृसकोप्रकाससाक्षा
तदरसन मूल सवैया इकतोउरओरुउरोजअनूपमतैसेमनोहरहारमहारी चित्रचलैनरुनीनिहू
कौनहूनैनकीकेसववातकहारी हितकीहितसौकहेहीवनआवतकौलगहोहुरीकौनकहारी अंचर
दैनेंदलालविलोकतरीदयनौषीविलोवनहारी ७ वार्ता सषीनाइकासौकहतहै हेराधेएकतौ
तेरेउरमेंओरुहीभांतकेअनूपमसुंदरउरोजकुचहै औरुतैसेईमहामनोहरकाबड़ोतमनकेहरनवा
रोहारहै औरुतेरेउरुकोदेषकेतरुनीजेहेइस्त्रीतिनहूकोचित्तचलजातहै औरतरुनैननजोहैपुरषतिन
कीबाततोकाहै औरहमोकोहितसनेहकीवारतातोकोहितसौकहेइवनआवतहै मेंकौलगनाईकौन
कहारीकानमासेकेदेषनवारीहोऊ तैअंचरकोदेहुउनैनंदलालदेषतहै रीअनोषीदयविलोवनवारी
ईहांसषीनेकह्योमैकौनकहारीकौलगहोऊ यातेयहजानीयरतहैनाइकाभीदेषतहै यातेसाक्षातद
रसन सषीवहरंगहैजोकहतहैअंचरकोदेऊ मीनपहलेनहीजानतऊतीअवहीजानीहैयातेप्रकास स
मअलंकार हारकुचनिमेजथाजोगकेसंगतै अथचित्रदरसन मूल दोहरा चित्रहूमेहरिमित्रकीअति
विचित्रगतगूढ प्रगटकामकोकलपतरुकहिनसकतमतिमूढ ८ वार्ता हरिजोहैमित्रतिनकीअतिवि

र॰ चित्रसुंदरजोगतहै सोगूढकहिये छिपीहुई चित्रमेभीप्रगटसाक्षातकामकोकलपतरुहै तिनकीउपमाकोम
स॰क॰ तिवुइकहनहीसकै मूढहैकामरषहै अथप्रियाकोप्रछन्नचित्रदरसन सवैया लोचनअैचलिए इनको
टी॰ मनकीगतजहपनेहनहीहै आननआइगएश्रमसीकरसोमउवेउरुकंपगहीहै तासोकहाकहिएकहिके
२६ सवलाजसमुद्रमेबूडरहीहै चित्रहूमेहरिमित्रहदेषतयोसकचीजनुवाहगहीहै ४ वार्ता नाइकनेप्रथ
26 मसषीकोकह्योहुतोतूमोकोनाइकाकोमिलाव तवसषीकहतहै वहतोलजीलीनाइकाअैसीहै तुमारे
चित्रकोदेषकेअपनेनेत्रअैचलिएआषेचलिए औरुइनकोकहिएतुमारीओरकोजुदृपवाकेमनकीगतअ
वस्थानेहसोनहीहै सावेथीहै औवाकेआननमुषयरश्रमकेजहैसीकरकहियेजलविंदसोआइगए औरेम
उठषडेहुए उरमेकंपगहीसापकरी तिसनाइकासौओरुवातकोईमिलनेकीसाकहीएवहतोलाजरूपीस
मुद्रमेबूडरहीहै कियोजोचित्रहूमेहरिमित्रकोदेषतेईयोसकुचीजानोसाक्षातवाहयकरीहै ईहाचित्रकेल
षेनाइकाकेतनमेस्वेदआदिसात्वकभावभए यातेचित्रभीप्रगटकामकोकलपतरुयहलछनजान्योयाते।
चित्रदरसन सषीअंतरंगहैजिसनेमनकीवातजानीयातेप्रछन्न सुभावोक्तिअलंकार लोचनअैचवोसु
भावहै अथप्रियाकोप्रकासचित्रदरसन कवित्त केसोदासनेहदसादीपकसंजोइकैसेजोतहीकेध्याननत
मतेजहिनसाइहै आषनकेवांधेअत्रकाहूकीवुझानीभूषयानीकीकहानीरानीप्याससकियोवुझाइहै ऐ
रीमेरीइंदमुषीइंदीवरनैनीलियेइंदराकेमंदरमेसंपदासिधाइहै अैसेदिनअैसेहीगवावतगवारकहाचित्र

तस्वीर

देषेमित्रकेमिलिकोसुषपाइहै ९० वार्ता नाइकानाइककोचित्रदेषतहै ताकोसषीकहतहै चित्रकेदेषेमि
त्रकेमिलवेकोसुषनहीपाईयत कैसेकोईनेहनेलकोऔदसाकावातीकोदीपकमैसंजोइकेवाजोइकेजा
नकेध्यानहीसेतमअंधेरेकेतेजकोनसाइहैकाहूहरकरहैनहीहरकरहै काकोक्त औरकाहूकीभूषऔ
षनिसोअन्नवांधेतेगईहै नहीगई औहेरानीपानीकीजोकहानीहेसोप्यासकोहरकरेगीनहीहरकरै
गी हेमेरीइंदमुषीक्याचंद्रमुषी हेइंदीवरनैनीकमलनैनी इंदराजोहैलक्ष्मीताकेलिषतमेंदरकाहिऐघर
मेसंपदासिंथाइहैकहिऐआइहै सोहेगवारऐसेजोदिनहैजोवनकेतिकोऐसेईक्यात्रथाईकागवावतहै
मित्रकोमिल तैचित्रकेलषेतेमित्रकेमिलनेकोसुषपाइहैनहीपाइहै गवारपदतेजानिऐसषीवहरंगहै
यातेप्रकासचित्रदरसन काकोक्तअलंकार अथश्रीकृस्नजूकोप्रछन्नचित्रदरसन कवित्त हुवेकोत
ववेकोमृदुमुसकाइकेविलोकवेकोभेदकछूकह्योनपरतहै केसोदासवोलेविनवोलनकेसुनेविनहिल
नमिलनविनमोहकियासरतहै कोलगअलोनोरूपप्याइगयोनैननीरविनमीनकेसेधीरजधरतहै
चित्रनीविचित्रकिननीकेहीचितेएमनचित्रमेचितेएचितचौगुनोजरतहै ११ वार्ता नाइकमनप्रत
कहतहै याचित्रमेंहुववेकोभेदऔलूववेकोकाप्रसन्नह्वैवेकोभेद औमृदुकहिऐकोमलमुसकाइके
विलोकवेकोक्यादेषवेकोभेदचित्रमेकछूनहीकह्योपरत ऐवालेचित्रमेनही औरुमोकोतोइनवातन
निविनसरतनही कोनसीवात ऐकतोवासोवोलेविना औरुदाकेवोलनिकेसुनेविना औहिलन
मिलनविना मोकोनहीसरतसोमेकोलगताईइसअलोनेरूपकोप्याइप्याइकेअपनेनेननकोराषों

र॰
स॰ त्रि॰
टी॰
२७
27

नीरजलकेविनामीनकैसेधीरजकोधरतहै नहीधरतहै यातेविचित्रजोहैचित्रनीताकोनीकेहीसाक्षा
त्कारनहीकोनाचितैयेदेषिये अर्थयहसाक्षातनहीदेषीए औरुचित्रमेजोदेषीएतोमेरोचितचोरानोज
रतहै कैसोएकतोप्रडमुसकाइवोदेषियेहजेबोलीएआपवासोतीजेबोलसुनीए चौथेहिलनमिल
न एचारोईयामैनही औरुनाइकाकेपासजोबोलवोनहूहै बोलनकोसुनवोनहूहै मिलनोनहूहै
तोबिलोकवोतोहूहै यातेऊहातौनहीभांतकोजरवोहूहै चित्रमेतोचोगुनोजरवोहै एकबिलोकवोभी
नाही यातेमनकोसमझावतहै प्रछन्नचित्रदरसनप्रगटहीहै यतरेकअलंकार नाइकाऔनाइकाके
चित्रमैइतनोअंतरहै औरुसकोप्रकासचित्रदरसन कवित्त अंतरिच्छगच्छनीनिजच्छनीसुलच्छनी
निआछीआछीअच्छनीनिछविछमनीयहै किन्नरीनरीसुनारियत्रगीनगीकुमारिआसुरीसुरीनहू
निहारनमनीयहै भोगनिकीभामनीयोदेहधरेदामनीयोकामकामनीयोकहाअसीकमनीयहै चित्र
हूमेचितहिचुराइलेतकोऊयहरामकीसीरमनीरमासीरमनीयहै एर वानी नाइकजाकोचित्रदेषतहैता
कीउक्तिसषीसोकहतहै हेसषीअंतरिच्छगच्छनीकाआकासमेफिरनवारीअपछराआदिकतिनको
औरसुलच्छनीकहिएभलेलच्छनोकेसहतजेहैजच्छनीजच्छनिकीकन्यातिनको औरुआछीआछी
अच्छनीकाभलेभलेनेत्रनिवारीजेहेइस्त्रीइनसर्वकोछविकीछमनीकाछमाकरावनवारीयहहै अर्थ
यहजिनकोछविकेगरवकोक्रोधहैनयाकोदेषक्षमाकररहतहै फेरयहकैसीहै किंनरीजेहैकिंनरनि
कीइस्त्रीतिनको औनरीमनुष्यनिकीइस्त्रीतिनमैजेसुनारिकहिएसुंदरइस्त्रीहैतिनको औपन्नगी सरप

निकीइस्त्री नगीयहाइनकीजेहैइस्त्रीतिनकीजेहैकुमारकन्या औ आसुरीअसुरनिकीसुरीदेवतनि
कीकन्यातिनसर्वको नमनीयहै ञानमस्कारकरनेकोजोगपहै अर्थयहसर्वयाकोनमस्कारकरतहै भो
गनकीजेहैभामनीइस्त्री औदेहथरेवामरनवंतदामनीबीजुरी कामकीकामनीरति ऐसर्वयाकेआगे
कहाकोअर्थकाहैकछुनहीं यहऐसीकमनीयहै हेसषीयहकोइचित्रमैभीमेरेचित्रकोचुराइलेतहै
सोकाजानोकौनहैयह गमकीरमनीसीताजीकेसमानहै फेरकैसीहैरमालछमीसोरमनीयहैसु
दरहै इहांसषीवहरंगहैजासोंप्यारीकोरूपायोकोउकहिकै औताकेआगेचित्रदेषतहै यानेप्रका
सचित्रदरसन उपमाअलंकार अथस्वपनदरसनलछन मूलदोहरा केसवदरसनस्वपनकोसदा
उस्योईहोइ कबहूप्रगटनदेषिपैयहजाननसवकोइ १३ वार्ता स्वपनदरसनसदाउस्योकहिपैछि
प्योईहोतहै प्रगटदिषाईनहीदेतहै अथप्रियाकोप्रछन्नस्वपनदरसन मूल सवैया आतुरजंउ
ठिदोरअलीजनआतुरजेउगहीपैसुगहीतिउ अहोमेरीरानीकहाभयोतोकहूहूफरहीजुं जौठल
गीकिधौप्रेतलग्योकिलग्योउरपीनमजाहिउरीइउ आननसीकरसीकहीपेथकसावनतेंअकुलाइउ
वीके १४ वार्ता सषीकोवचननाइकाप्रति हेराथकेआतुरकहीपेरोगीकीन्याईजोतेउठिकरकेदौ
री औसषीजनोनेजैसेआतुररोगीकोगहीअतहैतैसतैंगहीसापकरी सोहेमेरीरानीतोकहीपेतो
कसुकहांभयोहै कहूहूफतकेसबहुफरहीजुं मुकहीपेजैसेतेरीहुफकासमफरहगईहै तैसेतेमेरे

र॰
स॰ प्रि॰
टी॰
२८
28

पासकछूमेंतोकछुइरफतहैकाहूबूझतहै कियौंतोकोडीठकानजरलगीहे अथवातोकोप्रेतलग्योहे
सोमेंजानतहौं लग्योउरप्रीतम तेरेउरकोप्रीतमप्यारोलग्योहे जिसतेंतूंऐसीभीतडरीहे ऐसोउरप्री
तमहीकोहोतहे औतेरेआननसुषपैसीकरकियाजलकेविंदुहे ओसीकनासमसकारोभरतहें औतेरे
हीएमेंथककथाकथकीहे सोतूंकछूप्रीतमकेमिलतेतोप्रसंनहूजीयतिहे तूंव्याकुलहेकेकछुउठी लज्या
प्राइरनमुग्धा औसुपनमेंदेषवेतेस्वपनदरसन यहप्रकासनहीहोतहे निश्चैअंतसंदेहाअलंकार प्रथम
डीठप्रनमेंसंदेहअंतमेंनिश्चैप्रीतमहीमिल्योहे याते अथप्रीछन्नसपनदरसन कवित्त पदनषप
दवीकोपावैपदद्रोपदीनऐकोबिस्वउरवसीउरमेंनआनवी लोमसीपुलोमजांनतिलसीतिलोतमान
मेलहूंसमानमनमेनकानमांनवी जानीऐनकोनजानअवहीजगाऐजातजांनजांनहौंजोयहयौंहीय
हिचानवी चातकसीवानीमहिभावसोभवानीमहकेसोदासरतिमेंरतीकजोनजांनवी ५ वार्ता नाइका
स्वपनमेंदेषीहे ताकीउस्ततनाइकसषीप्रतकहतहे हेसषीवाकेजोहेपदचरनतिनकेजोहेनषतिनोकी
पदवीकोजोहेपदकाचौथाईभागताकोद्रोपदीभीनहीपाइसकत औउरवसीनामाजोअपछराहेसा
नोएकविस्वीउरमें नआंनवी कहीएनहीआंनीऐ तिनकेसम औपुलोमजाजोहेइंद्राणीसोयाकेरोम
समनहीहे औजाकेतिलकेसमांनतिलोतमानहीहे औजाकेतनकोजोमेलहैतिसकेसममेनकानामा
जोअपछराहेताकोमनमेंनहीमांनीएहे हेसषीयहनहीजानीयतहैकितांनाइकाकीकोनजातहूती सो

मोकोअबहीजगाऐज्ञातहैक्याअबहीजगाइगईहै ज्ञानज्ञानहोवांतौमैंनोकोज्ञांनकहीऐचतुरज्ञा
नहो जोतूयहनाइकाज्ञोनसीमोकोजगाइगईहै तांकोयोंहीयहचांनजोइकाइनलच्छनोकरज्ञांनज्ञा
इ तौमैनोकोचतुरज्ञानहो चातकपपीहेकेसम वाकीवाणीहुती औरुवाकोभावकहीऐप्रभावहैसोभ
वानीपारवतीमेहै औरुवांकीजोतिरतिमेरतीकसीकाहुजप्रमानज्ञानीयतहै जगाइज्ञानतेस्वपनद
रसन परयाइअलंकार ऐकनाइकाकोअनेकठौरुवास भवानीमैरतमै अथअवनदरसनलच्छ
न दोहरा सभइंद्रीयसुतिरूपकरपीऐत्वगुनगनगान अवनदरसनाकोकहतकेसवराइसुजान १९
वार्ता केसवकविकहतहै गुननिकोजोहैगनकोसेहहताकेगानकोजहांनाइकऔनाइकासेश्रवण
इंद्रीयनकोसुतिरूपकरकेपीयैंक्याअवणाद्वारेसुणेसोअवणदरसनसुजोनचतुरकहतहै अथप्रि
याकोप्रछन्नअवणदरसन मूल सवैया सौहदिवाइवाइसषीइकवारककांननआनवसाऐ ज्ञानेकोके
सवकांननतेकितहूँहरिनेननमांफसिधाऐ लाजकेसाजथरेईरहेतवनैननलैमनहीसोमिलाऐ कै
सीकरोअवकुंनिकसेजुहरेईहरेहीअरेहरिआऐ १० वार्ता नाइकासषीसोकहतहै कहूसषीनेप्रथ
मसिछाकरीहुतीतेरोमननाइकमेअैसोलीनहैतनकतोमनकोओरुठौरुराषसोनाइकाअपनीअव
स्थाकहतहै कहूंनाइककीसषीनाइकाकोनाइककेगुणसोहैदिवाइकेसुणाइगईहै सोहैदिवाइवेप्र
योजनयहिनाइकाकहतहीनाइककीसषीसोकिरीजिनजिनवांकीबातेसुनीहैतेतेव्याकुलभईहै त

र॰
स॰प्रि॰
टी॰
२५
29

बनाइककीसषीनेसोंहेंदिवाइदिवाइकेकही भलीएकहीबातवोकीसुनि सोनाइकायहपिछलीबातोंग्र
पनीसषीसोंकहतहै हेसषीमोकोंसोंहेंदिवाइदिवाइकेनाइककीसषीनैमेरेकाननमेंएकबारहरिआ
नबसाए अर्थइहएकहीबारमेंनेसुणोहै सोमनमोह्योगयो यातेमनहीनेकाननमेंबसाए सोयह
बातोंकोकोनजानेकिहरिकाननकेविषेतेंकितकोह्वैकेनैननकेविषेसिधाए कामआए अर्थयहफे
रमननेकाननतेनैननमेंवसाइदीए हेसषीनवलज्याकेजोसाजकहींमेंसरंजामसोसर्वथरेहीरहे
फेरमननैनैननतेलैकेहीजोहेहिरिदेतासोंमिलाइदीए सोअवमेंकेसीकरो हरेईहरेकामनेमने
हरिमेरेहीअरेमेंआइगाए सोअवकेसेनिकसे काननमेंबसाएयातेश्रवणादरसन सषीअनत
गहैजासोंमनकीप्रीतकही यातेप्रछन्न हेतअलेकार गुनसुनवोकारन हीअमेंहरिआएयहि
कारजभयो अथप्रयाकोप्रकासश्रवणादरसर मूल कबित्त कौलोंपीहोकूनरससरूपकीवुकैहै
प्यासकेसोंदासजोलोभरनैननननयीजीए बीरकीसोंमेरीवीरबारीहेन्हेंबारोआननेकहसहाकरव
लाइनेरीलीजीए वरसकमोकूयहवैसअलवेलीबीतदैहोसुषसषनिकोअवहीनदीजीए ए॰र
रीलडवावरीयहीरीझैसीहूफतोहिनाहसौंसनेहकीजेनाहिसोनकीजीए १८ वार्त्ता सषीको॰
बचननाइकाप्रति हेराधकेनंकनरसकोलगपीएगी अरथकिकाननसोंकोलगगुनश्रवन
करहैं सोकनरसकेपीएनेरूपकीजोहेत्रिषासोतेरीवुझैगी अर्थकिनहवुझैगी जौलगने

रा॰
२५

त्रनिसौभरकेरूपकोनपीजीऐतौलमनतुफतहै अर्थकिसाछानदेष हेमेरीबीरवहरणमोको
बीरकीसौगंयहैमैसतकहतहोबारीहेकासुग्याहैरेकारोआन आनजोहेहठिनाकोबारोका
जराउदइवो औरनेककहीएरतीकहसकरकेहोकोकरि अर्थयहमेरीवातमान नेरीबलाउली
जीए बरसकविषेयहअलवेलीवैसअवस्थाकेदीनेतूसषनकोसुषदेहगी सोअवहीकुं
नहीदेत अर्थकिअवहीदेह हेलडबावरीहेअहीरीअहीरकीपुत्री ऐसीतूफतोहि कातो
कोऐसीअनितहे नाहिजाहेनाहीनाहीकरनेतासोजोसनेहकीजेओनाहिनाहेनाइकतासो
नकीजीये ऐसीतोकोनहीचाहीये ओसषीबहरंगहेजानेऐरीलडबावरीअहीरीकह्योओरु
यहजोननहेकिनाइकाकनरसयौवनहेयातेप्रकासअवनदरसन काकोक्तिअलंकार सनेह
नाहिसोनकीजीएकाकीजीये श्रीकृसजूकोप्रछन्नअवनदरसन मूल कवित्त लंघनहैलोका
लोकलीकनउलंघीजानसवहीतूसमफावैतोहसमफावेको छोडनकहननननकनछूटेला
जथनमीनराषदोऊकोविदकहावेको साचकोसंकोचहूंकोहरवयच्छमयंयकेसोदासयेके
कालकेसजनयावेको उषसुषदुरीउराहरहूतेमेरेमनजैसीसुनीतेसीतोहआषनदिषावेको
८९ वानी नाइकमनप्रतिकहतहे हेमनतेलोकालोकनामाजोपदवतहे पृथ्वीकेअंतविषेता
कोतोलंघजातहेपैप्यारीसीजोहेलाकलीकसालोकमरजादासोनहीउलंघीजान ओहेमनतूस

र
स॰ट॰
टी॰
३॰
30

बहीकोसमझावतहै तोहकौनसमझावै अर्थकिसंकोचकोतजकेप्यारीकोमिलऔफेरहूकैसोहैं तन
कहीयेबिसतारजोहैलाजकोनाकोछोडनकहतहै औछूटतनहीहैतनकभीकाथोरोभीयनअरुमी
तइनदोऊअनकोराषकैकोविदकहीयेपंडतकोनकहावतहै अर्थकिकैयनहीरहेकेमित्रहीरहे यन
मीतदोऊनकोराषवोकठनहै औसप्यारीकेदेषवेकीलगनहूराषीये औलज्जाहूराषीये।इनदोऊनको
राषवोकठनहै सोचअरुसकोचइनकोपूरबपछमकोपंथहै सोयेकहीसमैविषैयेकहीमनुष्यकोनया
वनहै दोऊमारगमैं सोकैतोप्यारीकेदेषवेकीसोचहूरहेकैसंकोचहूरहै दोऊनकेमारगधाइवोकैसेवनै
सोजैसीतैंप्यारीसुनीहैतैसीताकोदुषकरकेअथवासुषकरकेअथवाउराउरीकहीयेछिपछिपकेअथ
वाहरहूनेकोनआषनसोदिषावै अर्थकिकोऊदिषाइवेकोसमरथनहीआपहीचलकरदेष मनसो
बचनयातेप्रछन्न प्रेमअलंकार रूपटविनाप्रीतते अथश्रीकृस्णप्रकासश्रवनदरनसन मूलक
वित्त निपटकपटहरिप्रेमकोप्रगटकरवीसविस्ववसीकरकेसेउरआनीये कामकोप्रहरषणाकामना
कोबरषणाकान्हकोसंकरषणासभजगजांनीये कियोकेसोराइमहमोहनीकोभषनहैकियोहूजवा
लनकोहषनवषांनीये सुजनहीछूसोधांमवनवनडोलेस्यामराधेतेरोनामकेउचाटमंत्रमांनीये २॰
वार्ता सषीकोवचननाइकाप्रति संदेहसोकहतहै हेराधेतेरोनामकैसेउरमैंआनीये श्रीकृस्णकेनि
पटसाअनंतकपटकेहरनवारोउरमैंआनीये अथवाकृस्णकोप्रेमकेप्रगटकरनवारोउरमैंआनीये

३॰

अथवाबीसविस्वबसीकरनवारोउरमैआंनीऐ आगेकैसेउरआंनीऐयहदेहरीदीपककीजै कांम
देवकोप्रहरषणाक्षावथावणावारोउरमैआंनीऐ अथवाकृस्नकीजैहै कांमनातिनकोवरषणाकाष्ट
रणाकरनवारोउरमैआंनीऐ अथवाकृस्नकोसंकर्षणकहीऐ षैंचनवारोउरमैआंनीऐ अथवामहजो
हैपृथवीताकोभूषनहै अथवातेरोनाममोहनीजोहैमोहनवारीताकोभूषनहै अथवाव्रजबालना
कोभूषनहैं फेरकैसोनामहैदूषजेहैदोषसोजामैनहीवषांनीयतिहै फेरजिसतेरेनामकोसुनतेईक्रो
सनेथांमवाछ्रछूटगयोहै ओरबनबनविषैसामडोलतहैं यातेहेरायतेरोनामहैकिधोउचाट
मंत्रमांनीयतहै सवीबहरंगहै जोअनेकप्रकारकीविचारकरनहै आकहतहैअैसोसभजगमैजांनी
यतहै यातेप्रकास सुननपटतेश्रवनदरसन संदेहाअलंकार मूल दोहरा दरसनरसरमनीनि
केकहेयरमरमनीय प्रगटनप्रेमप्रभावअबकहौंकछुकमनीय २१ वार्ता रमनीनाइकाओनिकेकही
ऐनीकेअैष्टजोहेनाइकश्रीकृस्नतिनदोउनकेदरसनोकेरसवरनेहै ईहांनिकोनीभयोअर्थकेलीऐ अ
बतिनकेप्रेमप्रभावकोप्रगटनोकमनीयकहीऐसुंदरकछुककहतहौ इतिश्रीमनमहाराजकुमार
श्रीइंद्रजीतविरचितायांरसकप्रियायांचतुरविधिदरसनवरननंनामचतुरथोध्यायः ४ अथदंपति
चेष्टावरनं मूल दोहरा जिनकेचितकीजानसखि पीयसौकहेसुनाइ कहेसखीसौप्रीतमैआपुनते
अकुलाइ १ वार्ता तिनकेचितकीवानाइकाकेचितकीजोबार्ताहैतिनकोजांनकरकेसषीप्रीतमकानाइ
कनासैसुनाइकेकहे फेरपीयआपहीतेअकुलाइकेअपनेजीयकीबारताप्रियाकीसषीसोकहेसोचेष्टा

र॰
स॰ त्रि॰
टी॰
३१
31

अथराधकाकीसषीकोबचनकृस्नसो मूल सवैया कालिकीग्वालतोआजहूंलोनसंभारतकेसवकै
सेहूंदेहै सीरीहैजातउवैकबहूंजरजीवरह्योकिरहीरुचरेहै कोरविचारविचारतहैउपचारनकेबरषे
सषिमेहै कान्हबुरोजिनमानोतिहारीबिलोकनमेबिसबीसबिसेहै २ बार्ता सषीकोबचननाइकप्र
ति हेकृस्नकालिकीजोग्वालअहीरीहैकोनसीजोतुमनेदेषीहुती ईहांविरिंगसोदेषवाजान्योसोआ।
जलोअपनीदेहकोकिसोप्रकारभीसंभारतनहीहै अर्थकिसरीरकीसुधनहीअचेतह्वैरहीहै सोवहकु
बहूंतोसीरीकहीएसीतलह्वैजातहै औकबहूंजरउठतहै।तातपतह्वैजातहै सोजीवरह्योकिरहीरुचरे
है योकोअर्थजीवमात्ररह्योहै कैरुचकहीएकांततामात्ररहीएकरोहविचारनकोविचारत
है कछुविचारमनमैंनहीआवत औउपचारजेहैउपाईतिनकेतोमेहबरषाएसषीयोनेमेवाकेतन।
विषैसुधनहीभई सोहेकृस्नतुमयावातकोबुरोमतमानो तुमारीविलोकनकहीएदेषनकेविषैबीस
बिसैविषहैयामेसंदेहनही सोएकविषदेषवेहूंतेचढतहै यातेविषकोचढवोकह्यो औसषीनेना
इकाकेमनकीबातनाइकपासकही यातेप्रियाकीसषीभई ग्सिराइवोनयनह्वैवोइत्यादिचेष्टाहीहै
काव्यलिंगअलंकार विलोकनमैविषकोह्वैवोसिराइवेतेऔनयनह्वैवेतेपुष्टकीयोयाते श्रीकृ
स्नकोवचनप्रियाकीसषीप्रति मूल कवित्त प्यासह्वैरहीउदासभागीभूषगहीत्रासकेसोदासनींद
हूकीनिंदाननितठानीहै मतिकोमतोनलेइप्रियाकोविदाइदेइसोभासहूकीसेजसेइसमसुषमानीहै बिस
सेलगनगौनकेलकीनपरतीनप्रीतउरपाहुनीसीपचपहिचानीहै तोविनकहूकोसाथथीरमानतोकेसाथ

मोहकोमिलावैहायलाजकेबिकांनीहै वार्ता नाइकसषीसोकहतहै तूंप्यारीपासजाइकेहमारीऐ
सीअवस्थाकहु किनाइककीप्यासमनोउदासहै रहीहै औत्रासभइकीगहीहुईकायकरीहुईभूषवीभागग
ईहै औरतिसनेनींदकीवीनिंदाभीनितनठानीहैकाकरीहै अर्थयहप्यासभूषनीदसर्वजाकीजातरही
है फेरवाकीकैसीअवस्थाहैमनजोहैबुहताकोमनोनहीलत औविद्यादेतहै औरजोनसीसोभावानैस
इसेरकेसर्वसूषसोमिलाईहुतीसोसकगईहै औरवाकोगीतविसुमेलगतहैसुनततनही औकेलजोहै
क्रीडातिसकीवीप्रतीतनहीहैउनको किहकिनहीहै एकप्रीतउरविषेहै सोवीपाइतीसीहै चाल्या
चाहतहैताकोआदरकरकरराषीयतिहै सोयहभीपचकरकेकामसांमसांपहिचांनीहै किप्रीतरही
हैअबताईसोहसषीहमारीयहअवस्थाकीजोगाथहैकाकथाहैसोतेरेविनाकोनकहेनाइकापास
कैसीकथाकितिसनाइककेसाथथीरताजोहैथीरजताईसोभीनहीरहीहैयहतेरेविनाकोनकहे औरु
जोवहिप्यारीलाजकेहाथविकरहीहैकालाजवारीहैतिसकोतेरेविनामोकोकौनमिलावे तूंहीमिला
वैगी प्रियाकीसषीसपष्टहीहै प्यासभूषरमादिभागनतेव्याकुलताजांनी यातेप्रीतमअकुलाइ
केकहेयहलच्छननिकसो इत्याअनुप्रासअलंकार प्यासत्रासआदिकमे मूल दोहरा प्रियसोप्रग
टनप्रीतकहुजिननेकरेउपार तेसभकेसवदासअववरननसभनसुनाइ ४ वार्ता कविकोबचन
प्रियजोहैनाइकतासोंप्रीतकेप्रगटावनवारेजितनेजितनेउपारनाइकाकरतहैतेसर्वउपाईनकोकेसवदा
सवरनतेहैसरवकोसुनाइके मूल दोहरा जवचितवैपीयअनतहीनवचितवैनिरसंक जानविलो

र॰ स॰ प्रि॰ टी॰ ३२ 32

कतआयसुंअलहित्तगावैअेक ५ वार्ता जवतोनाइकअननकहीयेओरतरफदेषनवतोनाइकानाइककी
औरनिसंकदेष ओपीयाकोअपनीतरफदेषतेजांनकेनाइकाअलीसषीकोअेकमेलगावैवागोदमेंले
इ योंचेष्टाकरे मूल दोहरा कवहूंस्रुतिकंडूकरेआससैाअंडाइ केसवदासविलाससोबारवारजंभाइ
६ वार्ता पीयकोदेषकेनाइकाकवहूंतोस्रुतिकंडूकरेकाकांनषुजावे ओकवहूंआलसकेजुकतहेकै
अंडाइ केसवकविकहतहैं विलासकेसहतबारंबारजमुहावे मूल दोहरा फूवेहूंहसहसउवेकहे
सषीसोवात अेसेमिसहीमिसप्रियापीयहिदिषावेगात ७ वार्ता फूवेईकाहासीकेविनाहीहसहसउ
वे ओफूवेईसषीसोंवातकहे सोप्रियाजोहैनाइकामिसहीमिसवाछलहीछलपीयनाइककोअपनोगा
नसरीरदिषावे मूल दोहरा योंहीपीयप्रियानिप्रतिप्रगटतअपनीप्रीत सोप्रछन्नपरकासकरवु
हुवरनकरतसमीत ८ वार्ता योंहीकहीयेइसीप्रकारनाइकनाइकाप्रतिअपनीप्रीतकोप्रगटतहे
सोप्रीतप्रछन्नप्रकासकरकेवुद्धकेवलसोनाइकासमीतकहीयेमित्रकेसहतकरतहै आगेकवित्त
विषेजितावतहे अथराधकाकीप्रछन्नचेष्टा मूल कवित्त चोरचोरचितचितवनसुषमोरिमा
रिकाहेकोहसतहीयेहरषवढायोहे केसोराइकीसोंतूंजंभातकहावारवारवीरीषाङूमेरीवीरआ
रसजोआयोहे अेंडसोअेंडातअनअलउडातउरउघरउघरजातगातछवछायोहे फूलफूलभेद
नरहतवरफूलफूलमूलमूलकहतकछुनैंआजषायोहे ९ वार्ता ईहानाइककोदेषकेनाइकाचे
ष्टाकरतहे तासोसषीकहतहे हेराधकेतेंचितकोचोरिचोरिकेकाहुराइहुराइकेकहाचितवतहे

देषत है और तूं मुषको मोर मोर के क्या फेर फेर के काहू को हसत है और तू हीय में ऐसो हरष
काहे को वढायो है और तो को के सोराइ श्री कृस्न की सोगंध है सा च कहु तूं वार वार का जंभात है
हू मेरी बीरवहू न जो तो कउ आरस आयो है तो तूं वीरी पान की षाउ और तूं ऐंड सो ऐंडात है क्या
अंग को मरोरत है अत्यंत तेरे उर को अंचर जो है वस्त्र सो उडात है या ते तेरो गात उघर उघर जात है
के सो गात है कवि सो छायो हो यो है और तूं मा को फूल फूल के भेटत है क्या आलिंगन करत है
और तू मेरे उर विषे मलाउंस फूल फूल रहत है और तूं भूल भूल के कहत है क्या विचार विचार
नहीं बोलत सो तूं कछु आज तें कछु अमल षायो है चेष्टा प्रगट ही है सषी वह रंग है जिस ने चे
ष्टा न ही जानी या ते प्रछन्न मोर मोराइ स्मादिक स्तुभाव वरनन ते सुभावोक्ति अलंकार अथ प्र
षका की प्रकास चेष्टा मूल कवित्र मेरो सुहृ तूं मेरे नेरी है जे सा धु तू मवे की चा सो मस ऐस कंुसि
रात प्यास डाढे है छोटे छोटे कर कहा छुवात छवी लीछा ती छावो जाके छुइवे को अभिलाष
वाढे है षेलन जो आई हो तो षेलो जे से षली आति के सोराइ की सौं तेए को न षेल लो काढे है फूल
फूल भेटत है मो हक हा मेटी भटू भेटो किन जाइ जे वे भेट वो को ढा ढे है १० वार्ता सषी के वचन ना
इका प्रति हे राध के मेरे सुष जुवन की पेले ते री हूं मवे की साधु जो है इछा सो प्रजे का प्र री होत है

र॰
स॰त्रि॰
टी॰
२२
33

अर्थ किन हीहोत हे प्यारी जे प्यासके डाढे कहीए जरे हो पे असुवा प्राण हे सो या सके चाटे ते के से सिरात
हे वा सीतल होत हे और मेरे जो छोटे छोटे कर हे हाथ हे तिन को अपनी छबीली छाती सो का छु हावत
हे जिसके कर छुवाइवे को तेरे मन मे अनेक अभिलाष बाढे हे ताही की छाती को कर छुहावो जो तें मेरे
साथ षेलनि आई हे तो जे से षेलीयत हे ते से षेलो तो को के सो राइ श्री कृस्न की सो ह हे तें सा च कहु तेने पे
कौन से षेल काढे हे हे मेरी भटू तें फूल फूल कहीए प्रसंन हूं के मो को कहा भेटत हे जे तेरे भेटवे को वे
कृस्न ढाढे हे और गुरी सो वनावते हे तिन ही को जाइ के क्युं नही भेटत ईहां मुष चुंबन करवो इत्यादि उपा
उ प्रीत बढनके लीए करे य ही चेष्टा और जाके घर नाइका षेलन गई हे सो सषी वहू रंग हे जो कहत हे
कौन षेल काढे हे और याने चेष्टा जानी याते प्रकास का को कि अलंकार प्यासके डाढे सिरात हे नही
सिरात अथ श्री कृस्न की प्रछन्न चेष्टा मूल कवित्त छोरि छोरि वांधो पाग आरस सो आरसी लै अनत
ही आन भांत देषत अनैसे हो तोरि तोरि डारत तिनू का नुप कौन पर कौन कूं परत पाइ वा वरें जु अ
से हो कव हूं चुटक देत चटक षुजावो कान मदक अडात जु री जुं जंभात तैसे हो वारवार कोनप
रहेत मन माला मोह गावत कछू के कछू आज कान्ह केसे हो ११ वार्त्ता सषी को वचन नाइक
प्रति हे कृस्न आज तुमारी का अवस्था भई हे छोर छोर कहीए षोल षोल के तो तुम वार वार
पाग वांधत हो और तुम अनत ही अनत भांत का और ही और प्रकार अनैसे का तुर से देषत हो और

तुमतिनकानोरतोरकौनपैडारतहो औपांइनकाकेपरतहो जुंकहीएजेसेबावरेहोतहैंअैसेहो।
तुम औरुकवहूंतोतुमछुटकौदेतहो औचटककहीएकिनकमैकाननकोषुजावतहो औरकवहूं
मटकतहो औकबहूंअैडातहो औरकवहूंतुमजुरीकहीएतापवानरोमीजैसेजैभानहैंअैसेजैभात
हो औरुयहमननकीजोहैमालाताकौकौनपैवारवारकेमोकादेतहो औरकछुकेकछुगावतहो अ
र्थकिविचारसहतनहींगावत हेकृस्नआजुतुमकेसेहोमेरेपासकहो सषीवहरंगहेजोजाननन।
हो चेष्टाको·घातप्रछन्न सुभावोक्तिअलंकार सुभाववरनियाआलसइत्यादि अथश्रीकृस्नजूको।
प्रकासचेष्टा मूल कवित्त जोलगलोचलगाइनदैदिनहीदिननाचतसाफपहाऊ केसवमंत्रकरौव
सकारकहारकजंत्रकहोलोगनाऊ हारहेहरिकैहूंमिलीनमिलाऊजोनाहतोमांगोसुपाऊ वादी
वेजाइमिलोमिलवेकऊ औरकहाकन्योकराल्याऊ १२ वार्ता सषीनाइकैप्रतिकहतहै हेहरिजाल
गकहीएजिसनाइकाकेलीएतुमलुगाईकहीएरस्रीनकोलोचजेहैरिसवतोतिनकोदैदैकदिनप्रति
साफपहाऊकहीएरातऔरुदिनविषैनाचनचावतहुते औरवाकेमिलनकेलीएतुमवसकारकक
हीएवसीकरनमंत्रकरतहोऔहारकजंत्रकाजेहरिल्यावैआकरषणजंत्रतिनकोतोमैकहांलोगि
नाऊ अर्थकिवहुतनकीएतुमनेसोतुमरतनेउपाइकरकेहाररहे वहनाइकाकौंहूकहीएकिसीप्रका
रहूंतुमसोनमिली किसीप्रकारकानेनवैनकरकेहूंनहीमिली तिसनाइकाकोजोमैतुमसौमिला

ऊनौ मैं तुम तैं जो मागौं सो पाऊं हे हरि वे कहीए वह ठाढी है तुमारे मिलवे को ग्रो गुरी सो वनायो ता सों जा
इ मिलौ ग्रो रुतुमारे पास कहा मैं कन्यां गोद भर के ल्याऊं मंत्रवस कार करमादि चेष्टा सषी वहरंग है
जे कहन है मागो सो पाऊं यातें प्रकास सूछ्म आलंकार जीयकी जो नीसषीनें लोचग्रादि ऋया ते इ
ति चेष्टा अथ सयंदूतलच्छन मूल दोहरा जो कहुं दूंन मिलै कहूं के सवदो ऊ ईठ तौ तव अपने आप
ही वुधि वल होत वसीठ १३ वार्ता कविको वचन दोऊ नाईव कहीए मित्र कहुं हूं कहीए कि सीतरो कहूं
मिलै नही तौ तव वे अपने आपही कुछ के वल कर के वसीठ कहीए वकील होइ सो सयंदूत कहावे अथ
श्रीराधका को प्रछन्न सयंदूत मूल सवैया दूरतें देषवे को हूं हूं दीन मनाई ऊनी लिषही लिषवी ठी
देषमिल्यो मन हौं हूं मिली मिलषेल्लवे हूं कोमिलीमत मीठी अैसे मैं ग्रो रुचलाइ हौ के सव केसहूं का
न्हकुमार दै ही वी हूं हैं नवार मुरार के नार ज्यूं टूटै गी लाल हमैं तुम रई ठी १४ वार्ता नाइका को वचन
नाइक प्रति हे हरि मेरे हूर रही तें देषन के लीए तुमनें प्रेम की प्रत्रीन को लिषलिष के ग्रोर दीन है है
के मैं मनाई ऊनी सो तुमारो मन मिल्यो देषकें मैं हूं मिली अर्थ यह तु मनैं नो दूरनें देषवे के नमित पत्र
का लिषी ऊनी ग्रो तुमारो प्रेम देषकें मैं आप हूं मिली ग्रो रु मिल के षेलवे को हमारी तुमारी जो
मीठीमत है सो भी मिली अैसे मैं काइ स अवसर मैं जो तुमेरे साथ ग्रोर कछु वारता मुरन करवे की च
लावें गो हे कां न्हकुमार ठीठी दै कें का जोरा वरी करकें तउवार कहीए देरि न होही है मुरार क्या भिसकी ता

रकीनिअ्राईहमारीतुमारीईठीज्योहैमित्रतासोहूदज्जावैगी ईहांकहूवेविषैतोअैसेहैकिहममैंारति
कीबारतामनचलावो ध्युनसोकहीकिरतकीबारताचलावो औरमुरारकेनारषैचेतेवधतहै यांमैजि
नाईज्जुहमारीतुमारीप्रीतवधैगी यांमेस्वतंत्रस्वयंदूतहै संकेतजितानाइवोनही नाइकनाइकाईहैंयांते
प्रछन्न गूढउत्तराअलंकार नाइककेमनमैंनौरतकीबातझतीपेपेसंकोचसोनकही सोनाइकानेमन
कीबातकोअपनेगूढभावसहूतउत्तरदियो याते अमच सवैया छुवोजिनहाथसोहाथहियेपलही
पलवाढतप्रेमकला नजानीयेजीमेकहावसजाइचलेपुनकेसवकौनचला भलेहीभलेनिवहैतोभ-
लीयहदेषवेहूकीहलाईभला मिल्योमननौमिलवोईकहूमिलवोनअलोकहैनेदलला १४ वा
तौ नाइकानाइकसोकहतहैं हेहरितुमअपनेहाथसोमेराहाथनछुवोकानापकरो कोनहमारेहा
थकेलगापेतेहियेसेपलपलविषैप्रेमकीकलावाढतहै फेरनहीजानीयेहैजियमेहमारेतुमारेकाव
सजाइ फेरकौनसीचालचलेहमतुममे यहहरीतुमारीप्रीतजोभलेईभलेनिवहैतोभलीहै औरुयह
जोदेषवेकीहलाईहैहलीमीहैयाहीमैहमारातुमाराभलाहै औरुजोमनमिल्याहैतोकहूमिलवोभी
कैहै अरुहेहूसअलोककहियेअपजसकोमिलवोनहीहोत ईहाहूकवेमेतोअैसेहैकिहाथसोहाथ
मतछुवो औध्वनिकरिकेजानीकिहाथसोहाथछुवायोचाहतहै नाइकनाइकाहैयातेप्रछन्नगूढउ
त्तरअलंकार अथप्रियाकोप्रकाससस्वयंदूत मूलसवैया याइनहीघरदाईपरीज्जरआईघिलाईकीओ

र·
स· प्रि·
टी·
२५
35

षवहाऊ पौरीऐश्रावैरनौंधौरइतेपरऊचेस्तुनेस्तुमहाउषपाऊ कान्हूनिवेरऊन्याइनयोइनश्रालिन्किोल
गहौवहराऊ ऐसवमोसंगषेलनिश्रावैकिहौइनकेसंगषेलनिजाऊ १६ वार्ता नाइकाकोवचनना
इकप्रति हेकृस्नयाइनोचरनहीहे दाईज्वरसोकातायसोपरीहे श्रोषिलावोकीश्रोषवहांऊकाउय
णीश्राईहैं श्रोपौरीश्राजोहेदरवाननोकोरनौंथोश्रावतहै श्रोइतेपरकाइसनेडपरेनदरवानकोऊचोरु
ईदेनिहे सोमेयांतेमहोइषपावतहौं हेकृस्नयहनयोकहीऐनवीनन्याइहेनाकेम्तुमहीनिबेरो श्ररु
इनश्रालनकोकाइनसषीनकोमैकोलगबहराऊकहीऐपरचाऊ कहेतोतुमऐसेंप्रगासषीमेरेसंग
षेलनश्रावैकिमैंइनकेसंगषेलनजावौ कंतुमेरोचरनोसूनोहेइनकोश्राइवौचाहीयनिहे ईहांव्यंगसौं
सूनोचरजितायो यातेस्वयंदूत श्रोसषीवहरंगहैजिनकोवीचनहीदीयो श्रोसषीयोनेश्रनमानसो
जांनलीनोहे नाइकानेकछूलपेटकीवातनाकहकेश्रपनोचरसूनोजितायोहे यातेश्रनुमानरूपप्रका
स जोनाइककोसनाइकेसषीसोनाइकाकहेसोवाकबदद्यथा ईहांनाइकहीसोनाइकाकोवचनहे
यातेयहस्वयंदूतकाहे गूढउत्तराश्रलंकार श्रथश्रीकृस्नकोप्रछन्नस्वयंदूत कवित्त श्रापनेहीभा
इकेऐसाहनसषीकसेवेसादासदासजेचलतचित्तलीनेहे श्रापहीश्रठाउकेऐलेतनाममेरोवेतोबापुरे
मिलायकेसलायकरहीनेहे प्रियाकोसुनाइकेकहतश्रेसेघनस्यामस्तुवलकोलैलेनामकोममेभी
नेहे सायलैसघानश्रवजैवोवनछाडोहमषेलवेकोसंगसदासाषामगकीनेहे १७ वार्ता कहूंऐकांत

इस्थानमैनाइकाकीटहलविषैसषीलगीहुईहै नासमैनाइकआऐ जानेकिकोऊसषीनिकटनही न
वनाइकाकोसुनाइकेऔवलभद्रकोनामलैलैकहनलगी कछूवलभद्रपासनहीहै परऔरकोऊऱ
हजांनैकिवलभद्रसोवातैकरतहै यांतेतिनकोनामलैलैकहतहै सोजेवेसषीऐकोंतइस्थानमै
टहलकरतहैतिनमेसषीसोसषीकहतहै हेसषीनाइकप्रियाकोसुनाइकेसुवलजोहैवलभ
द्रताकोनामलैलैऔसेकहतहै हेवलभद्रअवहमनेसषाजोहैमित्रतिनकोसंगलेकेवनविषैजेवोऊ
डा षेलवेकेलीऐअपनेसंगअवसाषामृगजहेवांदरसोसषाकीऐ यातेसषानकेऔगणाकपनके
गुणाकहतहै सषाकैसेहैआपनेहीभाइकेहै सोआपनेहीसुभाइकेहै मेरेअधीननहीफेरकैसेहै
सरीकसेसोहतहै वेवानरकैसेहैमेरेचिन्हेकेलीऐदासकीन्याईचलतहै फेरगोपकैसेहैआयही
अथाउकहीऐषुटआईकोकरकेमेरोनामुलेतहै वेवानरकैसेहैवापुरैसाकंगालहैषुटयाईनहीक
रसकत फेरमिलायकहीऐवचनहैतिनकरहीनेहै अर्थयहवोलननही हेसषीऔसेप्रियाकोसु
नाइकेघनस्यामजूसुवलवलभद्रकोनामलैकहतहै वलभद्रपासनहीकियोवहतोसषाहैवाकेरा
वरोसषानकीनिंदाकैसेकरैयातेजानिऐवाकोनामहीलैलैकहतहै फेरघनस्यामकैसेहैकामकेभय
सोभीनेकहीऐमिलेहुऐहै कैसेकहतहैकिसषानकोसाथलेकेवनविषैजेवोतजो औषेलवेकोवान
रसषाकीऐहै ईहांव्यंगसोप्रियाकोयहजितायोकिअवहमवनविषैऐकलेहीरहतहै सोयहमारेमिला

पकोरोकनवारोकोऊनहीहोत यहसयेहूतभयो सषीग्रंतरंगहे जोकामभइकोभेदजानततहे यातेप्र
छन्न गूढउत्तर ग्रलंकार ग्रथश्रीकृस्नकोप्रकासस्वयंहूत मूल कवित्र वनजेयेचलोकोऊठालीहेके
सवहोतुमहीतोग्ररीग्ररीहो कछुषेलीयेषेलनग्रावतग्राजहीभूल्योनभूल्यागरेपरहो हितहेहूी
यमेकियोनाहितऊहितनाहिहीयेतोललालरहैं हमसोंयहवूफीयेग्रेसीकहोजूकहीतोकहीव
कहाकरहो १० वार्ता बहूरंगसषीकोनिकटजोनकेनाइकनाइकाछ्ठपाढसोबारनापरसयरकहूत
हे नाइकनेकह्योचलोवनकोषेलनजाईये सोनाइकानेसषीनकोसुनाइकेकेगेरवचनकह्यो कोऊ
ठालीहेवाकारजरहूतहेजोवनकोषेलनजाउ ग्रोरनाइककोयहसमफायो वेगसो किकोऊठाली
नहीहे सर्वग्रपनेग्रपनेकारजमेरुकीहे ग्राजुमेमिलहोसंकेतमे फेरनाइकवोले होतुमही सात
हीठालीहे ग्रागेतोग्ररीग्ररहो नाइकानेसषीकोसुनाइकेतोयहकह्योजोहमठालीहेतोतुमहमारे
साथग्रठीजोहेह विनासोग्रडतेहोहमेनहीजानो ग्रोनाइककोसमफायोजोमेठालीहोतोतुमसोहठक
रतहो नहीकरतहोसंकेतमेचलहो फेरनाइकवोलेकछुषेलीये नाइकानेसषीकेसुनाइवेकह्यो षेल
नग्रावत मोकोषेलनहीग्रावत ग्रोनाइककोसमफायोषेलनग्रावतहे फेरनाइकवोलेतुमकोषे
ल गरेपरहो सातुमहमारेगरेपरतहो ग्रोनाइककोसमफायोउतोइलकेजुकरतहोहमषेलनहीभू
ली गरेयरहो सागरेसोलगहो ग्रागेहितहेहीग्रमे कियोनाहितऊ नाइककहतहेनेरेहीयमेषेल

वेकोहितहैकिधोहितऊनाकहीऐनहीहै अर्थयहषेलविषनेप्रेमहूंह्रकीयो फेरनाइकानेकह्यो
जोहमारेविषेहितनहीतोतुमलरौगे नाइककोसमझायोहेनाहिपतिमेरेहीपेमेहितहै औदेललामे
नोनेरेलरह्योक्यालठलगीहैं काआधीनहैं फेरनाइकवोलेतुमकोहमसोअैसीवूझीऐहैक्याअैसीचा
हीऐहै जोऐवातेकहतहौ नाइकावोलीहोकहीतोकहीतुमहमारोकहाकरोगे औनाइककोसमझा
योतुमारीकहीमेकहीहै औकहाजोहैतुमारीआगयासोमेकरहौं अर्थयहमंकेतमेमिलहौं ईहांप्रि
यमवचननाइककोहै यातेनाइकहीकोसयंदूतहै औसषीवहरंगहेयाहीतेनाइकानेरूषवचनकहे
परउन्हानेअनमानसोजानीऐकजुबंगसोवोलतहै प्रीतहैइनमेयातेप्रकास गूढउतराअलेकार अ
न्यचककवित्त केसोदासचरचरनाचतफिरतगोपऐकपरेछकतेमेरेईसुनीयतहै वारुनीकेवसबलदाऊ
भएसषासवसंगलेकोजेयेडषसीसधुनीयतहै मोहतेगएहीवनेदीहदीयमालायाइगाइनसमारवे
कोचित्तुचुनीयतहै जोनजाउलोलनेनिलग्रवामरहभषेयरकयरेईआजुसूनेसुनीयतहै १५ वारता
हेलोलनेनीचयलनेनीराधेदीयमालाकेउतसवमेएकगोयतोचरचरमेनाचतफिरतहै औरुएकगो
पजेमदसकेमदमेछकयरेहैक्यामत्रभएहैतेमेरेईसेसुनीयतहै क्याविचारियतहै औरुवारुनीजोहेम
दरानाकेवसवलदाऊवलभद्रजीभएहै औसर्वसषाभएहै सोअयनेसंगकिसकोलेकरकेजाईऐ अर्थ
किसंगचलवेकोसमरथकोऊनही इसडषसोसीसधुनीयतहैक्यामायोहलाईयतहै सोहेराधकेदीह

र॰
स॰प्रि॰
टी॰
३८
37

दीपमालाकहीये बडीदिवालीको दिन याइकरके गाइनके सवारवेके क्या सिंगारवेके चित्र विषे यह सुनीय
निकोहीये विचारीय जिहे कि मोहनो गाये हीवनतहै हेलोलनैनीजो मैं रातको तहां न जाउ तो मरवलेख्वा
कहीये नुरनके जनेवछेहरमधूषमरजाहु को आजतो घरककहीयेगऊअनके अस्थान षरे ईसा अपंत
हीसुनेस्तुनीयनहे ईहांव्रगसो पियारीकोजितायोकाजु घरकमेमिलायकीजे याते स्वयंहत बहरंग
सषीनै अनुमानसोजान्यो याते प्रकास मूढउतराअलंकार इतिस्वयंहत मूल दोहरा ऊढापुनरइह
भांतकरबहुविधहितहिजनाइ आपुनहीतेलाजतजपीयहिमिलैअकुलाइ २० वारता कविकोवचन
ऊढापरकीयानाइकाजोहेसोइसभांतकरके क्या स्वयंहूतकरकेबहुतविधसोअयनेहजनाइके आपही
तेलाजतजकेनाइककोअकुलाइमिलै उदाहरन कवित्त पंथनथकतपलमनोरथरथनिकेकेसोदा
सजगमगाजेसेगाये गीतनमे पवनविचारचक्रचक्रमनचित्तचढ मूतलअकामभ्रमैग्रामजलसीतमे को
लौराषेथिरवपुबायीकूपसरसमहरिबिनकीनेबहुवासरबिदीतमें ग्यानगिरफोरतोरलाजतरुजाइमि
लौ आपहीते आयगाजो आपनियप्रीतहैं २१ वार्ता ऊढानाइका अपनेमनप्रतिकहतहै हे मनतेरे जो मर
नोरथरूपीरथहैसोरातदिनचलतहे इनकेजोहेपंथामारगसोपलभरभीथकतनहीहै कैसेजैसेजग
तमेमगक्यामारगइनकेगायेहै गीतमैक्यामासनमेकिऐकवहूंथकतनाही फेरऐमेनोरथरूपीरथकै
सेहै पवनकेजोहे विचारसोईयाकेचक्रहै यथाहे पवनकोननीचोस्वासअरुऊचोस्वासअथवानासिकाके ३८

स्वामनिसरयके ऊपर मेरो मन रूपी जो है चक्र मन स्वारथी सो चढिके भू प्रिथी में औ तल पाताल मे आकास
मे भ्रमत है औ ग्राम विषे जल विषे सीत विषे भ्रमत है सो मन की तो यह विवस्या है औ रु इस बप्रुकहीए सरी
र को मे कोलगत नाई स्थिर राषो काउ स्थन राषो बापी बाउडी कूप कुवा सरतालाव इन के सम को सो राषो
मे ने हरि श्री कृस बिना अनेक बासर दिन वितीत करे याते अब जैसे नदी परवत न को फोर के तरु को तोर के स
मुद्र मे जाइ मिलत है ऐसे मैं ज्ञान रूपी जो गिर परवत है ता को फोर के औ लाज रूपी जो तरु है ता को तोर के आ
प निथ समुद्र की माई जो प्रीतम है ता को आपगा नदी की न्याई जाइ मिलत हों ज्ञान ते अरु लाज ते ऊ ढाय
र कीया रूपका अलेका रय के रूपक तें अन्य च मूल सवैया जान भई संग जानले कीरत के सब
है कुल सो हित फूलो गरब गयो गुन जोबन रूप को सो तो सबै पल ही पल छूट्यो कान्ह निहारीऐ
औ न की ऐक हों नी के ह्वै लाज सो नातो तोई टूट्यो का ऊो स भे ह मदेरत मे तुम मे तन को कपट न हि छूटो
२२ बातो ऊ ढाना इ का हरि सो उलावो देन है हे हरि हमारी जो जात है सो कीरत को संग ले के जान भई
का हू र भई अर्थ कि जान की रत दोऊ हूर भई हमा तें औ तुमारे लीऐ हमारो सनेह अपने कुल के साथ
ही छूटो अर्थ यह कुल औ सनेह दोऊ छूटे औ रु हमारो गरब हू गयो औ रु जोवन रूप को जो गुन ऊ तो सो
भी पल ही पल मे छूटे सो का यदो हे कृस मैं तुमारी आन कहीऐ सो गंध कर के यह कहत हो अर्थ यह कि
ठ न ही कहत हो नीके ह्वै के का भली भांत ह्वै के लज्या के सहत ही हमारो नातो का सो कसं वंथ सर ब सो टूट ग

र॰
स॰ प्रि॰
टी
२८
38

यो अर्थयहलाजऔनानोदोऊटूटे सोहेहरिहमानेतोतुमकोहेरकेसादेषकेसजोहेसुषवेसाउमबकोस
रवत्यागदियो पैतुमानेननकोकहीऐयारोभीकयटनहीछूटो कीरतइमादिकेजेवेतेपरकीया औ
गुनजोबननेऊढाभई यहहूजोउदाहरनमिलवेकोथोसोहै सहोक्ति अलंकार कीरतऔजानइया
दिहैहैकोजारोतासंगहीवरन्योयाते मूल दोहरा अथकअनूढालाजतेपीयपैजाइनआप कंदूहूके
सषीएकहेनाकेतनकोताप २३ वार्ता अनूढाकहीऐअविवाहताजोपरकीयाहेसोअत्यंतलाजक
रकेपीयकेपासआपतेनहीजाइमिलत नवताकोहदैकोतापरकिसीप्रकारकरकेनाइककेपाससषीही
कहैजाइके उदाहरन कवित्त जानेकोकेसवकौनेकह्योकवकान्हहमारेहिंडोलनिफूलै मानन
इनयानीपीऐतबनेभरलोचनलेतसमूलै जाइनहीचलबेगवलाइलिउलेऊसकेलकह्योयहभूले
जाननहींवहकोमकलीकुमलाइगऐवङस्योफिरफूले २४ वार्ता सषीकोवचननाइकप्रति ऐका
न्हइसवारनाकोकौनजानेकिवाकेपासकिसनेआनकह्योहै औकबआनकह्योहैकिकान्हआजह
मारेहिंडोरामेफूलेहै सोतवतेवहयाननकोनहीयातहै औयानीहूपीवतनहीहै औतवहीतेलोच
ननकोसमूलैकहीऐमूलसौभरलेतहै अर्थसंपूरननेत्रनिकोभरभरलेतहै सोतुमजातांक्युनर
ही वेगकहीऐसीघ्रहीचलो मैतुमारीवलाइलेऊ वाकोसकेललेऊसामिलाइलेऊ औरुयहक
हाभूलेहोजाईहोवेगेहो अर्थकिईहोवेव्वोयहीभूलहै औरुतुमजाननहीहोकिवहकामकलीहै

ऐसेकुमलाउगएतेफेरहूजीबारफूलहैनफूलहै ईहांषांनपांनकेसागानेमैंग्रौग्रौषंभरलैनमे
मनकोनायसषीनेनाइकग्रनिकह्यौ यातेग्रनूढायरकीयाभई कांमकीकलीकहनेतेबालविवस्था
जांनीयरतहैतातेनाइकाग्रविवाहतीजांनीये काकोक्तिग्रलंकार वड़रोफेरफूलेगीवानफूले
गी ग्रथप्रिथमसमिलनग्रस्थांन वरननं मूल दोहरा जनीसहेलीधाइघरसूनेघरनिसचार
ग्रतिभेउतसवव्याधमिसन्योतेसुबनविहार २५ वार्ता ऐप्रथमसमिलनग्रस्थांनहै जनीदासीके
घर सहेलीसषीकेघर धाइषिलाईकेघर सूनेमंदरमैं निसचाररात्रविषे ग्रसंतभैविषे
ग्रसंतउतसवग्रानंदविषे व्याधकेमिस न्योतेकेमिस ग्रौसुबनकहीऐवागकेग्रौजलको।
विहारमै बनजलकोभीनांमहै मूल दोहरा इनहीठौरनहोतहैप्रियमसमिलनसंसार को।
सवराजारंककोरचराष्योकरतार २६ वार्ता केसवकवकहतहै राजानकोग्रौरंकनकोकरता
रब्रह्मानैरचराष्योहै किसंसारमेंप्रथमसमिलनइनहीठौरनमैहोतहै ग्रथजनीकेघरकोमि
न मूल कवित्त वेषकैकुमारकाकोहृजकीकुमारकानमांफसांफकेसोदासत्रासपगायेलकैं
कामकीलतासीचलप्रेमपासगसीयमलराधकाकेबुइवलकेंठभुजमेलकैं डरिडरिदोरदोर
हरहरिग्रभिलाषलाषलाषभांतकेग्रनूपरूपकेलकै जनीकेग्रजरग्राजरजनीमेंसजनी।
हेसाचीकीनीस्यामचोरिमिहचनीषेलकैं २७ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीहूसनेग्राजइन

र० स० चि० टी० ३९
39

वातनकोकरकरकेचोरमिहचनीषेलसाचीकरीहै किनवातनकरके कुमारकाकोवेषकरकेस्या
मागधारके औरहुजकीजेहै कुमारकातिनविषेसांकसमेंत्रासजोहै भयताकोयगसोपेलकरके
औरुकामकीलताकहीएबेलसीजोचलकहीएचंचलहैबीजुरीवत औरप्रेमकीयासक्यापासी
सम औसीजोअमलनिरमलराधाजूहैताकेकंठविषेवुढकेबलसोअपनीभुजनिकोमेलकरके औ
डरकहीएछिपछिपके दौरदौरके औलाषलाषभांतनकेजोहैअभिलाषतिनकोपूरणकरक
रके हेसखीजनीकहीएदासीताकेअजरकहीएआंगनविषेआजरजनीकावातकोस्यामनेचोरमिह
चनीजोषेलहैताकोषेलकेसाचीकरीचे चोरमिहचनीषेलवालकषेलतहैतहांचोरीनहीहोत औ
इनोनैचोरीकरीयातेचोरमिहचनीसारथकभई ईहांजनीकेअजरमेअभलाषपूरनकरेनाइकने
यातेजनीकेघरकेमिलवौप्रथमभयो चौरीसौमिलेहैत्रासकोतजके यातेप्रथममिलननहीजानीए
पारजायोक्किनअलेकार कलकरकेमिलवोइसाध्योयाते अथसहेलीकेघरकोमिलन कवित्त
नैननकेतारनमैराषोप्यारेपूतरीकैमुरलीज्युलाइराषोदसनबसनमें राषोभुजबीचवनमालीवनमा
लाकरचंदनज्युचतुरचढाइराषोतनमें केसराइकलकंठराषोवलिकंठलाकेकरमकरमक्युंहूंस्या
नीहैभवनमे चंपेकीकलीसीकानमूंदिसंखिदेवनासीलेऊमेरेप्यारेइन्हेंमेलराषोमनमैं २८ वानी
सषीकोवचननाइकाप्रति हेप्यारेतुमइसनाइकाकोअपनेनैननकेतारनमेपूतरीसमकरकेराषो औ

अपनेदसनबसनकहीऐ अधरमेयाकोमुरलीसमकरकेराषो। औहेवनमालीनुमभुजनकेवीचकही
ऐमधअस्थांनमैसाहूदेविषेजाकोवनमालासीकरराषो। औहेचन्द्रचंदनकीभांतयाकोअपनेतन
विषेचढाइकेराषो। औहेकेसोराउवलजाउअपनेकलकंठकहीऐमनोहरिकंठमेयाकोकंठलासीकर
केराषो। मैनेकरमकरमकहीऐकहूकरकेकहूंकहीऐकैसेहूअपनेभवनमेआनीहे औहेकान्हय
हजोचंपकलतासमहैताकोसुगंधकेनासकामेबसावो औहेप्यारेयहजोदेवतासीहैयाकोलेक
रकेमनमैमेलराषो देवताकोमनमैवसाईयतहै तातपरजयहकियाकोअंगअंगमैबसावो लेऊ
मेरेप्यारेयामैध्वुनिसोमिलनजांनीऐ औक्रमक्रमकरिकेकहूंआनीहे यामेप्रथममिलन दिवा
ईसोवचनकहेयांतेसहेलीजांनी लुपतउपमाअलंकार अथयाइकेघरकोमिलन मल कवित्त
हसषेलतषेलमंदभईचंदउतिकहतकहानीअरूहूफ यहेलीजाल केसोदासनीदवसआपनेआपने
घरहरेहरेउठिगएवालकासकलवाल घोरउठेगगनसघनघनचहूदिसउठिचलेकान्हपाइवोल
उठीनिहकाल आधीरातअधिकअंधियारेमाफकैसेजैहोराधकाकीआधीसेजसोउहोप्यारेला
ल २९ वार्ता सषीकोवचनसषीप्रति हेसषीयाइकेवालकाओवालकनकोहसनेहोएऔषेलु।
तेऊएचंद्रमाकीजोहेउनसोमामोमंदभई औकहानीजोहेकथाओयहेलीजोहेहूफवेकीछिपीवा
तेतिनकोहूफनेहोएकहनेहोएचंद्रमाछयगयो। औहेसषीनीदकेवसहैकेअपनेअपनेघरजे

र॰
स॰प्रि॰
टी॰
४०
40

वेकोहरैहरैकिया सनैसनै संस्परणवालकाजोहै इस्त्री सोउठिक्याउठीहै ईहां उठिकोउठीयस्यो
अर्थीकेलीये औरहुवालकभी संस्परनचलेगये तिसीसमैविषेजोसचनदनमैचहैसोचा॥
रोनरफहोरकेकागरजकेउठेहै सोजबकुसउठिचलेतवहीतिसीसमैथाइजोहेउँयमाता॥
सोबोलउठी हेप्यारेलाल आधीरातकेसमैअथकअंधेरोहै ऐकरातनकोहूजोमैयनकोता
मैकेसजाउंगे यातेमनजाउरायाजूकीजोआधीसेजहैतापैसोवरहो ईहांआधीसेजकहवे
मैमिलायजान्योजातहै याते यारकेअरकोमिलन औरहुनाइकसकुचकरकेओडरकरकैसेजप
रआपसोनहीओढेयाइकेकहैसोओढेयातेस्यममिलन प्रहरषणाअलंकार जननकीएवि॥
नाइहुसियमओयाते अथसखेचरकोमिलन मूल कवित्त देषतहीचित्रसूनौचित्रसालावाला
आजरूपकीसीमालारायाहूपक सुहाएरी नूपरकेसुरनिअनूपरूपतानैलेनयगतलनालदेत
अतिमनभाएरी ऐसेमैदिषाइदीनीऔचकक्ुवरकान्हजैसमपैगाननेसजानतनवनापेरी केसोदा
सकहैपरेअलजसलजसेनजलजसेलोचनजलदसेहैआएरी ३. वार्ता सषीसषीवचन हेस
षीचित्रसालाविषेचित्रनकेजेहैसुहाएपेरूपककासंदरसरूपतिनकोरूपकीमालासीजोरायाहैसो
आजदेषतहुती औनूपरजोहैफोजरातिनकेसुरनसोअनूपरूपकाअनूपहैरूपजिनकोऐसे
जोतानैहैतिनकोलेतहै औपगतलनसोअंतमनभाएजेतालहैतिनकोदेतहै हेसषीऐसेसमै

विषैश्रौचककहीऐश्राचानकहीकुवरकान्श्रीकृसदेवनेदिषाईदीनी कृसकोदेषकेजेमेरायेके
गातश्रेगाभऐनैसेमोपैवृनाऐनहीजात कैमेभऐश्रलजसेनहीकहेपरतश्रौमलजसेभीनहीकहेय
रन श्रथंयहकछुश्रलजिमेभऐश्रौकछुमलजमेभऐश्रंग कोऊनेत्रनकोश्रर्थकहतहैं श्रौजल
जकहीऐकमलमेजोलोचनकुतेसोतामेजलदमेघमेकैश्राऐ सोजलभरश्राऐ ईहांश्रसुनामासा
नकभयो श्रलजश्रंगतोयातेभऐश्रानंदमैश्रौमिलनमेलाजनहीरहत मलजयातेभयेदुष्टमिल
नहै यहरषणाश्रलंकार विनाजतनरइष्टसिद्धभयो श्रथनिसचारकोमिलन मूल सवैया ऐक
समैसभटेषनगोकलगोपीगुपालसमहसिधाऐ रातह्वैश्राईचलेघरकेदसहूंदिसमेघमहामदि
श्राऐ दूसरोवोलेनऊसमफेनहिकेसवयोछितमेतमछाऐ श्रैसेमेस्यामसुजानवियोगविदाकै
दीऐसुकीऐमनभाऐ ३१ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीऐकसमैविषैसर्वजोहैगोपीश्रौकृष्णपा
लकागोपनिकेसमहगोकलकेदेषवेकोसिधाऐसोगऐ फेरजवघरकोचलेतवश्रारगमेरात
ह्वैश्राई श्रौदिसहूंदिसाकोमहामेघछांकियासघनमेघमदिश्राऐसोछांश्राऐ श्रथंयहदसोदिसछा ३
इलीनीदृष्यवीश्रौश्रकासनजरनहीश्रावत तासमैविषैश्रौरहूसरोकोऊवोलेहूतेनहीसमकोय
रनमेघनकेगरजनेकरके श्रौछितदृष्यवीविषैइसप्रकारकेतमछिायकोरह्योऐहैजोहसगी
दिषाईहूनहीदेत ऐकेश्रथैरोरातकोदूजोमेघनको सोश्रैसेश्रवसरमेसुजानचतुरस्यामनेवि
गजोथदेषवेकेश्रौवोलवेकेश्रौमिलवेकेसोसर्वविदाकरदीऐ श्रौमनभाऐकीऐ यातेनिसचार

र॰ त्रि॰ टी॰ ४१

41

कोमिलन अवसर याइ सर्वे वियोग मेटे याते प्रथम मिलन समाहत अलंकार देव जोगते काज भयो
अथ अतिभेकोमिलन मूल कवित्त जोनी आगलागी वृषभानुके निकट भोन दोर व्रजवासी चढे
चढे और याइके जहां तहां सोर भासी भीर नरनारिनकी सबही की छुटगई लाज हाइ आइके ऐसे
में कुंवर कान्ह सारो सुक वाहर के राधका जगाई औरूप जुवती जगाइके लोचन विसाल चारु चिबुक
कपोल हूं मचंपेकी सोमाल लाल लीनी उरलाइके ३२ वार्त्ता सखी सखी बचन हे सखी वृषभान राजा
के निकट जो घर हे ता में आग लगी जोनी सो व्रजवासी चाले औ और तेथाइके वृषभानके भवन पर दो
रके चढिगए और जहां तहां कारी सोरु भायो औ नरनारनकी जहां तहां भी रहे औ सर्व ही की ला
ज हाइ करके औ आइ करके छुटगई सो ऐसे समे विषे क्रसन ने सारका औ सुक नोते इनको वाहर करके
औ सर्व जुवती जो हे इस्त्री तिनको प्रथम जगाइ करके फेर राधा जू जगाई ता पाछे राधा जू के जो विसा
ल कहीए वडे लोचन हे औ चारु कहीए सुंदर जो चिबुक कहीए ठोडी हे औ कपोल हे इन सर्व को चुंब
न करके फेर चंपे की माला सो राधा का लाल ने उर सो लगाइ लई इहां भे को मिलन प्रतक्ष कही हे औ ग
न को भे सर्व भे इन ते अधिक कही हे याते अतिभे को मिलन भयो सारकानके औ सुकनके भेते प्रथम मिल
न प्रहरषण अलंकार जतन विन इष्टसिद्ध भयो अथ उतसाह को मिलन कवित्त बलकी वर
सगांठ ताकी रात जागवे को आई व्रज सुंदरी सवार तन मोनो मो केसोदास भीर भई नंद जू के मंदर में अ
धमयऊ रयवचोन कोऊ को नो सो गावत वजावत नचत नाना रूप की पे जहां तहां उमगत आनंद हे औ नो

नोसो सावदेकीसूनीसेजमेवनहैराधकान्हसोयोओनसावरेऊमानमनगोनोसो २३ वार्ता सषी
सषीवचन हेसषीवलकहीऐबलभद्रकीजोबरषगांठहैसाजनमकोदिनतिसकेआनंदविषेव्र
जकीजोसुंदरीकहीऐइस्त्रीहै सोअपनोअपनोस्वरूनसोजोसुंदरतनहैजाकोसवारसवारकेरातजाग
वेकोआवतभई ओकेसोदासकविकहतहै नंदजोहैवलदेवकुलकोपितानाकेमंदरविषेभीरभईअ
स्थान केसीभई ग्रहकोअथकहीएनीचोअस्थानओमथकहीऐमद्धअस्थानऊंअथकहीऐऊंचेको
अस्थानतिनोविषेऐककुतोसोभीनहीसूनोवचोभीरते सोनहोसरवेइस्त्रीनानाक्याअनेकप्रका
रकेरूपोकोधावनकरकेगावतहैओवजावतहैओनाचतहैजहांतहां ओसर्वकेअंगनतेंआनंदओ
नोसोहूकेउमगतहै छिड़केराह चेकरकेपानीफरेताकोओनाकहतहै आनंदअंगअंगमेभरके
ओनोसोउमगतहै तहांश्रीकुलसकीसूनीसेजकेऊपरराधकासोवतहुती तवकुलसहूआनसोऐहै
मनविषेगोनोकामुकलावोसोमानके ईहांउतसवकोमिलनप्रतच्छकहीहै गोनेपदतेप्रथममिल
नजानोसो पारजानोकिअलंकार छलकरकेरूपसाध्यो प्रथमसषीकोकहिराष्योहोनाइकनेज
वप्रियाकोनीदआवेतवहमारीसेजवतायो यहछलकरमिलनसाध्योयाते अयचायमिसको
मिलन मूल सवैया साथनिदाननदानदीऐउपचारविचारकीऐनधिरानी वेदकीसासतनयाथ
विनासनहोमझूतामव[illegible]नहिरानी वेगचलोवलकेसववोलतदीनभईवृषभांनकीरानी आऐ
होमेटमहूकरकेवड़[illegible]उनकेवहयीरपिरानी २४ वार्ता सषीकोवचननाइकप्रति हेहरिनिदान

र॰ स॰ त्रि॰ टी॰ ४२

42

जोहैकारणतिनकोसोधकरकैदोनदीये अरुविचारकरकेउपचारकयाउलाजसोवीकीये तिनकेकी
येहूंतैनथिरानीक्यानहींथीरजयस्यो औरुवेदकीसासनकहीयेआगयाहैयाथकेविनासनवारीता
सो औरहोमकीजोइनतासनआगनिहैतासौभीवाकीपीरनहिरानी क्यानहींहरभई हैकेसवकुस
मेवलज्जाउत्तमारेऊपरतेतुमवेगकहीयेश्रीव्रचलो वृषभानकीजोरानीकीरतहैसोदीनभईतु
मकोबोलतहैक्यावुलावतहै तुमजोननाइकाकीपीरकोमत्रकरकेक्याकादकआदिकमेकरकेम
टआयेइते सोवहीपीरवाकेतनविषेफेरयिरानीकहीयेउठीहै ईहांपीरमेटआयेहै यातेंट्यम
वाधकेमिसमिलनकेद्वुकियोहै अववहुजीवारलैयाचाहतहैमिलायनहींभयो पारजायोकिअले
कार कलकरकेइष्टसाध्यो अथसुनेमिसकोमिलन मूल कवित्त सुनकेवुलाईऊजीवेदीवृ
षभानजूकीजेवेकोजसोदारानीयानीहैसिंगारके भोजनकेभवनविलोकवेकोपानषानऊप
रअकेलीगईआनंदविचारकै देषनदेषनहरिभावनकेभागीदेषदोरमहींयालअेसीवेनीडवडा
रके भेटीभरअंकमनभायोकरक्षायोसुषकेसरसोमाओलईवेसरउजारके ३५ वार्ता सषीस
षीवचन हेसषीजसोदारानीनेवृषभानकीपुत्रीराधाकोप्रथमसुनकरकेफेरजेवनेकोबुला
ईऊजी सोसषीननेसिंगारकरकेआनीहै सोरायकांजूभोजनकोकरकेदेषनेकेअर्थपानन
कोषातीइईअकेलीपेऊपरगईआनंदकोविचारकरके सोभवनकोदेषतीदेषतीहरिभा
वनकेकोदेषकेभागी तवहरिनेडरकोत्यागकरकेताकीविशालसरपजैसीजोवेनीचावरड़तीसो

दौरकरकेगहीक्यायकरी औअंकविषैभरकैभेटी नहीं अपनोमनभायोकरछाओ फेरताको
मुषकेसरसौमांझोवाकेसरलगायो सुरतकेचिन्हकपोलनमैसोछपजाइयातेकेसरलायो औ
रुवेसरउनारलई यातेमुषकोपीलोरंगछिपायो लोकयहजानैंकिवेसरकेगएतेमुषपीलोह्वैग
गयोहैमेइसौ भागवेतेऔमनभायोकरवेतेप्रथममिलन ईहांहूपरजायोक्रिछलसोइहसाध्यो
अथवनविहारकोमिलन मूल सवैया देदधिकाल्हगईकहिदेनपसारउऔलभरोफुनफेटी
छोडोनहीमगछाडोजोयापैछुडावोविलोकनलाजलपेटी बातसंभारकहोसुनहेकोऊजाननत
होयहकौनकीवेटी जाननहोवृषभानकीहैपरतोहनजाननकौनकीचेटी ३९ वार्ता सषीके
संगनाइकाहैतासषीसौनाइककहतहै तूंदधिजोहैदहीसोमोकौदेउकाल्हजोदेनोकह्योगईऊती
सोदेऊ सषीवोलीहै पसारउऔल कानुमअपनीफोलीपसारउ औफेरफेटकोभरलेवो तब
नाइकवोले मैमारगकोनहीछाडहौ मारगकोतोछाडोजोतूंयानाइकाकीलाजलपेटीजोविलोक
नहैवादेषनहैताकोछुडाइदेहि तवसषीवोलीतमवातकोसंभारकेकहो कोऊसुनिलेवेगो तुम
जाननतेहौंयहकिसकीपुत्रीहै तवकृसवोलेमैजाननहोयहतोवृषभानकीपुत्रीहै परतूंकिसकी
चेटीहैकादासीहैयहमैनहीजाननहौं ईहांलज्यासौनाइकानाइककीओरदेषतहै याहीतेनाइकने
कह्योयाकीलाजलपेटीविलोकनछुडाउ यातेप्रथममिलन वनमैदेषवेवोलवेहूकोमिलायहोतहै
सोईकह्यो उतरअलंकार अथजलविहारकोमिलन मूल सवैया हरिराधकामानसरोवरकेतटठाढे

द. स. प्रि. टी. ४३ 43

रीहाथसोंहाथछीऐ पीयकेसितपाप्रियामुकतासिरराजतमालउहूंनहीऐ कटिकेसवकाछनीसे
तकसेसवहीननचंदनचित्रकीऐ तिकसेजनुछीरसमुद्रहितेसषिश्रीपतिमानऊश्रीहिलीऐ ३७
वार्ता सषीसषीवचन हेसषीहरिजोहेकृसचंदराधकामांनवारराधकाकेसञ्जगतिसोसबोवरकेन
टहाथसोंहाथयकरेऊऐठाढेहे नटकेकहेऐकांतअस्थांनजांनीये श्रोदोऊकेसेहेपीयकेसिरयेतो
सितकास्वेतपागहेश्रोतीयकेसिरयेसेतमुक्तावलीहे श्रोउहूनकेहीयमेमोतीनकीमालासोभतहे
श्रोरस्वेतजोहेकाछनीजंघबस्त्रतिनोकोअपनीअपनीकटमेदोऊकसेऊऐहे श्रोसंपूरनतनमेचंदन
केचित्रकीऐऊऐहे तिनोकीकेसीउपमाहे मानोश्रीपतजोहेविस्नुश्रोश्रीजोहेलछमीताकोसंगलीऐ
ऊऐछीरनिधजोहेछीरसमुद्रतातेबाहरप्रथवीविषेनिकसेहे जलविहारप्रगटहीहे नटकेकहेप्रि
यमममिलन उत्प्रेक्षाअलंकार अन्यच मूल सवैया रितग्रीषमकेप्रतिबासरकेसवषेलतहेजमना
जलमै इमगोपसुतासुतपारगुपालविराजतगोपनकेदलमें अतिहूउचलेगतमीननकीमिलजाइउ
वैअपनेथलमे इहभांतमनोरथपूरदेऊजनहूररहेछवसोछलमे ३८ वार्ता सषीसषीवचन ग्रीष
मकेरितकेप्रतिवासरकहीऐदिनदिनप्रतिकेसवजोहेश्रीकृस्नसोजमुनाकेजलविषेषेलतहे इनक
हीऐइयरतोगोपसुताराधकासोहतहे श्रोउसपारगुपालगोपनकेवाअहीरनकेदलसंहहमेविराज
तहे सोवेदंपतजमनाजविषैवाकोनककरतहे मीननकीगतसोअतिनहुउतहे सोजलहीविषैमि
लकरकेअपनेअपनेअस्थांनहीमैजाइकेउवतहे जिसइस्थांननतेहुंउतहेउसीइस्थांनमैमिलकेनिकस

नहै ऐकवार आवत ऐकवार जात है यां अति वृद्ध वो कह्यौ जलविहार प्रगट ही है उत्प्रेच्छा अलंकार मूल
दोहरा इह विधि राधारमन के वरने मिलन विसेष केसवदास निवास वहु वुहु वल ली जोलेष ३९
वार्ता केसव कवि कहत हैं इह विधि कहीये इस प्रकार राधा के और राधा जू के रमन श्री कृस्नचंद्र
सो विसेष जो मिलन के निवास कहीये इस्थान है वहुत सो मे वरने हैं हे कवी स्वरो तुम ने वुद्ध के व
लसो जानने इन मैं गूढ आसे है वुह सो जानने मूल दोहरा प्रथम मिलन थल मैं कहे अपनी
मत अनुसार हाव भाव वरनन करौं सुनन अवि वहुत प्रकार ४० वार्ता इस अध्याय विषे तो मैं प्रथम
मिलन के अस्थल कहे हैं अव आगे अध्याइ मे हाव भावन को वहुत प्रकार कर के वरनन करेंगे तो को
श्रवन कीजे इति परकीया भेद मूल दोहरा और जु तरुनी तीसरी कवु वरनो इह ठौर रस मैं विरस
नवरनीये कहत रसक सिर मौर ४१ वार्ता स्वकीया कहीय परकीया कही और तीसरी जो तरुनी हे
है सामान्या ता को इह ठौर क्या रस वरनन के इस्थान मैं कवु वरनो सामान्या मैं रस नही कवु वाको तो धन
को लोभ है या ते ईहां के से वरनो कवु रसक सिरमौर जु हे ते अैसे कहत है कि रस विषे विरस न वर
नीऐ या ग्रिंथ मै समान्या को नांम ही न ही धर्यो तीसरी तरुनी कही इति श्री मनमहाराज कुमार श्री
श्री इंद्रजीत विरचतायां रसक प्रियायां चेष्टा स्वयं दूतमिलन अस्थान वरनन नांम पंचमो अध्याय
५ अथ भाव लछन मूल दोहरा आनन लोचन वचन मग प्रगटत मन की वात तो ही सो स

र.
स.त्रि.
टी
४४
44

भकहतहैभावककविनकेतात १ वार्ता कविकोवचन मनकीजोहैवातक्यामनकोविकारताहीसो
कविनकेजेहैंतातनक्यापितामर्थयहवडेकविभावककहतहैं यहवचनहैसर्वग्रंथनकोमतहै
औकेसोहैमनकीवातऔननमुषकेऔलोचनोकेमगक्यामारगप्रगटतहै जवसुषपैचेष्टाआवे
तवहीप्रगटतहै यातेमनकीवातजैहोसोईभावहै यामेअनुभावभावकोविसेषणाकह्यो मू
ल दोहरा भावस्तुपंचप्रकारकोरतनविभावअनुभाव स्याईसात्वककहतहैविभचारीकवरा
व २ वार्ता कविकोवचन सुअच्छरकोअर्थसो क्यासोवहएकभावनोहैहीअवऔरहूंहैतिन
कोभीभावकहतहैं तेस्तुनिपंचप्रकारकेहै विभाव अनुभाव सथाई सात्वक विभचारी
अथविभावलच्छन मूल दोहरा जिनतेजगतअनेकरसप्रगटहोतअन्यास तिनसोविभा
तिविभावकहिवरननकेसवदास ३ वार्ता कविकोवचन जिनतेंक्याजिनवसतननतेंजगतमेंअ
नेकरसक्यानवरसअनआसविनाकष्टहीप्रगटहोतहैं जिनवसतनकोविमतजेहेवुद्धमानसोवि
भावकहतहै रसकेकारनरूपसोविभाव मूल दोहरा सोविभावद्वैभांतकोकेसवराइवषान
आलंवनइकदूसरोउद्दीपनमनमात ४ वार्ता सोविभावद्वैप्रकारकेहै एकआलंवन दूजोउ
दीपन मूल दोहरा जिन्हैअजनअवलंवईतेआलंवनजान जिननेदीपनहोतहैतेउद्दीपवषा
न ५ वार्ता जिनकोअविलंवकेक्याआश्रेकरकैअतिनसाकामदेवकोवसकोनसोसिंगारस

सोउद्देतेआलंबनकहीयें नाइकाकेरसउपजेतेनाइकाआलंबन औनाइककेरसउपजेतेना
इकआलंबन येदोऊपरसपरआलंबनहैं औजिनवसनननतेकामदीपतकाप्रगटहोतहैतेउ
दीपनकहीयें रसउदीपनभयोकोऊनहीकहत औकामउद्दीपनभयोकहतहै यातेअत
नपदरथहो अथआलंबनवरनन ने मूल छप्पै दंपतजोवनरूपजातलछनजुत
सषिजनि कोकलकलितवसंतफूलदलअलिउपवन जलचरजलजुतअमलकमलक
कमलाकमलाकर चात्रकमोरसुसबदतडतघनअंवुदअंवर सुभसेजदीपसोगंधग्रहपानगान
परधानमति नवनिरसनिभेदबीनादिसभआलंबनकेसववरन ६ वार्ता कविकोवचन यामेके
सवकीसिछाहेआलंबनोकेवरननकीरीतवताईहै दंपतिजोनाइकनाइकाहेसोआलंबनहै तिन
कोअसवरनकाइनउद्दीपनोकेसहितवरनसोजितावनहै दीपनकेसहोइजोवनकेऔरूपकेऔ
जातकेयापदमनीआदिनाइकाससाआदिनाइकतिनकेलछननकरजुतहोइ कातरुनऔसुंद
रहोइ असेदंपतजोहैतिनेआलंबनकहीए परएनीवातनकेजुतनवरनीयें जुनसवदेहरीदी
पत जुतसषिजनन कासषीजनोकेसहितहोहि औकोकलाकरकेकलितसंजुगतिजोहेव
सेतरितुतिसकेसहतहोइ औफूलफलदलकापत्र अलकाभ्रमर उपवनकावाग इनकेसहि

र॰
स॰ प्रि॰
टी॰
४५
45

नहोहि औरुजलचरजोहेजलकेजीवऔजलऔअमलकानिरमलकमलनकीजोहेकमलाकासो
भाइनकेसंजुगतजोहेकमलाकरतलावतिसकेसहतहोइ वेदंपति औचात्रकपपीहेऔमोरइनके
मलेसब्दनकेसहतिहोइ नडतकाविज्जुली औघनकासघनअंबरआकासमेजोहेअंबुदमेघतिं
नकेसहतहोहि औसुभमेजाकेदीपकेसुगंधनकेयहकायरकेऔयाननकेऔगानगावनकेपरथां
नवस्त्रनकेऔमनिकामणाकेसहतिहोइ फेरनवकहीऐनवीनजोहेनिरतकेभेदतिनकेऔवीनते
आदिलेकेजोसर्वबाजेंत्रहेतिनकेसहतआलंबनोकोबरनो मूल दोहरा अविलोकनआलापपरं
रंभननषरददांन चुंवनादिउदीपऐमरदनपरसप्रमान ७ वार्ता यादोहेमेअंगहीकेउद्दीपनकहेहे
अविलोकनकाबक्रबिधसोदेषवो आलापनकामृदुबचन परंरंभनकामिलवो औनषदानकानष
छ्छन रददानकारदछ्छन औचुंवन औमरदनकुचआदिकनको औपरसकासपरस ऐसर्वअंगही
केउदीपनहै अथअनुभावलछ्छन मूल दोहरा आलंबनउदीपकेजेअनुकरनवषांन तेकहीऐअ
नुभावसभदंपतप्रीतनियान ८ वार्ता प्रीतकेनियानजोहैदंपतिसोआलंबनि तिनविषेउदीपनो
केजेअनुकरनहोइतेअनुभावकहावतहै उद्दीपनोकेअनुकरनसाजवहीमनमेरसउद्दीपनभयो
नवहीमुषपेचेष्टाआइजाइसोवेउदीपनोकेअनुकरनभए उद्दीपकेपाछेकरनलगेक्रयाकोयातेवेमुष
नैननकीचेष्टासोअनुभावकहावै अथस्थाईभाव मूल दोहरा रतिहासीअरुसोकपुनिक्रोधउछा

रसजांन भैइनिंदाविसमैसदास्याईभाववषांन ९ वार्ता ऐरसनकेस्याईभाववहै रतप्रीतसिंगारको
स्याईहै हासीहास्यरसकोस्याईहै सोककरुनारसकोस्याहै क्रोधरौद्ररसकोस्याईहै उछाहिवीर
रसकोस्याईहै भइभियानकरसकोस्याईहै निंदावीभसतरसकोस्याईहै विसमैकाअचरज अद्
भुतरसकोस्याईहै निरवेदसांतरसकोस्याईहै स्याईरसकोबीजमात्रहेजेसपांनीकोजमकेपालाहो
इजाइ असेअस्याईओरसजांनीये अथसात्वकभाव मूल दोहरा सतंभस्वेदरोमांचसुरभंगकंपवै
वरन असुप्रलयसुवषानीयेआठोनामनग्रन्य १० वार्ता कविकोवचन ऐआठसात्वकभाववहै सतं
भकावाढेह्वैरहेवो चलनसके स्वेदपरसेव रोमांचकारोमनकोउठिवो सुरभंगकासुरकोउठिवो
कंपकांपनो वेवरनरंगमुषकोवदलजाइ प्रलैवाइदीयनकीचेष्टाजातिरहै असुनैनजल ऐआ
वहै आनन्नकाओरनही अथविभचारीभाव मूल दोहरा भावजुसवहीरसनमेउपजनकेसवदाइ
विनानेमतिनसोकहेविभचारीकविराइ ११ वार्ता कविकोवचन विनानेमकाकवहूकोईभावआवेक
मकोनेमनाही औरुसमैकोनेमनाही हैचरीचारियरीकोनेमनाही सरवरसनमेउपजे ओस्याईभा
वकेऊंदेईजेआवेअरुजाहितेविभचारीकहीये सोतेतीसहै तिनकेनामगनावतहै मूल दोहरा निर
वेदगलानिसंकातथाआलसदैनरुमोह समृतधृतव्रीडाचपलतासुममदचिंताकोह १२ वार्ता नि
रवेदकाअपनीनिंदाकरसंसारकोछोडवो गलानकारूपकोविकार संकाकाषोटेकरमकीचिता देषा

र॰
स॰ प्रि॰
टी॰
४८
46

कादीनता मोहकोविश्राकुलता सिमरनकोसिमर धृतकोधीरज ब्रीडालाज चपलताकोऔरकोऔर
करवो मदकोगरूमवो चिंताकोअजोगबुद्धकोजानेवोकहैहै कोहकोक्रोध मूल दोहरा गरवहरष
आवेगधुनिनिंदानीदविषाद जडताउतकंठासहतिसुपनप्रबोधबिबाद १३ वार्ता गरबकोहंकार
हरषकोआनंद आवेगसंभ्रम निंदाकोगल्लानकरवो नीदकोइंद्रीयनकोछोडनचामेमनको विषा
दकोदुष जडताकोअंगनकोनचलवो उतकंठाचाहना सुपनकोनाडीमेमनकोरहिवो प्रबोधइंद्रीय
नकोदृष्यमप्रकासकोरकोजागवो विवादकोएकमेअनेकसंसे मूल दोहरा अपसमारमतिउग्रताअ
ससहतिश्रतिव्याध उनमादमरनभयआदिदैविभचारीजुतआदि १४ वार्ता अपसमारकोमृगीरोग
मतकोजथारथग्यान उग्रताकोअपनीउच्चता त्रासकोभइ व्याधकोमनकेसंतापतेतनकोरोग उनमा
दकोविनविचारकोकरमरोवेहसे आधिकोमनकीपीडा ऐसभविभचारीकहे तहांइनकोविचारस्था
ईभावतोबीजमात्रहैरसकोविभावकारणहैअनुभावकारजहै विभचारीसहाइकहैतहांसात्वकहैतेऊका
रजहीहैंजैसेअनुभावसुषकीनैननिकीचेष्टा तैसेसात्वकसरीरकीचेष्टा इतीभावबरननं अथहावब
रनन मूल दोहरा प्रेमराधिकाकृस्नकौहैतातेसिंगार ताकेभावप्रभावतेउपजतहावविचार ५ वार्ता
कविकोवचन राधाकृस्नकोजोहैप्रेमतिसतेतोसिंगाररसहै तिससिंगारकेजोहैभावतिनोकेप्रभावते
अर्थकितिनकीक्रयाकीचेष्टातेहावउपजतहै अथहावनाम मूल दोहरा हेलालीलाललितमदवि

भ्रमविहृतविलास किलकिंचितविक्षिप्तअरुकहविब्बोकप्रकास १५ मूल दोहरा मोट्याइतपुनि
कुट्टमितबोधकादिकऊहाव अपनीअपनीबुधिबलबरनतकविकबिराव १७ वार्ता ऐहावनकेना
महै अथहेलाहावलछन मूल दोहरा परमप्रेमप्रगटायतेभूलतेलाजसमाज सोहेलाजिहह
रतहीअराधाश्रीव्रजराज १८ वार्ता प्रेमकेपरमप्रतापतेजहांदंपतिलउआकेसमाजकोभूलजा
हि सोहेलाहावहै जिसकरकेश्रीराधाजीव्रजराजश्रीकृस्नकेहीएकोहरतहै प्रियाजूकोहे
लाहाव जथा सवैया अविलोकनअंकुसअैंचिप्रनूपमभूजुगपासभलेगलिमेली मूडहो
सहुवासउठाइमिलीवहजोन्हकीजामनीमाफअकेली अथरासपियाइकीएवसकेसवराइ
करीरसरीतनवेली वनमैंवृषभांनसुतासुषहीहरिकोहरिलैगईहेलहिहेली १९ वार्ता
सखीसखीवचन हेसखीआजनाइकाहेलावकरहरकोहरकेवनमैंलेगई लाजकोतजके कैसेलै
गई प्रथमतोअविलोकनरूपीअंकुससोंअपनीओरअैंचेकाषैचे जबनिकटआएतबजुगकही
पेदोइमोहनकीजोहैपासीकाफाहीसोतिनकेगरविषेमेलीकापाइदई सोजबपासीपाईतबनाइ
कअचेतभए याकैजेउनकोमूडुकहीएकोमलहाससौउठाइकरकेकाचेतेनकरकेवहिमिली कै
सेमिलीअकेलीवासखीहूवीचनदीनी आपहीमिली जोन्हकाचांदनीकीजामनीरात्रिविषे फेर
अथरकोरसपियाइकरकेकसवराइजोहैश्रीकृस्नसोअपनेवसकीएहै औनवेलीकहीएनवीनर

र. स. प्रि. टी. ४७ 47

सरीनकरी जोनाइककीकृयाङुनीसोनाइकानेकरी यातेनवेलीरीतकही हेसषीआजवृषभानसु
ताश्रीराधाजीसुषहीकासुषेनहीहेलाहावकरकेहरिश्रीकृस्नकोहरिकेवनमेलेगई हेलीका
हेअलीसषी श्रीअथरसप्रियाइवसकीऐ श्रीआयहुंमिलीयामेपूरनप्रेमप्रतापतेलाजकोसमा
जभूल्या यातेहेलाहाव सुभावोक्तिअलंकार अवलोकनमदहाससुभाववरनन अथकृस्नको
हेलाहाव सवैया वैनसुनाइवुलाइलईनवभौनभुराइकेभौनभलीको फूलगयोमनफूल्यावि
लोकतकेसवकाननरासथलीको रूपमहामदपानकराइकीयोपररंभनकामकलीको हेलह
श्रीहरिनागरआजहस्योमनश्रीवृषभानुललीको २ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीआजना
इकनेनाइकाबैनजोहेवचनतिनकोसुनाइकरकेवुलाइलई कैसेवुलाईहेभुराइकरकेअर्थकि
बसुथकरकेवुलाइलई भौनमें कैसोभौनहेजोभौनभीलीकोहे तामेसेजवपियारीवुलाइल
ईनवमनफूलगयो कुंकिरासथलीकहीऐरासकीसथली ताकोजोकाननवनफूल्योहे तिसव
नकोविलोकनकहीयेदेषनहे श्रीअपनोजोरूपहेसोईहेमहामदकामदरा ताकोकामकलीसी
जोपियारीहेताकोपानकराइकरके पररंभनकहहीऐआलिंगनकीयो मुषचुंवनकरके श्रीहरि
नागरजोहेश्रीकृस्नतिसनेहेलहकाहेलाहावकरकेवृषभानललीजोराधाहेताकोमनहस्यो इहाता
ईलाजछूटी जोसषीहूंवीचनदीनी आयहीवचनकहिसंकेतमैवुलाइलई इहांपूरनप्रेमप्रतापते

लाजभूलीजानीपरीयांतेहेलाहाव मूल दोहरा करतजहांलीलानकोप्रीतमप्रियाबनाइ उप
जतलीलाहावतिहबरनतकेसवराइ २१ वार्ता जहांप्रीतमनाइकग्रोप्रियानाइकादोऊवनाइकेलीला
कोकरेक्रायरसपरस्यवदलेतहांलीलाहावउपजतहै ताकोकेसवकविवरनतहे मूलकवित्त॥
पाइनकोपरवौग्रपमानग्रनेकसोकेसवमनमनेवो ग्रीगोनेवोरषवाइवोषवोविसेषचहूंदिसचौक
चितैवो चीलकुचीलनऊपरग्रोढवोपातनकेषरकेभजजैवो ग्रोषनमूंदकेसीषनरायकाकुंजनते
प्रतिकुंजनजैवो २२ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीनाइकानाइकोरयथरकेतिनकीक्रयाकोकरत
है जेसनाइकपाइनपरतइतैतेसेयहएकसषीकोनाइकलाइकेपाइनमेपरवोकेसवग्रीकृस्नतेसी
षतहे ग्रोजेसेग्रनेकनिरादरोसोनाइकाकोकृस्नबनावतइते तेसेईयहग्रनेकग्रपमाननिरादरो
सोमानकोमनाइवोसीषतहे ग्रोजेसेनाइकजसोतवोरषातयावतइते तेसेईयहसीकहीएजूगेजो
हेतेवारषानताकोषवावनोग्रोरुषानोसीषतहे ग्रोजेसेभेकरकेनाइकचक्रनदेषतइते तेसेईयहि
विसेषताकोचक्रनहूकेचितैवोदेषवोसीषतहे चारोदिसाविषे ग्रोरजेसेनाइकहूलनकेवलकल
पग्रोढतइतेतेसेईनाइकाचीलकहीएहलनुकेजोहेबलकलकुचीलकहीऐग्रपवित्रतिनपेग्रोढवो।
काग्रोइवोसीषतहे ग्रोजेसेपातनकेषरकेतेनाइकभागजातइतेतेसेयहपातनकेघरकेतभागजैवो
सीषतहै ग्रोजेसेनाइकरातकोढूंढनफिरतइतेनाइकाको तेसेईयहराधकाग्रोषनमूंदकेकुंजतकुंज

मैजैवोसीषनहै स्वभावोक्तिअलंकार चौकचितैवोहृगमूदवोइत्यादिस्वभाववरननतै अथश्रीकृ
स्नकोलीलाहाव मूल सवैया झांकझरोषनमै चढऊंचअकासनऊपरदेषनधावै निंदतगोप
चरित्रनकोकहिकेसवध्यानकैकैगुनगावै चित्रतिचित्रमेआपनपोअविलोतआनंदसोमनलावै
आंगननतैघरमैघरतैफिरआंगनबासरकोविरमावै २३ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीकृस्नराधका
कीलीलाकोकरतहै जैसेराधकाप्रथमझरोषनमेझांककेफेरऊंचेघरकेऊपरचढदेषनहुती कृस
कोतैसेईप्रथमकृस्नझरोषनविषैझांककेफेरऊंचेअवासघरपेचढकेदेषनकोधावतहै औरुजैसेरा
धकागोपनकेचरित्रनकोनिंदतहुतीकिएजोगोपहेमेरहितकरितहै सोमेरेचितकीवियाकोनहीं
जानत औसेनिंदाकोकरतहुती तैसेईगोपनकेचरित्रनकोनिंदतहै औरजैसेराधाजूध्यानधर
केगुनगावतहुतीतैसेईध्यानकरकरकेगुननकोगावतहै औजैसेचित्रमैकृस्नकेचित्रतहुती तै
सेईकृस्नआपनपोकहीएअपनेआपहीकोचित्रमेचित्रतहै औरुअविलोकतकोदेषतहै औरु
आनंदसोहिदेकोलगावतहै रायासम औजैसेराधाजूघरतेआंगनमेआंगनतेघरमैआवतजा
तहुतीतैसेईकृस्नआंगननतेघरमेआवतहै औघरतेफेरआंगनकोजातहैअैसेआपनपोजोहै
ताकोविरमावतहै वासरकेसमेमैं ईहोहू स्वभावोक्तिअलंकार झरोषनमेदेषवोइत्यादियदनमे
स्वभाववरननहैयातै अथललतहावलछन मूल दोहरा वोलनहसनविलोकवोचलनमनो

हररूप जैसेतैसेबरनीऐललितहावरूप्रनूप २४ वार्ता मनोहरवचनकोमृदुवचन मनोहर

हसनकोमृदुहसन श्रोमनोहरविलोकवोसोहरेहरेदेषवो मनोहरचलनकोमंदगमन सो

इनकेरूपजैसेसहभावकहेयातेसोईवरनीऐसोललितहाव सभावककोकछुकरतबनानवीनच

तुराईबरननमैनश्रावेसहजहीवरनीऐसोललित जिसक्रियामेचातुरताश्रावेसोक्रियाविलासहा

वकोहै श्रथउदाहरनकोललितहाव कवित्त कोमलविमलमनविमलश्रसीसषीसाथकमलाज्यु

लीनोहाथकमलसनालके नूपरकीधुनिसुनिभोरेकलहंसनकेचोकचोकपरेचारुचटकोमरा

लके कचनकेभारकुचभारनिसकुचभारलचकलचकजातकटतटवालके हरेहरेवोलनवि

लोकनहसनहरेहरेहरेचलनहरतमनलालके २५ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीकोमलश्रोवि

मलनिरमलश्रसोहेमनजाकोयातेविमलासोसुरस्वतीसीहे श्रोसषीहेसाथजिसके फेरकेसीहे

कमलालछमीकेसमानहेकाहेतेसनालकोडंडीकेसहजिजोहेकमलताकोहाथमेलीलेऊऐहे

लछमीकेहाथविषेवीकमलहै श्रोरुजाकेनूपरवोफोकरोकीधुनकोसुनिकेकलहंसनकेश्र

मतेचारुकहीयेसुंदरमरालहंसनकेजोचेटुवाबालकहेसोचोकचोकउठतिहेवेजानतहेकिह

मादेमातपितावोलतहे श्रसेनूपरोकेमधुरसुरहे श्रोकचजोहेवारतिनकेभारकरकेश्रोकुच

नकेभारकरकेसकुचलज्याकेभारकरकेबालाइस्त्रीकोकटतटजोहेकमरकोश्रस्थानसोलचक

र. स. प्रि. टी ४९ 49

लचकाजातहै औसीकोमललहै यांतेहरेहरेकहीऐसनैसनैतोवोलतहै औसनेसनेहीदेषतहै
औहरेहँहसत औहरेहरेचलतहै सोलालकृस्नकेमनकोहरतहै ईहांवचनादिकसहजहीकेव
रनेहै यांतेललतहावभयो ईहांसकुचेहैहेलाहावमेसकुचनही यहेभेद सुभावोक्तिअलंका
र वोलवोइत्यादिसुभाववरनन अथश्रीकृस्नकोललतहाव मूल सवैया चपलापटमोरकि
रीटलसैमघवाधनुसोभवढावतहै मृदुगाजतआवतबेनवजावतमित्रमयूरनचावतहै उठदेष
भटूभरिलोचनचातृकचित्तकीतापबुझावतहै घनस्यामघनाघनभेषधरेजुबनेबनतेब्रजआव
तहै २६ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीघनस्यामजोहैश्रीकृस्नसोघनाघनकहीऐमेघुनकोसरूप
कीएऊपेवनतेब्रजकोचलोआवतहै कैसेहै पीतपटजोहैपीतांवरसोईचपलावीज्जुरीहै औमोर
नकेपषनकोजोकरीटमुकटहैसोईमघवाकाइंद्रताकेधनषकीसोभाकोबढावतहै औबेनकावं
सरीताकोजोबजावतआवतहैंसोईमृदुकहीऐकोमलधुनसोमेघगरजतहै औमित्रजोहैसोईमयू
रकहीऐमोरहैतिनकोनचावतहै हेभटूकाहेसषीतेउठकरकेलोचनभरकेदेष चित्तजोहैचा
तृककहीऐपपीहाहैतिसकीतपतकोवुझावतहै याप्रकारघनरूपकीऐश्रीकृस्नआवतहै ईहां
घनस्यामजूकोवनतेआईवोसहजसुभावहीवरननकीयायांतेललितहाव रूपकाअलंकार है
रिकोऔमेघकोरूपककीयो अथमदहावलच्छन मूल दोहरा परनप्रेमप्रतापतेगरववढैवा

ड्डभाव तिनकेतरुनविकारतेउपजतहैमदहाव २७ वार्ता स्मरनप्रेमप्रतापतेश्रोतरुनकहीऐजोब
नकेविकारतेजिनकेबहुतभावनसौगरबबढतहै तिनकेमदहावउपजतहै अथराधकाजूकोमदहा
6 व मूल कवित्त छविसोंछबीलीवृषभानकीकुवरआजरहीहुतीरूपमदमानमदछकके मारहूतेसु
कुमारनंदकेकुमारताहूआऐरीमनभावनसौंनसभनकके हसहससोहेकरकरपाइपरकेसोराइकौसी
जबरहेजीयजकके नेहीसमेउवेघनघोरघोरदामनीसीलागीलोटस्यामघनउरसौंलपकके २८ वा
र्ता सषीसषीवचन हेसषीआजछविसोंछबीलीकासुंदरजोहेवृषभानकीकुमारराधासोरूपकेम
दविषेश्रोमानगारबकेमदसैछककेकामतेहूकेरहीहुती अथवामानकरहीहुती सोतिनकोमारक
हीऐकामदेवहूतेसुकुमारकहीऐकोमलजोनंदकेकुमारश्रीकृस्नहैसोमनभावनकोआऐ सरबसि
याननकोतकककेमाविचारके किहमारेगऐविनामानकोनहीतजहै यातेआपआऐ सोहसहसहस
केओरताइकाकोअपणोसोहेकहीऐसनमुषकरकरकेआपारनमेपरकेमोकौकेसोराइकीसोह
हैजवपेउपाइकरकेजीअमेजकरहेकाअचरजसोमानरहेकुंहूनमानछाड्योनाइकाने तवताही
समेविषेघनजोहैमेघसोघोरघोरकेउठे सोनाइकासुपफेरकेसोइरहीहुती घनगरजनतेलोट
कहीएकरवटलैकेआलपकककेकासीघनतासोदामनीबीजुरीकीन्याईघनस्यामश्रीकृस्नकेउरको
लगी ईहांअपनीसमरथताउषहरनकीजिताई किहमारेउपाइनसोकछूनसर्‍यो हमहीअपनी

ओरसोमानो यामैगरबजानोपरयो मदहावप्रगटहीहै समाहतअलंकार देवजोगतेकाजन
यो अथश्रीकृस्नकोमदहाव मूल सवैया मनमोहनीमोहसकैनसषीचपलाचलचित्तबषान
तहै रहिकीरतकेहूनकानकरैउतिचंदकलाछबटांनतहै कहिकेसवओरुकीबातकहांरमनी
यरमाहूनमाननहै वृषभानसुताहितमत्रमनोहरआनहूडीगनआननहै २९ वार्ता सषीस
षीबचन हेसषीमनोहरजोहैश्रीकृस्नसोवृषभानसुताराधाकेहितसनेहमेमत्रहूयेहोऐआन
कहीऐओरकोहूछमैनहीलखावन ओमनमोहनीजेमनकोमोहनबारीहैतेभीजिनकोनहीमोहस
कत ओचपलाबीजुरीकोचंचलकहतहै ओरतजोहैकामकीइस्त्रीतिसकीरतजोहैप्रीतताको।
किसीप्रकारभीकोननहीकरत अर्थकिसुनतेईनही ओरुचंद्रमाकीजोकलाहेताकीउतिको
भीछबटजाननहै केसवकविकहतहैओरुनकीबातनोकहांहे अर्थकिकछुनहीरमनीअकही
यकहीऐसुंदरजोरमाहेलछमीताकोभीराधांकेसमाननहीमानत ईहांपियारीकेसमानओर
कोनहीगनत यातेमदहाव याहीतेऊरजाअलंकार अथविभ्रमहावलछन दोहरा वाक।
विभूषनप्रेमतेजहांहोइबिपरीत दरसनरसतनमनरसितगनाविभ्रमकीरीत ३० वार्ता वाक
यायहबचनहैसर्वकविनको जहांभूषनकागहनेसोप्रेमकरकेबिपरीतगतहैजाहिमाउलटी
ताहैजाइ ओदरसनकेरसबिषेतनअरुमनरसतहोइकाप्राप्तहोइ सोविभ्रमहावकीरीतहै

अथ प्यांजूको बिभ्रमहाव मूल सवैया। कटकेतटहारलपेटलीऐकलकिंकनीलैउरसौंउरमाई
करनूपरसोंपगपोचीबनीअंगीयासुथअंचरकीबिसराई करिअंजनअंजितचारुकपोलकरीजु
नजावकनैननिकाई सुनआवतश्रीहरिजभूषनभूषनभूषनहीउवदेषनथाई २१ वार्ता सषीसषी
बचन हेसषीनाइकानेहरिजभूषनफूलकोआवतेसुनकेउरकोजोहारहैसोकटअस्थानमेंलपेट
लीयो। औकलकहीऐसुंदरजोकिंकनीछुद्रघंटकाहेसोउरविषेउरमाईदीपाई औरनूपरजोहै
फांफरोतेकरहाथनमेंबनीहै औपगकहीऐपाइनमेंपोचीबनीहै औअंगीयाकीऔअंचरकीजो।
सुथहैसोबिसराइदई अर्थाकिअंगीयाकेअस्थानअंचरकीयोअंचरकेअस्थानअंगीयाकरी औ
चारुकहीऐसुंदरजोकपोलहैनेअंजनसोअंजतकरकेसारंगकेनिकाईसुंदरतात्ताजावककेसेजु।
गतकरी औसोभावानजोहरिजकेभूषनफूलहैतिनकोआवतेसुनके भूषनोकोभूषनहीसापह
रतहीउठिकेदेषनकोथाईसाटोरी बिभ्रमहावप्रगटहीहै औदेषनकोदोरी यमेतनऔमनदरस
रतहीउठिकेदेषनकोथाईसादोरी विभ्रमहावप्रगटहीहै औदेषनकोदोरी यमैतनऔमनदरस
नकेरसमैमिल्याजामो असंगतिअलंकार औरठौरकोकारजऔरठौरकीयो। अथश्रीकृसकोबि
भ्रमहाव मूल सवैया। नंदनंदनषेलतहैबनगातबनीछविचंदनकेजलकी वृषभानसुताहि
बिलोकतहीरुचचित्तमेंबिभ्रमकी गिरजातनजाननपाननषातविरीकरपंकजकेदलकी विह
सीसमगोयसुनाहरिलोचनमंदसुरोचदगंचलकी २२ वार्ता सषीसषीबचन हेसषीनंदनंदनजोहै

र.
स. प्रि.
टी.
५१
51

श्रीकृस्नचंद्रसोवनविषैषेलतहै कैसेहैजिनकेगातसरीरविषैचंदनकेजलकीछविबनीहै तासमै
विषैहृषभानुकुमारराधाकोबिलोकनहीकादेषतहीचित्रविषैविभ्रमकीजोहैरुचिग्रभिलाषासो
फलकीक्याप्रगटी तिसविषैभ्रमतेश्रीकृस्नपानकोगिरपरतेनहीजानतहै किपानकविगिर
परतहै श्रौपंकजजेहैकमलजिनकीबीरीकरकेषातहै तवसषवगोयसुनाविहसीक्याहसीकैसी
हसीहैविलोचनमंदक्याहैविनेलोचनोकोमूदकेक्याग्रांषछिपाइकेहसी तवनाइकनेसुरोच
क्याऐकभलीरुचिसोभाग्रपनेहृगंचलोमेकरी सोसबीकहतहैऐकसरमिंदगीकीरुचिकरी सो
हमैबहुतपियारीलागीयहग्रनुमानसोजानीयतिहै ईहांहूंग्रसंगतिग्रलेकार कमलकेपकडार
देवैलाइकतिन्हेमुषमैथरिसो ग्रथविहृतहावलछन मूल दोहरा वोलनकेसमऐबिषैवोल
नदेइनलाज विहृतहावतासोकहतकेसवकविकविराज ३३ वार्ता जहांबोलनकेग्रवसरविषै
लज्याबोलननदेइ तहांविहृतहावकविकहतहै ग्रथस्याजकोविहृतहाव मूल सवैया मेरे
कहेदहीऐजनऊफिरग्रीषमज्युहविकाबदहोगी पेरवोप्रेमसमुद्रपराऐकराऐकरेकृतकंदुति
वहोगी होसमरैसजनीसगुरीकवहैहरसोहसवातकहोगी पीचितकीचित्रसारीचढीचित्रकीपु
तरीभईकोलोरहोगी ३४ वार्ता ईहानाइकालज्याकरकेनाइकसोनहीबोलत तवसषीसमझावत
है हेपियारीइसग्रपनेहठरुपीकावकोमेरेकहेदहीऐ क्याहरकरीऐ नहीतोनिदानकाग्रंतकोतं

आपहीफेरग्रीषमकीमाईहठरूपीकाठकोदहैंगी फेरतंप्रेमरूपीसमुंद्रकोतरनोऔरकेकरा
ऐकरतहै सोऐसीहूतकहीऐकरनीकरकेतरोगनिरवाऊकैसोहोइगो औरहयाहीहौंसमेमें
हरतसषीमरतहै किकवीतूंहरिसौंआपतेहसकरकेबारताकहै यहिचाहताम्रवसषीयन
कोहै औपीयजोहैनाइकताकेचितकीजोहैचित्रसारीकाचित्रकोघरतामेतेंचढीहै तहांचित्रकीश
तरीभईकोलगनाईरहैंगी अर्थयहचित्रकीपुतरीमनहोइ चित्रजदहै तामैनाइकनाइकासषीभी
हैं तिनकीभांतिहोऊ ईहांनाइकाकोलज्यानहीवोलनदेतयातेविहतहाव रूपकाअलंकार
पीयकोचितचित्रसारीनाइकाचित्रपुतरी अथश्रीकृस्नकोबिहृतहाव मूल सवैया केसवनाइसों
आजसषीहषभानकुमारउराहनोदीनो गारिदईअरुमारदईअरबिंदनकीमनकैहितहीनो सी
षदईसुषपाइलईउरलाइसुगंधचढाइनवीनो उत्तरदेइकोनंदकुमारकछूसिरऊचेतेनीचोनकीनो
३५ वार्ता धीराधीरानाइकाकीवातसषीसषीसोकहतहै हेसषीआजकेसवराइश्रीकृस्नकोवृ
षभानकुमारराधाजूनेउराहनोदियो उराहनोयहकिहमनेतुमकोगारीदईहै औरुमारदईहै
अरबिंदनसोंकाकमलनिसोंमनहितहीनाकरके यहउराहनोदियो तुमजोऔरुठौरुकहिआ
ऐसोहमकवअैसकस्योहै ईहांसषीनकेआगेनाइकामुकरीयामैप्रीत औरुतुमयाहीलाइकहो
तुमैचंडहीटीजीए यामैविषमता यातेधीराधीरा सोनाइकाकहतहै सीषदईकियातुममनेहम।

र.
स. प्रि.
टी.
५२
52

कोसिछ्यादई अबनेतुमसोबोलीपेहूनही सोहमनेवहसिछ्याहषपाइकेउरसोंलाइलाईकामान
लीनी सोसषीसोसषीकहतहैकवउराहनोदीनो सुगंधचढाइनवीनो पहिलेनाइकके अंगमेनयो
सुगंधचढाइकरके यामेउनपेमलाईकरकेउराहनोदीनो नवयहनाइकनेजानीयहतोहमेंअसेचा
हतहै याकीवानवाहरहमकियोकही इसीलज्यातेउनरतोकोनदेइ नंदकुमारनेहसनेअपनोसिर
नीचेनेकछूभीऊंचोनहींकियो ईहांहूलाजनेबोलननहींदिएयातेबिहृतहाव काकोहुअलंकार
गारदईअरुमारदईसानहींदईयामे अथविलासहावलछन मूल दोहरा षेलनवोलनहसन
अरुचितवनचलनप्रकास जलथलकेसवदासकहिउपजतहावविलास ३९ वार्ता प्रकासवाच
मनकारकेसहृनचतुराईसोषेलतेहुएऔबोलतेहुऐ औहसतेहुऐऔचितवनसादेषतेहुऐ औचल
तेहुऐ जलमैंभीऔरुथलमैंभीविलासहावउपजतहै अथराधकाजूकोविलासहाव कवित्त कि
लकतअलिकजुतिलकचिलकमिसभौंहनिमेबिभ्रमनिभौनभेददीनेहै लोचननिसोचनिसको
चनिनचावनहोदसनचमकहीचकनचित्रकीनेहै मंदहासमुषवासअमिआसदासकमिलीनेकेसो
राइजियजहियप्रबीनेहै सोहनकेननमनमोहवेकोमेरीआलीतेरेमुषसुषहीअनंतव्रतलीनेहै
६१ वार्ता सषीनाइकासोकहतहै हेपियारीतेरेमुषनेहसकेमोहवेकोअनेकव्रतधारेहै कोनसे
तिलककीचिलककेमिसजोतेरोअलिकमसनककिलकतहैसादमकतहैयहएकव्रतहै मिस॰

कातिलकनहीचिलकतहैमाथोईदमकतहै फेरविभ्रमजेहैविलासतिनोनेअपनेभौननिकेकिा
घरनेकेभेदभोहनमैकहिदिऐहै किहमभौहनमेबसतहैमाभौहैविलासकरनहै यहहूजोब्रत
औरहूसोचविचारनिसोंअरुसंकोचनिसोंजोनहलोचनोकोनचावतहै यहतीजोब्रत औरहूनेवेदस
नजोहैदंततिनकीचमकनेनाइकचकृतचित्रकिऐहै यहचौथोब्रत औरहूमुषवासकेसहनजोहै
तेवोमंदहासनिसनेकेसाराइजोहैश्रीकृस्नसोंअनियासकहिऐविनाप्रआसहीदासकरिलीऐहै
जदपवेअवीनचतुरभीहैपरतोभीमोहलीऐहै हेपियारीमोहनजोहैकृस्नतिनकेमोहनकरवेको
नेरेमुषनेसुषहीकासुषेनहीअनेनकाअनेकब्रतलिऐहै कियोमोहनसर्वकेमोहनहेयातेति
नकेमोहनकोअनेतब्रतलिऐ ईहांसर्वठौरहूक्रियाकरनमेआईमसतककोदमकाइवो भौहनसोविला
सकरवौ लोचननचाइवौ दसनचमकाइवौ मंदहसवौ यातेविलासवाह कैतवापह्नुतअलंकार ति
लककेमिसअलिकदमकतहैयामे अथकृस्नकोविलासहाव कवित्त जिननिहारेतेनिहारवेको। १०
निहोरतकाहूननिहारेजिनकेसहूनिहारेहै सुरनरनागगंधर्वकन्यनिकेप्रानपतियतिदेवतोरनिहूके
हियनिविहारेहै इहविधकेसाराइरावरेअसेषअंगउपमानउपजीविरंचयचहारेहै रूपमदमोचन
मदनमदमोचनहैत्रियब्रतमोचनविलोचननिहारेहै ३८ वार्ता नाइककीसषीनाइककेनेननि
कीउसतनकहतहै हेहरिकेसहैतुमारेनेत्र जिननिगोपांगनानेऐनेत्रनहीनिहारेवानहीदेषेतोनिहा

र॰
स॰ प्रि॰
टी॰
५२
53

रवेकोक्यादेषवेकोमोकोनिहारतीहेक्यामनावतीहे किहमकोदिषाइदेउ औरतिनोनेकिसीप्रकारनिहा
रेहेक्यादेषेहेनेफेरकाहूकोनहीदेषत फेरनेत्रकैसेहे सुरदेवता नरमनुष्य नागसरप इनकीजोहेन
वकंन्याक्याअदभुतकंन्याजिनकोरूपकोमदहे तिनोकेभीप्रानोकेपतिहे औरुपतिदेवताकियपतिही
हेदेवताजिनकेअेसीजोहेपतिव्रता इस्त्रीतिनोकेहियजेहेहिरदेतिनमेभीविहारेहे सोविचरहेहे ऐसेअ
हकेसोअरइसप्रकारअेसेषजोहेसंघारनगोपकुमारकाओरुसुरननागकन्यातिनोकेअंगतुमारेनैननि
केमोहेऊपेरावरेकहियेतुमारेईकैरहेहे अथवातुमारेसंघारनअंगनमेलोचनइसप्रकारकेहे जिनकी
उपमाकोईनहीउपजी विरंचब्रह्मासेकविसोभीपचकरिकेहाररहेहे फेरकैसेहे रूपकोजोहेमदगर
वतिसकेमोचनाक्याहरकरनवारेहे औरुमदनकामकेमदगरवकोहरकरनवारेहे औरुइस्त्रीनके
जोहेव्रततिनकेहरकरनवारेहे अैसेतुमारेनेत्रहे ईहाकामकोमदवाननकोहे किमेरेबानजवचलत
हेतबसबकोमोहतहे परअैसेनहीमोहतजेसेतुमारेनेत्रचलकरकेमोहतहे यातेबाननकीक्रियाजो
तीतुमारेनैननिकीक्रियाने सोतुमारेनेत्रजवचलतहेतवहीमदनकोमदजातहे औरुगरवको
बहिवोसामानक्रियाहीतेहोतहे यातेनैननिमेक्रियानिकसीविलासहावभयो लाटानुप्रास
मोचनसवदकईवारआयो प्रयोजनन्याधो अथकिलकिंचनहावलछ्छन दोहरा श्रमअभि
लाषसगरवसमितक्रोधहरषभेइभाव उपजतएकहवारजहतहकिलकिंचितहाव ३५ वार्ता सि

मिनकामंदहसवौ ऐसेभावजहांएकहीबारउपजैतहांकिलकिंचितहाव अथइयाकोकिलकिं
चितहाव सवैया कौनेरसैबिहसैलषिकौनहिकायरकोपकेभोहचढावै भूलनलाजभईकवहूक
बहूमुषअंचलमेलिडरावै कौनकीलेनबलाइबलाइलियोतेरीदसायहमोहनभावै ऐसीतौनहूक
कबहूनभईअवतोहदईजिनवाइलगावै ५ वार्ता सषीकोबैननाइकासौ हेराधेकौनसौतरसहैवा
रसकतहै औरुकौनकोदेषकेतूबिहसतहैकाहमतहै औरुकौनपरकोपकरिकेतभोहनिकोच
ढावतहै हेभटूतूकवहूतालाजकोभूलजातहै औरुकबहूअपनेमुषकोअंचलबस्त्रमेमलकरि
केहरावतहैकाछिपावतहै औरुमतेरीबलाइलेवौ तूकौनकीबलाइलेतहै यहजोहैतेरीदसाअ
वस्थासोमोकोनहीभावतहै औरुऐसीतोतूकबहूभीनहीभईहै अवतोकोदईपरमेसुरवाइसतल
गाइदेइ अर्थयहजैसेवाइबसभएकीअवस्थाहोतहैऐसीतेरीअवस्थाहै इहांअमखाटिसातोभाव
है कौनेरसैयामेअभिलाष विहसनिमेसमित भोहचढावनमेकोप भूलनलाजयामेगरवऔ
रुअस्र कियोगरवतोयातेऐसोकौनहैजासोसकुचै औरुअमआलससोघूंघटकोनकरवो मु
षडरावैभय यातेकिलकिंचनहाव समुझेइअलंकार वहुतभावएकहीसंगउपजै श्रीकृसको
किलकिंचनहाव सवैया ऐसीहैगोकुलकेकुलकीजिनदच्छननैनकिएअजहूले षंजनसेम
नरंजनकेसवहासविलासलतालगफूले बोलफुकोउफकोअनवोलेफिरोविफूकेसहिएमह

र॰
स॰ वि॰
टी॰
५४
54

फूले रूपभयेसबकेबिससेअहोकान्हकहोरसकौनकेभूले ४१ वार्त्ता ईहाहूसमआदिसानोभाव
हे सषीनाइकसौकहतहे अहोकाहेकान्हगोकलकेविषेभलकीअैसीनाइकाहेजिनोनेनमारेदव्व
लनैनाक्याजोसर्वदेषनइनेनेअनुकूलकिऐ कोआपनेईवसकरलिऐ अबकाहूकोनहीदेषन
अचलहैरहेहे यामेश्रम कैसेनेनहे मनकेरंजनक्याप्रसनकरनिवारे षंजनमसोलेतिनकेसम
हे हासजोहेहासीसोईइनकीबिलासकरनकीलताक्यावेलहे तिसकोलगकेफूलतहे अर्थयह
हसनहे यामेसिमित औरुनमसोजोवोलनहै नवफुकोक्याषिकतेहो यामेकोप औरअनबो
लेतेउफकतहो क्याकछदेषतसेफिरतहे यामेअभिलाष फेरबिफुकेक्याचक्रतसेफिरतहो
यामेभेय औरुहियेमेफूलेहोक्याप्रसनहोयामेहरष औरुसरवकेहयनुमकोविससेभएहे का
हूकोनहीदेषतेहो यामेगरव सोहेकान्हतुमकौनकेरसमेभूलरहेहो मेरेपासकहो किल
किंचनहावप्रगटहीहे समुचेइअलंकार अथविछितहावलछन दोहा भूषनभूषवेकोजु।
हाहोइअनादरज्ञान सोविछित्तविचारीऐकेसवराइवषान ४२ वार्त्ता जहाभूषनोकेभूषवेको।
क्यायहरवेकोअनादरहोइनहाबिछितहाव अथविछतहावउदाहरन सवैया तनआपनेभाऐ
सिंगारसिंगारमहोऐसिंगारसिंगारेवृथाही हूजभूषननैननिभूषहेजाकीमूर्तायैसिंगारडुनारेन
जाही समहोतसुगंधनहीनेसुगंधसुगंधमेजानसुगंधसुभाही सषिभूषनदेसवतोहीनेभूषि

तभूषननतेतुममभूषितनाही ५३ वार्ता नाइकानेभूषनउतारेहैतासोंसषीकहतहै हेपियारीतनना
आपनेभा याकोअर्थआपनेकहीऐतुमारेननमैभाकहीऐसोभाकेजोऐसिंगारहैसोईसिंगारहै
औरुजेसिंगारतुमेउतारेहैतिनकोदेष नहोऐसिंगारसिंगारे काऐसिंगारसिंगारहीनहीहैऐतोहू
घ्याकोविअर्थहीहै औरुजिनसिंगारनिकीभूषचाहनाहेषनूषनश्रीकृसकेनेननिकोहैवेसिं
गारकोनसेहैसोभाकेसोतेरेपासतेउतारेनहीजाहगे ऐसिंगारजोतेउतारधरेहैसोभलीकरी वे
उतारेनजाहिंगेजिनकीचाहिनाकृसकोहै औरफेरतकैसीहै सर्वजोहैवसनतिनमेसुगंधति
केमिलऐतेसुगंधहोतहै औरुतिससुगंधमेतेरीसुभाइकीसुगंधजातहै अर्थयहसर्वसुगंध
निकोतेरीसुभाइकीसुगंधमिलकेउनकोसुगंधकरेहै हेसषीऐसर्वभूषनतोहीसोभूषितका
आछेलागतहै तभूषनोतेआछीनहीलागतहै ईहाभूषनोकीनिंदातेविछितहाव हेतअलेका
र सुगंधवसनतुसुगंधनितेहोतहेयामे श्रीकृसकोविछितहाव सवैया पानतषाऐनपाग
रचीपलटैपटचित्रकहाधरकै कंठसिरीवनमालमनोहरहारउतारधरेअरकै चंदनचि
त्रनलोपसुलोचनलोकविलोकनिसोलरकै अगसुभाइसुवासप्रकासनलोपऊकेस
वकियोकरकै ५४ वार्ता कहूनाइकानेनाइककोकह्योकसोऊतो कितुमकहाहोकावेवतनहै
तुमारो इसगरवकेवचनकोसुनकेनाइककोरिसभईहै तवनाइकाकीसषीरूयकीउसततकरिके
केरिसमिटावतहै हरिआजतुमनेयाननहीबाधे औरुयागनहीवांधी औरुपटजोहैवस्त्रसोभीपल

र· देहैंक्याबदलेहैं नऐवस्त्रउनारकेपुरानेपहरेहैं कहाजोहैनाइकाकोनाकोउरमेंधरके याहीतेकंठसि
स·त्रि· रीऔरुवनमालाऔरुमनकेहरनवारेजेहैंहारसोभीअढंकरकेउतारधरेहें वरजेभीतुमपरतोभी
टी· हठकरकेउतारधरेहैं हेसुलोचनश्रीकृस्नलोकबिलोकजोहैंसुजनओरुपरजननिनसोलरकेचं
५५ दनकेजेहैंचित्रतिनकोलोपदियोवामिटाइदियो काहूकोकह्योनहीमान्यो औरुतुमारेअंगमें
55 जोसुभावहीकीसुवाससुगंधप्रकासतीहैताकोकीयोकरकेलोपद्धगेवामेटहुगे इहांहूभूषनोकेनि
रादरतेबिछितहाव काव्यअर्थापतिअलंकार ततकीसुवासतेभूषनोकोनिरादरभयो अथबिवो
कहावलच्छन दोहरा रूपप्रेमकेगरवतेकपटनिरादरहोइ तहउपजतबिब्बोकरसयहजानतसु
बकोइ ८५ वार्ता जहांरूपकेअरुप्रेमकेगरवकरकेकपटकोअनादरहोइवाकहूं कोईअनादरहोई
तहांबिबोकहाव श्रीराधाजूकोबिबोकहाव सवैया आवनजानकेसोइरहीहरयेहगिवेठेनजा
नजगाई स्याहसकेडरमद्रुथल्योकविजागतवोमकीसोचजनाई नीवीविमोचितचोकउठीपहिचा
नफुकीवनीयाकहिवाई वासरगाइगवारचरावतआवतहैनिससेजपराई ८५ वार्ता हेसखीआ
जनाइकानाइककोआवतेजानकेतोसोइरहीहुती ताकीसेजापरहरिश्रीकृस्नआइकेहरियेक
हिपेहोलतेवैठगये औरनाइकाजगाईनहीजान तवसाहसजोहैयीरजताकोकरिकेनाइकनेवा
कीछातीपरकरहाथधर्यो तवरोमनाइकाकेउठे सोरोमतिकीरचनेवाळविनेनाइकाजागत
जनाइदई सोजवनीवीनालोषोलनिलगेतवनीवीकेविमोचनहीवाषोलनहीचोककहीयेचमक

केऊकीघिरी वतीयाकहिवाई कैसेऊकी मानोपहिचानउठी वाजैसेउठीपहिचानवारोवामेकर
नहैअैसेवाईदूषीवानेकही सोजाकीप्रीतउठीहोतहैसोदूषीबातकहतहै सोजोगवारहैतेवासरदिन
मेगाइनकोचरावतहै रातकोयराईसेजपरआवतहै अर्थकियहकामगवारनकोहैजोतुमकरतहो
तुमकोनहीचाहीये यहअनादरनाइकानेकियो सोऊठोहै कियोनाइकके हाथलगरोमांचासा
त्वकभयोयातेमनमेप्रेमजान्यो अनादरकपटहीकोकियो बिबोकहावभयो अनुमानअलंकार
रोमनिकीरुचतेजाग्रतजानी श्रीकृस्नकोबिबोकहाव सवैया ऐकसमेइकगोपीसोकेसवकैसेदूह
सीकीबातकही जाकहुतातदइतजनाहिकहाहमसोरसरीतनही तुकोप्रतिउत्तरदेइसषीदृगआं
सुनकीअवलीउमही उरलाइलईअकुलाइनऊअधरातकलोहिलकीनवही ८९ वार्ता सषीसषी
सोकहतहै ऐसषीऐकसमेविषैकेसवश्रीकृस्नने ऐकगोपीगनासोकिसीप्रकारहासीकीबातकही
किसीप्रकारकोअर्थसषीभोतनकहीलपेटसोकही साकही जाकोवाजिसकोतेरेतातपितानेतोको
दियोहुतो तजनाहि वातोकोतजकेफेरतोकोहमकोकियोनदियो कहाकोअर्थवाहमसोरसकी
रीतनहीकोअर्थनहुती वासेवेधविवहारहमसोनहुतो हासीयहतेरेपितानेतोकोदूसरोपतिकियो
नदियो यहब्यंगसोकही सोहेसषीइसबारताकोप्रतिउत्तरवाजुवावसोकोनदेइ सुनकरकेवाकेनेत्रनि
मेआंसुनकीजोहैअवलीपंगतिसोयाप्रकारउमहीकाउमडी नवनाइकाश्रीकृस्नेअकुलाइकेउरसोलगा

र. स-प्रि- टी. ५८ 56

इलई परंतौभी आधी करातनमोई हिलकी जोहेहि चकी सो नाइकाकी नारहो अनादर यह हमको नहीं
दई याते हम मेरे यतिनहीं ने रोपति आरूहै औरू नाइकाको अरूवाके पतिको नूनगनिर्यो कौनाकोतो
कोदियो कह्यो तिनको तुमको न कह्यो आपको हमको ऐसो उसनतको यदकाह्यो यह अनादर सोक
पदको है कह्यो याछे नेउरको लगाइलई याते बिबोकहाव बिसेषोक्त अलंकार उरमें लगाइवो हिल
कीके हटवेको कारन है तोभी हटवौ कारज न भयो अथ मोटाइत हाव लच्छन दोहरा हे लाली लाकरि
जहा प्रगटत सातुक भाव बुथ बलरोकत सो भिये सो मोटाइत हाव ५७ वार्ता जहा हे लाल अहलीलाक
रिकै सात्वक भाव प्रगटै तिस सात्वक भावको बुद्ध केबल सो दे यत रोकते ऊ ऐसो भेस्या सोभाको पावे तहा मो
टाइत हाव अथ प्रियाजूको मोटाइत हाव सवैया षेलत है हरि बागे बने जहा वैठी प्रिया रति तें अति लोनी
केसव केसहू पी मैं डीठ परी कुचकुंकमकी रुचरोनी मानसमीपहु गाई भलें तिन सात्वक भावनकी गत हो
नी धरक धरकी धर बिलोचन मंत्र सरोरुह औ ठउठोनी ५८ वार्ता सषी सषी बचन हे सषी जहा हरिबा
गवने कहिये बसनको यहि रेडू पे षेलत हे तहा प्यारी रति ते जो आपे तलोनी सुंदर है कौन श्रीराधाजू सो
वैठी है औ हगोपागनार तमी है राधाजू रति ते अधिक है याते अति यदयस्यो हे सषी तहा नाइक की
पीठमै कुचनिको जो है कुंकम केसरता की रुच जो है कवि केसी रोनी सुंदर सो नाइकाकी डीठ परी कानज
रपरी प्रयोजन यह कह्यो याछे ते प्रियाजू ने नाइक की पीठ सो आलिंगन कियो हो नव केसर अंगी याकी

लगीहै सोग्रपनोचिन्हनाइककीपीठमेंदेषकेनाइकाकोमानकभयो सोतिसनाइकानेमानाकेसमीप
वानिकटसात्वकभावनकोजोहोनोकाहोनोहारगतग्रवस्याहैसोभलीप्रकारदुराइकाछिपाई कहाकर
केछिपाई कसूरकीग्ररकोलोचनोमेमरकरिकेग्रंशुछिपाये ग्रोरुसरोरुहकमलसोसोनलहैताकोसूंघके
कंपग्रोरुवेवरनछिपायो ग्रोरुउढोनोजोहैचूनरीताकोग्रोटकरकेरोमांचछिपाये यातेमोटाइतहाव
जुकतग्रलंकार कृयाकरिकेमानकछिपायो याते ग्रयश्रीकृस्नकोमोटाइतहाव सवैया भोजन
केवृषभानसभामहिवैठेहैनंदसदासुषकारी गोपघनेवलवीरविराजतवनाइविरीगिरधारी राध
केफ़ाकफरोषनिहुकेकहिकेसवरीफगिरेहैंविहारी सोरभयेसमकैसकुचेहरिवाइकह्योहरिलागीसु
पारी ४५ वातो सषीसषीवचन हेसषीसदासुषकारीकियासुषकेकरनवारेजोहैनंदजीसोभोज
नकरिकेवृषभानकीसभामैवैठेहुते तिनकेसंगघनेगोपग्रोरुवलवीरजोहैवलभद्रजीसोभीविरा
जतहै तहांगिरिधारीजोहैश्रीकृस्नसोपाननकीवीरीवनाइकेषातहै तासमैराधकाजीफरोषामैहै
करकेफांकी तिसकीविलोकनकोदेषकेविहारीजोहैश्रीकृस्नसोरीफकरकेगिरपरे हेसषीजु
वसोरभयोतवसमकेग्रोरुसकुचेलजाइगये काईमीततनाजानजाइयाते तवहरवाइकहिएहोलतनह
रिनेकह्योमेरेहिरदेमैसुपारीलगीहै ईहांगिरनतेस्वेदसात्वक हरवोलनितेसुरभंगसात्वकइया
टिप्यारीकोदेषकेभयेसोवुहवलसोराकेसुपारीलगीवताईयातेमोटाइतहाव याजोकग्रलंकार क

र॰
स॰ प्रि॰
टी॰
47
57

हिके छिपायो अथ कुट्टमितहावलछन दोहरा केलकलहमेमोभिये केलकपटपटरूप उ
पजतहैतिहकुट्टमितहावकहतकविभूप ५० वार्ता केलकलहकाकेलकोनाकरवोताकेकलहमेफेर
वहीकेलसोभे कासोभादेइ तोज्ञानीयेवहअनकरवेकीचाहफूलीहुती सोदोहामेकह्योहे वहकेलक
लहकैसीहे कपटपटरूप काकपटकोपटवस्त्रहै अर्थयहजेवातेकेलअनकरवेकीहैतेफूलीहे मन
मेकेलभावेहे सोइस्त्रीनकेनाहीनाहीविवहारभाजवोछुडाइवोयाकोकुट्टमितकहतहै अथप्रियाजू
कोकुट्टमितहाव सवैया पहिलेहठचलीउठपीठदैमेलषईसषीतेनलषीरी पुनथाइयरीहरिजू
कीभुजानतेछूटवेकोवहुभांतफषीरी गहकेकुचपीठनिदंतनषच्छतवैरनिकोमरजादनषीरी पि
रनाहीकोपानषवावतहेउलटीकछुप्रीतकीरीतसषीरी ५१ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीनाइकाप्रथ
मनाइकसोहठकरिकैरोससोपीठदैकैउठचलीहुती तवमैनेलषईकादेषीथीओरहतैनहीलषीथी री
सषी पुनकहीयेफेरनाइकनेधाइकैकादोरकैनाइकाधरीकापकरी सोवहश्रीकृस्नकीभुजानकेवि
षतेछूटवेकोवहुतभांतफषीकाषिफी तवहरिनेकुचनिकोपकरकरकेओरपीठनिकविकेओदंतनि
केओरनषनिकेछतजोहेघावतिनोकरिकैवैरीयाकीजोषीमरजादासोनषीकाउलेयुनकरीअर्थयहयो
मीवैरीहूनकरेजेसीकरी हेसषीफेरनाइकातिसनाइकहीकोपानषवावतहे तवहसरीसषीबोलीरीसषी
कछूप्रीतकीरीतनहीउलटीहे ईहाकेलकलहकाहेकेलतेभाजवोतहांफेरकेलसोभीकियोजोभाजीहुतीसो

ईयानषवावतहै यातेकुट्टमितहाव पंचमीविभावनाअलंकार जिसनेवैरीहैकेउ षटियोताकोसुषटि
योविरुद्धतेकारजभेयो श्रीकृष्णजीकोकुट्टमितहाव सवैया देषनहीजिहमोनगहीअरुमोननजीकटवो
लउचारे सोहैकिएहूनसोहाकियोमतुहारकिएहूनसूधोनिहारे हाहाकैहाररहेमनमोहनपाइपरेजिन
लालननिमारे मेंउनहैमुहताहीकोअकलेहैकछुप्रेमकेपाठनिन्यारे ५२ वार्ता कहूनाइकानेलोकलीक
उलंघवचनकहेहै तातेनाइककोगुनमानभेयोहै सोनाइककीसषीसोनाइकाकीसषीकहतहै उराहन
नोदैकरकै हेसषीतेरेनाइकनेआजनाइकासोएरीतेकरीहै जिसनाइकनेनाइकाकेदेषतेईतोमोनपक
रीवोलेनही जवमोननजीवोलनिलगेतववकटुकहिएकोउवचनकहे फेरनाइकामेउनकेसोहै सनमुष
भीकरीसोहूकियेहूनेभीअपनोआपनाइकानेसनमुषहीकियो अथवासोहैसुगंधेषाईतऊवाकोअपने
सोहैनहीकियो फेरवानेमतुहारकामनावनहूकरीतऊ ऐवाकीओरसूधेनहीनिहारसादेषीनही
अथवामेनवभीऐसूधेनहीदेषवक्रहीरहे तवनाइककीसषीवोलीहेसषीमनमोहनजोहैश्रीकृष्णसो
याकेआगेहाहाकरिकेहाररहे औरुपाइनमेपरेऊऐजिसतेरीनाइकानेएनाइकलालननसोमारे हेसषीपार
नपरेमाननहीरहनहे इननोनिपटअनिकरीऊनीलालननसोमारेऊने ऐसीअनीतकोऊनहीकरत तवनाइ
काकीसषीवोलीअसोजापैकियोहोइसोचाहीएकबहूनबोले वोलोअकवागोदीमेलैकेताहीनाइकाकोस
षमेउनहे तवनाइककीसषीवोली हैकछुप्रेमकेपाठनिन्यारेगे कापेप्रेमकीवातेसवतेन्यारीहे ईहोहूसुषमें
इनतेजान्योवहकलहसुहोहै यातेकुट्टमितहाव उत्तरअलंकार सषीसषीकेउत्तरते अथवाथकहावलछन

र॰ मूल दोहरा गूढभावकेवोधजहकेसबऔरेहोइ तासौबोधकहावकहवरननहैकविलोइ ५२ वार्ता गूढक
स॰ प्रि॰ हिएकिप्योकुयोनोहैभावनाकेवोधजोहैग्यानसोऔरुहीहोइ तहावोधकहावहोतहै अथप्रियाजूकोवो
टी॰ धकहाव सवैया वैगीढुतीव्रषभानकुमारसषीनकीमंडलीमद्धप्रवीनी लैकुमलानोसोकंजपरीइक
५२ पाइनआइकैग्वारनवीनी चंदनसोछिरकोवहवाकुपानदएकरुनारसभीनी चंदनचित्रकपोलनिला
58 पकेअंजनिआजविदाकरदीनी ५४ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीव्रषभानकुमारिजोहैश्रीराधाजूकै
सीप्रवीनक्याचतुरसोसषीयोकीमंडलीमेवैगीढुती तहाएकनवीनकहिएनईग्वालनीजोआगेकबहूंन
हीआईसोएककुमलायोसोजोहैकंजकमलताकोलैकेराधाजूकेपाइनमेआनपरी प्रतच्छतोसषीननेयहू
जान्यो कियहकोईकमलभेटल्याईहै गूढभावयहजान्यो नाइकनेअपनीअवस्थाकहभेजीहै कमलसोहमारो
हिरदैतेरेवियोगकरिकेकुमलाइगयोहै तबराधाजूनेवहकमलचंदनसोछिरको प्रतच्छजोजानोलच्छ
मीकोघरजानकमलकोपूजनकियोहै गूढभावयह हमतुमरेहिरदैकोसीतलकरहै औरुवासषीकोया
नदिएपानको प्रतच्छतोआदरजान्यो औरगूढभावयह जैसैपाननमैरंगबसतहै असेहमारोसनेहु
तुमारेमैवसतहै औरुकरुनारसमैमिली कियोकमलप्रियवसन्तहैताकोकुमलायोदेषसोकमयो
यातेकरुनारसभयो फेरवाकेकपोलनिपैचंदनकोचित्रकरिकेमेटदियोतापाछेवाकेनेननिमेअं
जनकजलआंजकेवायाइकेविदाकरदई प्रतच्छतोजीनहीठौरुमेआदरकियो औरुगूढभावको
नसेचंदनकेचित्रनिमेचांदनीकोचढवोजितायो मस्वेमैछिपवोजिताइयो जवचंद्रमाचढकेछिपे

गोनवमिलहो अजननेतेयहजितायोतुमारीस्यामसुरनहमारेनैननिमैबसनहै बोधकहावप्रगटही
है सूक्ष्मअलंकार किसीक्रियाकरिकेजियकीवारताजानीऐ ईहांकमलतेंनाइककीव्याकुलता
जानी अथश्रीकृस्नजूकोबोधकहाव सवैया सषीमोहनगोपसभामहिगोविंदबैठेहुतेहुतिकोधर
के जनुकेसवपूरनचंदलसैचितमित्रचकोरनिकोहरिकै तिनसौउलटोकरिआनदियोगहितीर
नतीरनऐभरकै कहिकाहेतेनेकनिहारमनोहरफेरदियोकलिकाकरिकै ५५ वार्ता सषीसषी
बचन हेसषीमोहनबारीजोहैगोपनकीसभाकोसुदरसभातामेगोविंदजोहैश्रीकृस्नसोजुतिसोभा
कोधारनकरिकैबैठेहुते केसेहैकृस्न मित्रजेहैतेईभऐचकेरतिनकेचित्तनिकोहरिकेमानोपूरन
चंद्रमालसतहै तहांकोईएकसषीनेनऐहुऐकानमताकोसिरकोनीचेकिऐहुऐ नीरजजोहैकम
लसोयानीसोभरकेओरुउलटोकरिकैतिनकोश्रीकृस्नकोआनदियो सोतुकहुहरिनेवाकमलको
नेकरतीकदेख्यो देषकरिकेफेरसषीकोकलीकरिकेमोडदियो सोकाहेतेमोडदियो ईहांप्रतच्छता
तोगुरजनोनेयहजान्योकिसषीकमलभेटल्याईथीसोनाइकेनेनहीराषीसवारकेफेरदई गूढभावया
मेऐहहै उलटोकरिकमलदियोसषीनेयामेजितायोनाइकानीचेकोमुषकियेतुमारेवियोगमेरुदनक
रतहै तुमममिलो ओरुनेकहूबिदेषरहेयामेअपनीप्रीतजिताई कितुमारेनेत्रकमलहमारेनैननिमै
बसतहै कमलकोदेषवोसषीनेनाइकायासमझाइकह्योओरुकलीकरिकैफेरदियोयामेजितायोजबक

र.
स. प्रि.
टी.
५९
59

मलसकुचैंगेगानकोनबहमभमिलहै बोयकहावप्रगटह्नीहै सक्छमाश्रलंकार मूल दोहरा राधाराधा
रमनिकेकहेजथामतिहाव ठिठईकेसवराइकीछमवोकविकविराव ५८ वार्ता जथामतकाजैसी
मेरीवुद्दहैतैसमैराधाजूकेश्रीरुराधारमनजोहैश्रीकृस्नजीतिनदोऊनिकेहावबरनेहै सोयहजोके
सवराइकोढीठताहैताकोहकवोछिमाकरकरनी राधाजूजगतकीमाता श्रीरुश्रीकृस्नजगतकेपि
तातिनकेहावबरनेयहढीठता मूल दोहरा श्रालंबनउद्दीपकहिभावहावश्रनिगूढ श्रष्टनाइका
हतहोकेसवमतिश्रारूढ ५७ वार्ता श्रालंबनश्रीरुउद्दीपनकहे श्रीरुश्रमंतगूढसाछिपेइऐजो
भावहावहैसोकहै श्रबश्रष्टनाइकाकहतहोमतिबुद्धमैयहबारताश्ररूढकाचढीहै इतिश्रीमनमहा
राजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचतायांरसप्रियायांभावहावबरननंनामषष्टमोश्रध्याय ६ श्रथश्रष्ट
नाइकाबरननं मूल दोहरा ऐसबजितनीनाइकाबरनोमतिश्रनुसार केसवराइबर्षनीऐनेसब
श्राठप्रकार १ वार्ता ऐसेश्ररनस्वकीयातेश्रादिलैकेजितनीनाइकायाछेमैमतिकेश्रनुसारबरनीहै सो
केसवकविकहतहैतिनसबकोश्राठप्रकारबरनीऐ मूल दोहरा स्वाधीनपतिकाउतंकहीवासक का
सज्जानाम श्रभिसंधितावषानिऐश्रीरुषंडताबाम २ मूल दोहरा केसवप्रोषतप्रेइसीलवधाविप्रसु
जान श्रष्टनाइकाऐसभैश्रभिसारकासुश्रान २ वार्ता ऐश्रष्टनाइकानिकेनामहै श्रथस्वाधीनपतिका
लच्छन दोहरा केसवजाकेगुनबंधियोसदारहेपतिसंग स्वाधीनपतिकातासकोवरननप्रेमप्रसंगइ

वार्त्ता केसवकविकहतहैं जाकेगुनसौबंधियोपतिसदासंगहीरहैं ताकोस्वाधीनपतिकाकहतहैं ता
कोप्रेमप्रसंगबरननहै अथस्वाधीनपतिकाप्रच्छन्न सवैया केसवजीवनजोव्रजकोअरुजीवहतेअ
तिबापहिभावै जापरदेवअदेवकुमारिनिवारतमाइनवारलगावै तापरिपैतहअहीरकीबेटीमहाबरपा
इकवारदिवावै होतोबचीअबहासिनहीअसेअोरुजोदेषतोउत्तरआवै ४ वार्त्ता नाइकमहावरलावतहै
नाइकाहसहसकेनाहीनाहीकरतहै सोनाहीनाइककोनीकीलगीहै यहाहीछबिसोबयेमहावर
लावतहै तबसषीकहतहै हेअहीरकीपुत्रीजोकेसवश्रीकृस्नव्रजकोजीवनहै अोरुबापजोनंदहैता
कोजीवनभीअंतभावनहै फेरजिसकृस्नकेऊपरकोदेवनिकेअोरुअदेवकाअसुरनिकेजोहेकुमार
बालकतिनकोमाताजसोदावारतीहुईबारनहीलगावत तिसहविकेपासतेतहअहीरकीबेटीहैकैपाउ
कोकवाइकामेजवाइकेहसहसकेमहावरदिवावतहै हेप्यारीहोकहिएमोसोतोतहबचीहै अथय
हमेतोकछुनहीकहत अबहासननही याकोअर्थअबेतरीयहहासीकीजोहैनाहीअथवाहासीसोजो
नाहीहै याकोजोकोईअोरुदेषैतोकोयावातकोउत्तरआवैअर्थकिनाआवै ईहामहावरलगावनमेना
इकाकीनाहीनाहीमहावरलगावनकीआगपादेतहै यागुनसैनाइकबंधेहै यातेस्वाधीनपतिका स
बीअंतरंगहै जोकहतहैअोरुकेदेषउत्तरनाआवै यातेप्रच्छन्न याहीमेकाकोक्तिअलंकार अथप्रका
सस्वाधीनपतिका कवित्त चोलीकोसोपाननोहकरतसदारवोईमुकरउतोहीमाहिमूरतसमानीहै

रं.
स.चि.
टी.
६०
60

तेहीत्रियदेवतापायोपतिकेसोराइपतनीबडुतयतिदेवताबषानीहै तेरेईमनोरथभगीरथरथयाछेपा।
छेडालतगुपालमेरोगंगाकेसोपानीहै ऐसीकोनबातजोनमानीसुनमेरीरानीउनकेतोतेरीबानीबेदकी
सीबानीहै ६९ वार्ता कहूनाइकानेनाइककोसोहो तुमअपनीऐसीअधीनतामेरेआगेदिषाइदिषाइके
मोकोसषीनमेंओरुनाविनिमेमनलजावो सोनाइकअधीनतानहीछाडत तवनाइकानेनाइककीसषी
सोकह्योनाइकमेरीवारतानहीमानत तवसषीसमझावतहै वोलीनामपाननकीपस्यारीकोहै वो
लीकेयानकीमाईक्रसतेकोसवारवोईकरतहै अर्थयहजैसेनेवारीपाननिकेसवारनकीषवरराष
तहै ऐसेनाइकतेरोपाननसोजोकोमलमरीरहेताकेसवारनकीषवरराषतहै फेरजिनकोमूर
तमुकरसीसेकोमाईतेरेईमेसमाइरहीहै औरुहेप्यारीपतनीपतिदेवतातोवडुतहै कापतिहीहै
देवताजिनकेऐसोपतिनीइस्त्रीबडुतकहीहै मेत्रीयदेवतापतितेहीपायोहै कात्रियहैदेवताजिन
केऐसोपतितैहीपायोहै औरुनेनहीपायो सोवतेरीसेवाकैसेछाडे जिसकोजोदेवताहोतहैसोता
कीसेवानहीछाडतहै यानेतइनकोमनेमनकरै ऐसेवानहीछाडेगो तेउनकोइष्टदेवताहै औ
रुतेरेईजोहैमनोरथअभिलाषसोईभएभगीरथकेरथतिनकेपाछेपाछेमेरोगुपालश्रीकृस
गंगाजूकेपानीसमडोलतहै अर्थयहतेरेसर्वमनोरथपूरनकरतहै हेमेरीरानीऐसीतेरी
कोनसीवातहैजोउनोनेनहीमानी अर्थयहसरवहीमानीहै उनोकेतोतेरीबानीवेदकीवानीसम

है वेदमैंजेसोसब्रुहोतहैंतेसोई करहनमैंआवतहै जैसेअगनिसहुहोइतौअगनिकी कहै पावकहै
ऐसेजेतेहैरेनकहैतेवेऊरेनकहैरातमतकहै ईहांकोमलबानीकेओरुकोमलतनकेवसभएहैं या
तेस्वाधीनपतिका ओरुसखीवहरेगहै जोमेरोगुपालकहतहै यातेप्रकास पाछेपाछेफिरतमेभी
प्रकास उपमाअलंकारचोलीकोसोपानयामें अथउतकालछन मल दोहरा कौनहेततहिंआयहै
प्रीतमजाकेयाम ताकोमोचितसोचहियकेसवउतकावाम ७ वार्ता जाकेधामनमेंवासहेहटकेघरमेंकि
सीकारनकरकेप्रीतमनाआवे तिसकेअनआवनकोजोहेसोचविचारताकोहियमेसोचितहोइताविचा
रतहोइसोउतकानाइकाहै अथप्रछनउतका मल कवित्त किधौंअहकाजकेनछूटनसषासमाज
किधौंकछुआजहूतवासरविभाततें दीनोंतेनसाथ किधौंकाहूसोभैयाविरोधउपज्योअवेरायकिधौंउ
रुअवदाततें सुषमेनदेहुकिधौंमोहीसोकपटतेहकिधौंदेषमेहअतिडरेअधिरातते किधौंमेरीश्री
तकीप्रतीतलेतकेसोराइआजहूनआएमनसोधौंकौनबाततें ८ वार्ता नाइकाकेलकेघरमेंबैठीमनसो
कहतहे हेमनयाबातकोसोधोकाविचारतूआजश्रीकृस्नईहांकौनबाततेंनहींआए सोआजकोईयव
कोकारजबन्योहै अथवासषाजेहैंमित्रतिनकोसमाजनहींछूटत अथवाआजकोईहूतनवाबरनको
वासरदिनहै विभाततेंवाप्रातहीतेनहींआए अथवाहेमनतेउनकोसाथनहींदियो नाइकाकेम
नमेंप्रीतमनिरंतरवसतहै सोउनकेमनहूकोअपनोईमनजानकहतहै कितेहूषबरनदीनी अथ

र.
स. प्रि.
टी.
६१
61

वाकाहूसोबिरोधलगाईभई अथवाअवदातकहीएउजलहिएमेजोप्रबोधगपानह्नतोसोआजउपज्योहै
काप्रगटसोहै अथवाअंजसुषमेसरीरनहीहै कछुषेदहै अथवामेरईसाथकुछकपटकोप्रेमहै कियो
आधीरातमेमेघकोदेषकेअसंनडरेहे एकरातकोदेषकेडरे दूजेमेघनिकोदेषकेडरेहै यातेअतिडरे
है अथवाहेमनमेरीप्रीतकीप्रतीतलेतहे कियामेउनमासीप्रीतहेकिमहमासीहेकिअथमासीहे य
हपरीछादेषतहै हेमनलोकोनबाततैनहीआपे उनकानाइकाप्रगटहीहै मनसोबचनतेप्रछन्न संदे
हालंकार प्रकासउनका कवित्त सुथभूलगईभुलएकियोकाहूकिभूलेईडोलतबाटमपाई भीतभ
एकियोकेसवकाहूसोभेटभईकोऊभामनिभाई आवतहैकियोआइगएकियोआवहगेसजनीसुषदाई
आपेननेदकुमारिबिचारसुकोनबिचारअवारलगाई ॥ वार्ता नाइकासषीसोकहतहै हेसषीनंदकु
माराकुसनेकोनसीबिचारकोबिचारकरकेअवारदेरलगाईहै अथवासुथभूलगईहैआवनकी अ
थवाकाहूनेभूलएकाभुलाइलएहै अथवाभूलेईफिरतहैसहेटकेघरकीबाटनहीपाई अथवाका
हूसोभीतभएहैडरेहै अथवाकेसवश्रीकृसकीकाहूसोभेटभईहै अथवाकोईइस्त्रीभाईहैयातेन
हीआए हेसषी अथवामारगमेआवतहै अथवाआइकेउवगएहै मोकोषवरनहीभई अथवाहे
सजनीसुषदाईनाइकआवहगे अबसोकिसहेततेनहीआएउनकानाइकाप्रगटहीहै नाइकानेभाई
भामनजोकहीसोबहरंगाज्ञानकेकहीअंतरंगतैज्ञानतीपेइती यातेप्रकास संदेहालंकार अथवा

सकसज्जालच्छन मूल दोहरा बासकसज्जा होइ सो कहिके सब सबिलास चितै रहे ग्रह द्वार सो पिय
आवनकी आस ९ वार्त्ता जो पियके आवनकी आस मैं सविलास कहिये कटाक्षनिके सहत सहेट केद्वा
रके द्वारकी तरफ चितैरहे सो देषतही रहे सो बासकसज्जा अथ बासकसज्जा प्रच्छन्न कवित्त चंदनवि
टपबपुकोमल अमल दल बलत ललन तल नालपटी लवंगकी केसो दास नामे डुरी दीपकी सिषा सी
दौर हुरावत नील बास डुति अंग अंग की पौन पान पंछी पसु बस सद जित जित होइ नित नित चौक चा
हैचौप संग की नंदलाल आगम बिलोके कुंजजाल बाल लीनी गति तनिह काल पिंजर पतंग की १० वार्त्ता
सखीसखीसो कहत है हे सखी चंदनके जो है विटप तरु क तिनके वपु सो कहा सरीर सो अर्थ यह सकंध नि
सो साषानि सो ललत सुंदर जे है लवंग लता वा लोगनिकी वेलै सो लपटी है केसी वेलै है कोमल और
अमल कानिरमल ओ से जे है दल पत्र तिनकरिकै वलत है वासरत है तिन बेलनि मैं दीपकी सिषा के
समान जो नाइका है सो डुरी कही ऐ छिपी है सो अपने अंग अंगकी दुतिको नील बास मैं वा नीले बस्त्र मैं डु
रावत है वा छिपावत है औरु पान वा यत्रनिके पौनकरिकै पंछीयाकरिकै औरु पसु जे है मृग आदि
क तिनकरिकै वस जे जार सो जित जित वा जहां जहां सदा सद होत है तित तित कहिये तहां तहां नाइ
का चौक चौक के चाहत है वा देषत है कदाचित प्रीतम ही आए होइ कोमकि चौ पहे संग की वा मिलनकी
सो कुंजके जो है जालक रोषा ता मे बाल नाइका नंदलाल श्रीकृस्न के आगमको बिलोकत है वा देषत है सो

र॰
स॰प्रि॰
टी॰
५२
62

हे सषी जिस काल मैं सब दुहूंन है पत्रनिके तिसी काल मैं नाइका ने पिंजरे को जो पतंग पंछी होत है तिस जे
सी गति लई है गति नरहको नाम जैसे पिंजरे को पंछी षडके नेचो कपरत है अैसे नाइका चोकपरत है
सषी अंतरंग है जे नंदलाल के आगम को जानत है याते प्रछन्न वासकसज्जा प्रगट ही है ज्ञात अलेका
र नीलवास मैं अंग दुराइवो अथ प्रकास वासकसज्जा सवैया भाषत है सुषवैन सषी सो हुलास हिये
अभिलाषनि जो है कोमल हासनि नैन विलासनि अंग सुवासनि के मन मोहै मूरतवंत कि यो तुर
सी तरसी वन मै रति भूषन को है कुंज विराजत गोपवधू कमला जनु कंज कुटी महि सोहै १२ वार्त्ता
सषी सषी वचन हे सषी नाइका सुष के वचन अपनी सषी सो कहत है औरु हुलास करि हिये आने
द सो हिये के जो है अभिलाष तिनको जो है सादे षत है अथवा जो अभिलाष है तिनको सषी सो क
हत है हे सषी आज तुलसी वन मैं नाइके के मन को कोमल हासनि करिके औरु नैननि के जे है
विलास कटाछनि करिके औरु अंगनि की सुवास सुगंधनि के मोहे का मोहन करव है अर्थ यह आज
अैसे मिलि ऐगो नाइका कैसी है कि यो तुलसी के वन मैं मूरतवंत वा सरूप को धारे हुए तुलसी है
हे सषी रति भूषन किया रति की सोभूषन यह को हे वा कोन है कुंज मैं विराजत है गोपवधू वा गोथकी
इस्त्री सो कैसी है मानो कंज कमलनि की कुटी मै कमला लछमी सोहत है नाइक के मिलन की आ
स है याते वासकसज्जा सषी बहुरंग है जे नाइका को जानत नही औरु वासकसज्जा नाज्ञानी याते प्रकास

उत्प्रेक्षाअलंकार अथ अभिसंधनालच्छन मूल दोहा॥ मानमनावत हू करै मानद को अपमान हू
नोइ घनि न बिन लहै अभिसंधना बषान १३ वार्ता मानद जो है नाइक ता को मान के मनावन मै अपमान
निरादर करै फेरि तिन बिना हू नोइ षपावै पेक बियोग को हू जो अपमान किए को सो अभिसंधना अथ प्र
छन्न अभिसंधना कवित्त बारि बारि बोलै जब बाल्यो न बाल मन बबालक ज्यो बाल चे को कत बिललात
है ज्यो ज्यो परे पाइ नत्यो पाहन ते मीन भै यो हा न कहा अब किए मा षनि सो गात है कैसो दास सबै छांड
कियाह वही सो हेत ना हू छांड जियजिए विन कहा जात है ऐसे प्यारे पिय ही सो मान्यो न मनायो न बऐसी
तो हिहू फिए न पाछे पछतात है १४ वार्ता नाइक के मनावन ते प्रथम नही मानत जो पाछे पछताइ
के नाइका मन सो कहत है हे जीव जब नाइक तेरे साथ बार बार बोलत ब तो तै हे वाल सहे मूरष ना बोल्यो
अरु अब तै बालक की नाई को बिललात है अनके साथ बोलनि को और जब तो नाइक ज्यो ज्यो मेरे पा
इनकी त्यो कही एतर फ परे का आए त्यो त्यो तै पाहन जो है पथ्थर तिस ते भी पीन का कठन भयो अरु अ
ब माषन सो गात किए का होत है और तै सब वान को छांडकै एक हठ वही सो हेत कियो है तिस हठ को छा
डकरि के अब हे जियतें रोजिए बिना कहा जात है अर्थ यह कहा बिगरत है कछु नही बिगरत का
ज्यो जिए तो बिगरत नव तो तै ऐसे प्यारे प्रीतम सो मनायो इयो ना मान्यो अब तै पाछे तें पछतावत है ऐ
सी तो को हू फी ए है सो चाहिए है नही चाहीए है ई हा नाइका को दो ऊ दुष है एक वियोग को हू जो उनके नि

र॰
स॰प्रि॰
टी॰
६३
63

रादरकिएको यातेअभिसंधता मनसोवचनयातेप्रछन्न अंतरंगसषीसोनाइकाकहेतोभीप्रछन ह
त्याअनुप्रास बकारकीबरनमैत्रीतै अथप्रकासअभिसंधता सवैया पाइपरेहूनप्रीतमम्योकहिकेस
वकेहूनमैहगदीनौ नेरीसषीसिषसीषीनएकहूरोषहूकीसिषसीषउलीनौ चंदनचंदसमीपसरो
जजरेदुषदेहभईसुषहीनौ मैउलटीज्ञकरीविधमोकहूत्याइनहीउलटीविधकीनौ ५५ वार्ता नाइका
सषीसोकहतहै हेसषीतेमेरेपाइनमैपरकेकह्योहूतोतूंप्रीतमकीओरदेषसोतेरेपाइनपरेहूतेभीमै
प्रीतमकीओरुहगजोहैइसटसोनहींदईकादेष्योनहीं औरुहेसषीतेरीसिछ्याभीमैएकहूनहीसीषी
रोषजोहैक्रोधताकीसिछ्यासीषलई याहीतेअबमेरीदेह चंदन औरुचंद्रमा औरुसरोजकमलइनकेस
मीपकहीएनिकटतैदुषसोजरतहै औरुसुषकरिकेहीनभईहै हेसषीमैनेजोउलटीकरीहूतीमनाएतै
नहीमानीहूती सोमोकोविधब्रह्मानेत्याइहीकियोजोउलटीविधकरीहै सीतलबसतजचंदनादिकजरावन॰
लगीयहउलटीविधभई ईहांहूदोऊदुषभए एकवियोगकोहूजोनिरादरको यातेअभिसंधता सषीव
हूरंगहैजाकीबाननाइकानेनहीमानीयातेप्रकास पंचमीविभावनाअलंकार विरुद्धतेकारजभयो चंदना
दिकतेजरनफलउपज्यो अथषंडिताल्छन सल दोहरा आवनकहिआवैनहीआवेप्रीतमप्रात
जाकेघरसोषंडिताकहेसुबहुविधवात १९ वार्ता जाकेघरमेप्रीतमनाइकआवनकहिकेनहीआ
वेओरुप्रातकेसमैविषेआवैसोषंडिताकहिए ईहांप्रीतमयहविंजिकसबदहै प्रीतमहूकैआवै॰

क्ायरउस्त्रीरमनलीलाकरिआँवेताकोदेषकेनाउकाक्रोथसौबड्यौतबारताकहेसोषंडता अथप्रछ
न्नषंडता कबित्त ओघनजोसूकनकाननितोसुनियतकेसोराउजेसैतुमलोगनिमैगाएहो बंस
कीविसारीसुथकाकुञ्जियाचुननफिरोसोठज्ञवेमीथसवईवहीठठाएहो हरहरकरतहोदौरदौर
गहोयगज्ञानोनकुठौरठौरज्ञानज्ञियपाएहो काकोज्वरचालवेकोबसेकहोघनस्यामसुद्दूज्याहु
सन्निपातमेरेज्वरआएहो १० वार्ता ईहाकोईअथमाषंडताकाहूराजाप्रतिकहतहै केसोराउको
ग्रंथ केसोकविकोनाम राउसंबोधनहेराउहेराजाजेसैतुमलोकनिमैगाएहोसोजेसैतुमको
लोकबषानतहै अैसेतुमओघनिसोजोनहीदिषाईदेततोहमकाननिसोनोसुनतहै किअैसैहै
हमतुमकोकैसेसुनतहै तुमनेबंसकीसुथविसारदईहै औरमीथकहिएभानकेकनककैसे
जूठेओसीठेसावाहीतिनकोतुमकाकहीत्याईचुननफिरतहो काषातफिरतहो यातेतुमसठई
ठहोकाम्हरमित्रहो औरूठीठहो कापूछहो अैसेतुमगाएहोकावनाएहोविथने औरूमैतुमको
हरहरकरतहो तुमदोरदोरकेमेरेपाउपकरतहो फेरूतुमकेसहोठौरकुठौरकोनहीजानतहो
मेअयनेजियमेतुमज्ञानपाएहो काज्ञानलिएहो सोतुमरानकाकेवरचालवेकोकाकिसकेह्य
रकेपाउनेकोकावसाउनेकोकहाछिपकरकेवसेहो घनस्यामकामेघनकेदिननिमे विसेषको
पयाहीतेकियाजोमेघनिमैतोसर्वअपनेअयनेआश्रमकोआवतहै तुमवरषामेभीरातकोअनय

र. स. प्रि. टी. ६४ 64

सयानवसे अवप्रातकेसमैखुचुउल्लकीमाईनुसवेकोहमारेघरमैआएहे। जुठ्यानतेपरउस्त्रीकीप्रती
नभईयातेघंडता नाइकनाइकाहीहैयातेप्रछन्न उपमाअलंका। काकुज्योयामे अथप्रकासयंडता
सवैया आजकछुअषियोहरिओरहसीमानोमहावरमाझरंगीहे मोहनमोहीसीलागतमोहइने
परमोहनमोहलगीहे मेरीसोमोसङुमानडुबेगाहिएरसरोसकीरीतजगीहे मेरेवियोगकेनजन
चौकियोकेसवकाहूकेप्रेमपगीहे १८ वार्ता ईहासषीनकेआगेनाइकाअपनीप्रभुताराषकेबचन
कहतहे जोओरठौरकोनिरधारकरकहेतोसषीजानेयासोप्रीतनहीहे यातेमिलीसीबातनाकह
नहैं हेहरिआजतुमारीअषियोकछुओरहसीहे केसीहैमानोमहावजोहेलाषकोरंगतामेरंगीहे अ
र्थयहलालरे हेमोहनकछुसपेतुमारीआषेमोकोहीसीलागतहे वाकाहूनेमोहलईहे औरहुइस
नेउपरंतपेआषेमोकोभीमोहनलगीहे हेहरितुमकोमेरीसोहहे मोसोसीत्रहीमानो तुमरेहि
एमैरसप्रेमकोरीतजगीहै अथवारोसक्रोधकीरीतजगीहे यातेलालआषेहे अथवामेरेवियो
गकोजोहैतेजतामेनचीहैनयनभईहे अथवाकाहूकेप्रेममैपगीहे यहकहोऐसंदेहसोवच
नअपनीबडियाईराषवेकेलिएकहे सषीवहरंगहेजिनकेआगेछिपाउसोवचनकहे अरु
उनोनेबियोगनवीकहेतेजानलीनीकियाकेयासरातनहीआएयातेप्रकास उतप्रेछाअलं
कार अथप्रोषितप्रेयसीलछन मूल दोहरा जाकोप्रीतमदेसअवथगयोकौनहूकाज ता

कोप्रोषितप्रेयसीकहिवरननकविराज १९ वार्ता जिमनाइकाकोप्रीतमअवधकरिकेकिसीमरजा
दाकरकेकिसीकारजगयेहोइ ताकोकविराजजेहैंबडेकविप्रोषितप्रेयसीकहतहैं अथप्रछन्न
प्रोषितप्रेयसी सवैया केसवकैसेहूदूरबधूत्रमिलउमनभावतोभागभरियोरी जानेकोमाईक
हाभयोवैसेहूऔधकोआधिकदियोसटरियोरी ताकहूतेंनअजोहमबोलेनऊमेरोमोहनपा
इपस्योरी कावहूनेहवनेरोकहोरइतेविरहानलहूनजस्योरी २० वार्ता नाइककेआइवेकोअवध
कोदिनआयोहै नाइकनहीआयेयातेनाइकानीचकोमुषकिऐसोचतहै तवसषीसमझावतहैं
हेप्यारीयहदिननाइककेआइवेकोताकोकैसेहूकहिऐकिसीप्रकारहूवहतेंनमिल्योहै फेरते
रोमनकोभावतोदिनहै फेरदिनकैसोहै भागभस्योहै वातेरेभागकोदिनहै हेमाईयहकोन
जानेकहाभयोहैजोऔधकोआयोदिनवीतगयोहै अजोतोद्वैपहरपरेहैं नाइकआवहुगे ताक
हूवातें इसदिनकोदेष नीचकोकोमुषकरिकेनारहू हेप्यारीतेंअजोभीहमसकेनहीबोलनहै
कियोनाइककेआइवेकोजवदिनहोतहैतवसवहसतहै सोदिनआयोतेंअजोभीनहीहसत फे
रदिनकैसोहै तेरोमेरोमोहन कासषीकहतहै जदपतेरोमनभावतोदिनहै परतौभीमेरोमो
हनदिनहै कामोकोनीकोलगतहै यातेतोकोतोमहामोहनह्वैहै पाइपस्योरी कायहदिनकि
सीप्रकारपाइलियो अथवापाइयस्योवापाइआयस्योहै यहदिनहमकोकहाऊतो यातेहमके

र॰
स॰त्रि॰
टी
६५
65

बोलहठनाकरी यहतेरोहठकाठतेभीकठोरहैजोउनतीविरहकीअनलमैंकाअगनिमैनहीजरयो
काठतोअगनिमैजरजातहै यहनहीजरयो ईहासोचवेतेनाइकाप्रोषितपतिकाहै जोआनंदहै
तोतोआगमिष्यतपतिकाहोती सखीअनरेगहै जोअपनोमोहनदिनवतावतहैयातेप्रछन्न वि
सेषोक्तअलंकार अगनिहैजारवेकोकारनतोभीहठकाठनहीजरयो यामे अथप्रकासप्रोषितप्रेय
सी सवैया औपदेआएऊहाउनकोयहभोजनकेअवहीहमअैहे ताकहुतोअवलोबहिराइकेराषी
बरिआइमरकरमैहै बैठेकहाइनकीढिगकेसवजाहुनहीकोऊजाइजकैहे जानतहोउनआषनि
तेंअसुवाउमगोवहरोफिररैहे २१ वार्ता सखीनाइकसोकहतहै हेहरिवानाइकाकोतुमयहऊहो
औपदेआएहो किहमभोजनकरिकेअबहीआवतहै सोवहनाइकाबहिराइकहिपेभ्रमाइकरि
के औवरिआइकरिकेकाजोरावरीकरकै औरुमरकहिएकष्टकरकै मैनेअबताईराषीहै अर्थ
यहतुमारेविरहमैवहुताव्याकुलहै सोतुमयानाइकाकीढिगकहावैठरहेहो जातेनहीहो अरथ
किजाऊ वाकेपासजेकोईजाइकहैगो किहमकोवाकेपासवैठेमैदेषआईहो सोतुमजानतहीहो
जोवाकीआषनतेअसुवाउमगेगीतोवहुरोकाफेरफिररैहैकामुठरैहैनहीरैहै सषीनेकह्यो
वाकोअवपदेकेयाकेघरकावैठेहोयातेप्रकासप्रोषतपतिका काकोक्तिअलंकार अथविप्रल
बधालछन मूल दोहरा हतीसौसंकेतबदलैनयवाईआप लबधाविप्रलजानीऐअनआ

ऐसें नाय २२ वार्ता आयजो है नाइकता नेहूती सो संकेत बदकें वा मिलनको अस्थान कहकें ना
इकावे लैनको पठाई वा भेजी सो नाइकके अंतआऐ वा विना मिले सुतापड्ड षको पावें सो विप्रल
बधा अथप्रछन्न विप्रलबधा सवैया सूलसे फूल सुवास कुवास सी भाकसी से भए भोन सभा
गे के सबबाग महावन सो जुरसी चढी जोन्ह सभे अंगटागे नेड्ड लगे पाउरनाहरसो निसनाहि चुरी
ककहूं अनुरागे गारी सेगीत बिरीविससी गसिगारई सिंगार अंगा सेलागे २३ वार्ता नाइका निज
सषी सो कहनहै हे सषी ऐ फूल सूल से है औरु सुवास जो है सुगंधसो कुवास सा दुरगंध सी है औ
रु सभागेक हिऐ भागावंत जे है भवन घरको नसके जनिकु सो भाकसी ऐ भोहे ते तिनके समान भ
ऐ है औरबाग जो है सो महावन साकासूने वनाके समभयो है औरु जो जोन्ह जो है चांदनी सो जुरसी
कासानयसी चढी है जिसने सर्व अंगदागे कादागध करे है औरु हे सषी ने हउर मे नाहर सो का से
रके सम लग्यो है औरु निस जो है रात सो नाहि चुरी कसारात चुरीक भीन ही है याते कहूं नाइक
अनुरागे है का सने हवान भए है याते मो को गारी सेगीत लगत है औरु विससी बीरी लागत है
औरु सर्व सिंगार न सेल गे है ईहां वाग सब तें संकेतन अस्थान जानीऐ ता मैं नाइका आई नाइक
नहीं मिलै याते विप्रलबधा सिंगारनिते औरु वाग मे आवनते कहूं अनुरागे कहन तें विरह
नीनहीं औरु नाइकने अंतरंगसषी हूं को हूती करि कैं भेजी सो आइ नां जो महाप्रसन्न ह्वैके गीतन
कोगावनी जु ई नाइका को लिवाइ चली याते नाइकाने अपनी सषी सो कह्यो गारी सगीत औ

र.
स.प्रि.
टी.
६६
66

हूनाइकाकीसषीभीअंतरंगहैजासौकह्यौनेहूलग्योउरनाहूसोयातेप्रछन्न व्याख्यातअलं
कार स्वषदाईदुषदाईभये अथप्रकासविप्रलंवथा कवित्त देषतउदयजानदेषदेषनिज
गातनचंपककेपातकह्यौलोहैवनाइके सकलसुगंधटारफूलमालतोरडारहूनकोमार
पुनवीरीवगराइकै लैलैदीहसासतजविवियविलासहासकैसोदासह्वैउदासचलीअकुला
इके सेयकैसंकेतसूनोकान्हजूसौवोलऊनोमोसोकरजोरहूतोहूतोदुषपाइके २५ वार्ता
नाइकाकृस्नाअभिसारकाह्वैकेआईहैसंकेतमैनहांनाइकनहीमिलैहै ताकीवातसषीकहै
नहै हेसषीउदयजानजोहैचंद्रमाताकोदेषतेई औरुपनेगातकोदेष्यौ विचार्योकिस्यामव
रनमलूमहैतनलगेयातेनिजगातकोअपनेसरीरकोदेषदेषकरिकै कजोहैजलकजलको
ईहाश्रासूलीजेतिनसौकहकहीपेहुहकरिकेचंपककेपातपरनाइककौउलांभोलिष्यौ कै
सोलिष्योवनाइकरकैजोनाइकभलीप्रकारवाचै परएतेकाजकरकैलिष्यौ सकलसुगंध
निकोटारकरकै फूलनिकीमालकोतोरडारकरके औरुहूतकोजोहैहनीजादुलाइकैल्याइ
उनीताकोमारकरकै औरुवीरीजोहैपाननिकीतिनकोवगराइकहिपेंषिडाइकरकै औरु
दीहकावडेजेहैसासतिनकोलैलैकरिकैलिष्यौ कालिष्यौ तजविवियविलासहासको
तजकाडदेहूविविधअनेकप्रकारकेजोहासीकेविलासहैकौनसेवनमेबुलाइकेआपनआव
नोअैसीहासीछाडदेहू यहउराहनोलिष्यौ फेरनाइकानहांतेउदासह्वैकेऔरुअकुलाइकेवा

व्याकुलह्वैकैहरिचली केमेचलीसंकेतकोसूनोमेइकवकै ओरुश्रीकृसकोऊनोकहीयेहीनो
बचनवोलकरकै ओरुहेसषीमोसोदोनोहाथजोरकै ओरुहूनोदुषपाइकैजरकोचली एकतो
दुषनाइकनमिले दूजोचंद्रमाचढेउपरजैवौकवनभैयो यहहूनोदुषपायो ओरुतहांकुंजभव
मेयत्रहीहुतेयातेनाइकानेपत्रपरलिषो यहवातजानीकिवडीसषीपासहेयहनाइककोपत्र
दिषाइदेहे ओरुचंपकपेलिषकेअपनोविरहकोदुषदिषायो किचंपकसीदेहमेरीविरहकेदु
षसोस्यामह्वैगई ओरुसषीइहाअनकहे जाकोमास्योसोइतकोहे ओरुजाकोकरिजोरकेकही
किनमनहोहोऊनहाअेसोचलचाहिये यातेकोऊवडीसषीजानीयतहे ओरुहेसषीआपसमे
कहतहे यातेप्रकास अथअभिसारकालछन मूल दोहरा हितते केमदमदनतेपियसो
मिलेजुजाइ सोकहिएअभिसारकावरनीत्रिविधवनाइ २५ वार्ता तीनभांतकीअभिसारकाव
रनीहे जोहितसनेहकरिकेपियकोजाइमिलेसोप्रमाअभिसारका ओरुजोमदकागरवसोमि
लेसोगरवाअभिसारका ओरुजोमदनकामनेमिलेसोकामाअभिसारका मूल दोहरा अ
तिसलजडगपगधरैचलनवधुनिकेसंग स्वकीआकोअभिसारयहभूषनभूषितअंग २६ वा
र्ता अतिअंतलजाकेसहत ओरुवधुजोहेकुटंबनाकीवधूकाइस्त्रीयाकोसंगलेकरकेडगजो
हेमारगतामेपगचरनकोधरै ओरुभूषनासोभूषितसोभानदेहहोइयहस्वकीयाकोअभिसा

र.
स.प्रि.
टी.
६९
67

रहे मूल दोहरा जनीसहेलीसोभियेवंयुवयसंगचारु मगमेदेषुथिरायुयगास्वकीयाकोअभिसा
र २७ वार्ता जनीकेऔरुसहेलीकेऔरुवयवयूनिकेसंगसोभाकोदेउ औरुमागमारगमेथिराइ
कायीरजसोचरनरेसास्वकीयाकोअभिसारहे अथप्रछन्नप्रेमाअभिसारका कवित्त लीनेहू
ममोलअनवोलेआईजान्योमोहिमोहयनस्यामघनमालावोलल्याईहे देष्योकेहेडुषजहादेष
हूनदेषीपरेदेषीकेसेवादकेसादामनीदिषाईहे ऊचेनीचेवीचकीचकंटकनिपीरेपगसाहमग
इंदगतिअतिसुषदाईहे भारीभइकारीनिसतिपटअकेलीतुमनाहीप्राननाथसाथप्रेमजसहाईहे
२८ वार्ता नाइकनाइकाकोपरसपरवेन नाइकवोलेतेहमकोमोलालिऊजानअनबोलेसाविनावु
लापेआयतेहमारेपासआई तवनाइकावोलीजान्योमोहकहाहमानेतुमारोमोहजोहेडुष्यसोजान्योहे
किअसीघनमालामेव्याकुलह्वेहे सोमोकोघनमालामेहेघनस्यामकूसवुलाइकेल्याईहे कोन हे
कायहहेहमकोवुलाइकेल्याईहे कोहमेविचारीकिहेअसीघनमालामेमित्रकोवियोगकोडुषदी
जै यहवाततनीकोनही सायहेहमकोल्याईहे अथरपेअंग्रीराषकेकह्यो फेरनाइकवोले तेमा
रगमेडुषदेष्योह्वेहे कोजहाअपनीदेहहूनहीदिषाईदेत तहातेवादकेसेदेषीहोइगी तवनाइका
वोली हेकेसवकूसवाटमोकोदामनोवीज्जरीनेदिषाईहे फेरनाइकेवोले ऊचेअस्थानमेतोकंटक
जेहेकंडेतिनोने औरुनीचेअस्थानमेकीचजोहेचिक्कडतिसने तेरेपेरपीरकाउषोकिएहोहिगे

नवनाइकाबोली सो हम कहिये पीरजके मदनमेरीगइंदसी वाह मनोसमगतिचालसोमोकोअ।
त्यंतसुषदाई है अर्थ यह तहागतिने सुषदियो ऐक कंटकनिते सुषदियो दूजाकी चतसुषदियो
यातेअतिसुषदाइकीही फेरनाइकबोले कारीनिसामेकासिआमनिमेभारीभइ हुतो ऐकतोसा
मगनकोभेइ दूजोमेघनिकोभइ यातेभारीभइमेतंहे पियावीनियटआगमनऐकलीहूतीसंगसषी
हूनहीहुती तहांभइलगपोंद्धहै नवनाइकाबोली हेप्राननाथमेऐकलीनहीहुतीमेरेसाथप्रेमसहा
ईहुतो ईहांप्रेमाअभिसारकाप्रगटहीहे नाइकनाइकाहीहे याते प्रक्कन उत्तरअलंकार अथप्रका
सप्रेमाअभिसारका कवित्त नैननिकीअनुराई बैननिकीचतुराई गाननकीगुराई नडुरनडुगतिचाल
की आपनेचरित्रनिकेचित्रनविचित्रचित्रनीजुसोहेसाथपुत्रकाग्रपालकी चंदकेसमानचारु
चारसोचढ़ाएफिरेकरिकेतिहारेरसगतेननिकीपालकी कीजेपेइपानअरुषेईएपानप्रानप्यारे
आईहेजू आईआलबेलीगुवालकाल्हकी २९ वार्ता सषीनाइकसोकहतहै हे हरिदेषोकाल्ह
कीजोअलवेलीगुवालहेसोआईहे जाकेलिएतुमषानपानत्यागोहुतो केसीहेजाकेनैननिकी
जोहेअनुराईवाआतुरतासो औरुवैनजोहेवचनयाकेअथवायाकेनैननिकेजोवचनहेनैन
निहीसोवातेकरनआईहे यहवैननिकीचतुराई औरुजाकेगातकीजोहेगुराईगोरतासोसर्व
डुरतनहीवाछिपतनहीहे औरुजाकीचालकीमीडुतिसोभानहीडरतहे फेरकैसीहेचित्रनीके

र॰
स॰ त्रि॰
टी॰
६८
68

समआपनेचरित्रोंकेजोहैविचित्रचित्रकाअद्भुतचरित्रतिनकोचित्रनहैकावनावतहैं ऐसीचतु
रहै औरहूजाकेसाथप्रत्रकाकासुत्रीगुपालकोमोहनतहैं फेरकैसीहै तुमारेम्हगनेनैनतिकीपाल
कीकरकैआपनोचंदरूपीजोहैचाउताकोचढायेफिरतहै अर्थयहतुमसोऐसोप्रेमकियाहैवोको
कोचाउतुमारेनैननिहीमेचडरह्योहै अवयेजोहैजलताकोपानकीजे औरुपानकोषाईये हेप्रा
नप्यारेकाल्हकीअलवेलीगुवालआईहैआईहै ईहासषीवहरंगहै जोनाइकाकोनहीजानत।
काल्हकीगुवालकहतहै सोतिसनेअभिसारजानलीनोयातेप्रकास उपमाअलंकार चंदके
समानयामे अथप्रछन्नगरवाअभिसारका कवित्त लाउलीलीलीकलोरीलुरीकऊलाल।
लुकेकहोअगालगाइकै आजतोकेसवकैमेहलेरुवेलागानिदेतनदे षडूआइकै वेगचलोउठ
आईलिवावनदोरअकेलीऐहोअकुलाइकै भूलहूगोकलगावमेगोविंदकीजेगरहूरनगाइचराइ
कै २॰ वार्त्ता सषीनाइककोछलकरमिलायोचाहतहैसोकहतहै हेहरिलाउलीओरुलीली
औरुकलोरी औरुलुरी इत्यादिजेहैगाइतिनकोतुमअपनेअंगलगाइकैआपनेसाथहि
लाइकेईहाकहालुकेहोछिपेहो अर्थयहयेगाइतुमारेहाथमेमिलतहै औरुसोनहीमिलत
सोतुमचलो वेगाइआजतोकिसीप्रकारभीलेरुवाजेहैवछेरूतिनकोलागननहीदेतहै तुम
मेरेसंगहीआइकेदेषो यातेतुमवेगकहीऐमितावीचलो मैतुमारेलैनकोउठकरकैअकेली

ऐसाआई है। दौरकरिकै श्रीकृष्ण कुलाइकैवा व्याकुलह्वैकै हेगोविंद श्रीकृस्न भूलकरिकेमींगो
कलगांउ मैं तुम गाइनकोचराउ केगरबमतिकरो जोनाइकको बुलाइ भेजे सो भी अभिसारकाक
हावै ईहानाइक बुलाइ भेजे है याते अभिसारकसखी अंतरंगकी जो मुख्य सखी है जाके साथ अनेक
सखी है सो लैन आई है जो कहत है मैं अकेली ऐ आई हो याते प्रछन्न पर जाजो कृष्ण अलंकार छः
लकरकै कारज साध्यो। अथ प्रकास गरवा अभिसारका। कवित्त चंदन चढाए चारु अंबर के उरहार सु
मनसिंगार सोहै आनंद के कंदा ज्यु वारो कोर रतिनाथ बीना मैं बजावै गाथ मृगज मराल साथ वानी
जगवंद ज्यु चोकचोक चकई सी सोतनिकी इती चली सोते भई दीन अरविंद तिमर ज्यु तिमरवि
याग भूले लोचन चकोर फूले आई ब्रजचंद चंद्रावली चलचंद ज्यु ३। वार्ता सखी नाइकसो कहत है
हे ब्रजचंद श्रीकृस्न चंद्रावल हैं नाम जाको सो गोपका आई है कैसी है तिसकै चारु कहीए सुंदर जो है
अंबर वस्त्र तिनको चंदन चढाए ऊपै है याते स्वेत वस्त्र है उरमै हार है जाकै सु मन फूलनिके औरु फू
लनिहीके सिंगार सर्व सोहत है आनंदके कंदका मूल नाके सम फेर कैसी है हे नाथ जाके ऊपर
नेकोर कहीए करोड जे है रतिकामकी स्त्री तिनको मैं वारदेऊ फेर यह कैसी है बीना मैं गाथाको
बजावत है ताके सुरमैं मोहत हूं ऐ ऊपै मृगज जो है मृगनिके बालक औ मराल हंस सो जाके संग है
याते नाइका जगवंद किया जगत जिसको नमसकार करत है ऐसी जो है वानी सरस्वती ताके सम है

कंसुरसवतीभीवीनाकोवजावतहै औरुहसगजमरालसाथहै फेरकैसीहै जाकेआऐतेसौतनिकीहू
तीचोकचोककेचकवीनकेसमउठचली औरुसोनजोहेतेदीनभईहै कैसेजैसेचंद्रमाकेचढेतेअ
रविंदकमलनिकीमंदद्युतिहोतहै ऐसे औरुतिमरकेहिनाअंथकारतिनकेसमानजोहैवियो
गसोरहसंभोगनिकेसोभलगाऐ औरनाइकेकेनेनचकोरप्रसन्नभऐ कंसुनाइकाचंद्रमाकेसम
आईहै सोचंद्रमाकेचढेचकवीचोकतहै अंथेराजातहै चकोरफूलतहै औरुजाकेआऐहूतीच
लीयातेजानीऐयाकेसमानऔरुकोईनहीसबकीहूतीनिरामभई यातेगरवजामोजानतहै औरु
नाइकाभीयहानकेचलीऊतीकिमेरेगऐकाहूकीहूतीनहीठहरेगी यातेगरवाअभिसारका हूती
नैकेजानवेतेंप्रकास हूत्याअनुप्रास चकारकीवरनमेत्रीते अथप्रछन्नप्रकासाअभिसारका
कविन उसकनउररावपनफनिचरननिदेषनविवियनिसचरदिसचारके गननननलागतम्
सलथारवरषनफिल्लीगनचोषनिरषोषजलधारके जाननननम्हवनगिरनपटफाटननकंट
कअटकउरउरजउजारकै प्रेतनिकीएछेनारकोनपेनेसीषोयहजोगकेसोसारअभिसा
रअभिसारके २२ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीनाइकाकोप्रेतनिकीनारएछनहै हेअभि
सारकेयहजोगकेसारक्षातनकेसमानजोहैअभिसारचलनोसोतेकोनयासनसीषोहै कै
सोअभिसारहै उदगाजोहैसरपसोतेरेचरनोसोउरफतहै औरुसंतिनकेफनोकोअपनेच

रननिसोचपनहैंकामलनतहै ओरुविविधक्याअनेकप्रकारकेजोहैंनिसचरगनमेंविचरनिवारेप्रेत
आदिकसोतोकोचाम्याविसाकेदेषतहै ओरुमूसलसमधाराजोवरषतहैमेघनिकीसोतेरेननप
रलगनतहै तिनकोभीतूनहींगनत ओरुफिल्लीगनजोहैंवीउतिनकेजोहैंघोषसहू ओरुजल
थरकोमेघतिनकेजोहैंनिरघोषअत्यंतसहूतिनकोभीतूनहींगनततहै ओरुतेरेभूषनगिरतहै
तूनहींजानत ओरुतेरेउरजकोकचनिमेंओउरमेंउजारकोवनकेकंटककेउअटककरकेपटजोहै
वस्त्रसोफारततहै इनकोभीनहींजानत असेप्रेतनादिष्ठछनहै ईहानाइकोकामकेमदमेंवेसुधभ
ईजातहैसरपआदिककोग्यानननही यातेकामाअभिसारकाकेसंगहै यातेप्रछन्न अथप्रकासका
माअभिसारका सवैया गोपबडेबडेवैठेअथाइनकेसवकोरसभाअविगाही षेलतबालकजा
लगलीनमेंबालविलोकविलोकविकाही आवतजातलुगाईचहूदिसहूयटमेपहिचाननको
ई चांदसोआननकाढकहाचलीसफतहेकछूतोहिकिनाही २२ वातोसषीनइकासोकहतहे तू
चंद्रमासोआननमुषषोलकेकहाचलीहैतोकोकछूदिषाईदेतहे किनहीदिषाईदेत वडेवडेजे
गोपहैसोतोअथाईनमेंकावेठकनमेंवेठेहै केसेगोपहै जिनोनेकोरकहीऐकरोइसभाअविगा
हीहै कातरीहै अर्थयहकरीहसभाकेवेठनवारेहैवुडेग्यानवानहै फेरगलीनविषेगोपनिके
जेहैंबालक तिनकेजोहैजालकासंवहसोषेलतहै केसेवालकहै जिनकोविलोककहीऐदेषिके
विलोककोस्वरगकेजोहैंवालकवालककेदेवकुमारसोविकाइजातहे अर्थयहवडेचतरहैओरुसे

८.
70

दरहै सोतेरोचंदमुषजानकेसंगलगैगो केबालकनिकोचंद्रमाप्रियलागतहै श्रीरु लुगाईजेहेरु
ह्वीसोचारोदिसातेंआवतहै श्रीरुजानतहै केसीहैइस्त्री जेतूयटमेफाईकोपहिचानजातहै कियह
फलानीइस्त्रीजातहै श्रीरुतेमुषउघारकेकहाचलीहै ईहांहूनाइकामदनकेमदमेबेसुधहैजाकोस
बीसमझावतहै यातेकामाश्रभिसारका प्रकासहैहीगोयवैठेहैलुगाईदेषतहै याते श्रर्थांतरन्यास
श्रलंकार गोपसामान्यश्रसेषसमाश्रवगाहीयहविसेषा इत्यादि श्रथनाइकाभेदकीगननी मूल
दोहरा केसवदासमुतीनविथकहीसुकीयानारि परकीयाहेभानपुनश्राठश्राठश्रनुहार ३५ टी॰
उत्तममध्यमपुनतीनतीनविथजान प्रगटतीनसैसाठत्रेयकेसवराइवषान ३५ वार्ता तीनमैसाठ
नाइकावरनीहै तामैतीनविथसुकीया सुकहीपैसोसुकियायेकयेककीचारिचारिश्रनुहारव
रनीहै तेसबबारहभई श्रीरुपरकीयाहैभानचौदहभई पुनकेकहेय्वनितेसामान्याजानीता
मनलियायोयंद्रहभई फेरइनसर्वकेयेकयेककेश्राठश्राठभेदहोतहै स्वाधीनपतिकाश्रादि
क तेसर्वयेकसोबीसभई फेरइनकेउत्तमाश्रादिकजोरसोयेकयेककेतीनतीनभेदहोतहै योतीन
सैसाठभेदहेनहै श्रथउत्तमालक्ष्न दोहरा मानकरैश्रपमानतेतजेमानतेमान पियदेषेसु
षपावईताहिउत्तमाजान ३६ वार्ता जोनाइकश्रपमानकोनिरादरकरैनाइकाको तोनाइकामा
नकोश्रादरकरैउनको श्रीरुजोनाइकमानश्रादरके तवश्रादरतेजोमानगरबहोतहैनाइकानि
कोसोगतिसगरबकोतजेरहै सोउत्तमा श्रथउत्तमाकोउदाहरन सवैया होनकहाश्रवकेसमफे

८०

समकैनतवैजबहैसमझाये ऐकहीवंकबिलोकनिमाकअनेकअमोलविवेकविकाये ज्ञानप
नौनज्ञनावकूउजनसावधलैाउहज्ञानहीपाये वातैबनाइबनाइकह्यौकहोलेहमनाइमनाइउन्हुआये १७
वाती कहूनाइककोईआैरुप्यारीहैताबैरूठकेउनमाकेघरेआयेहै सोनाइकानाइकसोकहतहैहे
गिअवकेसमकेकह्यौहोतहै जवतुमलोगनिनेसमझायेऊतेतवतोनसमझे अवकह्यौहोतहै सोवाना
इकाकीयेकहीवंकवकहीयेटेढीबिलोकनिमैवादेषनिमैअनेकलोगनिकेजोसिषायेहूयेथेतुमकोअ
मोलअष्टविवेकविचारसोविकाइगयेवाहरहैगये तातेअवउहकद्दियेउसनाइकाकोअयनोज्ञानप
नौजोहैवैरागयनोग्यानमनज्ञनावो काहेतेउहवाउसनेतुमज्ञानपायेहो साज्ञानलीयेहो जनमा
वधलैोवाज्ञनमयरजंत वामोविनयेकञुरीहूनहीरहिसकैगौ उहयदद्देहरीदीपक औरुअवतेवा
केआगेवातेवनाइवनाइकेकहो औरुवाकोकह्यौजोहैआगपाजोवहसुषतेकहेसोईतुमकह्योताको
टारकेऔरुवातमनकहोअयनीचतुराईसो जोवहरात्रकहेतोतुमद्दूरात्रहीकहो रैनमनकहो
यानेवाकोकह्यौजोहैसोईकहो सोजैसेतुमप्रथमयाइनयरमनाइआयेहो अैसेअवहूंयाइनयरके
मनाइलेहू दलगीरमनराषो ईहांअपराधसहतनाइककोदेषकेनाइकाकोकोयनहीभैयो यातेउ
तमानाइकाभईकाव्यलिंगअलंकार वाकोज्ञानवोऐकवंकविलोकनिमैविकाऐयानोहहढकीयो अ
थमद्दमानाइकालछना मूल दोहरा मानकरेलघुदोषतेंछाडेवड़नप्रनाम केसवदासवषानीऐ

नाहिमद्धमावाम ३५ वार्ता जोनाइकालघुदोषतेमानकरेश्रोरुबहुतप्रनामकावेनतीनाकेकिऐसें
मानकोछाडेसोमद्धमाकहीये उदाहरन कवित्त भलहूसुयेनहीचितोइहकान्हकीयोलचलाल
चकेतो हाहाकेहाररहेसुनकेसवपाइपरेसुपरेईरहेतो हौतोयहेतवहीकीविचारतहोतोगुमान
कंसुयाहिकोऐतो लावीलटैश्ररुपातुरीदेहजुनेकवडीवियश्राषनदेतो ३६ वार्ता नाइककीसषी
नाइकाकीसषीसोकहतहै हेसषीतेरीनाइकाजानतहै ऐश्रोरुकोदेषतहै सोएकाहूकोमनसोन
हीदेषत योहीहठजाइपरेतोयरे यरचाहसोनहीदेषतै सोकहतहै वहजोकोऊश्रोरुनाइकाहे
उसनेइनकेदेषवेकेलिऐलचकानरमद्धकैकितनोईलालचकियो परइसश्रीकृसनजूनेवाकीतर
फभूलकरिकेभीसुधीटहकरिनहीचितयोकानहीदेष्यो श्रर्थयहहटहजाइपरीचाहिसोनहीदे
ष्यो सोयहलघुदोषजानकरकेकेसवजोहेश्रीकृसनसोहाहाकरिकेहाररहे श्रोरुपाइनमेंभी
परेतोभीतेरीनाइकानेमाननहीमान्यो तवनाइकाकीसषीवोली सुपरेईरहेतो सोपाइनकीसु
तरफतेपरेकाहूरहीरहेहै पाइयरननहीदिऐनाइकाने मानत्यागदियो फेरनाइककीसषीवो
ली मैतोतवहीकीचित्तमैंविचारतहोकितेरीनाइकाकोइतनोगुमानकाहेकोहोतो जोविधब्र॰
ह्मायाकोलोवीलटेसालोंवेवालश्रोरुपातरीकापतलीदेह श्रोररतीकबडीश्राषेजोनाहीदेतो
तौयाकोऐतोगरवकंसुहोतो इमनोगरवइनवसतननितेभइयोहे ईहाश्रोरुकोदेषनदेषकेनाइका

केमानभयो सोयहलघुदोषहै औरूदाहाकरिवौवडीमगानहैन सौमानछूटसो यातेम
इमानाइका हैनअलंकार लौवीलहैआदकारन गरवकारज अथअथमालछन मल दोहरा
रूठेवारहीवारजोतरूठवेहीकाज ताहीकोअथमावरनकहेमहाकविराज ४० वार्ता जोनाइकावारवा
ररूठेमानकरे औरूवेहीकाजकाविनाप्रयोजननहीतरूठवाप्रसनहोइसोअथम उदाहरन कवित्त
काटोकयहजोकान्हसोकीजेरीवाटोवेवोलेकुवोलकसाई फारीसोहूगटओटअटेसाईडीठकुरोत्र
थकोजुथसाई केमवअैसीसषीनकोमारोसिषकेकरेहितकीजहसाई वारहीवारकोटसवीवारोव
हाऊसवुद्धवियोगवसाई ४१ वार्ता सषीनाइकासोकहतहै हेगवारजोतैकाहूसोकपटकीनोहै
छलकीनोहैताकोमेकाटोकाकाढडारौ औरवेजोतेरेकसाईसकुवोलहैकाथोटेवचनहैतिनकोवा
टोकापीसडारो औरजिसहूवटकीओटमेतेअटेकहीएलकनहैतिसकोमेफारदेऊ औरजोहष्ट
तेअथकानीचेकोयसाईहैसोफूटडारू औरअैसीजोहेसषीकूवोलनिवारीतिनकोभीवारो का
जराइदेऊ कैसीहैवेसषी जोतोकोकूगोरईसियाइकरिकेतेरेहितसनेहकीहसाईकामसकरीकरा
वनहै सरवतोकोयहकहतहै कितैनाइकसाथभलीप्रीतनिवाही औरतेरोछिनछिनकोजोरूस
नोहैसोभीमेवारदेऊकाहरकरदेऊ औरजोतेअपनीवुद्धवियोगमेवसाईहैताकोवहाइदेऊ ईहां
वारवाररूठनितेरूठवोभीवारवारजान्यो सियाइवेतेविनाप्रयोजनकोजान्यो यातेअथमा हूपात्र

र.प्री. ७२ 72

नुभास बकारकीवरनमैत्रीते मूल दोहरा इहविधनाइकोनाइकाबरनोसहृतविवेक देसकालवय
भावनेकेसवजानअनेक ४२ वार्ता विवेककहीयेविचारकेसहतइसप्रकारनाइकानिकोबरनौ श्रौ
रदेसकेकालसमयकेबयउमरकेभावनेश्रौरुभीअनेककहै देसकाजैसेगूजरीनाइका कालका
वसंतात्रभिसारका वयभावकाअग्गितादिपाद मूल दोहरा तजतरुनीसंबंधकीजानमित्रदि
जराजराषलेरउषभूषतेताकीतियतेभाज ४३ पुन दोहरा अथकवरनअरुअंगयदअंतजजन
कीनारि तजविथवाअरुप्रजनतारस्यारसकविचार ४४ वार्ता संबंधकहीयेकुटंबकीइस्त्रीकोतज श्रौ
रुमित्रकीतज द्विजराजकाब्राह्मनताकीइस्त्रीकोतज श्रौरुजोइषतेभूषतेरिच्छाकरेताकीइस्त्रीकोतज
श्रौरजोआयतेश्रधिकवरनहोइसाबेसहोइब्राह्मनीसोप्रीतनकरे श्रौरुअंगयदकाअंगहीनकोतजो
श्रौरुअंतजजोहैसूद्रतिनकीइस्त्रीकोतजो श्रौरुविथवाकोत्यागीये श्रौरुप्रजताकाजोआयकोप्रज
नेजोगहोइताकोतजीये हेरसकजनोअसीविचारसोरमीये यहरसकनिकोसिच्छा मूल दोहरा
यहसंजोगसिंगारकीकेसवबरनीरीत विप्रलंभसिंगारकीरीतकहोकरप्रीत ४५ वार्ता विप्रलंभ
नामवियोगसिंगारको इतिश्रीमनमहाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचतायांरसकप्रयायांअष्टनाइ
कावरनननामसप्तमोअध्यायः ७ अथविप्रलंभसिंगारवरननं मूल दोहरा बिछुरतप्रीतमप्रीत
माहोतजुरसतिहश्रौर विप्रलंभसिंगारकहिवरननकविसिरमोर १ वार्ता प्रीतमनाइकश्रौरुप्रीतमा ७२

नाइका ऐजहांबिछुरतहैसाइनकेपंचरंईजोप्रसन्नहुऐहु ऐतिनकेसंबंधकोजहांअभावहोइतहांओरुर
सकोवियोगसिंगाररसहोतहै याहीकोविप्रलंभकहतहै अथविप्रलंभकेभेद मूल दोहरा विप्रलंभ
सिंगारकोचारिप्रकारप्रकास. प्रथमपूरबअनुरागपुनकरुनामानप्रवास २ वार्ता सोविप्रलंभचारिभां
तको ऐकपूरवाअनुराग दूजोकरुनाविरह तीजोमानहेतक चौथोप्रवासविरह अथपूरवाअनुराग
लछन दोहरा देषतहीदुतिदंपतिहिउपजपरतअनुराग बिनदेषेदुषदेषीऐसोपूरवाअनुराग २
वार्ता जहांदंपतनेहहैनाइकनाइकातिनकोदुतिकेदेषतेई ईहांदेषवोचारिभांतकोलीजे प्रतछ १
चित्र २ सुपन ३ श्रवन ४ इनमेनेकाहूभांतदेष्यो सरवंकोदेषवोसंगपाहे तिसदेषनमेजोअनुरा
गसनेहउपजपरेओरुविनदेषेफेरदुषहोइसोपूरवाअनुरागकहिऐ तीनदरसनतोदेषनिमेआ
वतहैऐकसुनवेमेआवतहैतामेहीऐकेनेत्रदेषतहै यातेहैअनुरागजाने ऐकदृष्टाअनुराग यामेप्र
तछ चित्र सुपन ऐदरसनआऐ ऐकसुनताअनुराग यामेश्रवनदरसनआयो ऐहैभेदपूरवाअनुराग
केहै अथप्रियाजुकोप्रछन्नपूरवानुराग कवित्त फूलनिदिषाउसूलफूलतहैहरिविनहूलकरिसा
लवालमालसीलगतहै चंदनचढाउजिनतापसीचढततनकुंकमनलाउअंगआगसीलगतहै चव
रचलाउजिनवीजनाहलाउमनकेसवसुगंधवायुवायुसीलगतहै वारवारवरजतवावरीहैवारीआर
नवीरीनसुवावबीरविससीलगतहै ४ वार्ता नाइकासषीसोकहतहै हेसषीमोकोफूलनिकोनादिषा
व कंतुहरिकेविनाऐफूलमोकोसूलसेलगतहै औरुहेवालरसुतोअथवामूरषयहफूलनिकोजोमा

७३ 73

लाहैनाकोभीहूरकर यहमोकोवालसरपसीलागतहै औरुचंदनभीमेरेतनकोमतचढाउ याकेलगाएमेरेत
नमैनयनसीचडतहै औरुकुंकमकेसरकोभीमतलगाउ अगाकोअगनिसीलगतहै औरुइसचवरतेच
लाउजिनकामेरेजिकहीयेजीवकोनाचलाउ चवरकेहलाएमेरोजीवनिकसतहै ईहांजकारदीरघको
लघुहैपढनिमे औरुवीजनाजोहैयेषानाकोभीमतहलाउ कंुइसकीजोहैसुगंधकीवासुपवनतिसतेसो
कोवाइसीलागतहै अर्थयहचिनबैसुथहोतहै मैतोकोवारवारवरजहोतूनहीसमफतयातेतूवावरीहै
बारौआनकाइनसरबवसतुनिकोआनकेजराइदेऊ औरुहेवीरमोकोवीरीभीमतषुवाव यहविसकेसम
लगतहै ईहांसषीसिंगारकीसमैगहल्याईहैयातेप्रवासविरहनहीहै कंुजाकोपियपरदेसहोतहैता
कोकेसरनहीलगावत औरुवीरीनहीषवावत वाकेतोसीनलउपाउकरतहै यातेप्रवासविरहनही
यानेकहूयहलेहरिदेषेहैयानेसरबउषदाईभयेहै सोईकह्योफूलनिदिषावसलफूलतहैहरिवि
न यातेपूरवाअनुराग सषीअंतरंगहैजासोकह्योहरिविन यातेप्रच्छन्न सुषदाइकसुषदाइकभए
याजेव्याघातअलंकार प्रियाजूकोप्रकासपूरवाअनुराग कवित्त केसवकैसेहूईठनिडीठपरेरतिइकक
न्हाई नादिनतैंमनमेरेकोआनभईसुभईकहिकुंहूनजाई हौइगीहासीजुआवैकहूकहिजानहिहूत
अवहूफान्याई कैसेमिलौरीमिलैविनकिउरहौनैननिहेतहियेडरमाई ५ वार्ता नाइकाकोवचनसषी
सौ हेसषीजिसदिनतेईठनिजेहैसषीतिनकेडीठनकहीयेदेषतही कन्हाईजोहैश्रीकृसकैसेरतिई
ठजोहैकामदेवताकेसमसुंदरसोमेरीडीठपरेहैकानजरयरेहै तिसदिननतेमेरेमनकोजोआनकेभ

७३

ईहै सोभईहै वहअवस्थामोनेकिसीप्रकारभीनहीकहीजाती हेसषीजोयहवारताकहूं औरहूअस्थान
मेकहनविषेआवैतोहसीहोइगीयाहीतेमैतोकोहितमित्रजानकेमैप्रछनआईहो तूमोकोबताव
श्रीकृस्नकोकैसेमिलौ मेरेहियेमेडरहेलोकनिको औरमैमिलैविनाकैसेरहो नैननिमेहैनकहि
ऐसनेहहै ईहाजाकेवरनाइकाप्रछनगईहैसोसषीवहरगाहे अंतरंगसोंऐसैनकहतीवासोंजोम
नकीवारताविदनहीहोनहै यातेप्रकास पूरवाअनुरागप्रगटहीहै ठकारकीबरनमैत्रीतोहृत्ता
आअनुप्रास अथश्रीकृस्नकोप्रछन्नपूरवाअनुराग सवैया एकसमैवृषभानसुतासजनीगनमेज
ननीसंगवैसी जातउन्हेचितयोजिहरीतसुप्रीतहियेकहिजाइनतैसी तादिनतैजगकीजुवतीनिकी
केसवलागनवातअनैसी चाहिफिस्योचितचक्रचहूनकहूडुतिदेषीएवामुषकेसी ६ वार्ता वा
इकासषीसोकहतहै हेसषीवृषभानसुताजोहेश्रीराधाजूसोएकसमैमैसजनीसषीनकेगनकासंम
हमेजननीजोहैमातातांकेसंगबैठीहुती फेरतिससमाजविषैतेजातीहुईनेजिसरीतसोहमारीओरकटा
छनिसोप्रीतकरकेचितियोवादेष्योसोप्रीतवाकेहियेकीमेरेपासकहीनहीजातहे तिसीदिनतेहे
सषीजगतकीजेहैजुवतीइस्त्रीतिनकीनिकीकहीऐनीकीसुंदरजोहैवारतासोमोकोअनैसीसाही
नीलागतहै औरहमेरोचित्रचक्रतभैयोचारयोदिसानमैचाहफिस्यो वादेषफिस्यो परवानाइका
केमुषसीउनसीउनमोकोकहूनहीदिषाईदेत पूरवाअनुरागप्रगटहीहै औरजासषीसोअपनी

र. स. त्रि. टी. ७४ 74

प्रीतराधाजूकोनामलैकेकहीसोजानीएअनरंगहै यातेप्रछन्न प्रेमाअलंकार श्रीकृस्नकोप्रकासप्र
रवाअनुराग सवैया भांतभलीवृषभानललीजवतेंअषियांअषीयानसोंजोरी मोहचढाइकछुडर
पाइबुलाइलईहसकैबसमोरी केसवकाहूकोतादिनतेंरुचकैनबिलोकजकेतोनिहोरी लीलतहैस
बहीकेसिंगारअगारनिज्योंबिनचंदचकोरी ७ वार्ता ईहानाइकअपनीआंषनिकीवातसषीप्रतिकह
तहै हेसषीवृषभानललीजोहै श्रीराधाजूतिसनेभलीभातसोंवाप्रेमसहतजबतेंहमारीअषीयाअप
नीअषीयानसोंजोरीहै केसेजोरीहैमोहैचढाइकैवाभ्रकुटीविलाससोंऔरुकछुकडराइकेअपनी
औरुबुलाइलई कैसे हैसकैबुलाइलई औरुकैवसमोदीवाअपनेवसकरिकेमोरीवाभुराइलई अ
वऐअषियाकेसवकविकहतहैतिसदिनतेंकाहूकीतरफरुचिकरिकेंवाचाहकरिकेनहीविलोकत
नहीदेषतहै अरथयहदेषततोहै परचाहनासोंनहीदेषत मेंऐअपनीआंषेकेतोनिहोरीवामना
ई परऐआंषेराधेजूविनासर्वकेसिंगारनिकोलीलतहैवानिगलतहै केसेजेसेविनचंदकेचकोरीअं
गारनिकोनिगलतहै प्रियोजनयहजेसेचकोरीकोअंगारनिकोअसरनहीहोततेसेईनेऔरुनिकेसिं
गारनिकोस्वादनहीहोत परवाअनुरागप्रगटहीहै औरुरुचकैनविलोकतयामेसर्वजानतहैकिजो
एआंषेचाहिसोंनाहीदेषतहैतोकहूदृष्टअटकीहै यातेप्रकासप्रेमाअलंकार मूल दोहरा अविलोक
निआलापतेमिलवेकोअकुलाइ होतदसादसविनमिलैकेसवकोउकहिजाहि ८ वार्ता जहांदंपतअ
विलोनकहीऐदेषनतेंऔरुआलापनकहिऐवचनोकेसुननितेमिलवेकोआकुलाहिवाव्याकुलहो

१ नहांमिलेविनादोऊनकेतनमैदसदसाजादसग्रवस्थाहोतहै ग्रविलोकनमैद्दछाग्रनुराग ग्रा
लापनमैंप्रुताग्रनुराग ग्रथदसानाम मूल दोहरा ग्रभिलाषस्तुचिंतागुनकथनसम्रतउदबेगप्रला
प उनमादव्याधजड़तामपेहोतमरनपुनग्राय ४ वार्ता येदसदसाकेनामहै ग्रभिलाषलछन दो०
नैनवैनमनमिलरहैचाहैमिल्योसरीर कहिकेसवग्रभिलाषयहवरनतहैकविधीर १० वार्ता जहा
नैनमिलवहैचाहै ग्रौरुवैनमिलवहेचाहै ग्रौरुमनमिलवहैचाहै ग्रौरुमिलवग्रोसरीरचाहै
इउसर्वभांनकीजहांग्रभिलाषाहैसोग्रभिलाषकहीये ग्रथराधाजूकोप्रछन्नग्रभिलाष कवित्त
स्तपवुढ्यटीदुतिदेहमिटीदिनहीदिनचाहीयेवाढतसी कछुकेसवग्रापनेपेटकीपीरदुरावत
पेमुषकाढतसी विसरयोसुषभूषसषीनिसनींदपरीचितचाहनाग्राइतसी गयोकछूगांठते
छूटछवीलीसुकाहेतेडोलतजड़ादतसी ११ वार्ता सषीनाइकासोकहतहै हेछवीलीसुंदरतेरीसु
धग्रौरुवुढ्यटगईहै ग्रौरुतेरीदेहकीदुतिसोभासोभीदूरभईहै जोदुतिदिनदिनमैवाढतसीचा
हीयेहैसोघटगई ग्रौरुतंतोग्रपनेपेटकीपीरकोकछूदुरावतहैवाछिपावतहै परतेरेमुष
कीजोहैसीकासोभासोउसपीरकोप्रगटावतहै सुषपीरोहोतजातहै ग्रौरतोकोभूषकोसुषग्रौ
रुनिसरात्रमैनिंद्राकोसुषसोभूलगयोहै ग्रौरुतेरेचित्तकोचाहनाकहीयेग्रभिलषाकीग्राइतसी
परीहै ग्राइतमैचित्तवऊनलग्योरहतहै तैसैईतेरोमनउतकंगामैलग्योहै जोवसनुजाकीहाटै

७५ मेबिकुल आवतहैताकोआउनकहतहै सोमैप्रछन्नहोतेरीगोवनेकछुछद्मपस्योहै तेडाढनसीक
75 हिये जरीडुई केसमानइनउनकाहेकोफिरतहै इतउतफिरनमेअभिलाष औरुसषीवहरंगहैविः
रहदसाकोनहीजाननलोकछुअरुकाहेकोकहतनै यातेप्रछन्न उपमाअलंकार डाढनसीयामे
अथश्रीराधकाजूकोप्रकासअभिलाष सवैया जोकहौदेषलगैदिषसाधदिषावतहीदिनद्वैउप
येहो याहीमेकेसवदेषियेबोलनदेषहौंदेषसषीअवकैहो हौउनकोउरदेषहौंदेहसुआपनोदेह
नदेषनिदेहो देषवेकोवहिरावतमेहिसहौयकहाकछुदेषहीलैहो १२ वार्ता नाइकासषीसे
कहतहै हेसषीजोतूंकहैतोकोनाइककेदेषेफेरदिषसाधकादेषवेकीइछालगजैहै अर्थयह
फेरदेषवोईसुहाइगो तिसतेतोकोदिषावतेईमैदिनप्रतिदुषकोपावौगी जोतूंऐसकहैतौयाही
मैमेरोबोलचचनदेषलीजे अवकैहोकृसकोदेषकैफेरनहीदेषोगी औरुजिसप्रकारमेउनकोस
रीरउरकेसाछिपकेदेषोगी तिसप्रकारमेआपनोसरीरउनकोनहीदेषनिदेउगी हेसषीतूंजोमो
कोदेषवेको वहिरावनहैकायरचावतहै सोहोवकहाकछुयाकोअर्थअवनेरेवहिराऐसोकाक
छुहोतहैनहीहोतहै मैश्रीकृसकोदेषहीलेउगी इहांगुनस्तुनकेअनुरागउपज्यो यातेस्तुता
अनुरागमेअभलाष औरुसषीबहरंगहै जोवहिरावतहैयातेप्रकास काकोरूअलंकार व
हिराऐतेकाकछुहोतहै नहीहोत श्रीकृसकोप्रछन्नअभिलाष सवैया पाइपरौवसजाउस ७४

नोहर आपनिसीनकरो अवताहू देषे अघातनहीदिनकेफिरबारिकयो अनदेषेहूजाहू मोसोक
हीसुकहीअवकेसबकेसहूकान्हपतिआइनकाहू डाढङ्गेजुकहूकउतीरुचतानोहैनेकसिराइयो
बाहू १३ वार्ता कहूनाइकनेकछ्रोड्रनोसषीकोनूनाइकापासजाऊतबसषीकहतहे हेमनोहर
सुंदरश्रीकृस्नमैतुमारेप्यारनमैपरतहो औरुबलिहारीजातहो तुमतिसनाइकाकोआपनेसीअ
सिहनाकरो तुमसबंदिनकेदेषनेतेभीअघातनहीहो कात्रिपतनहीहोत सोएकबारतोअ
नदेषमाविनादेषतुमचिरजाहूकाहूटजाऊ आगेजाहूयहपददेहरीदीपकहै हेकेसव
श्रीकृस्नजाऊयहवारतातुमनेमोसोकहीसोकहीकिनाइकाथैतेफेरजाऊओरुयासमनकहू
नी ओरुनिसोकिसीप्रकारभीनहीपत्याउना ओरुसबैकहिदेहे मैजानतहोजोतुमकोइतनी
रुचहेकाइतनीचाहनाहै तोतुमकहीकदाउऊगेकादग्पहोऊगे कोतुतानोहैनेकसीतलक
रिकेषाऊ अर्थयहअवहीतोदेषगपेहोरतीकधीरजधरो अभिलाषप्रगटहीहे सषीअं
तरंगहेजोकहतहैमोसोकहीयातेप्रछन्न प्रेमाअलंकार अथश्रीकृस्नकोप्रकासअभि
लाष सवैया हेकोऊमाईहितूइनकोयहजाइकहेकिहवाएचहेहे त्याइहीकेसबमोकुलकीकुलटा
कुलनारिननाडलहेहे देषरीदेषलगाइटकीइनसोनोसोघालजुचाहिरहेहै कोहैरीकोजेसेजाननना
हनकान्हहीकाकेसंदेसकहेहै १४ वार्ता कहूनाइकटकलगाएदेषतहै तहासषीसषीसोकहतहे हे

र.
र.प्रि.
टी.
१५76

सषीकोईइनकोहितूमित्रभीहै जोइनकोजाइकेयहवारताकहेकितुमकिसवाइमैवहेहै वाइचौरासीप्रका
रकीहै तिनमैतुमकोकोनसीबाइलगीहै यहजाइकेकोईकहै श्रौरुयावातमैन्याइहीहैजोकुलनारिजो
हैपतिव्रताइस्त्रीतिनोनेगोकलकीकुलटाऐनामलहेहैवापाऐहै सर्वकोईगोकलकीकुलटाकहतहै
कंजोएसर्वकोयाप्रकारदेषतहै हेसषीदेषतदेषतऐइसतरफकोकेसीटकलगाइरहेहै ऐकश्रोरदृष्ट
करिदेषरहेहै जैसेसुनारिसानेकोगुगालीमैयाइकैवाहिरहतहैसादेषरहतहै केवानीकोसोनोहै त
वनाइकवोले कोहेरीकोकोनकीवारताकहतहो तवसषीवोली जैसेजाननतनाहिन श्रैसेश्रजानहूगाऐ
काल्हतुमनेकिमकेसंदेसेकहेहै सषीनेकहूनाइककेसंदेसेसुनेहैयातेकह्योकाल्हकाकेसंदेसेकहेहै
श्रभिलाषप्रगटहीहै सषीवहिरंगहेजासोनाइकमुकस्यो पैयहमीनकोजाननतहैयातेप्रकास उत्तरश्र
लंकार सषीउत्तरने श्रथचिंतालच्छन मूल दोहरा केसेकेमिलीऐमिलेहरिकेसेवसहोइ योचि
ताचितचेतकेवरनतहैसभकोइ १५ वार्ता हरिकोकैसेकरिकेमिलीऐ श्रोरहरिवसहोइकेकैसेमिले
यहचिंताहै ताकोचितमैचेतकैवाविचारकैसर्वकविवरनतहै श्रथश्रीराधकाजूकीप्रछन्नचिंता दो
हरा श्रापनहीतेश्रापनोहोतननदेषेजाहि श्रापनिहीतेश्रापनोकुमनकरिहेताहि १९ वार्ता नाइका
मनसोकहतहै हेमनजिसकेदेषतेश्रापनहीतेसाश्रापहीतेश्रापनोनहीहोत तिसश्रीकृसकोतेश्रा
पहीतेश्रापनोकेकरिकैकरिहै चिंताप्रगटहीहै मनसोवचनयातेप्रछन्न श्रापनसवदवडूवारश्रायो
प्रयोजननमारोयातेलाटाश्रनुप्रास श्रीराधकाकीप्रकासचिंता कविन प्रेममभेरमूपरूपमसचिवसंको

चसोचविरहविनोदपीलपेलीयतपचके तरलतरंगअविलोकनिअनंतगतरथमनोरथहै पिअदा
गुनचके इहूऔरपरीजोरघोरघनीकेसोराइहोउजीनकौनकीकोहारेहियलचके देषततुमेगुपाल
तिहकालवहबालउरसतरंजकीसीबाजीराषीरचके २ वार्ता सषीनाइकसोंकहतहै हेगोपालश्री
कृसतुमकोतिहकालवातिससमैमेजोवहिवालइस्त्रीदेषतइतीतिमनेअवअपनेउरमैसतरंजकीवा
जीरचराषीहै कंतुमारेमिलनकीचिंताहै परलाजअरुप्रेममेदोऊऔरमनषचतहै जैसैसतरंजमे
दोऊजोरपरेहै तवजानीनहीजातकौनजीतेकोनहारे तैसेवानाइकामेप्रेमअरुभइऐतेदोऊभूप
हैकाहथवीकेपतिहै पातसाहहै औरुदोऊनकेजोहैरूपऐकप्रेमकोसरूपऐरुभइकोसरूपऐदो
उसविवकावजीरहै जाकोफरजीकहतहै औरुसंकोचलाज सोचविचार औरुविरह औरुविनो
दआनंदऐचारपीलहैकाहाथीहै जिनकोफीलेकहतहै सोपचकरिकेवालीनहैकेपेलीयतहै
चलाईअतहै औरुइनचास्याईकीजोहैविलोकनिदेषनकोनसी संकोचाअविलोकनसोचाअविलोक
नि विरहाअविलोकनि विनोदाअविलोकन ऐईचारितुरंगहै घोरेहै कैसेहैतरलकाचंचलहै
औरुअनंतकहीऐअपारपहैगतजिनकी औरुाइनचास्योअविलोकनिमेनाइकाकेमनकीवातजा
परतहै किमनमेयहमनोरथहै ऐईजोहैचारिमनोरथकोनसे संकोचाअविलोकनिमेप्रतिष्टाम
नोरथ १ सोचाअविलोकनिमेकुलपतिष्टामनोरथ २ विरहविलोकनेमेदरसनमनोरथ ३ विनो
दाअविलोकनिमेमिलनिमनोरथ ४ ऐईचारिमनोरथरथहै जिनकोरुषकहतहै अवइनसवकेजोहै

र· स·प्रे· टी·

77

गुनसोईसोरहप्यारोहै ऐभीसोरहहै हैयानसाह २ हैवजीर २ चारिफीले ४ चारघोरे ४ चारि
रुष ४ इनकेगुनप्यारोगचकेक्याभिरकैरहेहै सोदिषावतदे प्रेममेगुनप्रेमवतीनामयेइऐ १ भ
इमेगुनसीलवतीनामयेईऐ २ प्रेमकेसरूपमेगुनप्रेमकीप्रतीतसबनिकोआवे ३ भइकेसरु
पमेगुनक्यासीलकीप्रतीतसबनिकोआवे ४ संकोचमेगुनक्यातियोकोसंकोचभूषनहै ५ सो
चमेगुनक्यातियमेथमरीतजानीजाइ ६ विरहमेगुनक्यासुनमीतदरसनदेइ ७ विनोदमेगुनक्या
सुनमीनबेगमिले ८ विरहाविलोकनिमेगुनक्यासषीमित्रकोदिषावे ९ विनोदाविलोकनिमे
गुनक्यासषीमित्रकोमिलावे १० संकोचाविलोकनिमेगुनक्यागुरजनसराहै ११ सोचाविलोक
निमेगुनक्यासीलवतीसराहै १२ दरसमनोरथमेगुननैननिकीपीराहरहोइ १३ मिलनेकेमनो
रथमेगुनक्याकामकीपीराहरहोइ १४ अपनीप्रतिष्टामेगुनक्यालोकसेउसतत १५ कुलप्रति
ष्टामेगुनक्यापरपरलोकसुथरै हेश्रीकृसदोऊतरफकोजोहैजोइप्राक्रमपेकप्रेमकीतरफकोप्राक्र
म हजोभइकीतरफकोप्राक्रमइनमेचनीघोरपरगईहै क्यासेरपस्योहै ईहादोऊजोरषेलनवारेजानीऐ
सोदेषीऐकोनकीजीतहोइ औरकोनमनमेलचकेक्यानिरवलह्वैकेहारजाइ ऐसेसतरंजकीवाजीरचरा
षीहै ईहांप्रेमअरुभइइनदोऊनकीमुष्यताहै प्रेमप्रथमहैयातैप्रेमकीमुष्यता औरुसंकोचसोचऐभ
इकेफीलेहैसोक्रमसोनहीथरे प्रेमकेजेफीलेहैविरहविनोदइनतेप्रथमराषेयातैभइकीमुष्यताजा
नी औरुसषीवहिरंगहै जोकहतहैकोनकीजीतहोइजाननतनही औरुनाइकाकोतहीजाननवहवा
लकहतहै परतिसनेचिंतादासाजानी यातेप्रकास रूपकअलंकार इतिसतरंजजंत्र ॥

भूप	प्रेम	भै
मंत्री	प्रेमकोसरूप	भैकोसरूप
पील	विरह विनोद	संकोच सोच
घोरे	विरहविलोकन विनोदाविलोकन	संकोचाविलोकन सोचाविलोकनि
रथ	विरहाविलोकनिमैदरसमनोरथ विनोदाविलोकनिमैमिलनमनोरथ	संकोचाविलोकनमैप्रतिष्ठामनोरथ॥ सोचाविलोकनिमैकुलप्रतिष्ठामनोरथ॥
प्रेममैगुनप्रेमवतीनामपाईए		भैमैगुनसीलवतीनामपाईए
प्रेमसरूपमैगुनप्रेमकीप्रतीतसरवकोआवै		भैकेसरूपमैगुनसीलकीप्रतीतआवै
विरहमैगुनसुनमीतदरसनदेइ		संकोचमैगुनतियकोसंकोचभूषनहै
विनोदमैगुनकासुनमीतवेगमिले		सोचमैगुनतियमैथमैरीतनीजानी
विरहाविलोकनमैगुनसषीमित्रकोदिषावै		संकोचाविलोकनिमैगुनजनसराहै
विनोदाविलोकनिमैगुनसषीमित्रकोमिलावै		सोचाविलोकनिमैगुनसीलवतीसराहै॥
दरसमनोरथमैगुननैननिकीपीराहरहोइ		निजप्रतिष्ठामैगुनलोकमैउसतत
मिलनिकेमनोरथमैगुनकामकीपीराजाइ		कुलप्रतिष्ठामैगुनपरलोकमैउसतत

र. सप्रि. टी
१८
78

अथ श्रीकृस्नकौ प्रछन्न चिंता केसौदास सकल सुवासकौ निवास तन कहि क बिभ्रकुटी बिलास त्रास
छोल है कैसो है सुदिन बडभागी अनुरागी जिह मेरे है गवाके सेंग लागलागडोल है ऐसे है है ईस
पुन आपने कटाछ म्रगमद घनसार सम मेरे उर ओल है दीपके समीप निसदीपत बिलोके व
रिचित्रकी सी पूतरी सुक्यो कहूं हस बोल है १८ वार्ता नाइक मनसौ कहत है तेमन नंदकऊ
संपूरन जे है सुवास सु गये तिनको निवास कायरहै तन जाको ऐसी जो है श्रीराधाजू सो
भ्रकुटीनिके बिलाससौ कामभ्रकुटीनिको चढाइके त्रास जो है भइता को कविकौल है याके वितिओ
गहै अर्थ यह मेरी नरफ विलासनिसौ कविदेष है औ कैसो दिन भागवान कैसो होइगो जिस दिन
मेरे अनुरागी नेत्र वाके सेंग लागलागके डोल है का फिरहै देईस्वर फेर ऐसी भी कबी है है वह नाइका
आपने कटाछनिको मेरे उरमे ओल है का पाइहै कैसे कटाक्ष है म्रगमद जो है कसतूरी ताके समान
स्याम है औ घनसार जो है कपूर ताके सम स्वेत है ऐसे है औ रूप वह नाइका चित्रकी पूतरी सम मनिस
राजको दीपके के समीप कानिकट किसी प्रकार मे दीपतकी कासोभा को बिलोके कादेषे औ कहु कि
सी प्रकार हस के बोल है मोसो ई हानाइक बिचारसौ करत है याते चिंता मनसौ वचन याते प्रछन्न
परयाइ अलंकार ऐक तनमे अनेक सुगंधनिको वास याते अथ श्रीकृस्नकौ प्रकास चिंता सवैया
राधकाकी जननी को जनीको ऊ कहूं स्वयंवर बात जनावे देवकुमार मे गोपकुमारनि मानदे देखुष

मानबुलावै केसबके मेहूवालभलीवहमालसुमेरेहिऐपहिरऐपहिरावै तोहिसषीसमदैसंगवाकेस
कंयुयहवानसवैवनिआवै ।१४ वार्ता नाइकसषीसोकहतहै हेसषीराधकाकीजननीमाताजोहैकीरतति
सिकोकिसीप्रकारकोईजनीजोहैदासीसोस्वयंवरकीवारताजनावैबाकहे कितेस्रीराधाजूकोस्वयंव
ररचौ तिसकेकहेउपरंतफेरदेवकुमारनिसेजोहैगायनिकेवालकतिनकोमानआदरदैदैकैवृषभानजो
हैराधाजूकोपितासोबुलावै तबहमहूतहांजाइ तिसनेउपरंतवहजोभलीवालहैकाहेतेरइमनीहैसो
मेरेहीऐविषैकिसीप्रकारमालाकोपहिराइदेइ औरहेसषीतोकोसमदैकाविदाकरेस्रीराधाजूकेसंग
ही सोऐसेप्रहरनवारताकेसवनआवै ईहांहूनाइकविचारसीकरतहैयातेचिंता सषीबदिरंगहै जा
कोकहतहैतोहिसषीकेठौरविदाकरे कंजोअनंगकीहोतीताहितोटेनेई यातेप्रकास प्रेमाअलेका
र अथगुनकथनिलछन मूल दोहरा जिहगुनगनगनिदेहउनिवरननबचनविसेष ताकऊजान
ऊगुनकथनमनमथनिसुले २ वार्ता जहानाइकनाइकापदसपरगुनोकेजोहैगन क्यासेहहतिनको
विसेषबचनोकरिकैगननहै औरुदेहकीजोहैहुतिसोभाताकोबरननहै तहागुनकथनदसाहोतहै
सोवहगुनकथनकैसीहै मनमथजोहैकामदेवताकेमथनकरनवारीहै कंगुननिकेवरनेसरूप
ध्यानमैआवतहैयातेकामकोवलहीनपरजातहै अथप्रियाजूकोप्रछन्नगुनकथन कवित्त कीर
नसहततिनकेसवकुवरकान्हकेवलअकीरतनिरषतिसोममानीऐ छुवतचेपकयातकुमलातजात
ननअतिहरषातगातहरिजूकोजानीऐ कोमलसुबाहुजुतप्यारेकेयरमयानकंटककलतनालनलि

र·
स·सि·
टी
२४
79

नवषानीऐ लोचनविसालचारुमदनगुपालजूकेमदनसरनदरसनरसहानीऐ २१ वार्ता नाइकाम
नसोकहतहै हेमनजोकान्हकोचंद्रमासमकहोतौकुवरकान्हतोसरवदाकीरतकेसहतहै औरुसोमजो
हैचंद्रमासोकेवलअकीरतकहीऐअपजससतिसकोभूपहैराजाहै अर्थयहकलंकीहै औरुजोउनको
तनचंपकसमकोमलकहीऐतौचंपकतोकुहेतेतनकहीऐआत्यंतकुमलाइजातहै औरुहरिजूकोस
रीरकुहेतेअत्यंतहरषतकहीऐप्रसन्नहोतहै हेमनइसबारताकोहेजान यामैवरनभावकरिउपमा
नही वरनतोचंपककोअरुगातकोजुदोहैवहपीतवहस्याम ईहोसीलभावकरिउपमाहैकोमलतास
गंधताइत्यादिसुभावसमहै अथवा चंपककोपातजिनकेतनकोकुहेकुमलातहै औरुमेरोजोचंप
कसोतनहैसोप्रसन्नहोतहै असोअद्भुतगातहरिजूकोहै औरुहेमनप्यारेकेसुवाहुकहीऐसुंदर
भुजानिकेसहतजोहैपानहाथसोपरमकोमलहै औरुनालनलिनकहीऐनालीकेसहतजोहैनलि
नकमलसोकंटकजोहैकंडेतिनसोकलितहै कासंजुक्तहै सोकैसेसमकहीऐ औरुजोउनकेनैननि
कोकामकेबाननिसमकहीऐ तौमदनगोपालश्रीकृस्नकेलोचनतौविसालवडेहै औरुचारुसुंदर
है औरुमदनजोहैकामताकेसरनिमैकहीऐबाननमैदरसनकेरसकीहानहै अर्थयहउनमैदरस
नरसनाही कंुऐकतोहसनाहीहूजेवेदीसतनाही याते कीरतसहस इत्यादिगुनवरननमि गाततेदे
दूडतिवरनी यातेगुनकथनदसा मनसोवचनयातेप्रछन्न उपमानतिकेदेषवरतेयातेदूषनोउप
माअलंकार अथप्रियाकोप्रकासगुनकथनसवैया षंजनहेमनरंजनकेसवरंजनतिनैनकियोमरतिजी

की मीठीसुधाकीसुधाधरकोइनिदंतनिकोकिधौदारमहीकी चंदमलोमुषचंदकिधोमाविसूरत
कामकिकाह्लकीनीको कोमलपंकजकैपद पंकजप्रानपियारेकिमूरतयोकी २२ वार्ता ईहाना
इकाकोउपमानोतेउपमेयअधिकसेलागेहै याते सषीसौपूछतहै हेसषीमेतोकोपूछतहोमनरंज
नवामनकेप्रसन्नकरनवारेषंजनममोलेहै अथवापियारेकेनैनमनरंजनहै यहपूछतहो तेअप
नेजीकहीएजीवमेमतिबुद्धकीकहीएकरीअर्थयहतेबुद्धविचारीहै किइनमेमनरंजनकोनहै औ
रमीठीसुधाहै किप्यारेकेअधरकीसुधामीठीहै सुधाअंम्रतकोनाम औरदुतिदंतनिकोक्यानिकी
कहीएनीकीस्वछसोभादंतनिकीहै किदारमअनारकीहै औरहेसषीअछचंद्रमाहै किप्यारेकोमु
षचंद्रमाश्रेष्टहै औरनीकीसुरतकामकीहै किश्रीकृष्णकीहै औरकोमलपंकजकमलहै किप्यारे
केचरनकमलकोमलहै औरप्यारेकीमूरतप्यारीहै यहभेदमेरेपासकहुतं ईहागुनवरननतेगुन
कथनदसा सषीवहिरंगहै जासौनाइकापूछतहै अपनीसषीतोजाननहीहै यातेप्रकास संदेहाअ
लंकार अथश्रीकृष्णकोप्रछन्नगुनकथन सवैया जोकहोकेसवसोमसरोजसुधासुअंगनिदेहद
हैहै दारमकेफलश्रीफलविद्रुमहाटककोटककष्टसहेहै कोककपोतकरीअहिकेहरकोकिल
कीरकुचीलकहेहै अंगअनूपमवात्रियकेउनकीउपमाकहुंवेईरहेहै २३ वार्ता नाइकअपनेआपसो
कहतहै हेकेसवश्रीकृष्णजोमैसोमचंद्रमाकोमुषकेसमकहोतोचंद्रमाकेअंगसुधाअंम्रतकेहेतसुर

जोहैदेवतानितेनेनदहेहैसाजरायेहै इषीकिएहै कुंएककलानित्रलेतहै औरुसरोजकमलनिको
नैननिकीउपमाजोकहीतोकमलनिकेसरीरसुधामकरंदकेहेतभृंगजेहैभ्रमरतिनोनेदुषीकीएहै
सुधामेसलेषऔरुदारमअनारकोजोफलहै औरुश्रीफलनारीयर विद्रुमसंगे हाटकस्वरनदुनो
नेतोकरोठाईकसटसहारेहै सीतउसनजलऐतोमामासकहहै विसेषदारमफटजातहै श्रीफलकी
त्वचाउनारीयनहै मृगवेधीयनहै स्वरनजारीयनहै इत्यादि औरुकोकचकवे कपोतकबूतर करी
हाथी अहिसरप केहरसेर औरुकोकिला कीरतोते ऐसवंकुचीलअपवीत्रकहेहै इनकोपवित्रअपवि
त्रकोगयाननही ऐप्यारीकेअंगनिसमकैसेकहो हेसषीउसइस्त्रीकेजोहेअंगकोनसे मुष नेत्र दंत कुच
औठ सरीर कंठ गत बेनी कटि बैन नासिका क्रमसोलीजेऐजोहैअंगसोसरवअनूपमहै याउ
पमातेरहतहै उनअंगनिकीउपमाकोवेईअंगहै औरुनही औरुनाइककोप्रेमकुचनिमेविसेषहै याते
दैउपमानकहे श्रीफल औरुकोक गुनवरनेयातेगुनकथनदसा मनसोवचनयातेप्रछन्न टकारते
रसदोषकहत्याअनुप्रास ककारतेरसपोषकहत्याअनुप्रास अथश्रीकृस्नकोप्रकासगुनकथन सवै
या लोचनबीचतुमीरुचरायेकीकसवकेमहजातनकाठी मानोइमेरेगहीअनुरागनिकुंकमयेक
सोअंकतगाठीमेरीऐलागरहीनतुनाजतुरउइतिनीलनिचोलकीवाठी मेरेईमानोहिऐकहूसंयु
नरउअरविंदटिऐसुषगाठी २४ वानी कहूनाइकनेनाइकाकीछविदेषीहै सोसषीसोकहतहै

हे सषी मेरे लोचनो मै श्रीराधकाजूकी ऊ वितु भी है सो किसी प्रकार भी नही निकसत है फेर नाइका
कुंकमजो है केसर ताके पंक कही ऐकीच रसो गाढी वड्डत श्रेकतकी समिलित ऊती सो कैसी ऊती मानो
मेरे अनुराग सनेह लेग ही ऊती · सनेह को लाल रंग है और ताके अंगमे नील जो है नि चोल वा वस्त्र तिन
की दुति का सो भाइस प्रकार वढी है मानो मेरी पै जो है तनुता स्यामता सोई वाके अंग मे लाग रही है और
हु अरविंद जो है कमलता को सुष आगे दिए इस प्रकार गाढी ऊती मानो मेरे ई हिरदे को हाथ मै लिए सं
युत ऊती ई हा देह दुति के गुन वरने याते गुनकथन दसा कहू कमल को सुष आगे दिऐ गाढी देषी है
याते प्रकास सषी वह रंग है जा सो नाइका जिनाई या प्रकार गाढी ऊती उतप्रेक्षा अलंकार मानो य
द तें अथ समन लछन दोहरा और कछू न सुहाइ जह भूलजाइ सव काम मन मिलवे की का
मना ताको समन वषान २५ वार्ता जहा और कछू यदारथनी को नाही लागे और सव कारज
हा भूल जाइ एक मिलनि ही की मन मै कामना इच्छा रहे सा ध्यान सो लग्यो रहे सो समन अ
थ सिमन दसा प्रियाजू की प्रछन्न कवित्त वोल्यो सुहाइ न षेल्यो हसो अरु देष्यो सुहाइ न दुष्य
वढ्यो सो नीकी ऐ वात सुने समझे न मनो मनकाहू के मोह मढ्यो सो केस वहूं इत उउर मैम
ति मूढ भइ उग्र न मूठ पढ्यो सो को करे सा जवजावे को वीन ह वा को कछू चित चाक चढ्यो सो २६
वार्ता सषी सषी वचन हे सषी वा नाइका को किसी को वोल्यो नही सुहात जो वाके पास को ऊ वोलत है ता

र॰
स॰ प्रि॰
टी॰
८१
81

कोवरजतहै किंबावोल्योम्रावुलायोज्योकोऊवाकोवुलावैसोसुहातनही औरुषेलनोनहीसुहात
औरुदेख्योभीनहींसुहात वाकेतनमेंनोकछूदुष्षसोवढ्योहै औरुनीकीवपाअरुवारताकोसुनन
नहीऔरुसमकतनहीहै मानोमनवाकोकाहूकेमोहमेंमढ्योसोदिषाईदेतहै औरुवहकछूऐ
सीचक्रतभईहै जैसेमूढगुनयढ्योहोइ ताकोमूढभयोसोचे किहमकहायढेहै औरुऐसेनाइकामन
मेंसोचतहै हेसषीकौननेसाजकोकरे सिंगारआदिककोकरे औरुकौनबीनाकोवजावै वाको।
चित्ततौकछूवाककहिऐचक्रयेचढ्योसोदिषाईदेतहै अर्थयहभ्रमनरूसषीवहरंगहै चित्तको।
वाकचढ्योसोवनायो सम्रनदसानहीजानी यातेप्रछन्न उतप्रेक्षाअलंकारमानोपदते अथप्रिया
जूकीप्रकाससंभ्रम सवैया मेरेमिलापेहीयेमिलहैमनमोहतसोमनमोहनदीजै मोनहीमोन
वनैनकछूअवकेंमनआनंदकेरसभीजै ऐसेईकेसवकेंज्योंअहोपानषाहुतौपानीनपीजै जा।
नहैकोऊकहाकरहौनवसोचनऐतोसंकोचनौकीजै २७ वार्ता सषीकोवचननाइकासो हेप्यारीम
नमोहनजोहैश्रीकृस्नतिनसोमेरेमिलापेहीपरमिलहै इउकदाचितनमिलहै सोअपनोमन
मोकोनादीजैयहक्यारीतहै अर्थयहदेऊ औरुमोनहीमोनरहैकछूनहीवनत यातेअपनेमनकी
बातकहू अवतेरोमनविनाकहेआनंदकेरसमेंकैसेभीजैगो औरुऐसेईतेरोजीवनकैसेहोइगो जो
तूपाननिकोनहीषातहै तौपानीभीनहीपीजै अर्थयहपानीतौपीव ईसीतरांकैसजिऐगी इनवा

तननैंजवकोईप्रीतकोजानजाइगो तवतैंसाकरिहै तवनाइकावोली सोचनऐतो काइतनोसोच
नहीमोको कछुऐतोसरवज्ञानतहीहै तवसषीवोलीजोतोकोयहसोचनहीहैतोसैंको चवाल जातो
कीजे कछुपाननहीषाजपानीनहीपीवत यामैतोलोकहसै है ऐसीअनंनपथकेध्यानमेलीनरहत
है यामैसमझनप्रगटहीहै सरवकेजानवेतैप्रकास प्रेमाअलंकार अथश्रीकृसजकीप्रछन्नसम्भ
न सवैया छोरवोनोछनसारछसोछनसाम सुचेदनछुवैननतैलियो केसवकुंजकोकूलचितैप्रति
कूलभयोसुभफूलनिफूल्यो भूलेसेडोलनवोलनहूउनजानकितैमनसंभ्रमभूल्यो जानतहो
हरिकाहूकेआजमनोहरिहारहिंडोरनिफूल्यो २८ वार्ता सषीनाइकसोकहतहै हेचनसामश्री
कूसाछनोक्यावझजोहैचनसारकपूरतामैचंदनघसोसोजमारेतनकोछुहकरिकेतलियोसो
तेलहीह्वैगयो स्यामह्वैगयोजगकरकै श्रीकुंजकोजोहैकूलकिनारोतिसनेतुमारोचितैकरही
ऐचितहीप्रतिकूलभयोहै काचाहतनही कैसोकुंजहैजोसुभसोआछेफूलनिसोफूल्योहै श्री
कृतुमभूलेसेडोलनहो श्रीकृभूलेईसेवोलतहो श्रीकृउनकोकहांजानहोतुमारोमनसंभ्रममैभू
लियोहै ठिकानेमननहीहै हेहरियातेमैजाननहोआजतुमारोमनकाहूकेमनोहरकहीऐसं
दरहाररूपीहिंडोरामेफूल्योहै सषीवहिरंगहै तिसनेसम्भजदसानिरधारनहीजानी जोक
हतहैजाननहोहरियामेंसेसैजान्योपरतहैयातेप्रछन्न कुंजसहाननहीभूलेसेडोलनइत्यादि

र॰ नैंस्निग्धनदसहसाअनुप्रास अथश्रीकृस्नजूकीप्रकासमिमृत सवैया वासनबासभयेबिसकेसबडास
सा॰त्रि॰ नउासनकीगतलीने चंदनचांदनीसुचिनचाहेनचंद्रकचंद्रचितारसभीने पाननषाननपानककेकछ
टी॰ हासविलासबिदाकरिदीने ऐसीहैगोकुलकेकुलकीजिनगोकलनाथकेऐहंगकीने २९ वार्ता स
८२ षीसषीवचन हेसषीगोकलकेकुलकीइस्त्रीऐसीहे जिनोनेगोकलनाथश्रीकृस्नकेऐवंनफिऐहै
82 वासनकाबसत्रयहिरनके सोवासस्तुगंधेविसकेसमभेऐहे औरुडासनजेहैविछौनासोडासजेहैंमच्छ
रतिनकीगतकहीएनरोकोमिलिऐडुऐहे अर्थयहकाव्यहैडुषदेतहे चंदनऔरुचांदनीअथवानानीऔ
वस्त्र तिनकीतरफजिनकोचित्तनहीचाहत औरुचंद्रककपूर औरुचंद्रमाऐचितारसभीनेवाचिता
केसमभासतहै औरवेयाननिकोनहीषानतहै औरुकछुपानभीनहीकरत पीवतहूनाही औरुहास
विलासभीविदाकरदीऐहै अर्थयहमागदिऐहै पेपंगकीऐहे कछुसुहाननहीयामेसमृतदसा
औरुसषीयहतोजाननतहैकिकाहूसोप्रीतहै औनाइकाकोनहीजाननषातेसषीवहूरंगहै तिसतेद
साज्ञानीयातेप्रकासाहसाअनुप्रास चकारकीवरनमैत्रीते अथउद्वेगदसालछन दोहरा डुषदा
इकहैजातजहसुषदाइकअभ्यास सोउद्वेगदसाडुसहजानऊकेसवदास ३॰ वार्ता जहांअनियास
कहीऐसहजहीमैसुषकेदैनवारीवसतडुषकेदैनवारीहैजाइतहाउद्वेगदसाजानीऐ अथश्री
राधकाजूकोप्रछन्नउद्वेग सवैया चंदनहीविषकंदहैकेसवराहूयहीगुनलीलनलीनो कुंभज
पावनजानअपावेनधोषेपियायचजाननदीनो याकोसुधाधरसैसबिषहरनामधस्योविषहैसुथही

तो । स्यरकोमाईकहाकहीयेजिनपापीलेआपबरोबरकीनो ३। वार्ता नाइकासषीसोंकहततहै हे
सषीयहचंद्रमानहीहै विषकोकंदसामूलहै याहीतेनपावनहै औरुराहूजोहैग्रहतिसनेयहीगु
नकेक्या यहीविचारकरकेलीलनहीलीयो क्यानिगलनहीगयो औरुपावनकहीएपवित्रजोहैकु
भजसिषक्याआगस्तमुनितिसनेइसआपावनिकोक्याअपवित्रकोधोयपियो क्याकिसोउत्तमफलकेअ
थवाजलजीवकेभुलावेसभुलावेसमुद्रकेजलकेसंगहीपीयलीयो येविषकंदजानकेपचजाननदी
दीयो मुषतेउगलदीयो सावस्यानेतोयाकोनामसुधाधरराष्यो अंब्रतकेधारनवारोकह्यो जोविष
कोकंदहुतो औरुसेसकोनामविषधरराष्यो जोअंब्रतकेधारनवारोहुतो सोवस्याभीबुद्धहीनहै
सेसकोसुधाधरनामचाहीयतहुतो चंद्रमाकोविषधरकह्योचाहीयतिहुतो याकोप्रियोजनविरहनीको
यवनडुषदाईहै ताकोसेसनागजीहजारमुषोकरिकेभछनकरतहै यातेवाकोसुषदगास्यो औरुहे
माईसूरजकोक्याकहीए जिसनेअैसेपापीकोआपनेबरोबरलियो सूरजअमावस्याकोचंद्रकोआ
पमेमिलाइलेतहै यातेकहीअैपापीकोआपनेवरोवरकर्युकीयो सेहूकोपापीकोसंगनहीचाहीय
त प्रियोजनचंद्रमाकेतेजकोसूरजहरतहै यातेसहूगनीयो औरुसस्मृतमेतोध्यानसोलगपोरहत
है औरुयामेसुषदाइकवस्तुतिनतेविकलताहोतहै सोकह्योरईहै चंदनहीविषकंदहै यातेउद्वेगद
सा औरुमाईसंबोधनतियाइहीकोहोतहै यातेंप्रछन्न व्याघातअलंकार मुषदडुषदभऐयाते श्रीराधका

र० स० टि० टी

२३

83

सउद्वेग सवैया केसव कान्ह विलोक भजी वह आज विलोके विना सु मरैजू बासर बीस विसे विसमी
डीऐ रान जु न्हाई की ज्ञोत जरैजू पालक तें भुव भूमते पालक आलकरो रकलाप करैजू भूषन देऊ क
छु हे व्रजभूषन दूषन देह को हेर है रैजू ३२ वार्ता सषी नाइका सो कहत है हे केसव श्रीकृस्न जो वह गो
पकान्त मको विलोक कै का देष के काहू भजी कुंजी क्या ळयी क्रमीसो वद आज तुमारे देष विना मरत है
औरु बासक हीए दिन मे तो वीस विसे बिसजह्र करि के मीडीऐहे का मलीऐहे किकी ज्ञोरात है तामे
जिसके तन की ज्ञोति जरत है तातें पालक जो है यलेंग तिसते भूममें यरत है औरु भूमते यलंग पर पर
त है चैन न हीयरत आली जे है सषी सो करोर कलाप करत है धीरज के थरावनवारी ऊपर की बाते ति
न को नाम कलाप अथवा बिलाप करत है हे व्रजभूषन श्रीकृस्न याते तुमक छु अपनो भूषन देऊ का
तिस्मनी देऊ सो वह तुमारी तिसानी को हेरके का देषके अपने सरीर के दूषनो को हेर का हूस्करे चादनी
आदिक दुषदाई भऐ याते उद्वेग दसा सषी बहिरंग है जो भूषन माग न है अंतरंग कहतीं तुमही चलो
याते प्रकास ।व्याघात अलंकार अथ श्रीकृस्न को प्रछन्न उद्वेग सवैया मेघनि ज्यों हसहे सन हेरत
हे सनि ज्यों घन रूपन पीवै केज निज्यों चित चंदन चाहत चंद ज्यों कंजन के हूनहीं वै तालते बाग नि वा
गते तालन तिताल तमालकी जानन सोवै केसी है केव सक्वे ज्ञव तो सुन श्री सीदसा पियकी पलजीवै ३३
वार्ता सषी नाइका को सुनाइ कै बात प्रसंग सो कहत है नाइका वड़ नति मे बैठी है तहा कहत है पिय

कौ ऐसी दसा अवसता मनके वेनवतीकाउ स्त्रीकै सो है जो जीवत है अर्थ यह तनजोइ मिलडनकी यह अ
वस्ता है मैं अरु हंसएपरसपरस त्रु है सो उनको दोऊ बुरे लगत है कंजु उदीपन है सो हंसनिको माइ
सकरिके मैं चनकी न्याई नहीं देषत और हहंसनिकी न्याई मैं चनिके रूपको नहीं थीवत अर्थ यह आदरके
सहत नहीं देषत है ऐसे ई कमल अरु चंद्रमा परसपर सत्रु है सो उनको दोऊ बुरे लगत है कंज बाक
मलनिनकी न्याई चित मे चंद्रमाको नहीं चाहत है और चंद्रमाकी न्याई कमलनिको किसी प्रकार नहीं छ
वत सपरस करत और ताल ते तो बाग आवत है और बाग ते ताल आवत है और तालन मालकात
मालहु छनिको जो है तालका तलाव वाकी तो सींव हू मैं नहीं जात कंजु वह अंपतउदीपन है बागसो
जिनायो कि अवऊ हो है ऐसी अवसता नाइककी है और सषी ऐनें गहै जिसने छियाउ करिकह्यो या
ने प्रच्छन्न व्याख्यान अलंकार बन आदि सुषदाई दुषदाई भए अथ श्रीकृसको प्रकासउद्वेग सवे
या सोच सषी भरी लेत विलोचनको यनदेषन फूलेन मालहु मूले सडोलत बोलतन नाहु न बाग गए
कियौ ते रहि तालहु देष्यो जो चाहत देषनि आवत ऐसे सै होन दिषाऊं री लालहि आज कहा दिषसौ
थलगी जव देष्यो सुहाइ कछू न गुपालहि ३४ वार्ता कहूं नाइकाने प्रथम कहीयो कृतो तमोको श्रीकृ
को दिषाव तव सषी कहत है ऐसे समैं विषै मैं नहीं दिषावत कं उनकी तो यह अवस्था है किसी सो
च करिके तो नेत्रनिको भर लेत है और फूलेइ एजो तमालहू छ है तिनको देषके कांपत है और वे कि

र· स· प्रि· टी·
८४
84

सीभ्रमनेभूलेसेडोलनहै औरुबोलतेनहीहै सोअबअथवातोवागगएहै अथवानेरेतालगएहै तोनं
देष्याचाहतहे तोदेषकुंनहीआवत तेआपहीदेषआव औसेसमेविषेमेतोलालकोनहीदिषावत
कुंतेरेदेषतेकाजानेकाहोइ तोकोआजहीदिषसाथकादेषवेकीइछ्याकालगीहै जवकछूपद
र्थभीकुमसकोनदेषिउसुहातनही औरुनैनमरतनेडेषछ्यांगहोतहे यातेउद्वेगदसाप्रगटहीहे स
षीवहरंगहैजोरुषावचनकहतहैदेषकोनहीआवतयातेप्रकास व्याघातअलंकार अथप्रला
पदसालच्छन मूल दोहरा भ्रमतरहेमनभोरजिउहेतनमनपर्जीय वचनकहेप्रियपच्छसोता
सोकहतप्रलाप ३५ वार्ता जहाभ्रमरकीन्याईमनभ्रमतरहे कामनदिकानेनहोइ औरुतनमनमे
परतापकादुष्यहोइ औरुप्रियपच्छसोवचनकहे काजैसोजाकोअभिआसहोइसोईवकवेमे
आवैअर्थयहाव्यर्थबचनकहैसोप्रलाप अथप्रियाजूकोप्रछन्नप्रलाप सवैया षेलनहासीनषो
रअठाउनहेतनबेरहिएकोपरोसो लैनोनदैनोहलाउभलाउननातोनगोतोकहाकहोतोसो आन
दियासुषमैदुषकेसवकैसेहरु सोरीकहाकहिकोसो नेननिनीरमरेकहेग्वालनिदेष्यातेकाह्नक
हाकह्योमोसो ३६ वार्ता नारककीकहिनावनसषीसषीसोकहतहे हेसषीतेदेष्योइसग्वारनी
नेमोसोकाकह्योइनकेवचनोकीमोकोसमझनहीपरी मोकोइसनेयाविषहछ्योकितिसश्रीकृस्
सोमेरोकछुषेलनहीहे औरुहासीनहीहै औरषोरवषीलभीनहीहै औरुनसोमेरोकछुअगाउकाबि

गारनहीहै हेनसनेहनहीहै औबैरभीनहीहै औरुहिएकोपरोसोवापरोसनहीहै अर्थयहमेरो
हियाभीउनकेपासनहीरहतहै औरुउनसोकछलेनोदेनोभीनहीहै हलाउभलाउवावचनकोक
हिवोसुनवोभीनहीहै औरुउनसोमेरोनातोवासोकसंबंधभीनहीहै गातभीएकनहीहै तोसो
मेवाकहोहेसषी कहनमेनहीआवत उनोनैमोकोसुषआइकेदीयोहै सोमैकेसहसो औउन
सोवाकहो कोसोवुरोकहो नैननविषैनीरभरेडूएगवारनकहतहै सषीअैसोजोकाहूहै सोतेक
हूदेष्योहै अैसमोकोषछ्यो ईहांहथावचनहैकांजासोषेलहासीनहीतासोषछवेसोकहाप्रयोजनहै
आगेकह्योउनसोकेसहसोजिनोनेसुषमेदुषदीयो फेरऊपरतोकह्योकहाकहोकोसो नीचेकह्यो
देष्योतैकाहू ऐहृथावचनहैयातेप्रलापदसाजानी सोसषीनेनहीजानीजोकहतहैवाकह्योमोसो
मोकोसमफनपरीयातेप्रछन्न नैननकेनीरतेतनमनदुषजान्यो विरोधाभासअलंकार वैननमे
विरुद्धप्रलापदसामैअविरुद्ध ऐहोतनहीहै अथश्रीराधकाकोप्रकासप्रलाप सवैया आलिनमांफ
मिलीहुतीषेलनजानेकोकाहूयोआएकहाते डीठहिडीठपर्योनकछूसठिठीठगह्योहठिपीठ
कीज्योते गईगडिलाजनहीहीयहोंतोउठीजरकेसवकोपनीपाते इतीरिसमेनसहीकवहूंसुरही
वचहोंअषीयांनकेनाते ३२ वार्ता ईहानाइकाकेवचनसषीप्रतिसषीअनमैंअपनीप्रीतछिपावत
हे अरुमनमैतोउनकोरससंचरणहै सोकहतहे हेसषीमैंसषीनकेविषैमिलीहुईषेलतहुती सो

र.
स.त्रि.
टी

८५
85

यहवार्त्ताकोनजानेकिकृस्नवासमेकहातेआइगये सोडीठहिकहीएमेरीदृष्टकोडीठपरयोनकछु
क्याकछुनजरनहीपर्यो अर्थयहमैनहीदेष्यो सोजिससमदीठनेमोकोपीवकोतरफतेगह्यो ख्या
पकियो सोवासमैतोलाजनहीमेगडमरई क्यालज्जतभईऔहृदैविषेजरउठी यहिकहिकेप्रीतछि
पाई औफेरमोकोयातेकहीएचरनोतेलेकैकापनीउठी क्रोधते सोरतनीरिसतोमैकवीनहीसही अ
र्थकिमरजानीरिसमैपेअषीयानकेनातेकरकेबचरही ईहाऊपरतोप्रीतकोछिपावतआईजरउठीका
पनीभईइत्यादिपदनमेपरउहीसमैआवेतिसविषेप्रलायदसाह्वेआई नामेनिकसगईमुषतेअषी
यानकेनातेबची अषीयानकोनातोसोईकहतहैजाकीआषेलगीहो योप्रलायदसाभई सषीवहिंहे
गहै जासोछिपावतहूती सोवाहीसोकहिदीयोयातेप्रकासमयो विरोधाभासअलंकार अथश्रीक
लकोप्रछन्नप्रलाप जथासवैया नीलनिचोलडराइकपोलविलोकतहीकीएथोलकमोही जान
परीहसबोलनमीतरभाजगई अविलोकनमोही छूकवेकीजकलागीहैकाहूहकेसबकेरुचिरूप
ललोही गोरसकीसौंबवाकीसौंतोहकिवारलगीकहिमेरीसोकोही ३८ वार्त्ता नाइककीकहनाव
नसषीप्रतिकहतिहै हेसषीनाइकसषीसोंअंमेसछ्चतहै हेसषीतूनाइकाकोवताइ वहकोनहूती जो
नीलेनिचोलकहीएबस्त्रमेअपनेकपोलनकोडराइकरकेसाछिपाइकरके औतोकोऔलककही
एऔटकीएहूएविलोकतहूतीदेषतहूती सोवहहसकेबोलतीहूईजानपरीमाजंतानलई औहमो
कोदेषकेभीतरकोभाजगई औसेवाकेछूकवेकीजकलागीहैकसमो वाकेरूपकीजोरुचिकहीए

क्रांतिहै ताकी लिलैाही लालसा करके कहत है सषी सों ग्रै सेतो कों गोर सकी सौंगंधहै औरु पिताकी
सौंगंधहै कहूं तै तेरे किवार को लगी कौं नहूती ईहां ज्ञान परी अरु कोहीऐ दोऊ सबद विरुद्ध है याते
प्रलाय सषी अंतरंग है ईहां जो जानत है कि जक लगी है रूपरुचकी लालसा करके औ जिसकी ओट
नाइका नाइकने हसत लषी है सो भीऐ अंतरंगा हीहै यो प्रछन्न अलंकार विरोधाभास अथ श्रीकृ
स्नको प्रकास प्रलाप कवित्त मोहन मरीचका सो हास सचन सार कै सो बास मुषरूप की सीरे षा अवि
दात है केसो दास बेनी तो त्रिबेनी सी बनाइगुही जामे मेरे मनोरथ सुनि से अन्हात है नेह उरझे सेनै
नदेषवे को विरुझे से बिझूकी सी भौं है उझके से उरझात है देवी सी बनाई विधि कौन की है जाई यर
हितेरे घर आई आजकहो कै सी बात है ३९ वार्ता नाइक कों बैन सषी प्रति हे सषी जो तेरे ग्रह यह
हनाइका आई है आज सो कै सी है जाको हास जो है सो मरीचका मृगत्रिसा सो मोहन है का मोह लेत है
औ रुजाके मुष विषे बास सुगंध चनसार कपूर सम है फेर कै सी है रूपकी रेषा सो अवदात निरमल है
औ रजाकी बेनी जो है चावर सो त्रिबेनी कहीऐ गंगा जमना सरस्वती तिन के सम बनाइ के गुही गूंदी है
अर्थो कि त्रिया गती रथ है बार स्याम जमना कुसम गंगा लाल गुण सरस्वती ता विषे मेरे जो है मु
नरिषन से मनोरथ सो अन्हात है का सनान करत है औ रुजाके नेत्र ने ह विषे उरझे से है सो मेरे देषवे
को बिरुझे से कहीऐ अठे से है अथवा चक्रत से है औ भौ है जाकी दिझुकी सी कहीऐ चक्रत सी है अथवा

र॰
स॰प्रि॰
टी॰

२६

86

प्रफुलतसौहै औरुजाकेउरजातनजोहैकुचसोउफकेसेक्याउठेसेहै सोवहदेवीकहीऐदेवांगनासीविपत्र
ह्मानैबनाईहै सोकिसकीपुत्रीहै यहजोआजतेरेघरआईहै सोलंकइकेसीबारताहै ईहांअमिल
बातेकहीहैनेहउरुफेसेनैनयामे नाइकानेह्वतीजानी जाकेनैनप्रेमसेउरफे औउफकेसेउरुजात
यामैमृगयाबयसंधि साउरफेहृगयहवातमुगयामैनहीसंभवतयातेप्रलाप औरुविरुकीसीभौ
हैऐयदहूंअलगनहै औरुतेरेघरआईजासौकहतहै साजानीऐसषीवहिरंगहै यातेप्रकास उप
माअलंकार मोहनमरीचकासोहासप्रगाउपमा अथउनमादलच्छन मूल दोहरा तरकउ
वेपुनउठिचलैचितैरहेमुषदेष साउनमादजुगावईरोवैहसैविसेष ४० वानी तरकउठैक्याचौक
उठे औरुमुषदेषकेचितैरहै क्यादेषतहीरहे औरुजोगावैरोवैविसेषवड़तहसेसोउनमाद अथ
राधकाकोप्रछन्नउनमाद सवैया केसवचौकतसीचितवैछतीयाधरकेतरकेतकव्याही हूफीऐऔ
रकहेमुषऔरुरुऔरकीऔरुभईयलमाही डीठलगीकियौबाइलगीमनभूलपरयोकिकंरोक
छुकाहूी घूंघटकीपटकीअटकीहरिआजकछूसुधराधकानाहीं ४१ वारता सषीकोबैननाइक
प्रति हेरुसआजराधकाकोकछूसुधनही चकतसीभईचितवतदेषतहै छातीथरकतहै और
अपनीछायाकोदेषकेतरकेहै क्याचौकउठेहै तिसकोहूफीअतितोऔरहै औमुषतेकहतऔ
रहै सोवहयलकमेऔरकीऔरभईहै वाकोकैतोकाहूकीडीठनजरलगीहै औवाकोमनभूल

परयोहै कैवाकोकाहूनेकछुकरदीयोहै हेहरिराधकाकोआजहूंघटकीओघटवीओपटवस्त्रकीकछु
स्वथनहीहै ईहांबारलगीयामेकललछनहै यातेउनमादप्रगटहीहै सषीवहरंगहेजानतनहीक
छूकाहूकस्योकहतहै यातेप्रछन्न सषीकेमनमेसंसैहै यातेसमआग्रलंकार अथराधकाकोप्रकास
उनमाद कवित्त केसवसबुद्धिसिद्धहरितुमबिनबिथाअगाधराधकावाढी छूटीलटलुटकतकटन
लोचितवतनीठनीठकरठाढी नरकततकतोरततितनलफतअतिअपारउपचारनडाढी सकसका
तलेसासअचेतसुचेतङ्कप्रेमप्रेतिगहीगढी ४२ वार्ता सषीकहितहैनाइकसोतीनसंबोधनदैके कदा
चितुमकहोवाहकछुव्याधरोगद्धहै तहांसषीनेकह्योसोतोतुमसबुद्धहो जेसोरोगहैतेसोजानतहो
जोकदाचिकहोहमपराएभवनमेकैसपहुचे तोतुमसिद्धहौसिद्धजहांचाहेतहांजाउ जोकदाचिकहो
हमवाकीपीरकैसहरै तोहरितुमारोनामहीहै सबकेसंकटिहरतहो यातेतीनसंबोधनकहेहै
सुबुद्धिहेसिद्धहेहरितुमारेबिनाराधकाकोअगाधअनंतबिथाजोहैपीरासोवधीहै कैसीहै जाकी
लटजोहैबेनीसोछुटीङ्ईकटनटकहीयेकमरकेसमीपपरजंतलटकतहै औनीठनीठकहीयेमा
सामसाकरकेठाढीहईचितवतहैदेषतहै औतककहीयेदेषकेतरकतहै चौकउठतहै औतिनो
कोतोरतहै औतरफतसालुटतिहै औरुअपारकहीयेवहुतजेउपचारहैइलाजतिनोनैअगनडाढी
कहीयेदगधकरीहै अर्थकिअनेकउपचारकीयेपेपीरनहीघटी औरुस्वासनकोलेकेसकसकातहे

र॰
स॰ प्रि॰
टी
८१
87

उभेस्वासआवतहै औअचेतहै चेतनतानहीरही सोवहप्रेमरूपीप्रेतनैगटीगहीहै तमवाकोचेतऊ साचे
तनकरऊ वहप्रेमरूपीप्रेतनैगाढीगहीहैवाहूनकरकेयकरीहै तनऔमनदोऊव्याकुलकीएहै प्रेत
केलगेऐसीहीअवस्थाह्वैजातहै पीराबढजातहै केसघुलजातहै चक्रतदेषतहै इत्यादि औतवक
उठतहै इत्यादियदनमैउनमादप्रगटहीहै अतिअपारउपचारकीयेकहतहै यातेजानीयेसषीबहरंग
है तानेउनमाद्दसाजानलीनी जोकहतहैप्रेमप्रेतनैगहीहै यातेप्रकासभयो परकुवाअलंकार सु
बुध्यादिविसेषनसहतिप्रयोजनके अथश्रीकृस्नकोप्रछन्नउनमाद सवैया गूढअगूढनप्रकासतवा
तनलोकअलोककीबातमरीसी रोवतहै कबहूंहसगावतनाचतलाजकीछाडकरीसी काहूकोसोचस
कोचनकेसवदेषनआवतदेहमरीसी बामकिबाइककामकीबामकिहैहरिकीमतिकाहूहरीसी ८२
वार्ता सषीसषीवचन हेसषीआजकृस्नगूढअगूढकहीपेछिपीअरुषुलीवातनकोप्रकासतहै औ
रलोकजगतविषैअलोकनिंदाकीबातजिनोतोमरीसीकहीएहरमरैसोहै आजगकीनिंदाकोनहीग
नत अथवालोकजसकीअलोकअपजसकीदोऊबातनजिनकोमरीसीकहीएवरोवतसोहै कबहूंरो
वतहैकवहूंहसतहैकबहूंगावतहै औकबहूंलाजकीछदीसीछोडकेनाचतहै औरजिनकोकाहूको
सोचविचारनहीहै औसंकोचलाजनहीहै औकृजिनकीमरीसीवाअचेतसीदेहदेषनमैआवतहै हे
सषीआजहमिकीमतक्यातोकिसीबामइस्त्रीकीवाकिसीबाइकीवाकामकीबामरतकीइनकोहरीसीदे

बीयतिहै अर्थ किइनमैतेकाहूनैहरिकोमनहरिलईहै उनमादप्रतच्छहीहै पैसषीनैनहींजानी
जोकहतहै किग्राभयोयातेप्रछन्नउनमाद मेदेहाअलंकारप्रगटहीहै अथश्रीछन्नकोप्रकासउनमा
द कवित सजलचकृतचितवतचितचहूंदिसचाहचाहरहेमुहचपलचलनथाइ सोचनसेमनमनका
पतनयतननकेसोदासरोवनहसतउठेगाइगाइ चलहदिषाऊताहदेषनहीभयोमोहभइसोकहनआ
ईसोतोअलिअकुलाइ जैसेकछुआकवाकवकतहो आजहरिनेसेजिननामसुषकाहूकोनिकसजाइ
३५ वार्ता सषीकोवचननाइकाप्रति हेराधकेआजहरिसजलसाजलसहननेत्रनसोचकृतचितभए
चारोदिसमेचितवतहै औरमुषकोदेषदेषरहतेहे औरचपलतासोथाइकहीएदोडकेचलतहे
औरफेरकछुमनहीमनमेसोचनसेहे औरननजिनकोकापतहेग्रोतपतहे औकबहूंरोवतहे
कबहूंहसतहेकबहूंगाइगाइउठतहे हेराधकेतूमेरेसंगचलमेतोकोउनकीविवस्थादिषावो मोको
देषतहीभइउपज्योहे यातेहेअलीतोसोमैअकुलाइकेयहबिारताकहनआईहों किजेसेआजहरि
याकबाकअसंबंधकेवचनोकोवकतहेनेसेउनोकेमुषतेकिसीइस्त्रीकोनामननिकसजाइ याकेइ
सोकहनआईहों सजलचकृतइत्यादिपदनमेउनमादप्रगटहे जोसषीकहतहे किकाहूकोनामम
ननिकसजाइ चलदिषाऊसोजानीएवाहिरंगहे तानैदसाजानी योंप्रकास जानअलंकार रहांसज
लचकनएभावकहेउनमाददसाकीजानवरनी अथव्याधलच्छन मूल दोहरा अंगबरनविवरन

र·
स·प्रि·
टी·
८८
88

जहांअनिऊचेउस्वास नैननीरपरनायबङ्ब्याथसुकेसवदास ४६ वार्ता जहांअंगकोबरनजोहैरंगसो
बिवरनकहीयेबदलजाइ औजहांअसंनऊचेस्वाससहोइ नेत्रसजलहोइ औरबङ्तपरनायङुष्पहोइ
तहांब्याथदसाहोतहै अथप्रयाकोब्याध सवैया बैनतज्योउनबीनतेबोलीनवैनबिलोकतबुद्धभगी
है वैनसुनेसमझेनतहैबातहु प्रेतलग्योकियोप्रीतजगीहै केसववेउततोहुरटैरटनोहिइतेउनहीं
कोलगीहै वेभषेपानन्नयासोननसुनैकाहूठगीहै ४७ वार्ता सषीकोबैननाइकाप्रति हैराधके
उनश्रीकृस्ननैतोबैनबांसरीकोतज्योहै औरतुवीनातेबेनकोनहीबोलत अर्थकिवैबीनाकोबेनत
ज्योवजावतनहींहै अथवाउनोनेवेनकोनेबीनाकोतज्यो औबेनबचनोकोदोऊतुमनहीबोलत सोतु
मारेविलोकनहीमेरीवुद्धभागगईहै कियहकाउदसाभईहै फेरवेश्रीकृस्नस्रवनतनहीहैबातकोऔ
तुसमझतनहीहै सोतुमकोदोऊनकोप्रेतलग्योहैकिप्रीतजगीहै उततोकेसवश्रीकृस्नतोकोरटत
है औरइधरतोकोउनहीकीरटलगीहै फेरवेश्रीकृस्नतोयाननकोनहीषात तूपानीकोनहीपीवत
सोकहूतेकाहूठगेहैकैतेकाहूनेठगीहै सषीनेकह्योविलोकतबुद्धभगीहै इहांदेषनमैंविवरनता
कही किअंगकोबरनविवरनहूगयोहै यातेब्याधदसा इहाराधाकृस्नदोऊअनकीव्याधबरनीहै जो
वेनबीनाकेतजवेकोजाननतहैऔरकहतहैतेकाहूठगेहैकितूकाहूठगीहै यातेअंतरंगहै यौंप्रछन्न
तस्याअलंकार कियोसहृते अथप्रियाकीकृस्नकोप्रकासब्याध कवित्त ह्वाउनकेतनतायतेतायो
येह्याइनकेउपचारजुडई ये ह्वाउनकेउडजेयेउसासनत्यौइनकेअंसुनअन्हैइये केसवदेहृषभानुल

लीनेदलालनएपैनिदाननयेईए ऐकहीवेरडहूनकहाभयोमाईयहेचलदेषडरेई ४८ वा
र्ता सषीसषीबचन हेसषीऊहांतोतुमश्रीराधकाकेननकेतापनेतापीऐकहीएतपीयति
है ओरईहांइसश्रीकृस्नकेउपचारननतेजडहेंई ऐकहीऐसीतलहूजीयतहै अथवाउपचारजो
डीयतहै फेरऊहांतोश्रीराधकाकेउसासननतेउडजाईयतिहै औरईहांश्रीकृस्नकेअंसुवानसो
न्हाईयतिहै हेसषीवहतोव्रषभानललीराधाकेपासओऐनंदलालश्रीकृस्नइनकेपासनिदा
नकाननहीयाईअति इनकेरोगनको हेसषीदेषतेउनदोऊअनको ऐकहीवारयहकोढंगभयोहै
अर्थयहकैसोहालभयोहै यानेचलईहांतेइनकोदेषकेडरीयतिहै इमरोगकोनिदानओरनहीको
ऊएईहैपरसपर यानेकह्योचल ईहांसषीवहरंगहे जानैकहेचलदेषकेडरीयतिहै ओव्याध
दसाजाननलीनीयातेप्रकास प्रेमअलंकार **अथजडतालछन मूल दोहरा** मूलजाइसुथवुधि
जहांसुषदुषहोइसमान तासोजडताकहतहैकेसवराइसुजांन ४९ वार्ता जहांसुधवुधिदो
ऊभूलजाइ औरसुषदुषदोऊसमानबरोबरहोइ तासोसुजानचतुरजडताकहतहै अथप्रिया
कीप्रछन्नजडता सवैया घरेउपचारघरीसीअरीसीअरेतेघरोईघरोतनकीजे ऐसेमैओरुकी
ऐनेकछूउपजेतोसकेलकहाहमलीजे देषतहीयहकामकलीकुमलानीऐजानकहाअवकी
जे कौनपैजाउकहाकरोकेसवकैसेजीऐयहिकुंहमजीजे ५० वार्ता सषसषीबचन हेसषीय

र॰
स॰प्रि॰
टी॰
२४
४१

हनाइकाघरेकहीएतीछनउपचारननतेताषरीअत्यंतसीयरीसीतलहोतहै औसीअरेकहीएसीतलउ
पचारननतेंघरोकहीएगरमजोनतनहैसोघरोईकहीएअथकहीछीजततहै सोअैसेसमैविषैकुछ
औरहूउपचारकहीएतेजोऔरुकछुबाधउपजनपरे तोहमकियासकेललेह एकठोकबलेहह
मारेतोयहीहै हेसषीयहिजोकामकलीसीनाइकाहेसोदेषतेईकुमलाईजातहै अबहमक्याक
रीए औरमैकिसकेपासजाउ औकिसकोकहाकरो हेसषीयहनाइकाकेसेजीवैऔयाबिनाह
मकैसेजीवै सीतलहोंननतेउठतादसाजानी सषीअंतरंगहै जोकहतहैकहासकेललेह हमा
रेतोयहीहै औरजासोकहतहैसोबहरंगहै याहीतेवासोछिपाइकरकहतहै यातेप्रछन्न पंचमी
बिभावनाअलंकार तीछनउपचारनतेसीतलसरीरहोतहै यहबिरुद्धतेकारज अथप्रियाकोप्रका
सजहृता सवैया अषीयांनमिलीसषीयांनमिलीपतीयांबतीयांनमिलीतजमोने ध्यानवियानमि
लीमनहीमनजेउमिलैरोकमनोमेइसोने केसवकैसहूवेगमिलोननहूहैवहेहरिजोकछुहोने
हरनप्रेमसमायमिलैमिलजेहैतुमैमिलहोतवकोने ५१ वानी सषीकेबैननाइकप्रति हेहरि
नाइकातमसोअषीयांनसोमिली औसषीयांनसोमिली औपतीयांबतीयांनसोमिलीतजकर
केमोनको औरुमनहीमनविषैध्यानवियानसोभीमिलीहैकेसेजैसेरंकदरिद्रीमनोमयकामे
कलयमात्रसोनेसोमिले हेकेसवकहुसकिसीप्रकारकरकेवाकोतमसोउमिलोनहीताहेहरि

जोकछुहोनोहोइगोसोकछुह्वैजाइगो जबपूरनप्रेमकीसमाधकेमिलेतेनाइकातुमकोमिल
जाइगो अर्थकितुमारोईहूपह्वैजाइगोतबफेरतुमकिसकोमिलोगे अर्थयहिसमाधसीतोभ
ईहैपूरनमाधहोनीहै यामेजढता यहसषीवहरंगहै जोनाइककोंऔसोकहतहैकितुममिलो
किसीप्रकारवाकोवेग अंतरंगआपहीलैमिलावती योप्रकास ईहांप्रेमअलंकारप्रेमअलंकार
प्रगटहीहै अथश्रीकृसकीप्रछंनजढता सवैया पलहीपलहीनलहोतसरीरबिचारसवैउप
चारनघोंतै जोकरीएतननमंडनचितकछूसुषदुषनआनै कैसवकानसुनेसमझेनहिहूफीए
कोनहिकोयहिमाने जोगलीयोकिवियोगहैकाहूकोलोगकहाइनसेगनजानै ५२ वार्ता सषी
कोवचननाइकाप्रति हेप्यारीआजहरिकोपलहीपलविषैसीनलसरीरहोतहै औरसंसरण
उपचारनकोविचारकेनिघानेकहीएथकेहैं अथवासंसरणविचारऔउपचारथकेहैं काहूउ
पचारतेरोगनहीगयो औरजोउनकेतनकोमंडनकरीएआभूषनबस्त्रपहराईएतौवेचितविषैसु
षनहीलावति जोषंडनकरीएकाताढनकरीएतोदुषनहीलावत फेरवेहूसकाननसोकछुसु
ननहीं औसमझतनहींहैसोकिसकोउपाइपूछीए औरकोनयाबातकोमाने नाइकनेजोग
लीयोहै किकाहूकोवियोगहै सोमानुष्यरोगनकोकिमाजानै ईहांसुषदुषचितनहीसमझत या
तेजढताप्रगटहीहै औसषीवहरंगहैदसानहीजानीजोकहतहैजोगहैकिवियोगहै यातेप्रछन्न

र॰
स॰ प्रि॰
टी॰

५०
90

सषीकेसंसैयातेसंदेहाअलंकार अथश्रीकृष्णकीप्रकासजठता सवैया काह्नकेआसनवासननहीनऊ
नासननमीनकोआसनकीजे केसवइंद्रीनिसाथसवैमनसाधसमाधनकेरसभीजे जौलोभएहरि
सिद्धप्रसिद्धनतौलौबिलोकअलोकनलीजे देवीकरैतपतौलगवेवरदाननजौजीअदानतौदी
जै ५३ वार्ता सषीकोबैननाइकाप्रति हेप्यारीकृष्णकेवेदनकेजेआसनहेंऔपहरनकेजेवास
नवस्त्रहैतिनकरकेहीनहै अथवाश्रीकृष्णआसनोवासनोकरकेहीनहे औऊनासनमीतजोहेप
वननाकोआसनभोजनकरतहे औरहकेसवजोकृष्णहेसोसेटरनइंद्रीअनकोसाथकरकेऔमनको
साधकरकेसमाधनकेरसमैभोजेहे अर्थकिसमाधलगाइबैठेहे सोजौलगहरिसिद्धप्रसिद्धनही
भएहैनवनाईनंउनैबिलोकदेष अलोकअपजसकोनलेऊ हेदेवीवेकृष्णतेलीयेनपकोकरत
है जौतूंउनकोवरदाननहीदेनतौजीअदाननौदीजीए ईहांसमाधकेरसमैभीजेहे यामेजठता
निकसी सषीवहिरंगाहे जोकहतहैतौलगतपकरैहेयामेंआपनोज्ञानवोज्ञिताथोकिमैतोजानत
हैयातेप्रकास संभावनाअलंकारजोतोपदनें अथमरनलछन मूल दोहरा वैननकंुहूंमिल
नजहछलवलकेसवदास हरनप्रेमप्रतापतेमरनहोतअन्यास ५४ वार्ता जहांदंपतिनकोछल
वलकरकेकिसीप्रकारमिलननहोइ तहांहरनप्रेमकेप्रतापतेअन्यासविनाप्रियासहीमरनहो
तहै मूल दोहरा मरतुजुकेसवदासयैवरसोजाइनमित अजरअमरजसकहिकहोकेसेप्रेम

चरित्र ५५ वार्ता कविकोबचन केसवदासनेराधाकृस्नकोमरननहीकह्योजात हेमित्र कोउस्न
कोअजरअमरजसकहिकेफेरप्रेतचरित्रकैसेबरनो मूल दोहरा रतिउपजेरमनीनकोपहिले
केसवदास तिनकीइंगतिदेषसषिकरतसुप्रेमप्रकास ५६ वार्ता प्रिथमहीरमनीतरमनीननाउ
कान्नकोउपजतहे फेरतिनकीइंगतजोहैचेष्टाताकोदेषकेसषीप्रेमकोप्रकासकरतहे मूल दो०
अतिआदरअतिलोभतेअतिसंगततेमित्र साधनहूकोहोतहेकेसवचंचलचित ५७ वार्ता हेमित्र
ऐसेसुरताबातेंआदरआदिकजबअतेतहोतहै क्याअधिकहोतहे तबसाधजोहैस्रेष्टजनतिनको
भीचंचलचित्तहोतहे यामैंकविनेयहसिक्षाजिताईहैकिअतेनसर्वबसतुबुरीहोतहे याातेअ
तिनाहीकीजीहै यहभाव मूल दोहरा सुभगादसादसमैंकहीउपजीपूरबराग जिहविधउप
जेमानुमनबरनहुसुभाग ५८ वार्ता कविकोवचन पूरबरागकहीएपूरवाअनुरागजोप्रियम
कहिआएहे तिसनेसुभगकहीएसुंदरजोदसदसाकादसाअवस्थाअभिलाषआदिकजेउप
जीहैसोमैवरनीहे अबजिसप्रकारनाइकनाइकाकेमनमैमानउपजतहेसोविधवरननहों
हेसुभागसुनो इतिश्रीमनमहोराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचतायोरसकप्रियायोपूरवाअ
नुरागादसदसावरननंनामअष्टमोध्याय ८ अथमानवरनन मूल दोहरा पूरणप्रेमप्रता
पतेउपजयंरतअभिमान ताकीछविकेछोभसोकेसौकहीयतिमान १ वारता पूरण॰

र. स. शि. टी. ९१ 91

क्यासंहूरए।जोहै प्रेमतोकेप्रभावतेअधिकाईतेअभिमानउपजतहै ताकीछविताअभिमानकीजो
छविसूरतकैसीसूरतछोभसोछोभसहितिकाक्रोधसहितिसोवहछविजोहै अभिमानकीक्रोधसह
तिसोमानकहावे अथमानभेद मूल दोहरा प्रगटहप्रियप्रतिमाननीगुरुलघुमध्यममान प्र
गटतप्रीयप्रियानप्रतिकेसवदाससुजान २ वार्ता सोमानतीनप्रकारकोहै गुरु लघु मध्यम ति
सकोमाननीजोनाइकाहैसोनाइकप्रतिप्रगटतहै औरुवहीतीनप्रकारकेमानकोनाइकनाइकानप्र
तिप्रगटतहै अथगुरमानलछन मूल दोहरा आननायकोचिह्नलषअरुसुनश्रवननतोव उप
हैगुरमाननहकेसवदाससुभाव ३ वार्ता औरुइस्त्रीकोनाइककेअंगमैंचिन्हलषिकेऔरुकान
नविषेनामसुनकेनाइकाकेउरमैगुरमानउपजतहै अथप्रियाजूकोप्रछन्नगुरुमान जथासवै
आजमिलेव्रषभानुकुमारहनंदकुमारवियोगाविनैके रूपकीरासरस्योरसकेसवहासविलासव
रासुधरितैकै वागकेभीतरदेषहीऐनषनेननिवाउइरहीसुइतैके फूलहीमैभ्रमभूलमनोसकु
चेसरसीरुहचंदचितैकै ४ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीआजुव्रषभानकुमारजोराधाजूहैता
कोनंदकुमारश्रीकृस्नसोकैसेमिलेहैं मानोवियोगहीकोदूरकरकेमिलेहैं राधाजीविनामानोता
हूकोमिलेहीनही एथमवियोगहीहुतो असेप्रेमबढाइकेमिलेहैं तासमेरूपकीरासजोनाइ
काहैतासैंरसरस्योकारयो केसोरयोमानोहासविलासतसोप्रियमरोमसहीहुतो तिसकेविनैके

साहरकरकेरच्यो अर्थयहहिमानोहासविलासरथमकाह्नसोंकीऐहीनहीं ऐसेमिलकेहासविला
सकरे किप्यारीकिसीप्रकारकरकेहमारीप्रीतऔरनाइकासोंनजानजाइ यातेयनेविलासकरमि
ले नहांनाइककेहीएविषैवागेकेभीतरऔरनाइकाकोनषळनदेषकेअपनेनैननकोनाइकाउपरक
रकेवासमुषतेहटाइकेनिवाइरहो कैसेनैनहहै मानोफूलनहीविषैभ्रमसोभूलकरकेसरसीरुह
जोकमलहैसोचंद्रमांकोदेषकेसकुचेहै नषचंद्रमानैनकमल चिहलषकेनैननिवाऐयातेगुरुमान
भयो सषीअनरंगहैजोसयनसमैकीवातकहतहै यातेप्रछन्न उत्प्रेक्षाअलंकार मानोसरसीरुह
सकुचे अथप्रियाजूकोप्रकासगुरमान मूल सवैया हरूनहीवहगोपीगुपालहिआनुकछहसके
गुनगाथहि ऐसेमैकाहूकोनाउसषीकहिकेसथोआइगयोव्रजनाथहि घातषवावतहीजुबिरीस
रहीमुहकीमुहहाथकीहाथहि आनुरहैउननैननतेअसुवानिकरेअषरानिकेसाथहि ५ वातो स
षीसषीवचन हेसषीवहगोपीआजगोपालश्रीकृस्नकोहसकरकेगुनोकीकथाहूरूनहुती सोतास
मैविषैव्रजनाथश्रीकृस्नकेमुषतेकिसीऔरनाइकाकोनामआयोसाकहोगयो सोवहनाइकाजोवीरी
रीकोघातहुतीऔषवावतहुती सोबीरीमुहकीमुहमुषमैरहीऔहाथकीहाथमेरही जोघातहुतीसो
मुषमैरही जोषवावतहुतीसोहाथमैरही अर्थयहफेरअपनेहाथसोनाइककोषवाईनहीं उनकेहाथ
सोआयषाईनहीं हेसषीआतुरकहीऐपीढामानहैकेउसनाइकाकेनैननतेअषरानकेसाथहीआसुनि

र.
स.ति.
टी.
५२
92

कसे कछु उनतेनायकके सुषनेश्रोरनायकाकेनामकेश्राषरनिकरे इनश्रषरानकेसायहीनायकाकेश्रो
सानिकरे ईहांनामसुनकेनायकानेयोउदयोयेबोलीनही याहीमेमानभयो जोवोलपरतीतोमानमोच
नहेजातो श्रोजिसगाथकोनायकाहूकनहूतीताकोसषीनहीजाननहे जोकहतहेककुगुनगाथहूकन
हूतीयानेवहिरंगहेतिनोनेमानजानोयातेप्रकास सहेकितअलंकार अस्त्राअरूश्राषरएकसेगा
हीनिकसे याते अथनायककोगुरमान मूल दोहरा लोकलीकउलंघकछु प्रियाकेहेजवबेन उप
जतहेगुरूमाननतविप्रीतमकेउरश्रेन ८ वार्ता जवनायकालोकनकीलीकमामहजादीकोउलंघके
कछुत्यागकेनायककोवचनकहेनवनायककेउरमेगुरमानउपजतहे अथप्रछन्नगुरूमान जथाकवि
त्त श्रेसीश्रेसीरतराषेसोहनकेसाचसामदेषोश्रानवाचकियोकोनकीऐचीवीहे सुनइसुभागपाई
रावरीयेपामामोहिकागदकेरूपकाइश्रागकीश्रगीठीहे जाननहोंऐहीमगपायोहेजनमजगलोक
मेंश्रलोकनकीवीथीतुमदीठीहे काहेकोकहावतकडुककालकूटसीएकयोहरेहरेहसहमकोतो
मीठीहे ८ वार्ता नायकाकोवचननायकप्रति हेस्यामश्रेसीश्रेसीजोरतप्रीतहेतावियेतुमराषेहो पे
रतुमसोंहनकेसाचेहो तुमश्रोनकेयाकोवाचकरकेदेषो कानेकिसीकीयहचीठीपत्रकाहे हेसु
भागसुनोयहरावरीकहीयेतुमारीयागकेवीचतेपाईहेसालाभीहे हेकूसकायहकागदकेरूपको
ईश्रगनिकोश्रगीठीहे येकतोयतकासौतकेविरहमायकीडूतीएई हूजेयाकेनेत्रनपतनलगेदेष

के यातें आगकी असी ठीकही औरमैंज्ञान नहीं तुमनें असेंई मारगमेंजगतवीचजनमपायोहै अ
थकियहीमारगमेंजनमेंहो तुमनेंलोकविषें अलोकअपजसकीवीथीगरीदीनीहै कादेखीहै
औरदेवानेमोसोंकाहेकोकहावनहो यहवीठीनोकालकूटजोहैजहरतिसीकसमकछुकरियाकौ
डीहै नविहंगिनेंहरैन्याहोलेंहगसिकैकहेंगी हमकोतोयहीमीठीहै इहांनाइकनेनाइकाकेनिक
टसोंनकीपत्रीमीठीकही यातेंमानभयोजानीऐ इहांकारननेकारजकोग्यानभयो जैसेंवरषा
नेकोचुपसियहैजवकहीवरषाभई तहांकोचभईजानी असेंईहांअनुमानसोंमानजानीऐ नाइकना
इकाकेवचनोंतेंप्रछन्न अनुमानअलंकार अथनाइककोप्रकासगुरुमान मूल कवित्त आपने
सोंआपनेंई आगेकहीयतिकियोघारकेघजांनेघोरहीमेंघोरीयतिहै डीवहूंसोंरोकीयतिजोरकहूं
जाइकेसोंऔरकहानेनलैक्षुरीसोंछोलीयतिहै वेईचनसियामजिनचनीचरनीनिचरिकमेंचने
चनसारचोलीयतिहै वोलनहोंकेसेअसेवोलेजेसेंबोलीयतिमोलहूंलएसो असेवोलीयतिहै
८ वानी इहांनाइकानाइकसोंकठोरवोलीहै यातेंनाइककोगुरमानभयोहै तहांसखीनाइकाकोस
मझावतहै हेप्यारीअपनेंमित्रनेंजोकछूदोषहोइजाइतिसकेदोसकीवारताअपनेंहीआगेकहीय
तिहै किवाकेघारसकादोसकेघजांनेघोरगलीनहींमेंघोलीयतिहै अर्थकिगलीनमेंनहीघोलीय
ति औरजोरकरकेंजोकहूंअपनीडीवजानहै तौडीठहीकोरोकीयतिहै औरकछुनैननकोलेकेंकु

र॰
स॰ वि॰
टी॰

९६

93

रीसोंक्योलीयतिहै नहींक्योलीयति देषतहूऐवेईयतनस्यामहैजिनविनतेरीयहअवस्याहोती किय
नीजोहैचरनीइस्त्रीतिनकेचरेनतेरोग्रनसारकाकपूरयोलीयतिहै कानेरीउपाइयनीइस्त्रीकरतहै
तिनसोंनकैसबोलतहै ऐसबोलजैसेबोलीयतिहै ऐसेबोलतमोललएहूसोबोलीयतिहै सोमो
लतोनेनहीलीए ईहांहूनाइकानेबोलमरजादाउलंघकहेहैं षोरकेषजानेगलीमैषोलेहैंकहूया
नेयुह्मानजान्यो औषोरकेषजानेगलीमैषोलेईहांऐसोअर्थहैकिसरबआगेओगनकीवातकही
यातेप्रकासभयो अनुमानअलंकार अथलक्षुमानलक्षन मूल दोहरा देषतकाहूनारसोदेषेअ
पनेनैन तहांउपजैलक्षुमानकैसुनेसषीकेवैन ९ टीका जहांनाइककोकिसूऔरनाइकाकीतरफ
देषतेअपनेनैननसोंनाइकादेषेअथवासषीकेवैननसोसुनेकिऔरकोदेषतहूतेतहांनाइकाकोल
क्षुमानउपजतहै अथप्रियाजूकोप्रछन्नलक्षुमान जथासवैया कान्हनिहारीवेप्रानप्रियाकेअयान
सियानसभेमनमांही मानकियोअयमानअवेयहमानसपैअनुमानैनजाही इषसैंषतकेसवजान
परेसमुझैरिसहासीनहांअरुनाही योंछिनहीसियरीकिनतातीहैजुंबदलैवदरानकीछांही १० वा
नी सषीकोवचननाइकप्रति हेकृसनतुमारीजोवहप्रानप्रियाहैतिसकेमनहीविषेतोअयानकाअर
यानहैऔमनहीमैस्यानकहीएसुग्यानहैं वाहरमलूमनहीदेत सोअविवाकेउरविषेमानकाआ
दरहैअथवाअपमानहैकानिरादरहै यहमानुषकेयासतेतौअनुमानकीएनहीजातहै औरुवाकोसुष

हैकिउष्णहैसोनहीजानोपरत औरुवामैंरिसहैकिहासीहैयहनहीसमझत औरुयहभीनही
समझतमैंवामैंअविहांहैकिनाहीहै ऐसेवहिनाइकाछिनमैंतोसियरीकामीतलहोतहै औछि
नमैंतपतहोतहै जैसेवदरानकीछाहीवदलतहै अर्थकैजैसेमेघछायाकवहूहोतहैकवहूनहीहो
त ऐसेनाइकामैकवहूप्रसन्नताहोतहैकवहूनहीहोत ईहांछिनसीअरीछिननातीसुवदरेवदरा
नकीछाही ऐसोसूक्षममानकह्यो सोनाइकनैऔरुनाइकाकहूदेषीहै यातैभयोजानीऐ सषीपे
मानकोवहराउनभयोयातेप्रछन्न जुवदरानकीछाहीयामैंउपमाअलंकार अथप्रियाजूकोप्र
कासलघुमान जथाकवित्त रूठेहूनरूठीऐरीईठसौंइनोकहोवनैकपीठदेतईठकौनकेभएअ
ली काल्हकेनोमोसोनंदलालग्वाललालकरैकाल्हहीनआईग्वारिजोवैनेरूतीभली आजुही
जुवीचपरीवीचपारवेकोमारैआनरंगआनजीयजुंकनरकीकली नेरेहीकहेकिकोऊसाषिहैजुहू
ठीऐरीदेषीऐजुओषनाकीसाषकीकहोचली ११ वार्ता सषीनाइकाकोपरसपरवैन सषीबोलीहे
पियारीईठमित्रसौंरूठेईनरूठीऐइतनोभीअविवेकहैजोरूठौरुरूठजानो नाइकाबोलीहेअलीत
बोवेतोनेककहीऐछिनकमैंपीठदेतहैसोकौनकेईठमित्रभएहै अरथकिकाहूकेनहीभए फेर१
सषीबोलीमोसोकाल्हकेनंदलालश्रीकृसग्याललालउलाइलकरतहै तवनाइकाबोलीहेग्वारिजोत
भलीऊतीतोकाल्हहीक्युंनआई सषीनैकह्योमैंतुमारेआजहीवीचपरीहौं वीचपारवेकौ कालतुमारेवि

र. प्रि. टी. ५४ 94

षेज्ञोवीचश्रोंनरहोहैताकेयाठवेकोकाहूरकरवेको फेरनाइकावोलीवेनाइकतोश्रानरंगहैएकरंगनहीं
श्रौरुज्ञीयमैंजिनकेश्रोनकाश्रोरहोहै किनेरकीकलीसमदै किनेरकीकलीऊपरसोलालहोतहै
भीतरस्वेतविनरंगहोतहै श्रैसेनाइकहै तबसषीवोलीतेरेईकहेतेकिकोऊयावातकोसाछीभीश्रो
रुहै तबनाइकावोलीज्ञोश्राषनसोंदेषीयेताकीसाषकीकहाचलीहै नाइकानेश्रारतीयाकोदेषतेदे
षियोयारतिनेकह्योज्ञोश्राषननदेषीयेताकीसाषकीकहाहै जोबातेंकरनेलष्योहोतोतोकरुतीमेंश्रप
नेकानसुनीहै देषीएज्ञश्राषयामेंदेषतदेष्यो यातेलघुदेषतेलघुमानजान्यो श्रोरसषीवाहिरंगदे
ज्ञोकहतहैश्राज्ञहीवीचपरीहो यातेप्रकास उतरश्रलंकार श्रथनाककोलघुमान मूल दोहरा पीय
कोकह्योकरैनहीप्रियाकौनहूलाज उपजतहैलघुमानतहंरनतहैकविराज १२ वार्ता किसीलाज
करकेजहांप्रियानाइकापीयनाइककोकह्योनकरै तहानाइककेलघुमानउपजतहै यहिकविरा
जकहतहे श्रथश्रीकृस्नकोप्रछन्नलघुमान जथासवैया वोलत्रंश्राएसुवोलतनाहनमोतक
हाकच्छूहकतिहारी केसवकैसेहूंदेषसुनेविनज्ञानेकहाकोऊजीकीपिहारी षीरसिराइनजानत
षाइनईयहम्रषकीबाततिहारी काचीहीदाथहचाहतचाष्योसुश्रंततऊतुमकुंजविहारी १३ वार्ता स
षीकोवचननाइकप्रतिकप्रति हेकृस्नज्ञुंतममेरेसाथवोलश्राएहोतेसेश्रविक्युनहीवोलत मानेवा
तुमारीकछुत्रकपरीहै जोतूकहैतोकहो श्रौरुहैकेसवाकृस्नकछुदेषेविनाश्रोकछुसुनेबिनाकोई

जीउकीपिहारीछिपीवारताकोकोईकिसप्रकारजानजाइ तुमषीरकोसिराइकहीऐसीनलकरके
चाइनहीजानतेहो मैंतुमारीभषकीबातकछूनहीनिहारीदेषीहै औरतुमकाचीदाषहीको
चाख्याचाहतहो सोअंतकोजऊतुमकुंजविहारीहीहो कुंजविहारीपदतेध्वनिसोवानरको
स्वभावजितायो कितुमकोकछूवातकीपहिचाननहीहै ईहोनाइकनेकहूनवीनवैसकी
नाइकासौरतचाहीइती सोनमानी तवरूठे यातेलघुमानभयो सषीनाइकाकीप्रकृतको
जानतहै जोकहतहैकाचीहीदाषहचाहतचाष्या यातेअंतरंगहै योप्रछन्न अन्योक्तिअले
कार नाइकाकीवातदाषपरकेकही अथप्रियाकोप्रकासलघुमान जथासवैया आगेकहा
करहोअवहीनेइनोउघदीनोकहैविनुकीने केसवकौनहूलाजकिलाउनेभूलगईतोभईछिन
हीनै भेटेनहीभरअंकललाभरजोभनबोलीजुबोलनवीने देषैनहीकवहूंभरआषनआज
हीकैसेचलेचितलीने १४ वार्ता सषीकोबेननाइकप्रति हेकृस्नतुमारोकह्योवानेनहीकस्यो
सोकहैकेकरैविनातुमनेअवीनेजोवाकोइतनोउषदीयोहै सोआगेक्याजानेकहाकरोगेवाके
साथ हेकेसवकृस्नवहनाइकाकिसीलाजतेकाजानेकिसीलाउतेजोभूलगईतोकाछिनहीन
ह्वैगईहै नहीह्वैगई हेललाअजोलगतोतुमवानेंअंकभरकेभेटेनहीहै औरजोभमरकेतुमारे

र॰ सायनवीनवोलतहीवोली औरजैतोताईतुमऔषभरकेवानैदेषेनहीहै सोआजहीतेवहनाइकातुमा
प्रि॰ रेचितलीनेकैसेचैले ईहांहूमगथानारकासैंरतचाहीनभानीयातेलघुमानजान्यो सषीवहरंगहैजो
टी॰ कहतहैलाजकिलाडतेनिरधारनहीजानत औमानजान्योयातेप्रकास काव्यलिंगअलंकारकै
सेचितलीनेचलेयाकोहठकीयो देषनहीइनबातनकर अथमध्यममानलछन मूल दोहरा
५५ वानकहतनचयऔरसौदेषेकेसवदास उपजेमध्यममानमनमाननकेसविलास १५ वार्ता जहांना
95 इकानाइककोऔरतीयासोवातकरतेदेषलेइजहांमाननीकेमनविषेमध्यममानउपजतहै अथप्रि
याकोप्रछन्नमध्यममान जथाकवित्त कहोकान्हकहांसगरीनिसनासीसतौतुमहीकऊचाहतनही
ततुमैनतुरेषलिषीकिहिकेसवकेटककाननगाहतनही कछुरातीसीआंषकहांभईनानीतिहारेवि
योगकेदाहतनही हीयवंचकरीनरचीजवरंचकलाइलईअनाहतनही १९ वार्ता नाइकानाइककोपरस
परवैन नाइकावोलीहेकृस्नतुमनेसेष्ररणारात्रकहांविनीनकरीकहो नाइकवोले सोरात्रतोवनमैं
तुमहीकोचाहतकहीपैदेषतविनीतभई फेरनाइकावोली तुमारेतनुकहीऐससीरविषेतनुकहीऐस
कमरेषाकिसनेलिषीहै ईहांसखमरेषजोकहीहैसोनाइकानेनेकचितासोकहीहै यातेऔरनाइ
काकीरेषानहीहैकाहेतेजोसोरचीरेषाहोतीतौदेषकेवोलतीऐनाही वोलवेतेजोनीयरीकिसर

तचिन्हकौरेषानही तविनाइकवोले काननवनमैगारहतहीकहीपेफिरतेहोएकंटकनकौरेषा
लगीहैहे तेक्रोधकैकीयो तेरीनातीकहीपेलालसीआंषेक्याभईहे फेरनाइकावोलीनातीतिहा
रेवियोगकेहाहतही नातीकहीपेनातीयकेऔरतुमारेवियोगमैमेरीआंषरातीभईहै तवनाइकवो॰
ल्योहीयवंचकरीनरचीवातुमहममैवंचकतारचतहों कपटरचतहोफकेईदोषलगावतहो तव
नाइकावोली जवलाइलईउरनाहतही काजववहनाइकातुमनेउरकोनहोनहीलाइलई काउर
लाईहीहै सोयहथोषोनाइकाकेतवहीभयोहैजववातेकरतदेषे यातेमध्यममानभयो ना
इकनाइकाकेवचनोतेप्रच्छन्नहीहै उतराअलंकार अथप्रियाकोप्रकासमध्यममान जथासवैया ज्युउ
नकोहवकावनमोहितैआईवकावनहेगरई अवयाहीतेतोसहवातकहकहिवेकोऊतीनकहीयरई का॰
हिकेसवआयनीजोचउचारकेआपहीलाजनकोमरई इकतोसवतेहरपेहरचैअविहोउकहाहरितेहरई
१० वार्ता नाइकाकोवचनसषीप्रति हेसषीजेसेतूउनकोनितवहकावतहैतेसेतूमोकोवहकावनआई
है हकेगरईकावडी सोअवइसीतेजोतोकोकछुकहनेकीवातीऊतीसोंकहीनहीजात केतूंवहकाव
नहै याहीतेआपहीअपनीजोचउचारकेआपहीलज्जानविषेकोनमरे अथवाआपहीलाजनकोमरी
यतिहै एकतोसर्वतेहोलेहरिहेही जोजहांतहांवातेकहतहे औविमेतेरेयासकहिकेहमितेभीहोलीकहा
होउ ईहांनाइकानेऔरनाइकासोंवातेकरतदेषेहे याहीतेहरवेकहै जोजहांतहांवातकहतहैसोहरवो

२ होतहे औरहुसोवातेकरतदेषरहीयांनेलघुमानभयो सषीवहरंगहेजासोनाइकानेकह्योतोसोवातोनहीक
स॰ त्रि॰ हीये तिसनेमानजानलीनो यातेप्रकासभयो लोकोक्तिअलंकार आपनीजोंघउच्चारयहलोककहत अ
टी॰ यप्रियकोमध्यममांन मूल दोहरा जहांनमांनेमाननीहारे पीयजुमनाइ उपजतमध्यममानतहप्रीत
96 मकेउरआइ ५८ वार्ता जहांमाननीनाइकानमांनैतोकोपीयमनाइकेहारहेनहांनाइकके उरमेमध्यम
५६ मानउपजतहे अथश्रीकृस्नकोप्रछन्नमध्यममांन जथाकवित्त वारनावरजीमेसारससरससुषीयो
रसीलेदेषमुषयारसमेबोरहे सोभाकेनिहारोतेंनिहारतन्ननैकहूंहूंहारीहेनिहारसवकहाकाहूंषार
है सुषकोनिहोरोजोनमान्योसुभलीकरीतेंकेसाराइकीसौअवजोतूंमुषमोरहे नाहकेनिहोरेकिनमा
नतनिहोरनहीनेहकेनिहोरेफिरमोहीजुनिहोरहे ५९ वार्ता कहूंनाइकानेसषीसोकह्योजुतोकितेना
इककोमनाइदेइ सोसषीकहतहेनाइकासो हेसारससरससुषीकाकमलतेसरसमुषवारीमेतोकोयहले
वारवारवरज्योजुतो तूंअपनेमुषकोआरसीलेकेदेषऐसेसरसमुषकोयारसमेंकहाक्रोधकेरसमेंतूंबोरहे
क्योबोरतीहेयातेमतवोरें यहिकहोजुतो औरहुयेवातेभीसरवकहीजुतो तूंअवतोसोभाकेनिहार
नेतेवामनादनेतेनेकथोरोसोभीनहीनिहारत क्यादेषत संपूरणसषीतोकोनिहारकेवामना
इकेहारीहै तूंनहीमानत सोकिसीकोकहादोसहैयोरदोसकोनाम औरयहभीमेकह्योजुतोय
हसुषकोमनिहोरोजोनहीमान्यो सोतैंभलीकरी अवतोकोकेसाराइश्रीकृस्नकीसौगंधहेजोतूं

किसीप्रकारश्रपनेमनकोमोरैमाननते श्रोरुनाहूकेवानाइककेनिहोरेतेकामनाएनेक्युनहीमा
ननतहै श्रवमान श्रोरुमैनिहोरनहूकामनावनहो फेरजबनोकोनेहूनिहोरेगोमनावेगोनवनेहूके
निहोरेनेतूमोहीकोनिहोरेगी यहिकह्योइतो ईहांश्रनरेगसखीहैजाकहतहैनेहूकेदवाएनेफेर
मोहीकोनिहोरहै यातेप्रछन्न वारवारयामेवीपसाश्रलंकार श्रथनाइकाकोप्रकासमध्यममान
जथासवैया मानहमाननेमाननीकेसवमानसतेकछूमानदरैगो मानरहेरुउज्जमानेनहीयरमान
नषेश्रभिमानभरेगो द्वैहैसहेलीसमाननवैजवसौतनमेंश्रपमानकरेगो श्रोयुमनावतमानदूरी
वडूल्योज्जमनावनतोहूयरेगो ॰ वार्ता ईहांनाइकानेकह्योहैसषीसोंकितूमोकोनाइककोमनाइ
देइ नवसषीपहलीवानेकहतहै हथमतोमैंनोकोश्रैसेवचनकहूकैसमफायोइतो जेमाननीका
मांनवतीनाइकाहैतेमांनकहीएश्रादरहीतेमांननतहै जवहीश्रादरनाइकनेकीयोतवहीमानतजदी
यो श्रोरनहीतोकिसीकोमानमानसतेकामनुष्यतदरनहैनहीदरत श्रोरुयहकह्योइतो हेप्यारी
श्रवजोतूमाननननहीहैतोतेरेपासमांनकारूववोहीरहेगो देषतूपरमोनजोहैहूदतिसकेनषेका
रकरेतेकाश्रानिकरेनेवहनाइकश्रभिमानकहीएगरवकेभरेकहीएभारसो गोकहीएगयो श्रोरु
नासमैयहिभीकह्योइतोकिजवयहनाइकतेरीसौतनमेंश्रपमानकानिरादरकरेगोतवतूसहेलीस
मानद्वैहै ह्यामनीते श्रोश्रविभीजोमैकहतनहोसोश्रापकहीएनाइकहीमनावतहै यहउनहीकोम

र. क. टी.

नावनोजांन सोनहूमांन नहीतोफेरनोकोमनावनोपरेगो अैसेकह्योऊतो सोईवातेभई औरुसषीवहरं
गहेजोकहतहेहूहे सहेलीसमांन यातेप्रकास ह्यन्याअनुप्रासवरनमैंजीने मूल दोहरा राधाराधा
रसनकेवरनेमानसमान तिनकोमानमनाइवोकहीयतिसुनोसुजान २१ वार्ता राधाजूकेऔराधार
मनजोकृस्नदेवहैतिनकेसमानवरोवरहीमांनवरनेहे जैसेप्रकारमानराधाजूकोकह्योमैसेईश्रीकृस्न
५९
कह्यो अवतिनकेमाननकोमनाइवोकहतहै हेसुजानचतुरोसुनो इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीइंद्र
97
जीतविरचतायांरसकप्रियायांत्रिविधमानवरननेनामनवमोध्यायः ९ अथमानमोचनवरननं मूल
दोहरा मानतजनहप्रीतमप्रियाकहिकेसवकरप्रीत · वरनसुनाऊसुतनऊसभमैजुसुनीषटरीत १ वार्ता
प्रीतमप्रियाजैसेमांनकोतजतहैतैसेकेसवकविकहतहै मैप्रीतकरकेवरनसुनावतहों हेकवीतुम
सरवसुनो मैषटरीतसुनीहै मूल दोहरा सामदामभनभेदअरुप्रणतउपेछामान अरुप्रसंग
विध्वंसपुनिदंडहोइरसहोन २ वार्ता ऐमानमोचनकेषटउपाइहे सामोपाइ१ दानोपाइ२ भेदोपाइ
३ प्रणति ४ उपेछा ५ प्रसंगविध्वंस ६ औदंडउपाइकहीऐतोरसकोहांनहोतहै यातेनहीकह्यो
अथसामोपाइलछन मूल दोहरा जोकंहूमनमोहीऐछूटजाइयहमांन सोईसामउपाइकविके
सवदासवषांन ३ वार्ता जोकिसीप्रकारमनकोमोहलीजीऐऔरुमानजहोछूटजाइ सोसामोपाइ
मानमोचनकहतहै अथश्रीराधकाकोसामोपाइ जथासवैया केसवदाससदाकीऐआसरहेसुषकीड

षताहिनहीजे ताहूंसौंरोसनमांनीयेमांननभूलहूं आपनभूलीजे हौंतुमहीतुमहौंसुनसुंदरमूरत
हैजीयऐकहजीजे मानहूंभेदकोमूलमहांग्रपनेमदूसौंसुपनेहूंनकीजे वार्ता नाइककोबचननाइ
काप्रति हेप्यारीजोकोऊजिसकेपासतेसदासुषहीकीआसकीऐरहे तिसकोदुषनदीजीऐ औरहूहेमा
ननीजिसकोमूलकरकेभीआपनोमानलीजीऐकियहआपनोहैतिससौंरोसजोकीथहैसोकबहूं
नकीजे मैतोतेरेईरूपहो औरतूंमेरेरूपहै अर्थकिमेरेतेरेविषेभेदनहीहै सोहमेदेषनमेताहू
मरतहै औरजीयऐकहीसोजीवनेहै औरजोयहमानहैसोमहाभेदकोमूलहै अर्थकिभेदके
मूलतोऔरहूंवहूतहेपेयहमानमहाभेदकोमूलहै याकेराषनेतेभेदउपजतहै सोमानहमे
सौनकीजे तबनाइकाबोलीआपनेमदूसौनकीजे वगयहतुमतोपराऐमदूभऐरहतहै तुमसो
मानहीराषीऐ मदूभरताकोनाम कोमलबचनोतेसामोपाइप्रगटीहै अथवाकेसबदासमदाको
ऐआसरहेसुषकी याकोग्रैसग्रर्थकीजे केसबतोकविकोनामहै आगेनाइककहतेहै जोदास
ग्रपनेस्वामीतेसदासुषकीआसकीऐरहे ताकोदुषनदीजे सोमैंदासहौं तूंस्वामनीहै हमको
दुषनदीजे यातेसामोपाइ उतरग्रलेकार नाइकाकेउतरते अथश्रीकृसकोसामोपाइ जथासवै
या कहिग्रावतहेजुकहावतहौंतुमनाहीतोताकसकेहमसौंही तिहयेंकहोचलीपेकवहूंजिहको
टोलभगोयसपीवडुषोंही प्रीतकुम्हेडुकीजेहैजईसमहोततुमैंग्रंगुरीपसरोंही कीजेकव्हूयहजांन

केकेसवहौंतुमहीतमनौहरिहौंहौ ५ वार्ता नाइकानाइकसौंकहतहै हेहरिजोतुमप्रियमकछुहीन
बारताहमकोकहिआवनेहौंतोतुमहमातेपाछेतेकहावतेहौ नहीतोहमारीबासकतहैजोहमतुम
रेसनतुषदेषसकै अवमानकौंकरतहौ जिसमारगविषेपगकोकांटोलगेअोडुषाहोकहीएडुष
केदेनवारीपीरहोइ तिसमारगमेकवहूंकहोचलीए अर्थकिनाचलीए असेजिसबारताकेकीएडु
५८ षहोइसोकंउकरीए यातेमाननतजो कंउमानकेराषेलोगप्रीतकोलषलेहगेतवतुमेडुषह्वैहै फेर
98 तुमारीओरकूअंगुरीपसरौहीहोतेहीप्रीतकुम्हेडेकीजईसमहरह्वैहै कुम्हेंडोनामपेठेकोहै ताकी
जईछोटोफल सोअंगुरीलगायेमुरझातहै तेसेईतुमकोअंगुरीपसरेतेप्रीतजैहै तवनाइकक
हीकछूतोकीजे तवफेरनाइकानेकहीहेकेसवयहवारताजानकेकेकहीएकरजोप्रीतनजाइ
औरकुमैंतुमारेहूरूपहौंतुममेरेरूपहौ अर्थकिमेरेतुमारेविषेतोभेदनहीहै ईहांनाइककेबोलनते
मानछूटो औनाइकानेकह्योहमारेमेतुमारेदेषवेकीसकतनहीयातेसामोपाइमानमोचन उपमा
अलंकार कुम्हेडेकीजईसमप्रीतजैहै अथदानोपाइलछन मूल दोहरा केसवकोनहूंव्याजक
छुदेतछुडावेमान बचनरचनमोहेमनहितासोकहीएदान ६ वारता केसवकविकहतहेज
होकिसीकवहानेकछुवसनकोदेकैजोमानकोछुडावे औवचनोकीरचनाकरकेवाचतुराईकर
केमनकोमोहलेइतासोदानकहीए मूल दोहरा जहालोभतेदानलेछोडेमाननीमान वीरव

धूकेलछनेपावैतबैप्रमांन वार्ता जहांमांनवतीनाइकानेलोभतैंदानलैकेमानकोत्यागयो तहांव
हझारबधूवेस्याकेलछनोकोतबहीपावनहै यहप्रमानवानहै चतुराईसौजोकछुदैकेमांन
छुडावैसोदानोपाइ अथश्रीराधकाकोदानोपाइ जथाकबित्त कोमलअमलदलदीनेहैकम
लभवअरुनअरुनप्रभुउ(?)कोसुषदाईऐ केसोदाससोभाथरसथरसधाकेथरअथरमधुरउ
पमानोइनपाईऐ उरजमलयसैलसीलसमसुनदेषअलकवलतव्यालआसाउरआईऐ नि
पटनिगंधयहहारबेधुजीवकोसुगंधचाहतसुगंधभयोनेकग्रीवनाईऐ ८ वार्ता नाइकगुलदुप
हरीयाकोहारल्याऐहेसोनाइकासोऐकजुगतनवणाइकेकहतहै हेप्यारीयहहारकेसोहैकमल
भवजोहैब्रह्मातिसनेयाकोकोमलश्रोअमलकहीऐनिरमलऔसेदलजेहैपत्रसोईऐहै फेरदलके
सेहैअरुनलालहैफेरकैसेहैअरुनप्रभुजोहैसूरजताकोसुषदाईहै काहतेसूरजकोचढहै फेर
हारकैसोहै सोभाकेथरनवारेश्रोसुथरकहीऐश्राछेसुधाअहतकेथरनवारजेतेरेमधुरहोवहैतिन
कीउपमाइसहारनेपाईहै यांमेसंसेनही पैइनमैंसुगंधतानाही ऐतेरेयहजानकेआऐहै मकिम
लयाचलमैजोवसतजातहैसोसुगंधतदैजातहैसोतेरेउरजकुचनकोसीलसुभावमलयाचलप
रवतकेसमानसुनकेश्रोअलिकरूपीजोव्यालसरपहैतिनसौबलतकहीऐव्यापदेषकेइसहार
केउरविषेयहआसाआईहै किमेरेनविषेबसो यहनिपटकहीऐअतसैनिगंधगंधरहतजोबेधु

र० स०प्रि० टी०

जीवकोहाररहैसोनेककहीऐरतीकुसुंगंधभयोचाहतहै तवनाइकाबोलीग्रीवनाईऐ सोग्रीवामैंपा
ईऐ यातेमानछूसो औनाइककेबचनोतेऔरनेकपदनेसिंगारकरमनहीमानमोचनहीहै ने
कपददीननाकोप्रगटावनवहै औहाररदानदीयोयातेदानोपाइप्रगटहै प्रियमतुकमैंलकारतेर
हत्याअनुप्रास अमरकवित्त मनगइंदनसायमदाइहथावरजंगमजंतविदाह्यो नादिननेक
९९ हिकेसववेधनवेधनकेबहुधाबिधमाह्यो सोअपराधसुधारनसोथयहैइहसाधनसाधुविचाह्यो
पावनपुंजतिहारोहीयोयहचाहतहैअवहारबिहाह्यो ४ वार्ता नाइककोवेननाइकाप्रति ग
जमोतनकोहारल्याऐहै ताकोबरननकरतहै हेप्यारीइसहारनेमनवारेजोहैगइंदहाथीतिनोके
माथरहकेइस्थावरनिहचलजोजीवहैहक्ष आदिकतिनकोऔजंगमचलनवारेजीवनकोविदा
ह्योहैकामाह्योहै तिसीदिननेइसहारकोविधब्रम्हानेबेधनकरकेऔबंधनकरकेबहुधाबहुत
प्रकारमाह्यो सोजोपिछलोअपराधहैतिसकेसुधारनेकेलीऐसाधोनेइसहारकोथहऐकसाध
नकाउपाइविचाह्योहै कि इहसाधनकीऐअपराधजाइगो अथवासाधसोभलोसाधनविचार
ह्यो तमारोहीयोजोपावनपुंजहैसोपवित्रताकोसंहहहै तवनाइकाबोलीविहाह्योविहारकी
योईकाआयोअंगीकारकीयोयामैमोनछूसो औरईहांलोभतेमाननहीछूसो वचनोकीचत
राईकरकेछूटोयातेदानोपाइ यकारकीवरनमैत्रीतेवृत्याअनुप्रास अथश्रीकृसकोदानोपाइ

जथाकवित्त हसतहसतआईआनइकगाथागाईकहोहोकन्हाईयाकोभाउसमझाइकैपी
वैकंुअधरमधुदंपतिएकहबाररदनकरजथलदीनदुवनाइकै यहपररंभनकहावैकोन
केसोराइमेरीसोतुमोसोतुमराषहुडुदाइकै राधकाकोअधिकाईकहाकहौलीनोआजआप
नोप्यारोपीयआपहीमनाइकै ८ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीआजुनाइकाहसतहसतश्री
कृष्णकेनिकटिआई आइकरकेएकगाथापढी तामैंयहवारताषुछीहेकन्हाईयाकोभावस
रेपासमझाइकरकेकहो दीपतजोहेइस्त्रीपुरुषसोएकहीवारअधरोकेमधुरसकोके
सपीवे औररमाकोरदनदंतनकेओकरजनथनकेदेनकेजेअस्थानहैसोवताइदीजे औरुय
हकौनसोपररंभनकहावतहै यहकौनसोपररंभनहैजोमैंतुमसोकीयोहै हेकेसोराइकृष्ण
तुम्हेमेरीसोगंधहैजोमोसोदुराइकहीयेछिपाइकेराषो सोहेसषीआजमैंराधकाकीअधिकाई
काकहोआपनोप्यारोपीयआपहीमनाइकरकेलीनोहैसोग्रहनकीयोहै याकवित्तमेंरूप
रसोभावआवतहै जवनाइकापाछेगढीहैकेनाइककोअधरपानकरैतवदोऊनकोअधर
रसपानवनतहै सोपररंभनकोकरवो औगाथकोपढवोयहदानदीयो औनाइककोमान
कुसोमिलनतेयातेदानोयामानमोचन परियायोक्तिअलंकार पररंभनकेएलवेकोछ
करकारजसाध्यो अथमेदोपाइलछन मूल दोहरा सुषदेकेसवसषिनकोआयलेइअथ

र॰ क॰ टी॰

१००

100

नाइ तबसखुछुड़ावैमानकोवरनोभेदैउपाइ ११ वार्ता जहांनाइकतौनाइकाकीसषीकौसरवसुषदैकै
प्रियमआपनीकरलेइतबमानकोछुडावै औनाइकानाइककीसषीकोयाहीप्रकारआपनीकरकै
मानकोछुडावैतहांभेदोपाइमानमोचनहोतहै अथराधकाकोभेदोपाइ जथासवैया केसवया +
इषवासिननोहसषीसकुचैसभआपनोजाते मोहनोमाईकहेहीवनैअववाधदईविधनाकछुताते नै
कहरेहरेबोलबलाइल्योहोडरयोगडजाहनजाते माषनसोमेरेमोहनकोमनकाठसीनेरीकठेगीऐ
वातै १२ वार्ता सषीकोवैननाइकाप्रति ईहांनाइकाकीसषीनाइकनेसरवसुषदैकैआपनीकरलीई
है सोनाइकासोकहतहै हेरायकेनेरीथाइजोहैषिलाईऔषवासनीजोहैसजाकेविछापनवारीऔसषी
पसर्वआपनीहीतरफतेसकुचतहै किकछुहमहीकोदोसनआइजाइयांते तोकोकछुकहिनहीसकत
औमोकोनाकहेहीवनतहै कंुमैतोहृषब्रह्मानेतोहीकौवांधकेदईहों यांतेमोकोकहेविनानहीसरत
नेरतीकहरेहरेबोल मैंतेरीवलाइल्युं मैयांतेडरतहींपैवचनमोहनकेमनविषैनगठजाइ काहेते
मेरेमोहनकोमनतोमाषनसोहै औपैतेरीबातेकाठतेभीकठेगीसाकरठीहै यांतेहरेहरेवोल व्र
ह्मानैतोकौवांधकेदईहों योंकहनतेनाइकाकीसषीजानी सोनाइकनैसुषदैअपनीकरलीनीहै यां
हीतेमारोगुपालकहतहै यांतेभेदोपाइजान्यो औसषीकीविनैसुनकेनाइकामाननजकेनाइकसौत
मककेवोली तवसषीनैकह्योनैनहरेहरेवोल यांमेमानमोचनभयो। जोकहतहैवांधदईयांमेजनी

जानमई जोदाइजमैमश्रोईहै ईहांउपमाअलंकार काउमीकठेगीवानें प्रगणउपमा अथश्रीक्रमकोभेदो
पाइ जथासवैया काहुकह्योहरिरूवरहैनवतेमनवुद्धवितरकवढावे सोथसवैअपनोसारहीथनमीत
रहैसुउपाइनपावे ह्वांवहरीतईहांयहकेसवज्युइह्ओरजरेकोजुढावे एकतहौपियप्पारीतिहारीसु
मोनकरैकिमोनावनआवे १४ वार्ता सषीनाइकप्रतिकहतहै ईहांनाइकानेअपनाइलीनीहै यांते
नाइकाकेपच्छकीबारताकहतहै हैह्रसकिसीनेजवतेवाकेपासजाइकह्योहै हरिरूवरहेहै तव
तेवहनाइकामनमैंअैसवुद्धकेविचारनकोकरतहै किमानहीराषीए किमाननजकेउनकोमना
वनचलीए सोवहआपनोसाअत्यंतसोथवही जोमैंथनाओमीनदोऊरहै सोउपाइनहीपावतहै
अर्थेकिनाइककोमानवीहरह्वेजाइ ओआपकोभीमाननजकेनजानोपरेयहउपाइनहीपावत
हैकेसवकहसऊहांनोवहरीनहै जोउपाइविचारतहै ओईहांयहरीनहै तुममानकरवैगेहो ओमेरो
जीवउहूंउारनेजरतहै उननाइकाकेउघतेइनकोतुमारेउघनेसोकोनजुढावेसीतलकरेमेरजीवको
सोमैतुमकोउपाइएछनहों तुमारीप्पारीमानहीकरै कितुमारोमनावनोकरै तवनाइकनेकह्योआ
वे ईहांमानछूसो उतराअलंकार नाइकाकेउतरने अपप्रनतलछन मूल दोहरा अतिहितने
अतिकांमतेअतिअपराधकजान पाइपरेप्रीतमप्रियातातकरूप्रनतवषान १४ वार्ता अत्यंतहितसने
हैते अत्यंतकांमते अत्यंतअपराधते जहांनाइनाइकाकेपांइनमैपरे ताकोप्रणतकहीऐ राधकाकी।

र. क. टी.

१०१

101

हितनेप्रणाम जथासवैया मैचितयौंजुनसमूथेनऊउनप्रेमककैपीयपाइगह्योहो मोह्विलोकविलोक
अलीनअलीकअलोकप्रवाहिवह्योहो हत्थनहीसुषिसीसटीऐतिनओरसवैहीयहेतरह्योहो कान्ह
हिआऐमनावनतोसोंमैंमानकियोअपमानकह्योहो ९५ वार्ता नाइकाआपनीसखीसोंकहतहै हेस
खीअलीनकहिऐसखीयोनेमोकोविलोकविलोककेवादेखदेखकेअलीकजोहैझूठतिसकोअलोक
अथजसकोप्रवाहवह्यो अर्थयहकिमोकोसखीयोनेयहझूठोईकलंकलगायो कौनसोंकितेमूलक
रकैभीनाइककीतरफसूथेनहीचितयोकानहीदेख्यो जहपिउसपीयनेप्रेमकरकैतेरोपाइभीगह्योसा
पकिस्योतोभीनैंतोदेख्यो यहकलंकमोकोझूठोहीलगायो झूठेकहनमैयहधुनिकसीकिवे
झूठीहै मैंतोपाइगहेतेदेख्याहै हेसखीमैतेरेसिरपरतिनदैकेहत्थनहीसोंगंदकेहत्थनहींतं
सत्यकहिदेउ औरुहीऐकोजोहितसनेहहैसोतोसर्वइकतरफरह्यो अर्थकितूप्रीतकोनकहे सत्य
कहे श्रीकृष्णकेमनावनआऐतेमैंतोसोउनकोमानकियाआदरकरिवेकोकह्योहैकुनकोअपमानकयानिरा
दरकरवेकोकह्योहै अर्थकिमैंतोकछूनहीतोकोकह्यो सखीननेझूठेईकलंकदीयो ईहांपाइपरन
तेप्रनतजांनी औप्रेमकरकेपाइपरेयांनेहिततेप्रनतजांनी औदेषनतेमानमोचनभयो सीसतिन्ह
कादैतोझूठीतयांते लोकेकतअलंकार अथश्रीराधकाकीप्रणातिकामते जथासवैया नबोलन
आपवुलाऐहूबोलकहोलगीमोहवकाऐहूमारन सोपस्योपाइनहूकसखीसभदेतहैज्युज्युवतीजिह
कारन हवछाडकेकंठउवारलगारकहोलगीश्रेवभ्रकासनिहारन कौनेभऐतडदैदितपैदिनतें

हीलगीकछुऊलटपारन १६ वार्ता सषीकोवैननाइकाप्रति हे प्यारीजोआपतैतंनहीबोलतहैतौबुलाऐ
हूंनतैनौबोल तंमोहीकोवहकाइकैकहामारनलगीहै औरदेषतंसोनाइकतेरेपाइपस्योहैतंतूक कासमक
हेजुवतीइस्त्रीजिसकेमिलनेकारनतंसरवसषीनकोअपनोजीवदेतहै अर्थयहसर्वलाचचडुनकोदीनदेदे
केदेतहै अवइसनाइककोतंहवनजकेकंठकोउगाइकेलगाइ अठवक्रतासोअकासकीनरफाकानिहारनदे
षनलगीहै तबनाइकामानतजकेबोलीऐजोदिनहैजोवनकेतिनोमैदैदैदिनअैसेकौनकोनहीभऐसर्व
कोभऐहैयानेहमहूंकरलेहु तबसषीनेफिरकही अैसीउलटीवारताकोतंहीकरनलगी अर्थकिऐकाम
नोमुग्धानकेहैतोकोनचाहीऐ पाइपरनतेप्राणनजानी औसषीनेकह्योकंवलगाइलीजे ईहांकंवलगानकी
इक्यातेकोमजांनीऐ मानमोचनप्रमाटहीहै बिसेषोक्तिअलंकार बुलाइवोकारनतातेबोलवोकारजनहीभ
योयोते अपराधकाकीप्रणामअपराधते जथासवैया केसवदासउदासभईदरसाइटसाउषदिउसमस्यो
री रातभऐअपरातकहूंलौविनेवङ्कवंधवधूनकस्योरी धाइरहीसमुफाइकछूनषीनहूंकेसिषऐतेसस्यो
री कादिनेमान्योनमाननीतौलगजौलसिपाइनपीयपस्योरी १७ वार्ता सषीकोवैननाइकाप्रति हेनाइ
कातोकोयहमांनकीजोदसाअवस्थाहै सोद्युसमस्कहीऐदिनभरडुषदियाइकेउदासभई अर्थकितोको
दसाऊनेडुषदीयोतऊमाननत्यागयो पेररातभईतेआधीरातपरयंतवंधवधूजेभरजाईहैतिनोतेवङतेव
ननीकोकस्यो औथाइबीनोकोसमफाइकेरही औसषीयाकेसिषाऐतेभीकछुनसंस्यो हेमाननीजोलौते

र· स· क· टी·
१०२
102

रेपाइनमैपीयनमस्योतौलमनाईजोतूनमानीसोकाहेतेनामान्यो यामैयहूध्वनिजबपीयनैअपराधछिमायोतबर
हीमानक्याउंयो यांतेअपराधतेप्रगानभई हेतअलेकार हेतकाजकारनसहत मानवोकारज पाइपरवोकार
न अथश्रीकृस्नजूकौप्रमान मूल दोहरा पीयहूमनावेपाइपरप्रियापरमहितजान नाअपराधनकामते +
बरनतहीरसहान १८ वार्ता पियकोजोप्रियापाइपरकेमनावैतोपरमहितहीकोमानकेमनावै औअपराध
कोमतेनमावेकुंइनकेबरनतहीरसकीहानहोतहै कुंरायाजूमैंअपराधकामकोनकह्योचाहीऐ उदाहरन
सवैया नीरहतौविनमीनमरैवहूमीनतौनीरहकेजीयजीजे जाविनऔरुसुहानकेसवनाहिसुहाइसुतौस
भकीजै जालगमोपगलागनहौंसुलगीपगअगलगाइनलीजे हौंसिपऊअपनेसुपनेहूतौआवनलछे
किवारनदीजे १९ वार्ता सषीकोबैननाइकाप्रति हेवहूस्नेहनीरकोतोमीनकेनासरनहै औमीनतोनी
रहीकोजीयसौजीवनहै अर्थकमीनकोनीरबिनानहीसरत सोतुमनीरहौंप्रियामीनहै तैसेईतुमैतोर
प्रियाबिनामरतहै प्रियातोतुमारेईजीयसौजीवनहै औजिसकेबिनाऔरकछूबसतप्यारीनलागे
तौहेकेसवहूरूसतिसकोजोसुहावैसोसरवकरीयतिहै अर्थकितुमारेबिनाप्यारीकोकछूनहीसुहात
याहीतेजोतुमकोसुहातहैसोसर्वकरीयतिहै ऐतेपरभीनहीमानत अथवातुमकोइसबिनाकछुनहीसु
हात तौअवियाकोजोसुहातहैसोकरौ जिसकेलीयेतुममेरेपांइनमैंनितलागतेहौ सोआजतुमारेपाइ
लगीहै तबनाइकबोलेअंगसौलगाइ फेरसषीनेकह्योनामैनही आपहीउठाइलगाइलीजे औरयहसिष्या

सिषावनहोआगेहूंको जोआयनेलछमीसुपनेहूंमैंआवतहैउनैतोकिवारकपाटनदीजीऐ औतुमारे
तौसाछानआईहैतुमसमतफेरोअंग्रीकारकरो ईहांपाइपरेतेमप्रणातजानी औप्रियाकोमीनठहिरायोसो
मीनकोप्रेमजलसौहोतनहीहै याते प्रेमतेप्रणातजांनी औनीरमीनकोदृष्टांतदीयो दृष्टांतअलंकार
अथउपेछालछन मूल दोहरा मानमुचावनबाततजकहीऐऔरुप्रसंग कूटजाइजहमानत
हकहतउपेछाअंग २ वार्ता जहांमानमुचावनकीवारताकोतजकेऔरुप्रसंगकहीऐसोवाकेक
हेमानछुटजाइनहोउपेछाकोअंगवरननतहै उदाहरन कवित्त चपलानचमकचमकहथियारनकी।
बोलननमोरबंदीसेनहैसमाजके जहांतहांगाजतनबाजतदमामेदीहदेतनदिषाईरिनमनलीनेलाजके
चलचलचंदमुषीसावरेसषापैवेगसोधकजुकेसोदासअरिसुषसाजके चढिचढपवनतुरंगनगगन
येनचाहतफिरनचंदजोथानमराजके २१ वार्ता सषीनाइकासोकहतहै ईहांहुजपैमेघनकोआइवोबरन
नकरसषीनेसुथदिवाई किमेघनतेरछाजिनकरीहैतासोमिल सोएवेईमेघहैकेसहेनमजोहैराहू
सोईभयोराजातिसकेमानोजोथाहै सोचंद्रमाकोहूंढतफिरतहै कैसजोथाहैतिनकोसरूपबांधतहै च
पलाजोहैबीजुरीताकीचमकनहीहै यहउनकेहथियारनकीचमकहै औरएमोरनहीबोलतहै सैनाके
समाजकेबंदीजनहै औजहांतहांगाजतनहीहै पेउनकेदीरघदमामेकानगारेबाजतहै औदिनमनजो
हैसूरजसोलाजकोलीएडुपेदिषाईनहीदेत लजाइरह्योहै राहकेजोथाजानकेछपरह्योहै जवयहिसुथ

र॰ क॰ टी॰
१०३
103

सषीनेकरवाईकिजिनमेंनैननेइछाकरीतासोमिल सोयहवातजानकेनाइकावोलीकिचल तवसषीकहीच
लि हेचंदमुषीसांवरोजोहैसषाकामित्रतिनकेपासचल वेगकासतावी केसोहैसांवरोसषाजिनकोअरजो
हैसत्रुकौनइंद्रवाकोसुषसाजकावावाकोमनभायोतिसकेसोषकहैंकाहूरकरनवारेहैं अरथकिउनकोमनभ
भायोउनोनैहोननहीदयो तातेदेषएवेहीयनहे अवयवनरूपीजोहैतुरंगघोडेतिनोपरचडचढिकैगग
नआकासविषेचंद्रमाकोचाहतफिरतहे कादेषतफिरतहे औरतूंचंदमुषीहैयातेतूंश्रीकृस्नपासचल
ईहांऔरप्रसंगवरनोमाननमुचावनकोप्रसंगतजकेयातेउपेछ्या वोलनतेमानतछुल्यो रूपकअलंकार सैना
केरूपकते अथश्रीकृस्नकोउपेछ्या उदाहरन कवित्त केसोदासदिनरातकेतकीकीभावैभांतिजीयमे
वसतजाततैननमैंनलनी माधवीकोपीयैमधुस्रूतनअंधकहूंसेवतीसेवनकहीसेईगंधफलनी औरहे
कहनवातकाडूकाहेकोलजातऐसेतोघिसाईसोजुहोइमतमलनी देषहूथौप्रानपतिनिलजअलीकीग
तिमालतीसंमिल्योचाहेलीनेसाथअलनी २२ वार्ता सषीकोवेननाइकप्रति हेप्रानपतिश्रीकृस्नइसनि
लजअलिभ्रमरकीगतिकोदेषहु मालतीसौंमिल्योचाहेलीनेसाथअलिनी ऊपरतोयहअरथकिभो
राभौरीकोराषतहे औमालतीसोमिल्योचाहतहै मालतीमेंसलेष जोतीयमालाकरराषीहैतासौमिलिवा
चाहोहौ औसाथअलनीकोराषोहेयरमैविवाहताहैअरुऔरकोचाहतहै फेरवाभौरामैंबहुतऔगुन
है दिनरातनौजाकोकेतकीकीभांतिसोभाभावतहै औरजाकेजीयमैजातीजुहीकेफूलवसतहे नैननमै

नलनीकमलनीवसतहै औरु माधवीवासंतीकोमधु पीवतहैवा अंथकोकछुनहीसूफत फेरवानैसेव
तीसेवनकोहोइ तीसातनसेई सेवीजाइकेगंध फलनीकाइंद्राइनकेफलकोलता अर्थकि अनेकनसौमी
नकरतहै ऐसेवातेजवकहीनवनाइकलजाने नवसषीनेकह्याहोतोओरहीवातोकहतहों हेकुसल
मकाहेकोलैजातहो औसेतामोविसाइजोपुरषमनमलनीहोइ ऐसेनिलजअलकोविवस्याकोदेषइ
ईहोंभोरकोप्रसंगवरन्योहै यातेउपेछाभई औरुनाइककेलजाइवेमेमानछुटो अन्योक्तिअलेकार
नाइकाकीवारताभोरपरडारकेकही अथप्रसंगविध्वंस मूल दोहरा उ जपरेभेइचित्रषमछूटजा
इजहमान सोप्रसंगविध्वंसकविकेसवदासवषांन २३ वार्ता जहांकिसीभ्रमतेचित्रमैभेइउपजेति
सभेइसौमानछुटजाइ सोप्रसंगविध्वंसकहतहै अथप्रियाकोप्रसंगविध्वंस सवैया केकीनकेस
वकामकेकिंकरवोलतडोलनदेतदुहाई कामनिसायहकामनिकोरिसाइगीतोपरकैहैरिसाई गा
जतिनाहनिमेघछटायहवाजतडोडीसषीसुषदाई भोरभएफिरकोवाअवोलोसुवोलोअवैवलवोलक
हाई २४ सषीकोवेननाइकाप्रति हेप्यारीएकेकीमोरनहीहैकामकेकिंकरकहीऐचाकरवोलतेहै
ताकीडुहाईदेतेफिरतहै कैसीडुहाईदेतहै कियहआजकामकीरात्रहै जोयामेकामनीकोरूपतिसो
रिसाइगीमानकरैगीतिसपरकामकोरिसाईहोइगी यहडुहाईमारदेतहै औरयमेघनकीघटानहीग
रजत यहवाकोढंडोराबाजतहै हेसषीकेसीडोडीहैसुषदाईहै कंचुतीयनकोमानमेषेदहोतहै सोयह

र॰
सं॰ क॰
टी॰
२०४
104

मानकेहरकतावनवारीढोंढीहै यानेसुषदाईकही सोढोंढीयाकहतहै भोरभयेतेतेंअबोलोमानकोफे
रकरी हेवलजाउअबिश्रीकृसनकोवोलोकावुलावो तवनाइकावोली वोलकन्हाई याकन्हाईकृसनको
वुलाऊ यामेमानछूसा ईहांभेदुकोउपजाइकेमानछुडायो यातेप्रसंगविध्वंस रूपकअलंकार ढोंढी
केरूपकने अथश्रीकृसनकोप्रसंगविध्वंस॥ कवित्त कोकनकीकारकाकहतकाहूंसारकासोढुरडुरहि
तचितचौगुनोवढायोहै तकरहीसकुचनवासुरीसुकीनीकेहिकाहूंसोसकेनदेहऊयनदिठायोहै उठच
लोमनायकीजेअवकैमनाइदीजेनीकेहीमेकेसोराइकलहवढायोहै मानतनऐसेपरउलटीमनावैवहि
अैसोईसियानस्यामसुकहयढायोहै २५ वाती सषीकावैननाइकप्रति नाइककीवातेंसुवायेडारकेकह
तहै हेस्यामतुमेअैसोईस्यानसुककोपढायोहै जैसोआपजानतहौमनायेतेनमानवोयह सुवाकैसो
है डरडरिकहीयेरछियछियकेकोकग्रंथकीजेकारकाहैतेकाहूंसारकामेनासोकहतहै अैचितविषै
आपनीइस्त्रीतेचौगुनोप्रहितसनेहवढायोहै जामेजिसने औवासुरीकहीयेगरीवनीजोसुकीइस्त्रीहैता
कीसोसकुचनकरकेसूकरहीहै काहूंसोकहनहीसकत वानेआपुनोसरीरदुषनसोंहढायोहै वाजव
योहै तातेतुमउठकरकेचलोवाकोमनाउकरीऐ तवनाइकनैकह्योअविकैमनाइदेहु तवसषीबोलीहै
केसोराइवानेतोनीकैहीमेकलहक्याकलेसकोवढायोहै इसनेउपरंतवहसुकीवाकोउलटीमनावतहै
सुकनहीमानत सोअैसोइसियानतुमनेसुककोपढायोहै जैसेआपकोआवतहै ईहांसुकीनेदेहदि

लायोसकरहीयामैनाइकनैजानीहमारीप्रियाकीबिवस्थाकही यहसुनभइभयोमतकछुप्राननकोना
कैजाइ नबमानभ्योस्यो यातेप्रसंगबिध्वंस अमोक्तअलंकार अथ सहजेमानमोचन सल दोहरा
देसकालबुधिबचननेकलधुनिकोमलगान सोभासुभसोगंधनेसुषहीछूटतमान २६ वार्ता सु
भदेसकहीयेभलोअस्थान औसुभकालकोभलोसमै बुद्धकेवचन कलधुनिकोसुंदरसबद औकोम
लगान सुभसोभा औरुसुगंधसर्व इननेसहजहीमैमानछूटतहै यहसहलउपाइहैमानमोचन
को जथाकवित्त घननकीघोरसुनिमोरनकोसोरसुनिसुनिसुनिकेसबअलापअलीजनको दाम
नीदमकदेषदीपकीदिपतदेषिसुभसेजदेषदेषिसदनसुबनको कुंकमकीवासघनसारकीसु
वासवङफूलनकीवासमनफूलकेमिलनको हसहसमिलैदोऊअनहीमनायेमानछूटगयोपेके
बारगथकारमनको २७ वार्ता सषीसषीबचन हेसषीआजराधाजीकोऔरमनजोहैश्रीकृस्नजि
नकोपेकहीवारमानछूटगायो इनोनेमेघनकीघोरसुनके औमोरनकोसोरसुनके औअलीजन
जोहैसषीजननितकोअलापगाइनसुनसुनके दामनीकोबीजुरीकोदमकदेषके दीपजोहैदी
पकताकीदीपतसोभादेषके औरुसुभसेजाकेदेषके औसुबनकहीयेस्वरनकोसदनघरदेषके अ
थवासुवनकोसदनकावागकोघरबागहैजामैअैसेघरकोदेषके अथवासुबनघरदोऊनकोदेषके
कुंकमकेसरकीबासनै औघनसारकपूरकीसुबासनै औपुसपनकीवासनै दोऊनकोमनफूलकेका

र॰ स॰ प्रि॰ टी॰ प्रसंनह्वैकैमिलनकोभयो तातेहसहसकेदोऊमिले विनामनाएमानछूटो ईहांविनामनाएमानेयातेस
हलउपारभयो चननकीचोरईहांजोसमैवरषाकोकाल मोरवानीकलध्वनि अलिअलीजनकोईहां
कोमलगान ओवुद्धवचनदोऊआऐ दामनीदमकसुभसोभा सदनसुवनकौनीकेवनकोसंकेत यामें
१०४ देस कुंकमआदिकोवासयांमेसोगंध हेतअलंकार हेतकाजकारनसहत मेघआदिकउदीपनकारन
105 तिननेमानकोछुटवोकारजभयो मूल दोहरा इहविधमानछुडावहीआपसमैनरनार पलपलप्रीतव
ढावहीकेसवदासविचार २८ वार्ता नरपुरषओनारइस्त्रीनेसर्वइसप्रकारआपसमैमानकोछुडावनहै
औविचारकरकेपलपलमैंप्रीतकोवढावनहै मूल दोहरा प्रियानप्रीतमसोकरैअतिहठकेसवदास व
ऊस्योहाथनआवहीजोह्वैजाइउदास २९ वार्ता कविकीसिछा केसवकविकहतहै प्यारीप्रीतमकेसाथ
अत्यंतहठनकरे यामैंहठिकोराषवौहठकीयो किमानविनामनमांननहीहोत तातेहठकोतोकवैपै
अत्यंतहठिकोनकरै क्युंजोअत्यंतहठतेप्रीतमकोमनउदासह्वैजाइ तोफेरहाथनआवै सोयहीप्रयोजन
नकहतहै मूल दोहरा वारहीवारनकीजीएवारिककीजेमान कहिकेसवज्युआपमैसदावढेसमान
वार्ता वारवारमानकोनहीकरीए औऐकवारकरीए त्यागिहूनदीजीऐ क्युंजेसआपमैसदासनमान
आदरवढैतैसेमानकोकरीए जामैंनिरादरह्वैजाइसोनकरीए मूल दोहरा प्रीतविनाभैहोतनहिभै
आदरबढैतैसेमानकोकरीए ...
विनहोइनप्रीत प्रीतरहेयहिभैरहेयहेमानकीरीत ३१ वार्ता प्रीतकेविनाभैनहीहोत औभैविनाप्री
तनहीहोत जहांभैइप्रीतदोऊरहेयहमानकीरीतहै मूल दोहरा गरववचनथनत्यागतेनिष्टरुवक्त

प्रवास लालचविप्रीयकरनतीयपीयतेहोतउदास ३२ वार्ता इनबातनतेनाउकानाइकतेउदासीहैजा स
नहै गरवाअभिमाननते वियसनकाऔरठौरमैवंधिजानो अथवाजुवेते औरुथनकौदैननेकठोरवच
नोते प्रवासविदेसगमनते लालचते विप्रियकरनकहीऐवुरोकरनते इनतेउदासहोतहै मूल दोहरा
मानविरहवरनेविविधजहाविवधवुधवास केसवकरुणाकहिकछुकहीयतिविरहप्रवास ३३ वार्ता
विविधकहीऐबहुनप्रकारकेमेमानविरहवरनेहै जिनमैविवियनीकप्रकारकीवुद्धकोवासहै अ
विकछुकरुनाविरहकहकेप्रवासविरहकहतहै इतिश्रीमनमहाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचिता
यांरसिकप्रियायांमानमोचनवरननंनामदसमोध्यायः १० अथकरुणाविरह मूल दोहरा छूटजा
नकेसवजहासुषकेसभेउपाइ करुनारसउपजततहांआपुनतेअकुलाइ १ मूल दोहरा सुषमेदुषकं
वरनीऐऐबातनविउहार जदपपमेंगहपाइकछुवरनतमतअनुसार २ वार्ता ग्रेथनमैकरुनाविरह
कह्योहैसोरसिकोकरुनाविरहभयोहै जहांमरनमैफिरआसाहोइमिलनकीतौऊहांसोकस्याईनाही
रहतऊहांरतिस्याईहैयातेसिंगाररसकेभेदमैथस्योहैविरहपरकरुणातमकहैयातेकरुणाविरहना
महैयातेईहांलछनकीनो जहांसुषकेसासहूनकेउपाउसर्वछूटजाइयामेध्वनिभई किकठनउपाइ
वनेरहै सोउपाइनकौरहिवोजीवनहीमेहोतहै अरुफेरजिवाइलेनोयहकेसहूनहीहोत परआसारहै
हैकिमिलेगो यातेरतस्याईरहैहै औकरुणारसमेउपाइनाहीहोत यातेयहिकरुणाविरहकोलछ

र॰
स॰ टि॰
टी
१०६
106

नराष्यो करुनारसउपजनतहै याकोअर्थ रसकहीऐविप्रलंभसिंगारतामैंतहांकरुणाविरहहोतहै औ
प्रसंगपाइकरकविनेइननीवातकही सुषमैंदुषनोकुंकरवरननकरैं तदिपप्रसंगतेवुद्धअनुसार कहांक
विनकीवुद्धउकतिजुकतिलीयेहोतहै तेकछुजुकतसौंकरवननकीजीयतिहै सोईहांकरुनाविरहकेकवि
नमैंऔरप्रवासविरहकेकविनमैंयहभिन्नताराषीहै जहांप्रानतजनकीसीवातआवैऔरुदनादिकवली
होइ तहांकरुनाविरहकोउदाहरनजानवो अथप्रियाकोप्रछन्नकरुणाविरह सवैया मैंपठईमनलै
नसषीसुरहीमिलकैंमिलवेकछुआनै जाइमिलैदिनहीदृगहूतदियालसौदेहदसानवषानै प्रेरतपैज
कीऐननप्राननयोगकोऔरुप्रयोगनिदानै लाजतैबोलनपाउनैकेसवऔसहीकोउकहाडुषजानै इ वाको
नाइकामनप्रतिकहतहै हेमनमैंनाइककेलैनकोमनतामासषीपठईऊतीकाभेजीऊतो सोवहउनहीं
सौंमिलकरकैरही अर्थयहकै उलटकेफेरमेरेपासनहींआविमेरेमिलवेकोनाइककोकोनल्यावै औरदि
नहीविषैअथवानिनहीदृगनामाहूतिदियालकृसमोजाइमिलेहै पैमेरीदेहकीदसाअवस्यादिया
लसौनहीकहतहै अवमेरीनननपैजप्रतज्ञाकोकीऐऊपैप्राननकोप्रेरनहे क्याभेजतहै जोगकहू
पेसंजोगकेजेऔरुप्रयोगकहीऐउपाइऊतेतेनिदानेकहीऐघटेहै अर्थकिप्रानहूनिकसकेमिल्यो
चाहतहै औरमैलाजतेवोलननहीपावतहौं अैसेईकहीऐविनावोलेईकोऊमेरेदुषकोकहाजा
ने प्रानतजनकेभावमैंसुषउपाइतेकोछुटिवोफलको औविकलताकेप्रसंगसोरुदनहूजान्यो ॰

याते विरह भयो नैननप्राननकोअंतहै यह करुनाकीरीतभई मनमैंवचयांतेप्रछन्न विसेषोकि
नअलंकार होतनकारजह सषीलेनयठई हगहंनगपेतऊकोजनभयो अथप्रियाकोप्रकासकरु
नाविरह कवित्त हरनहरतहारहेरतहीयोहरतहारीहौंहरननैनीहरनकहूंलहो वनमालीव
जपरवरषतननमालीवनमालीहूरऊषकेसवकैसेसहौ अपवनेघनस्यामघनहोसेहोतघनस्या
मनकेयोसघनस्यामविनकंतुरहो हृदैकमलनैनदेषकेकमलनैनहोइगीकमलनैनओरहूकै
हाकहो ४ वार्ता नारकासषीप्रतिकहतहै हेसषीहरनहरनकहीएहरेहरेजेहारकहीएषे
ननितेताकोहेरनकहीएदेषनेऊपेमेरोहीयाहरयोजातहै हेहरननैनीसषीमैघनननकोढूंडके
हारीहोहरिकुसकोकहूनहीपावत अर्थकिहरेषेतओकुसकेरूपहै इसहेतमेंढूंडेकुसन
हीपाये औवनमालीजोव्रजहेवनकीहेमालापंकतजहो नहावनवालीजोमेघहैसोवर्षतहै
औरुवनमालाकुसहूरहे तोनेमैकेसेडषकोसहो सह्योनहीजात कंघनस्यामनकेदिउस
कहीएमेघनकेदिनमेंघनस्यामविनकंतुरहो केसेनैघनस्याममपघनेकाजलहैघनेजोमेंओरुघन
सघनहै औस्यामहै घनहीसेहोत कहामोकोघनसेहोतहै घनमूंगरानाठनको ताते अविमेहृदै
कोकमलजोहैसोईहैनेत्र तासोकमलनैनकुसकोदेषकेमलनैनीहोइगी कमलनामपानीकोहै
यानीहैनैननमेजाकेअसेहोइगी कहारुदनकरअस्तुकैहै अर्थकिप्रतक्षतोनहीदिषाईदेत ध्यानमे

र·
स·प्रि·
टी·
१०७
107

देषकेरुदनकरहो अथवाहदेकेजोकमलसमनैनहैतिनसौंदेषके औरुमैतोकोकहाकहो ईहाकुहो
अवध्यानथरदेषहीयामेसुषपाइनकोछूटवोफलक्यो औरुदनादिकवरनभयो यातेकरुनाविरह
जासोहरननैनीसेवोयनकैहो सोजानीयेकोऊपरोसनीवहरंगसषीहै यातेप्रकास ईहाजमकाअलं
कार हरननैनीतीनबार कमलनैनीतीनबार औयनइत्यादिजमक अथश्रीकृस्नकोप्रछन्नकरुणा
विरह कवित्त जैसेमिल्योप्रियमअवनमगाजाइमनरवनभवनकीनेअलिकअलकमें मनमिलेमि
लेनैनकेसोदासभविलासविलासछविश्रासमझूलरहेकपोलफलकमें नेनमिल्योमिल्यागयानस
कलसियानसजनतजअभिमानझूल्योतनकीफलकमें तेसेछलबलसाथरायकामिलनकऊचाहत
कीयोपियानप्रानहूंपलकमें ५ वाता नाइकमनप्रतिकहतहै हेमनजैसेतंप्रियमअवनोकेमार
गनाइकाकोजाइकेमिल्योहै सोतैनाइकाकेअलकमसतककीजोअलकजुलफहै तामैंरवनकही
येबिहारकरनकेभवनकीएहै अथवामसतकमैऔअलकनमैंरमनसुंदरभवनकीए अथीकिमन
तोजाइकेतहांहीफस्यो फेरनहीआयो फेरहेमननेरमिलतेजैसेनेत्रजाइमिलेहैकटाछकेसहत सो
वेनेत्रभीमेरेछविकीआसामैंझूलकरकेकपोलफलकमाकपोलकेरूपकीवढनतामेरहेफसनआए
अथवाफलकनामसाढकोतामैंफसरहेहै फेरनैननकेमिलेतेजैसेसकलस्यानकोसजकेकामक
लस्यानकोअपनेसंगलेकेप्यानजाइमिल्योहै सोभीअपनेअभिमानकोतजकेनाइकाकेसरीरकीफ
लकमैंझूलरह्यो सोभीनहीहट्यो तैसेईवाजैसेयेजाइमिलेहैतिसीप्रकारछलवलकरकेअवराय

काके मिलन को मेरे प्रान भी पलक मैं पियान कीयो चाहत हैं सो चल्यो चाहत है रे हां प्रान चल्यो चाहत
है याही मैं सुष उपारन को छूटवो फल को प्रानतजन की वात ते याने करुना विरह मन प्रति वचन ।
याते प्रछन्न इष्टां नाम अलंकार जैसे मन मिल्यो नैसे प्रान मिल्यो चाहत है अथ प्रिया को प्रकास करुना
विरह सवैया है न रुनाई तरंगनि पूर अपूरब षूरव रागरंगे पैर के सब दास जहाज मनोरथ संभ्रम विभ्र
मभूरभरे भर तरकत रंगतरंगत तुंगनि मंगल मूल विसालन केचे कान्हकछू करुना मे रहे है सषि तैही
की एक करुना वरुनालेर ९ वार्ता सषी प्रिया जू सों कहत है हे सषी श्री कृसना कछू करुना मे डूते श्री
ते करुना के वरुनाले समुद्र कीये हैं सो समुद्र को निरवाह करत है तरुनाई जो है जुवा अवस्था सोई
ता मैं तरंगनी नदी है सो तेर प्रेम तें तरुनाई उमगी है समुद्र मैं नहीं उछाह सो है फेर कैसी है पूरक
हीए प्रवाह सो जा के अपूरव है अद्भुत है तरुनाई की फलक सोई प्रवाह नदीन को वेग प्रवाह औ
पूरवा अनुराग के रंगे है रंजत भए है ता इक सोई वह पै जल है अथवा जे पूरवा अनुराग है सो कृत्या अ
नुराग इष्टा अनुराग ऐई जा मैं जल है केसे जल है रंगो सो रंजत है कौं अनुराग को लाल रंग है याते
रंगे हुए जल कहे अथवा विरह की जो तरुनाई है सो प्रवलता है सोई तरंगनी है आगे वही अर्थ औ
रु मनोरथ जे है सोई ता मैं जहाज है औ संभ्रम विभ्रम भै भूरव हुत अर्थ कि मन की विकलता तिन
सो मनोरथ रूपी जहाज भरे है औ रु जे मन मैं तरक उठै है ते ई तरंग है तिन करत रंगत है सो सोभा इमा

र·
स·कु
टी·
१०८
108

नहै केसीनरंगहैनंगऊचीहै श्रौविसालकहीयेवडे मूलनकेजेषेसेहदहैवासमूलसौउठतहैविरह
मैंसोईतिमंगलहैवावडेवडेजलजीवहै श्रेसेनैकरूनाकेसमुद्रकरेहै ईहोवडेवडेउषनकेसमूह
कहनमैंसुषउपाइनकोकुटवोफलवोश्रोकरूनावरूनालेइकीयेयहप्रतच्छहीकह्यो यातेकरू
नाविरह सषीनेकह्योतैहीकीयेयामैंध्वनकिश्रोरनैहीकीयेयहमेजानतहौ श्रेसोयोवोहोफेर
निश्चेश्रायोजाकोसोजानीएवरंगहै यातेप्रकासभयो समुद्रकोरूपकयातेरूपकाश्रलंकार श्र
थप्रवासविरहलच्छन मूल दोहरा केसवकौनहूकाजतेपीयपरदेसहजाइ तासोकहतप्रवा
ससभकेसवकविसमुफाइ ७ वार्ता नाइकके विदेसगएतेप्रवासविरहहोनहै श्रथप्रियाकोप्रवास
प्रच्छन्नविरह सवैया तूंकरिहैकहियौकविगोनहनंदकुमारतौगोनकीयोई मोहमहाउरतूउरको
नरहेलटलैजिनकोपोलीयोई श्रेसीनहूकीएकेसवतोहिविचारेंजुवीचविचारवीयोई तेरेईजीयजी
योजिनकोजीयरेजीयताविनतैवजीयोई ८ वार्ता नाइकोश्रयनेजीयसोकहतहै हेमननंदकुमार
जोश्रीकृस्नहैतिसनैतोगोनकरदीयो तूंतिनकेसंगकवगोनकरैगो श्रोरुमोकोयहवडोडरहै तूं
कदाचितहदैकोलटलैकेवाकठोरतालेकेश्रथवाकमतीकीबातलैकेनरहजाइ कंजुजिसनैकोपोली
योहैकोपोवीजुरीकीचमककहावे सोकदीहोनहैतैसीगतलईहै कवीनिकसवेकोहोनहैकवीश्रजा
नहै यौतेमोकोडरभइयोहै हेजीयजोकोश्रेसीनहीचाहीएहै जोतूंपेकविचारकेवीचवीयोकहीएहू

जोविचारविचारतहै रहिवेको निकसवेहूकोविचारकर कंुजिनकोजीवतेरेईजीवसोंयातेरोईप्रेमसो
जीयोहै हेजीवतिसकूसविनातेजोग्रवजीयोहैसोयहतोकोनचाहीये ईहांगोनकीयोयातेप्रवासविर
ह जीवसोंवचनयांतेप्रछन्न हष्टांतोग्रलंकार कांथेकेहष्टांतते ग्रथप्रियाजकोंप्रकासप्रवासविरह॥
कवित्त कौनकेनप्रीनकोनप्रीतमहविछुरतनतेरेईग्रनोषोपतिहतगाईयतिहै जननकरेहोभलेग्रा
वैहाथकेसोदासग्रोरकहायछिन्नकेपाछेपाईग्रतिहै उठिचलोजोनमानेकाहूकीवलाइजानेमानसेजु
पहिचानैनाकेग्राईग्रतिहै याकेतोहैग्राजहीमिलोकिमरजाउग्रवग्रागलगेमेरीमाईमेहपाईग्रतिहै
४ वार्ता नाइकाकीग्रवस्थादेषकेसषीसषीसोंकहतहैं हेसषीप्रीतकोनकेनहीहोत सर्वहीकेहोतहै
ग्रोप्रीतमसनाइकसोकोनकेनहीविछुरतिसर्वहीविछुरतिहै एकतेरेईविषेग्रनोषोग्रचरजकोपतिहतगा
ईग्रतिहै ग्रथवातेरेईहृदैमेकहीयतिहै पछीभलेजतननहींकीऐसाहाथग्रावतहै ग्रोरकापछीयो
केपाछेदौरीग्रतिहै नहीदौरीयति फेरसषीसोंकह्योजोयहनहीमानत तोयाकेपासतेउठिचलो काहू
कीवलाइजाने जोमानुषकोपहिचानेनाकरईयतिहै याकोकाहूकीपहचाननहीतोयहविचारहै किउ
नसोंग्राजहीमिलो केमरजाऊ सोहेमेरीसषीकहूंग्रागकेलगेभीमेहपाईग्रतिहै नहीपाईग्रति करु
नाविरहमेउपाइनहीहोत ईहांकहियोभलेजतनकोपेहाथग्रावै यातेकरुणाविरहसोंभेदहै ईहांप्रीत
मविछुरननेपछनकेपाछेधाईग्रतिहैइत्यादिकहननेप्रवासविरहजानी उठचलोकहतहै सोनीपव
हरंगहै यातेप्रकास काकोक्तिग्रलंकार मेहमपाईग्रतिहैनपाईग्रतिहै ग्रथनाइकाकोविरहभोसवैया

र
स. प्रि.
टी
१०९
109

कोकलकेकीकुलाहलहूलउठीउरमैमतिकीगतिलूली केसवसीतसुगंधसमीरगयोउड़धीरजज्यौंतन
तूली जैमुनजैमुनकेबचीजोइकीजामनिपैनअजैसुधभूली कंजकेसीकरैविससीवइज्योविस
नीविसवासनफूली १० वार्ता नाइकाकोबचनसषीप्रति हेसषीकोकलाओकेकीजोमोरहैतिनकोकु
लाहलजोहैसब्दतासोमेरेउरविषैहूलसीउठीहै ओरुमनकीगतिलूलीभईहै कायंगुभईहै अरुसीत
लसुगंधतजोसमीरपवनहैतातेमेरोधीरजउडिगयो जैसेतनयोसीतलरुईउड़जातहैहैसे ओहेसषी
जोन्हकहीएचांदनीकीजोहैजामनीरात्रितिसपासतेमैं जैहोइमुनअयसलकीजैहोइमुनअगस्तकीऐसेक
हिकैकाल्हबचीहुती प्रयोजनयहअगस्तनैसमुद्रपीयोहुतो तामेचंद्रमाहूकोपीयोहुतो सोचंद्रमामुनि
कीजैसुनिमंदह्वैगयो नवमैबचीहुती सोकाल्हकीसधिमोकोअवलयनहीभूली हेसषीअबमेकेसजी
योओकेसीकरो फेरविससीविससम विसबासनीविस्वासघातनीविसनीकमलनीप्रफुलनभईहै ईहां
चंद्रमानेओकमलनीनतेभेदभयोहै विरहमै जोकहतहैकैसेजीयो यातेविरहभेद व्याघातअलेकार
अथप्रीछनलकोप्रछन्नप्रवासविरह सवैया जिनबोलसुबोलैअमोलसबैअंगकेलकलोलनमोलली
ए जिनकेचितलालचीलोचनरूपअनूपपियूषसुपीयजीए जिनकेपदकेसवपानछीपेसुषमाने
सवैडषहरुकीए तिनकोसगफूटनहीफिटरेफटेकोटिकटूकभयोनहीए ११ वार्ता नाइकमनप्रति
कहतहै हेमनजिसनाइकानेअमोलवामोलरहतऐसेजोसुबोलकहीएभलेबचनतिनकोबोलक
रकेमेरेसंग्रहरतअंगकेलकलोलनकरकेमोललैलीए ओहेचित्तमेरेलालचीलोचनजिसनाइकाकोअ

नूपकासुंदरजोहैरूपसोईभयोपिऊषसोश्रम्रततिसकोपीयकरकेजीयेहै ओरजिसनाइकाकेचर
नयानसोहाथनसोंछीयेतेसपरसकरेतेहैमननैतैसुरगरगासुषमानेओरदुषसुंदुरगाहूरकरेहै तिसना
इकाकोसंगछुटतहींतहेंजोफटकेकोटिकहूकनभयोतोतोकोफिटहैवाधिरकारहै ईहांसंगछूटतही
नफटोयातेप्रवासविरह मनप्रतिवचननितेप्रछन्न लुप्ताअनुप्रासबोलअमोलइत्यादि अथश्रीकृस्न
कोप्रकासप्रवासविरह सवैया केसवकंहूंचलैचलकोरसंदेसकहैपुनपैडकहूंपर आगेथरेअप
नोसोकैसाहसपाछेहीपैलपरेपगभूपर होतजहींतहींवाढेवगेसेचलोनकह्योपरैकाहूंहितूपर
लोककीलाजफिरयोनपरैयेमिलानकरैदसकोसकेऊपर १२ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीकेसव
जोकृसहेसोप्यारीसोंविछुरकेकिसीप्रकारचलेहैं ऐकपैंडपरचलकरकेफेरपथकनकोकरेदुसंदे
सेकहे ओसाहसथीरजकरकेआगेथरतहै पेलकरकेपरचरनपाछेहीकोपरतहैप्रिथवीपर ओ
जहांनहोवाढेहैजातहै वगेसेजैसेठयोहोतहै तिससम ओकिसीमित्रपरयहवचननहीक
ह्योजात कितउमचलो ओरुलोकनकीलाजैनेफिरयोनहीजातहै येएककोसकेऊपरदसमिला
नकहीयेमुकामकरेहै ईहांप्रवासविरहप्रतच्छहीहै ओसंदेसकहनतेप्रकासभयो हेतअलेका
हेतकाजकारनसहत लोककीलाजकरनफिरयोनपरैयहकारज अथनाइकाकोविरहभेद स
वैया प्रेतकीनारज्यूंतारेअनेकडारचलेचितवैचहूंयाते कोटनसोंककूरैकारकेजनकेसवसेजस

र·
स·त्रि·
टी·
११०
110

वैननमांने भेटनहीबरहीअवहीनौवराइगईहीसुषैसुषसानै कैसीकरौंकहिकेसवंचोवडस्या।
निसआईकीएसुषराने ए वार्ता निसउषदाइआईहैताकोवरननताइककरतहै सषीप्रति हेस
षीरात्रकैसीहै प्रेनकीनारचुरैलताकेसमहै कंुप्रेतकीनारअनेकतारेचढाइकेचलतहै औचारयार
नेचितवतहै औरयहरात्रभीअनेकतारेचढाइचलतहै औमोकोचहूंओरतेचितवतहै यामेअेष ता
रेनेत्रनिकेतारे हजोअर्थनछत्र प्रेतकीनारिकेनेत्रनकेतारेअनेकहोतहै यामेनछत्रअनेकहोत
है फेररात्रकैसीहै कोटनसीहै कोटनकेकरककुरेकियासकुचेहोतहै यामेकमलककुरगए
है नेईकरहैमानो औकोटनकोसंसरणातनसितहोतहै सोयाकोसिततनहै चांदनीसो फेरको
टनतपततनसोहोतहै सोयहतपततनसोहै विरहमैंचांदनीगरमलागतहै सोयहमोको।
बरहीजोरावरीसोभेटतहै सोयहअवहीमेरेमानोसुषनकोसुषेनहीवराइकेकाजराकेगईहुती
सोफेरयहनिसलालमुषकीएआईहै कंुसध्यालालहैसोनिसाकोमुषहै यातेलालमुषकहो
सोमैकैसीकरौ औकैसेवचौ यासौ ईहांहूंमेरभयो यातेविरहभे सातोसुष दोहरा षानपान
सोमैकैसीकरौ औकैसेवचौ यासौ ईहांहूंमेरभयो यातेविरहभे सातोसुषतीअसंग १ प्रेतकीनारजुंया
परयानप्रुनसानगानदुतिअंग सुभसंजोगवियोगविनसातोसुषतीअसंग १ प्रेतकीनारजुंया
मेउपमाअलंकार अथप्रियाजूकीनिंद्रा मूल दोहरा निटसहजसनेहकीजीवजंतकेप्रान पीय
विनवैरनह्वैगईमारनमरमनवान १४ वार्ता मरमनअस्थानकौनसेजिनमेप्रानवसै जयासया

प

आये तें आवैगी औ षन आगे ही डोलत मानहु मोल लई है सो वैन सोवन देउ न ज्युं तब सोवन में उन साथ दई
है मेरी ऐ भल कहा कहो के सब सौतन कहूं तें सहेली भई है सो यही हित है सभ को परदेस गए हरि नींद ग
ई है ५ वार्ता नाइका तें द्राकी बात कहत है सखी प्रति हे सखी अब तें निद्रा जात रही है जब पीय आवैगो त
ब उनके आये तें आवैगी और आषन आगे ही ऐसें फिर है उनके आये मानो मोल लई दासी है सो हे सखी य
ह निद्रा मेरी सौत है क्युं सोवैन सोवन देइ का जब पीय के पास आप सोवै है तब मोको नहीं सोवन देत
क्युं जब मोको पीय के साथ परे निद्रा आवै है तब पीय के पास मैं तो नाहीं वह निद्रा मेरी पीय के पास है औ
हुन ज्युं तब सोवन में अर्थ कि मेरे सोवन में का मेरे मिलन में जब मैं जाग के पीय पास सोऊं मिलो न ज्युं त
ब नहीं है ज्युं कही ऐ पहली भांत तब का तासमें अर्थ जब मैं पीय सों मिलो तब आयन हीं रहत यों त
सौत है सो उस नाइकनें मेरे साथ दई कि नींद को साथ राषी यो ज्युं उघमले सो मैं पीय की बात मान लई सो
मेरी आ चूक जो सहेली कर मानी जेसें न हैं ते कहूं सहेली भई है न भई है तातें जानी जब पीय आई है तब हूं
आइ है यातें सबको हित सनेह सार यही सो है का अपने प्रयोजन ही सो है हेरि परदेस गए तें नींद हूं
जात रही सौत सो रूपक यातें रूपक अलंकार अथ प्रिय की निद्रा सवैया केसव केसहूं कोउ पाइ न आ
नसु तो उरु लागत है चकचौंधत सी चित वै चित में चित सोवन हूं महि जागत है परदेस प्रिया पल मोह प
न्यात न जानें को या की कहा गत है तज नैन नि नींद न वो ढव थूल उ आधिक रात ते भागत है ५ वार्ता ई

होनाइकआपनीनिद्राकोनवोढाकरबरननहैसषीप्रति हेसषीनिद्राकैसीहैअनेकउपाइनसौंकामादिक
नेकह्यानीनेइत्यादिउपाइननेकिसीप्रकारमेरेहृदैकोंआइकेलागतहै यानहीलागत औनवोढाकैसीहैव
हभीअनेकजतननसौंपीयपासआवनहै सषीबीचदीयेसोइत्यादि फेरनीदकैसीहै चकचौंधतसीचितवै
चितमैचित वाजबमैचितविषेचितकहीयेचेतन्नहोऊअर्थकिमैजबजागोतबयहनीदचकचौंधतसीदे
षितहै काअयषुलीओंषनमैंरहेहै अरुनवोढाहूजवपीयचेतन्नहोइहेतबअयषुलीआंषनसौंदेषैहै
अपनीनीदसीजितावतहै फेरनीदकैसीहै सोवनहूमैजागतहै कासोवनविषैभीजागतसीहै काउच
टउचटपरतहै औरनवोढाहूंसोवनविषेसयनमैभेलषकेजागतहै हेसषीप्यारीपरदेसविषेहैयाते
निद्रामोकोयानियातनहीविरहअगनिमैनाजरजाउ सोकौनजानेयाकीकहागतहैकानरहहै नवो
ढाहूस्वरनकेडुषसौंनहीपतिआत कुंजोवनकीअवस्थाहूरहेयाते फेरयहनीदमेरेनैननिकोनज
केआयीकरातहीनेमागजातहै नवोढाभीपियकेअंगनिकोतजकेआयीरातनेमाजतहै नवोढासौं
रूपकयानेरूपकअलंकार जोवनअवस्थाअरुअंगऐऊपरसौंलियेयानेएकदेसवरनी श्रीराधका
कीसषीकीपत्रीश्रीकृस्नसौं कवित्त केसवकुंवरहृषभानकीकुंवरवनदेवताज्युंवनउपवनविह
रतहै कमलाज्युंथिरनरहतकहूंऐकठौरकमलाउजाज्युंकमलनितेडरतहै कालीज्युंनकेत
कीकेफूलरुचैसीताजीज्युंनिसचरमुषचंददेषैहीजरतहै वदनउघारतहीमदनसुजोथनहीआप

तीउंमुनामममुषनेरोईररतहे १९ वार्ता सषीकहतहै हेकेसवकुवरश्रीकृसहृषभानकीजो
कुवरहैश्रीराधाजूसोवनदेवीकेसमानवनोमेश्रीरुउपवनवागनमेविहरतहे क्याफिरतहे
श्रीरुकमलाजोहेलछमीताकेसमऐकठौरुईस्थिरनहीरहत श्रीरुकमलानुजाजोहैविपदा
ताकेसमकमलनितेडरतहे श्रीरुकालीजोहेभवानीताकेसमकेतुकीकेफूलनीकेनहीलाग:
त कालकाकोकेतकीकेफूलनहीचढत श्रीरुसीताजीकीन्याईनिसचरजोचंद्रमाहेताकेमुष
कोदेषनहीजरतहे निसचरचंदनिसामेविचरनवारो श्रीरुनिसचरराछस यहसलेष म
दनक्याकामरूपीजोहेसयोधनक्याउरजोधनसोजववाकेवदनमुषकीउचारतहेतवद्रोपदी
केसमतुमारोईनाममुषतेंरटतहे उलेषअलंकार ऐकनाइकाकोअनेकभांतकह्यो अन्यच
भोरनीजिउभ्रमतरहतबनवीथकानिहंसनीजुंम्रउलअनालकावहतहे हरनीज्युहेरतन
केसरकेकाननहकेकासुनयालीज्युविलानहूरहतहै पियपियरटतरहतचितचातकीज्यु
चंदचितैचकईज्यूचूपहूरहतहे केसवकुवरकान्हविहारेश्रेसीसूरततराधकाकीम्रत गहत
है १८ वार्ता सषीपत्रकामेश्रवस्थालिषतहै हेकृसनाइकाभोरनीकेसमवनकीवीथकाका
गरीनमैभ्रमतरहतहे श्रीरुभडुलकहीऐकोमलजोहेअनालकमलउडीताकोहंसनीकेसमव
हतहैतारडारतहे श्रीरुचितमेचातकीपपीहकीउस्त्रीसमपीयपीयरटतरहतहै श्रीचंद्रमाकोचितेक्यादे

र॰ स॰ प्रि॰ टी॰ ११२

112

षकैचकवीसममोनरहतहै बोलतनही औकेसरकोजोहैकाननवनताकोहरनीमरनीकीन्याइनही
हेरनक्यानहीदेषत केसरमैसलेष केसर औरसेर औकेकोजोहैमोरनकीवानीताकोसुनकेव्या
लीसरयनीसमबिलानिकोक्याषाउनिकोचाहतहै अर्थयहजुमोचाहतहै हेकुवरकान्हमारे
विरहकरिकेअसीयांसुरताकोश्रीराधकाजूकीसुरतगहतहै सायकरतहै भ्रमरीआदिक उले
षाअलंकार अथश्रीकृष्णजूकीयश्रीप्रियासौ कवित्त दीरघदर्सनवसैकेसोदासकेसवीजु केसरकोदे
षवनकरीजुदेपतहै वासरकीसेयानिउलूकजुनचितवतचकवाजुचंदचितैचौगनोचयतहै केका
सुनाव्यालजुविलातजाततयुनस्यामघनैकीघोरनिजवासेजुनपतहै भोराजुभ्रमतवनजोगीजु
जगतरैनसाकतजुस्यामनामतेरोईजपतहै १९ वार्त्ता सषीकृष्णकीतरफतेपत्रीलिषतहै हेराधे
तेरेबिरहकरिकेश्रीकृष्णकेसरीसिंघकेसमदीरघवडीदर्सनमैकंदरनिमेबसतहै श्रीकेसरकेव
नकोदेषकेकरीसाहसनीताकेसमकांपतहै केसरीकेहैअर्थसेर औरुकेसर औरुवासरसा
दिनकीजोसंपदाहैताकोउलूकपंछीकेसमनहीचितवतसानहीदेषत औरुचंद्रमाकोचितैका
हीएदेषकैचकवाकेसमचौगुनोचयतहैसाउषीहोतहै चौगुनेकोअर्थ ऐकतोविरहकोदुष्ष दू
जेचंदउद्दीपन तीजेचंदर्देषमुषकोसिमरन चौथेचांदनीतेविलासकेअस्थानदीसतहै चकवेमे
चौगुनोदुष्ष ऐकतोविछुरे हूजेरातदिनसौदीसतहै मिलवेकोसीघ्रहोतहै तीजेचकवीनजर

आवै चौथे चांदनी उद्दीपन और केकामोर बानी को सुनके कमल व्याल सरप समविलात है छपत है और
चंनो की ओर तें जीव जवासे सम मजरत हैं और फूवन मैं भौर सम फिरत हैं जोगी सम मैंन जागत है साकत भ
वानी को मंत्र कन तोके सम कोस तेरो ई नाम रटत है श्लेष अलंकार दोहरा केसव दाप्रवासको कह्यो जथाम
त साज राधा हरि बाधा हरबरनो सषी समाज २० इति श्री मन्महाराजकुमार श्री इंद्रजीत विरचितायां रस
कप्रियायां करुना और प्रबास विरह बरननं नाम एकादसो अध्यायः ११ अथ सषीजन बरननं मूल दोहरा
धाइ जनी नाइन नटी प्रगट परो सन नारि मालनि बरइन सिलपनी चुरहेरनी सुनारि ३ टीका नटी
नटनी विरइन तंबोरनी सिलपनी चितेरी चुरहेरनी चूरी पहरावनवारी मूल दोहरा रामजनी संन्या
सनी पटु पटुवा की बाल केसव नाइक नाइका सषी करैं सब काल २ वार्ता रामजनी भगतनी इनको
देयत सषी करत है और जो चाहना बिना सनेह करे सुष दुष में एक सो सुभाइ रहै समान उमर की होइ
मन की या वैसा म षी कहि श्री राधा जू सौ याइके वचन सवैया मोहन साथ कह्यो न सदियो सरहे सत
रंजहीके मिस बैठी केसव जो सुन है मढ़ि तारी तो राषहैरी चरही मरहि पैगी होसि षऊ सुष दे सघि तोहि
तै भोह चढाइ केडीठ अमैठी को नल दै तीसरू पन का पै तु ही कछ जात अकास हि ऐंठी २ वार्ता स
षी नाइका सो कहत है हे राधे तू मोहन कमल के संग रात दिन सतरंजही के बहाने आवै गी रहत है यह
बात जो तेरी मा ता सुनैगी तौ तो को घर ही मे बैठी राषेगी और मैं तो को सुष दै के सिच्छा सिषावत हो

र. क. टी. श्रौरुमैनेनेरेयरमोहेचढाइकेहहश्रमेठीहे क्याकूरकरीहे सोकहूंतकोनलाडलीनहीहे सखहीलाडली
है श्रौरुकोनपैसरूपनहीहे सर्वहीपैसरूपहे परतूहीकछूश्राकासमैश्रेठीकहिऐवक्रभईजानहे श्रर्थ
यहहनतोगरवश्राछोनहीं लडैतीपदतैयाइजानीऐ लाडयाइहीकेहोतहे याते पारजाजोकनश्रलंकार
११३ सतरंजकेमिसदेषवोइहसाधतहे श्रौरुसमोयाइकेवचन कवित्त योरीसीसुदेसवैसदीरयनइनकेस
113 गोरीजूसीगोरीमोरीभवजूकीसारीसी सोचेसीढारीयतिसूछमसुढारकटिकेसोराइश्रंगश्रंगभाइकेउता
रीसी सोंथेकीसीसोंधीदेहसुधासोसुधारीपांइधारीदेवलोकतेकिसिंधतेउधारीसी श्राजयासोहसषेलवो
लचाललेङलालकाल्हश्रैसीगुवाललियोऊकामकीकुमारीसी ४ वारता सषीनाइकसोकहतहे यहनाइका
केसीहे योरीवासूछमहै पदमनीहे श्रौसीसुदेसवेस वाजाकीवैसउमरकीजोहेसीसोभासोसुदेसकर
हिऐसुंदरहे श्रौरुजाकेकेसश्रौनेत्रसोदीरघश्रावडेहैं श्रौरुयहजोहेगोरीइस्त्रीसोगोरीपारवतीकेसमभो
रीहे पारवतीकेजीमैमाननही श्रौरुभवजोहेमहादेवतिनकीसारीकहिऐसालीसीहे श्रर्थयहपारवती
कीवहनसीहे श्रौरुयाकीश्रांखनसूछमजोसुढारकटिहेसोसांचेमैढारीसीहे श्रौरुश्रंगश्रंगमैभाइकैकाष
रादकरिकैउतारीसीहे श्रौरुयाकीदेहसोंथेकेसमानसुगंधतहे फेरकैसीहे मानोयहसुधाश्रंम्रतसोसुधारी
पे रचीहे श्रथवादेवलोकतेश्राईहे श्रपछ्छराहे श्रथवा समुद्रतेनिकासीहे लछ्मीसीहे हेलालश्रा
जतोयासोहसषेललेङ श्रौरुबोलचाललेङ काल्हमीयाकोश्रैसीयेल्यावोगीवनाइकरकै जैसीश्राजहे

कामदेवकीकुमारीपुत्रीसीवनाईकेल्यावेंगी कुमारीपदनेथाइजानिये उपमालेकार अथजनीको
वचनप्रियासो कवित्त साभाकोसघनवनमेरोघनस्याम निननइनईरुचननहेरनहिराईऐ केसोदा
ससकलसुवासकोनिवासकरिविविधविलासहासत्रासविसराईऐ ऊषरसकेतकमऊषरसमीठोहे
पिऊषहूकीपेलीचाहेजाकीनियईऐ चोराचोरीनैननिचराऐसुषकौनजोलौपियमनमाहिमनमे
लनचराईऐ ५ वार्ता सषीनाईकासोकहतहे हेराधमेरोघनस्यामजोहैकुसमाकेसोहे साभाकोस
घनवनहे तिनकेतनकोजोनईनईरुचकहीयेकांतहेताकोहेरनहीसादेषतहीहिराईऐहे साषोयोजा
ईयतहे वनमेमीनईनईकांतहोतहे फेरकुसकेसोहे संपूरनसुगंथकोघरहे तिनसोनविविधक
रिऐअनेकहासविलासनिकोकरि औरुउनकोजोविरहअगनिकोहैत्रासमेइताकौविसराईऐकियह
रकसिऐ औरुवनमेभीसुगंधेहोतहे अगनिकोडरभीहोतहे फेरजिसनाइककीनियराईसाजाकोपा
सअैसामीठोहे वाकेआगेऊषकोरसकितनोकमीठोहे औमयूषचंद्रमाकीकिरनकोकितनोकरसमी
ठोहे औरुपिऊषजोहैअंब्रतताकीभीपेलीचहे किअपरलीतरफहे जाकीमिष्ठता अथयहअंब्रतते
हिष्टहे सोअैससोभाकेवनमेअपनेनैनरूपीम्रगनिकोनचोयचोरीचरावतहेसोयामेनोकोसुषनही
हीहे जौलगताईरइननेत्राकोपियाकेमनमेमेलकेनाचराईऐतोलगताईकौनसुषहे अथयहकुस
कयासचल नियराईवदनग्नितेजनीजानीये यासरहिवोजनीकोधरमहे पयाइअलंकार एककुस

र.
क.
टी.
११४
114

मेंअनेकरसगंथे अथजनीकोवचनकृस्नको कवित्त ऐसीवातैऐसेहीपरतजाकीमतिगतिलाज
पाटसौंलपेटीहै मेरेहीनआवैमेरीवीरऐतीवेरवेतोजानतहोयाईहीकेसाथलोटलेटीहै ऐसीतो
हैचेरिनिकीचेरीवाकीकेसोराउजैसीतुमहाहाकरिपांइपरभेटीहै जानतहौनंदजूकेवेटाहोजूजा
नोवोलवेऊनोउतहव्रषभानजूकीवेटीहै ९ वार्ता कहूश्रीकृस्नवेककह्योहोसखीसोतूमोकोराधाजू
कोमिलाव तवसखीकहतहै [illegible] हेहरिऐसीनिलजताकीवातमोतेऐसेईक्याहूलेमिलविनावासो
केसेकहीजातहै नहीकहीजात राधाजूकेसीहै जिसकीमतिकीगतलाजरूपीपाटकावस्त्रतासो
लपेटीहै औरूवहतोइकामेरेभीनहीआवत औरूमेरीजोहैवीरवहतताकेभीनहीआवत ऐतीवेरकु
हिएइतनीवारभीनहीआवतजितनीवारतुमेवारताकरैतेवीतीहै वहतोअपनीयाईहीकेसाथभली
प्रकारमिलीहुईहै हेकेसोराइश्रीकृस्नजैसीतुमनेहाहाकरिकेऔरूपाइनपरिकेटीहै ऐसीतोवाकी
चेरयोकीचेरीहै मैजानतहौतुमनंदकेपुत्रहै जानेबोल क्यातुमवोलेवोजनोविचारकरिकहो वह
भीतोउथरव्रषभानराजाकीपुत्रीहै वासोनिलजवातकैसेकहीजाइ चेरीकेदृष्टांततेचेरीजानीए रूप
कअलंकार लाजयाटमे नाइनकोवचनप्रियासो सवैया अवहीतोगएपुनफेरुहूलोनविलोकत
जाहुरीपाछेहीलागे करिहोतवकेसीपगएजुठोरहूकेहैकछूनिसदियोसकेजागे जोनरह्योपरकेके
सवकेसहूदेषतहीतुमस्यामसभागे देतहौजानक्योराषतकाहेनऐरसीएकरिआषनिआगे ७

वार्ता सषीनाइकासैांकहतहै हेराधेएकवारतोकृस्नतेरेपासआइकेफेरपोरतांईभीनहीगए. तृतिनको
पाछेहीलगीवुलावनजातहै औरुजवपरापेपुत्रकोवातदिनकेजागनेकरिकेकछुरोगहेजैहेतवतसाक
वेगौ औरुउनकेविनाजोतेतेनेकिसीप्रकारनहीरह्योजाततैासामससभागकोअपनेदेषतेईकियोजानदेतहै
आरसीपेकरिकेआषनआगेकियोनहीराषतहे ईहाआरसीपदतेनाइनजानीए नाइनकोवचनश्रीकृ
स्प्रस्न सवैया वडीजियलाजवडोडरआलीवडीलडुरीयौचलेचितलीने वडीवडीआंषवडीछविसोचितवे
वडीवेरवडोसुषदीने वडेहीविचारवडीरुचकेसवकियोहूमिलेतोमिलेहमहीने वडीनहूसौतोवडेदुष।
वोलेइतेवडेमानवडोमनकीने ८ वार्ता हेहरिवाकोमिलवोकवनहै कंप्रथमतोवाकेजियमैवडीलाज
है औरुवडोडरहैजाकोआलीसषीआको अयथयहसर्वसषीभेराषतहै फेरलडूरीकहीएयो।
रीअवस्थाहै तामैवडीहै योंकहिए याप्रकारचित्रकौलीनेचलतहै औरुवडीवडीजाकीआंष
है फेरवडीछविकेसहतहै औरुवहवडोसुषदिएतेभीवडीदेरमैचितवैहैसोदेषतहै औरुवडे
जेहैविचारतिनमैवडीहैरुचचाहनाजाकी वहकिसीप्रकारजोमिलेतोहमहीकोमिलेकेससवा
रकेसमैफेरजेवडीहैतिनहूसोवडेदुष्षसोवोलतहै साधारननहीवोलत इतनेवडेमानसोकाग
रवसोवडोमनिकिएहूएहै नाइनप्रगटहीहै वडीवडेपदतेलाटानुप्रास नटीवचनप्रियासो
सवैया जोहोदिषावनतोहगईरीतेमेरीऐग्रीवगहीफिरिमाई आजकहादिषसायलगीहैदिखाऊ

र॰
क॰
टी॰
११५
115

गीजाइतौवेईकन्हाई देषतसीरीहैजाजभटूअनदेषेजरेतुयहैअथकाई रातकीवेगतदियोसकीयेअ
वहीतेतेरीबाततिवाजहआई ५ वार्ता सषीकोबैननाइकासो कहूनाइकानेप्रथमकह्योतेमोकोना
इकुकोदिषाव तवसषीकहतहै हेराधेजोमेतोकोश्रीकृस्नकोदिषावनकोकाल्हउनकेसंमुषलैगई
हुती तैनेफेरमेरीयोग्रीवगहीपकरीकृस्नकोनादेष्यो मेरेपाछेडुरगई सोआजतोकोफेरदिषसाथ
कहियेदेषवेकीइछासालगीहै अवभीजामेजाइकेदिषावोगीतोवोईकृस्नहे जेकाल्हतैदेषेहुते हे
भटूतंउनकेदेषेतेसीरीहैकेवासीतलहैकेजातहै तहावहरततनही फेरअनदेषेतैंजरतहै यहतेरे
मेअधिकताहै रातकीतोतेरीवहगतहुती जोदिषावनगयेमेरेपाछेछिपीथी दिनकीयहगतहै
जोकहतहैदिषउ अवमेतेरीबाततेबाजआई अर्थयहमेतेरीबातमेनहीपरत गतपद्नेनदीजानीए॥
लोकोक्तिअलंकार तेरीबाततेंबाजआईयाते श्रीकृस्नसोनटीकेवचन कवित्त जहीजहीउवैतही
जोतुअैसीजगमगैवैकैसेहूजोकेसवडुराऊलिएरंगकी पवनकेपथअलिअलिनिकेपीछेअलीअल
नीज्योलागीरहेजिन्हेसाधसंगकी तिपदअमिलवहतमैमिलवैकीजककेसेकैमिलाऊगतमोपैनवि
हंगकी येकतोडुसरहुषदेतहुतीडुतिहूजेवीसविसेविसवासभईवाकेअंगकी १ वार्ता कहूनाइकने
कह्योहोतनाइकाकोमिलाव तवसषीकहतहै हेहदिवहतोनाइकाअैसेरंगकीहै मेतिसकोलिएहुए

कैसेंडुगंऊकाछिपकू वहतोजहांजहांडुरतहैंकाछिपनहै तहांतहांजोनंदचांदनीकेसमगनगामगातहै औ
रुवाकेअंगकोलगिकेजोपवनआवतहैउसपवनकेमारगतोभ्रमरलगजातहै सुगंधतेफेरतिनभ्रमरनिके
पीछेअलीजेहैसषीसोअलनीभ्रमरीनिकेसमलागीरहतहै कौनसीजिनकेवाकेवाकेसंगकीसाधकाइछा
है यातेवहकौननिपटअसंनअमिलहै मिलनेकीलाइकनहीहै औरहतुमकोमिलवेकीउकलगीहै अढी
लगीहै वारवारकहतहौमिलाउ सोमैकैसेकरिकेमिलाऊ मेरेपासतोविहंगकापंछीकीगतनही
आवत जोआकासमारगकोलेआऊ ऐकतोवाकीदेहकीदुतिकासोभासोडुसहकउनइषकोदेतडुती
हसदेवीसविसेविसकेसमानवाकेअंगकीवाससुगंधभईहै यातेनिपटअमिलहै गनिपदतेनटीज्ञानी
ये विपरीतअलंकार जोतनकीसुगंधपियकोमिलावतडुतीसोईवाधकभई परोसनीकोवचनराधका
सो सवैया पाइपरेपलकापरसोसुलगीरतितोलनिमेलरतीहै सोहैकिऐमुहसोहौकियोअवलोत
मपेगतऐसीननीहै केसवकेसहूदेषनिकोजिनेभोरहीभोरीह्वैआनंदनीहै यानषवावतहीतिनसोतु
मरानकहासनरातहतीहै ॥ वार्ता सषीकोवैननाइकासे: हेप्यारीतैनाइककोपलकाजोहैपलंगसोपा
इपरेनेपरसियो औरहअपनीजोहैरतिप्रीततासोनाइककीरतिमेलकेतोलनिलगी उनसोकहनलगीह
मारीप्रीतअधिकहै औरहजबनाइकनेसोकरीतवतैंअपनोमुषनाइककेसनमुषकीयो हेतोइस्त्रीऐसी
गतिकाऐसीनरहअबनाईनेरेपासनऊनीअवहीभईहै औरहजिसनाइककेकिसीप्रकारदेषनेकोनभो

र. कु. टी. रहीनेक्या सबै रहीने भोरी हुकेकेक्या सरवचनराईछोडकेमोको आनंदती हो काप्रसन्नकरदीयी तिसना
इक सौतनरान मैयाननिके षवावनही कहासनरातहुती अर्थयह। क्या क्रोधकरतहुती पाननाइकेने
कहू अन्नेनाइकाको षवाये हुते सोवातसुयआईयाते क्रोधभयो रानकीवातपरोसनहूसुननतहै याते
११६ परोसनी भिन्नतअलंकार पारषाए यानननिकी सुयआई याते परोसनीको वचनकूलसों कवित्त
116 हासीमैवातिकवासौकहीहसवेहू कह्यो सुहितेअवदेष्यो ओषमिलीनमिलीनमिली सषियां मिलवो
ईसुके सबकियो करिलेष्यो चिचियां रमरेजुयसाधे किचान्हक स्नानसमै हीसवै सुविसेष्यो आजहीकि
घोवह आवनह्यां जिन आगलगे रूनयोगनि देष्यो १२ वार्ता कहूनाइकनेकह्यो होतूनाइकाको मिलाव
नेरे सोहकेवानीकहतहुती नबसषीकहतहै हेस्याम मैतो हासीमैवासो एकवारताकहीहुती उसनेर
भीमोसोहसकरिके एकबचनकह्यो सोतुमानेयामैहितसनेहही अवदेष्यो कहिपेजाननलियो सोमो।
को आषनिकरिकैनहीमिली औरुसषीयांकरिकेनहीमिली तुमनेवाकोमिलनो कैसेकरिकैजान्यो हे
कुसचात्रकजो है पपीहा सो चिचारकेवासे सारकरिकेमरो अथवा मानकरिरहो पैमेघवाकेमुषमे हूंदको स।
ननछत्रहीकेसमैमेअवैगो कावरसावैगो अर्थयहसमैहीपाइकेवहमिलहै आजहीवहईहाकेसे आवत
है जिसने अगानिकेलगेभी आगननहीदेष्यो आगनकीवारताकहिवेते यदैसनीजानीये विसेषोक्त
अलंकार आगकोलगवौ आगनदेषवेको कारनहै तौभी आगनकोलषवो कारजनहीभयो मालनिको

वचनप्रियासौ कवित्त दुरैहैकियोभूषनवसनदुतिजोवनकीदेहहूकीजोतिदियोमहोतम्रैमीरागहै
नाहकोसुवासलागेहूहैकैसीकेसवसुभावहीकीवासभौरुभीरफारेषातहै देषतेरीमूरतकीमूरत
विसूरतहौलालनिकेदृगदेषवेकोललचातहै चलहैकियोचंदमुषीकुचनिकेभारभएकचनिकेभा
रतौलचककदिजातहै १२ वार्ता सषीनाइकासौकहतहै हेपियारीतेरीदेहहीकीजोतितेंरातदिनसी
होतहै जवतूभूषनवसनपहरेगीतवकैसेदुरहेगौछिपहैं औरुतेरीसुभावहीकीजोहैवाससुगंधतित
सतेभौरुनिकीभीरतोकोफारेषातहै साकोटतहै औरुजवनाइककोसुवासतेरेअंगमेलगैगोतव
कोजानेकैसीहूहै हेप्यारीतेरीमूरतकीजोहैसूरतसोंदरजता ताकोदेषकेमैविसूरतहौ सासोचत
हौ औरुलालनितानाइककेदृगतेरेदेषवेकोललचाइरहेहै हेचंदमुषीतेरीकदकमरकचजोहैवारनि
नकेभारभएईसोलचकजातहै जवकुचनिकोभारहोइगोतवतूकैसेचलैगी सुवासपदतेमालनीजा
नीऐ अभूतउपमाअलंकार सहजसुगंधतेभ्रमरगुंजतहै नाहिकेसुवासलगेकहाजानेकहाहोइगो
मालनीकोवचनश्रीकृस्नसौ सवैया येरोजिनमोहबरजानदेऊयनस्यामचरीकमैलागीउरदेषवीजि
योदामनी होइकोऊअसीवेसीआवैइतउनहूकैवेऊव्रषभानजूकीवेटीगजगामनी आदिनकोअइओ
अंतआवैवौवनवलजाउआवतहैवेऊवनीआईअरुजामनी कामकेडरनितमकुंजगह्योकेसोसाइभौरनि
केभेइउनभौनगह्योभामनी १३ वार्ता सषीनाइकसौकहतहै नाइकयेरकेकहनलगेतेवायाकोमि

र. क. टी. ११७
117

लाव तवसषीनेकह्योहैघनस्यामश्रीकृस्नमोकोमनचोरोघरकोजानदेऊ वहनाइकाघरीकैमेंतुमारे
उरकोदामनीवीजरीकेसमलागीदेषवीकादेषीऐगी श्रीरुजोकोऊश्रेसीवैसीहोइकानूनहोइतो
इनउनह्वैकैदिवसहीमेचलीवै वहतोव्रषभानराजाकीपुत्रीहै श्रीरुगजगामनीहै हस्तीकीगत
समजाकीमंदमंदगतहै वहसीघ्रकैसेश्रावै हेहरिश्रादितजोहैसूरजताकोश्रंतश्रायोहै हेबलजाउ
तुमबनकरिकेवासिंगारनिकोकरिकेश्रावो श्ररुवहभीबनीठनीश्रावतहै यामेमेरीजामनीश्राई
जोनाश्रावै तुमनेतोकामकेडरनसोनयकुंजकोपकस्योहै कैसोकुंजहै हेकेसोश्रीकृस्न रायभोरा
निकेवाभौरुनिकेहैराजजामे श्रर्थयहजामेभौरुगुंजारकरतहै श्रीरुउसभामनीनेक्याउत्तीनेमे
इसोभवनकोयकस्योहै सुवासवरनतितेमालिनजाती घनस्यामनामसाभिप्राइहैयातेयरक
रश्रलेकार वरइनकोवचनराधकासो कविन मेनश्रैसोमनग्रउग्रउलमृनालकाकेसूतकी
सीसुरधुनिमनहिहरतहै दास्योकेसेवीजदंतपातसेश्ररुनश्रोवकेसोदासेदेषद्रगश्रानंदभरे
तहै ऐसीमेरीतेरीमाहभावतभलाईयातेहुकतहोतोहिश्रोरुहुकतडरतहै माषनसीजीभमु
षकंजसोकुवरकहिकावसीकठेठीवातेकैसेनिकरतहैं॥५॥टीका सषीकोवचननाइकासो है
कुवरतेरोमनमैनकामोमताकेसमग्रउकोमलहै श्रीरुश्रनालकाजोहैकमलडंडीतिसके
सूतनसीवातिसकेतारतिसीतेरेसुरोकीकोमलधुनिहै केसीहै मनकोहरतहै श्रीरुदा

स्योजो है अनारसाके बीजनि मैं नेरे दंत हैं औ हू अरुन जो है तेरे ओठ सो नपे पानसे हैं जिनको
देषके हू गआनंद सो प्रान होत हैं हे मेरी प्यारी मोको तेरी भलाई भावत है याते मैं तो को स्तुत
हो और जे सषी है सो तो को पक्कनी ऊई डरत है तेरी माषन सी तो कोमल जीभ है औ कृ कै जक
मल सो कोमल तेरो मुष है कऊ न काठ सी कठेठी कहीं ऐकर डी बातें कै से निकसत है इनके।
निकसवे को कारन कोई नहीं दिषाई देत पान पान अरुनाई कहिवे तैं नेवोरनि जानी ए उपमा अ
लंकार वरनइन को वचन श्रीकृस्न को कवित नैननि निवावौ नेक अति ही अनीत करैं जानत
मनु मजे से हू जजानी यति है चंचल चरित्र चित्र चेटक चटकला वौ चोर के चितनि अभिसार सो
षियति है ऐकनि के पैठे उर उर फउ रोजनि मै उर के ते के सो राइ के सेत जियत है ऐसी कहू होत है
जु वालनि के चोर चोर मन मन मथ ही के हाथ वे चियति है १९ वार्ता सषी नाइक सो कहत है हे
कृस्न तुम नैक कहिये रती कअ पनै नैननि को निवावौ को ऐ अत्यंत ही अनीत करत है जैसे
पे हू जमै कपट के घर यर चित्त के हरन वारे जानीयत है सेन्तु मरन को नहीं जानत है फेर नैत्र के
से है चंचल है औ कृ जिनके चरित्र चित्र को चटक कहिये सौ छ्रही चेटक जाहू लगाइ देत है फेर
कैसे हैं चित्रनि को चुराइ करि के तिन को अभिसार का सार पीय लेत है फेर ऐकनि के तो उरो।

र० कं० टी० ११८ 118

जकुचनिमेउरफकरिकेउरमेयेठतहै सोजिनमैउरफेहैतेउरुकैसेजतियतहै नहीतजिय
तहै हेहरिश्रैसीभीकहूहोतहै जोवालनिकेकासुगधानाइकानिकेमनचुराइचुराइकेम
नमथकामदेवकेहाथतुमवेचतहो सोयहनचाहीये कोमनमथनवारोहै ताहीपेमन
वेचेनचाहीऐ यानवेचनमैनेवारनिचेटककैरेहै यातेनेवारनी रूपकश्रलंकार नैनरति
कोचारनिसोरूपक श्रथमिलपनीकोवचनराधकासो सवैया श्रवहीपुनवोलरीवोल
लगीजकयोरहूलौउवजाननदीने मेरेईजानभईउलटीसभकेसवहेकहिवेकऊकीने
जोपैइतोउषयावनहोजलफेहगमीनमनोजलहीने तोकतछाउतहोछिनऐकरहोकि
नचित्रज्योहाथहीलीने १० वार्ता सषीनाइकासोकहतहै हेपियारीतोकोश्रवहीयहजकलगी
है किफेरवुलाउरी फेरमिलाउरीयहमोकोकहतहै सोतेनाइकापोहतोरैभीउवकेजाननहीदिए
है सोमेरेजानेतोउलटीहूकेसवश्रीकृलकेवसभईहै वेनाइकतोतेकहिवेहूकोवसकीनेहै श्रर्थ
यहनाइकवसनहीभए उलटीतेवसह्वैगईहै हेप्यारीजोतेनाइककेविछुरेइतनोउषयावतहै श्रौ
हनेहेहगतरफतहैकैसेमानोजलहीनमीनहै तोतिनकोऐकछिनभीकियोछाउतहो चित्रकीसा
ईहाथहीमेलिऐकियोनहीराषत चित्रपदनेमिलपनी उतप्रेक्षाश्रलंकार श्रथमिलपनीकोव

वनश्रीहृसमैसो सवैया षांटतुरीजिमछूटरहोगाहिठौरहुठौरहनिजानेननजाहू लाजनश्रावतमारैसभा
ननेलागेश्रलोककेताजनेनाहू कोरविचारविचारहुकेसवदेषहुश्रफसभेरहितकाहू नेहहीकेफिरला
गहूसंगननैननहिकोसंगश्रोरहुनिवाहू १८ वार्ता सषीकोवचननाइकसो देहगिषांटतुरीजोहेश्रडेलषोरा
नाकीन्याईतुमछूटकिनारोगहरहनहो कापकररहतहो श्रर्थयहइस्त्रीयनिकोदिष्योकरनहो छूटछूटे
कोभीनामहै श्रेषपरहै फेरठौरहुठौरमैश्रडतेहो लाजानेनहीजानहो श्रपघरजानेजानहो श्रोरुस
भाकेजननतुमकोमारतहै पेतुमैलाजनहीश्रावत नाहूपरश्रलोकनिंदाकेनाजनेजोहेकोरडेसोभीलागत
हे तौभीलाजनही श्रोरुमारवेनेनिरादरकरवोलच्छनासोजानीये हेकेसवहृसनतुमकोरकहीपेकरोव
विचारनिकोविचारो श्रोरुसर्वजेहेहितमित्रजिनकोपूछकरिकेदेषो जोमैकहनहोसोईवारतानीकीहै को
नसी इसवाननैफिरकेनेहहीकेसंगलागो श्रोरुनैननिकेसंगलागनतुरनोयहश्रोरुनिवाहूनही षांटतुरी
चित्रकोघोरायानेमिलपनीजानीपे उपमाश्रलंकार षांटतुरीकीउपमानेचुरहेरनिकोवचनप्रियासो कविन
मनमननमिलेकहांमिलहैमिलेकोसुषमिलहूयोदेषहोवुलाइकाहूवालसो भूलपरेभोरहनहीवांधहो।
कितेकदिनवांधौवलजाऊवनमालीवनमालसो मुहमोरेमारेनमरतगिसकेसारइमारहूयोमरेकहेक
मलसनालसो नैननिहीविहसविहसकोलोवोलहोजुकवहूतोवोलीऐविहसमुषलालसो १९ वार्ता
सषीकोवैननाइकासो हेप्यारीतुमनहीमनमेहृसकोमिलनहै सोयानेनोकोसाक्षातमिलेकोसुषमि

र.
क.
टी.
१२५
119

लहै क्योनहींमिलहै तुन्नारककोकिसीवालासोंअपनेपासबुलाइकरकेऐकैवारमिलकेभीतोदेष ओरु
मलयरहेतेतिनकोनेओहतहीसोकितनेकरिनबांधहै हेवलजाउजोतोकौवांधनेईहै तोवनमालीकुस
कोवनमालासोंबांध ओरतेउनकोमुहमोरकेयामुहकोछिपाइकेमारतहै सोयामेंतेरीरिसनहीमरत
जोतैमारनेईहैतोमेरेकहेतेसनालकानालसहतजोकमलहैतासोंमार जोतेरीरिसमरे ओरतेनाइक
सोंतैननहीसोंविहसविहसकेकोलगनाईवोलेगी कवहूतोमुषसोंभीवोलीयेनाइककेसाथहसकरवके
हूरीपहरनमेमुहमोरवेकोभावहोतहै हूरीपहरतहैमुहमोरतहेसोउरहेरनकहतहै मुहमोरवेकामा
रतहैकमलसनालसोंमार सभावोक्तिअलंकार मुहमोरवोसुभावबरन्योयाते अथउरहेरनकोवच
नकुसमो सवैया आपनहूजेदुषीदुषजाकेहोताहिकहाकवहूदुषदीजे जोविनओरसुहाइनकेस
वताहिसुहाइसुतोसमकीजे भागवडेजुरचोतुमसोंवहतोविरचाइकहोकहालीजे जोरिसजाइतोजे
ऐमनावनतातोदेहूयसिराइनपीजे २० वातो सषीनाइकप्रतिकहतहै हेकुसजिसनाइकाकेउष
नेआपनकहीऐतमदुषीहोतहै तिसनाइकाकोकाकवहूदुषदीजोअतिहै अर्थकिनहीदीजोय।
ति ओरुजिसकेविनातमकोओरुकछूनहीसुहातकहीऐनीकोनहीलागतहै हेकेसवकुसमतिस
नाइकाकोजोसुहाइकैहीयेभलोलागेसोसरवकरीये ओरुतुमारेवडेभागहैजोवहनाइकातुमसोर
चीहै वाकोविरचाइकाउषीकरकेकहालेहुगे जोवहरिसजाइकामानसेजुगतिहैजाइतवतोवाको।

मनावनभीजाइए औरजोहूगाधमानोतोहीहोउतौवाकोमिराइकहीएसीतलकरकेनापीजेसीतलही
करकेपीजीए अर्थकिजविनाइकारतलाइकहोउतबहीरतकीजीए जोलोनहोउतौलोनाकीजे
हरीपहरावनमेंसुहातहरीपहरावतहैसोईवचनकहतहै तातिसुहाइसुतोसभकीजे हमहूंसुहाव
तहीपहरावतहै यामेछेकाहेरन काकोक्तिअलंकार दुषदीजेनदीजे अथसुनारिकोवचननायका
सो मूल सवैया लोलअमोलकटाछकलोलअलोलकसोपटआलिकेफेरे पानपसोंअतिपैने
रसालविसालवनेमनभावतेमेरे केसवचीकनेचोगुनेचोषचितैकेभएहरिग्याइनचेरे सोचसंकोच
नश्रीरतिरोचनथीरजमोचनलोचननेरे २१ वार्ता सषीकोवचननाइकाप्रति हेप्यारीऐसेतेरेनेत्रहे॥
कैसेहेलोलचंचलहे औरुजिनकेकटाछनकेकलोलजोहेतरंगसोअमोलहे औअलोलकनासोका
थीरजसोआलिजोहेसषीताकोपटवस्त्रकरकेवाओटदैकेफेरकहांचलाएफेरकैसेहेपानपयाविकेस
हतहे यातेअत्यंततीछनहे औरसाल्नकारसभरेहैं विसालवडेहै औफेरकैसेहेमेरेमनकोभावतेबनेहे
फेरकैसेहेचीकनेहैवासनेहसंजुगतहेऔचोगुनेचोषहे सासुष्टहे फेरकैसेहेएकतोपानपसोपैन
हेहूजेरसालहैतीजेविसालहे चोथेचीकनेहे यातेचोगुनेचोषेहे इनकोदेषकेजोहरिदासभएहैतो
यामेन्याइहीहे कछूअचरजनही फेरजिनकोसोचविचारसंकोचलाजसोनहीहे औश्रीरतजेरुह
सातिनकोरोचनकहीएरुचेहे ऐसेधीरजकेमोचनहूरकनवारेतेरेनेत्रहे अमोलआभूषनसंग्याहेयाते

र॰ स्तनारिनजांनीये छुमाअनुप्रासअलंकार लोलअमोल इत्यादि सहसे अथस्तनारन कोवचनग्रीकृस
क॰ सौं कवित्त हासीमेंहसेतेहरिहरैकैफुकतमनुहरकेहसतहेरहोएअनुरागीहे प्रेमकीपहेलीगूढ
टी॰ जाननजनावतहीआजअधिरातकलोमेरेसंगजागीहे अविलोज्युधीरथरौतैसेदिनहेकओरुधरोमि
रथरतुमनेकोवडभागीहे भावतीतिहारीवहकाल्हहीतेकेसोराइकामकीकथानकछुकानदेनला
१२० 120 गीहे २२ वार्ता नाइकनैसषीसोकहूंकयोतंमोकोनाइकाकोमिलाउ तवसषीकहतहे हेहरिवासौं
जोकुछहासीमेहसीयतिहेवामनुजाषकरीयनिहे तवहरेफुकतहेवाथोरोषिकतहे ओमनुहारकी
पेतेवामनायेतेहसयरतहे॰ कंतुमकोहेरकेसादेषकेअनुरागसहतिभईहे ओरुजेगूढक्रियीकुई
प्रेमकीपहेलीहेतिनकोआयभीजानतहेवासमकृतहे ओरतकोभीजनावतहे आजआधीरात्रयरज
तमेरेसंगाविषेयाप्रकारजागीहे हेगिरधरिकृसजैसेअवनाईधीरजथरयोहैं असेहीदेकदिनओरुधी
रजकोथारो तुमातेओरवडेभागवारोकौनहे अर्थकिकोऊनहो वहवाजाकोतुममिल्योचाहतहोवहतिहा
रीभावतीनाइकाकाल्हहीतेकोमकीकथानमैअथवाकामकीकथानकोकछुथोरोसोकानदैनलागीहे
वासुननलागीहे स्तनारिनकेअविथकोकामवद्धतहोतहे याहीतेकहतहेदेकदिनाओरुधीरथरो या
तेस्तनारिनकोवचन छुम्याअनुप्रास॰हसेतेहरिहेरहीये काल्हहीतेकामकथाइत्यादिक रामजनी
कोवचनराधासो कवित्त कोमलअचलवोतोअमलपेतिछचलमलिननलिननवनीतकेसेपातहे

सुधेसाधसुद्धवेनोकुटलकरमऐतोकेसबपरमचोरपरमकिरातहै पाइहैपकरतवपाइहैनकैसेहूं
तूंप्योरोइवलातऐतोअतिइवलातहै वरजतकुंनहींहोकवकीकहतमेरेमोहनकेमनतेरेनेनछै
छैजातहै २३ वार्ता सषीनाइकाप्रतिकहतहै हेराधकेतूंअपनेनेननकोकुंनहीवरजतमैं
तोकौकवकीकहतिहों ऐतेरेनेत्रमेरेमोहनकेमनकोछैछैजातहै मोहनकोमनइनकेसंग
तेकदाचिनऔसोईनहेजाइयातेंअपनेनैननकोवरज वेकसकैसेहैं कोमलहैं अचलहै
अमलहै औतेरेनेत्रकैसेहैतीछ्नहैचलकाचंचलहै औमलिनहैनवीनजोनीलोनलिनक
मलहैतिसकेपातसेहै फेरनाइककेसेहैसाधुहैसुद्धहै ऐतेरेनेत्रकैसेहैकुटिलकरमहैजिनके
औपरमचोरहैपरमकिरातहैभीलहै कुंअरहूमनकोलेतहैयाते जवनाइकइननेत्रनकोपकरपा
इहैकापकरलेहुगेतवतूंइनकोकिसीप्रकारनपावैगी फेरतेरेनेत्रकैसेहैतूंतोप्यारोइवलातहै का
वक्रहोतहै ऐतेनेत्रअत्यंतइवलातहै वक्रहोतहैवरजेहूंतेभीनहीरहतहै सुधेसाधुसुद्धिसाधुपद
कीवडपाईकरतहै कुटलचोरकीनिंदाकरतहैयातेरामजनी क्रमअलंकार कोमलअचलअम
लतैसेऊहांतीनतीछनचंचलमलनि अथरामजनीकोवचनश्रीकृसंसों सवैया कोनहूंतोषक
हाभयोकेसवकामनिकोरिकसोहितठाटे रंचनमाधसथेसुषकीविन्तुराधकाआधिकलोचनडाटे
कुंवसिसीनलवासकरेमुषजोरभषीघनसारकेसाठे लालचहाथरहेहजनायपेप्यासवुझाइनऔस

र॰ क॰ टी॰ १२२ 121

केचाटे २४ वार्त्ता सषीकोवचननाइकाप्रति हेकेसवकहूंसकाहूंतोषकेलीएतुमनेंकोटकामनीयांसोजो
हितसनेहठव्योकीयोतोकहांभयो तोषसंतोषकोनांम राधाजूकेआधकलोचनकेडारेविनासाटेषे
विनारंचकसायोरीभीसुषकीसाथइकानहीसधेगी कहोतोषरजोहेषरीजोकाहूंनेषनसारकपूरके
साटेवदेलेयाईसोवहषरीमुषमेसीतलवासकंहकरेगीकधरसम हेरजनायतुमारेहाथलालचहीरे
हनहे अथवातुमलालचकेहाथरहेहो येआसकेचाटेतेप्यासनहीवुझति इहांहूंसाधुतोषपदतेरा
मजनीभगतनोजानीये अन्योक्तिअलंकार प्यासनवुझेयोसकेचाटेतेयहअन्योक्ति दृष्टांतभीहे अ
थसंन्यासनीकोवचनप्रियासो मूल कवित्त नकुंदहेछुडाएजवकरहोयोकेसीनवकेसोदासअन्या
सत्रासमुषभागहे षेलमूलजाइगोज्जुढाइगोनचित्रचेतकछुनवसाइगोरीरैनदिनजागहे तातेतेन
पनहूनीसीरेतेसहमगुनीउपजपरैगीऐसीअनुपमआगहे अेउसोअेडाइजिनअेचलउउतिओलतओ
उतिहोकाहूकीजुडीवउठिलागहे २५ वार्त्ता सषीकोवचननाइकाप्रति हेप्यारीराधकामैनेरेआ
गेओलीओउनहों क्याफोलीपसारतहो अेउसोक्याअभिमांनसोअथवावकनाईसोमनाअेडाइ ते
रोअंचरमुषकोउडतहे यातेकाहूकीदृष्टलागजाइगी तवतोमेअेसोएकअग्निउपजरैगी जवव
हअग्निअथवाउठिलगीहुईनहीछुडाएतेंछुटेगीतवतूकेसीकरैगी अथवामेकेसीकरोगीफेर
तासमेमेतेरीप्यासमुषअतिआसविनाप्रयासहोमागजाइगी फेरयहषेलतोकोमूलजाइगो तेरोचित्र

सीतलनहीहोइगो चेततंचितमैचेतन्नहींहोइ फेरतेरोकछुबसनहींचलैगो रैनदिनजागैगीनिद्राजातरहे
गी तातेजतननकीऐतेहनीनपतहोइगी सोरेसीतलउपचारकीऐतेसहसगुनीअनंतगुनीहोइगी ऐसी
अनूपमउपमानेरहतआनिउपजपरैगी ईहांइरजतोकेदेषतेनाइकानाइककोदेषचेष्टाकरनहेतवस
बीभमसीवरजतहेकोअबचेष्टाकरवेकोअवकासनहीसषीप्रीतज्ञानजेहैं रैनदिनजागवोकहतहे
भूषप्यासकोजेवोकहतहेयातेसंन्यासनीज्ञानीऐ सुभावोक्तिअलंकार अंउसोअैउग्न्यादिसुभावव
नन अथसंन्यासनीकोवचनश्रीकृस्नहे कवित्त सीतलहूहीनलभतिहारेनवसनवहतुमनतजततित
ताकोउरनायगेह आपनोसुहीरासोपराऐहाथहूजनाथदैकैतोअकाथसाथमैनअैसोमनलेह ऐते
परकेसोराइनुमैनप्रवाहिवाहिवहेजकलागीभागीभूषसुषसत्यागेह माडोमुहडाउियोछिनछल
निछवीलेलालअैसीतोगवारनसोतुमहीनिवाहोनेह २९ वार्ता ईहांव्याजउसततिअलंकार जव
तोनाइककीउसतितिकहै नवनाइकाकीनिंदाकहै जवनाइकाकीउस्तुतकहैतवनाइककीनिंदाक
है सोपहलेनाइककीउस्तुतकोओनाइकाकीनिंदाकोअर्थ सषीनाइकप्रतिकहतहै हेहरितुमारोसी
तलहृदैहैवहतुमादेसीतलहूहीनलमैनहीवसन अैसीथोरीहै फेरतुमकैसैमिलेहो वाकोउरहृ
देजोतापकोगेहघरहैताकोतिलभरहूनहीतजहै तुमअैसेवाकेउपस्थानमैरहतहो फेरतुमकैसेहो
अपनोजोहीरासोजीवहैसोपराऐहाथदेकरकेवाकोमोमसमानजोमनहैसोलीयो यातेयहकामतुमनै
अकाथकीयोहृथाकीयोईहासिक्षमैवडियाईसीहै यातेउस्तुतनहीहै फेरतुमकैसेगंभीरहोऐतेपरभी

र.
क.
टी.
१२२
122

तुमैंप्रवाहनहीवामनकीजोअमोलदीयोहै औरुवाहिनाइकाकोवहेजकलागीहैजोमेरोमनगयोहैअै
सीतुछहै यासौंमूषभागगईहैगेहकोसुषमूलगयोहै फेरतुमकैसेहो मांड्योमुह वाकोमुषमेंइति
कीयोकेसरआदिकसो उनछांड्योछिनछलन उनछिनभोछलननहीत्याग्यो भाजगईहै तोअैसी
गवारनसोनेहनिवाहोसोतोतुमहीनिवाहो यहिभलाईतुमहीमेंहै एकतोयहअर्थ अबहजोवाजा
मैनाइकाकोउस्तुतिनाइककीनिंदा कहतहैसषीनाइकसौंतुमसीतलहीअहौ काहूकेसुषदुषकीजा
नत सोअैसेहूहीयमेवहनहीवसतहै कोवहतोवसतहैतुमहीनहीवसावत एकतोअैसोहीअहैता
हूमैनहीवसावतहौवाको अरुवहतुमकोतिलभरयोरोभीनहीतजतहै ताकोउरकेसोहैउरवाकोता
पगेहहै जाकोतुमारेमिलनकीचाहसोतपतसदारहतहै औरुतुमकैसेहो आपनोकहीपैतुमारो
जीवजोहै हीराअर्थकठोरजानीपे ऐतेपरपराएहाथअन्यनाइकाकेसहै सोअपनेमनुऔरकेहाथ
देकेऔरुयाकोमनलेतहौयाकोमनकैसोहै अकाथकाजाकीकथनीतहीकहीजाइ अैसोभालोमो
मसोकोमलनहै फेरपैतपरवीतुमकोवाकीप्रवाहनही अैसेकठोरहौ ऐतेपरसोकिजानतहौवाके
उरमोविनतापगेहहै मनवाकोम्हदुहै यहजाननहौतोभीवाकीसुधनहीलेत अैसेवेपरवाहहौ
औवाहवहेजकलागीहै वहेजकसोतुमजोसीतलहीयमैंनहीवसावतुसोऊपरकहआपेहेसोवाह
वहेजकलागीहैकहूहौअमैवसावे कैसीजकलागीजोसुषदुषसभमूलेहैजामे औफेरकैसेहोमा
ड्योवाकोमंडतमहजोहैसोछाडकेचलेगाये पैछितछलनछाड्योयांतेजानीअैसीतोगवारनसोवाअै

सीगवारपन्योसौतुमदीपैनेहूनिबैहेकहानगिनबैहे ईहांभूषण्यासह्लुषदुषभागेकहेयातेसंन्यिामनी
जानीपे आजेउल्लतअलंकारप्रगटहै अथपदइनकोबचनप्रियासौ मूल सवैया याहीकोमेरीगु
साइनमैपहिलेमिलईवनीयांछलछैलो बातेमिलैअषीयांमिलईसषीयानकीआंषनपारकेअैलो आं
षलैगेमनलागरहेमनलेकुंमिलैवगहेहमगेलो मिलेमनमाईकहाकरहौंमुहहीकेमिलेनेकीयो
मनमेलो २७ वार्ता नाइकासोंसषीकहतहै हेमेरीगुसाइनसांमनीछैलोजोनाइकहैतासौंचलकरकेमे
नेवानन्नसौंनहेपहिलेयाहीकोमिलाईहुतीकिमेरेसाथमुहमेलोकरे फेरवातेमिलोइकेअषीयांनिसोमे
मिलाई कैसेसषीयानकीआंषनमेअैलोओटपाइके उनकीआंषैवचाइके आगेआंषनकेलगेतेमनभी
लागरहेगो अवमनकोहंआयमिलाइलेइ हमगेलमारगपकरनहै हेमाईमनमिलापेतेतूकाजा नि
नो कहाकरै मुहहीकेमिलेतेनेहमसोमनमेलोकीयोहै अैलोओटपारवौबटवेकोकहतहै डोरावदकौ
यातेयटइनजांनीपे विषमाअलंकार इहांकेउदमतेअनिष्टहोइ मेमिलाईकिमासौंउलटोमेलोमनकीयो
अथपदइनकोवचनश्रीकृष्णसौ मूल सवैया वाम्हगनेनीजुंओरनहीजुलगावतहौमुहअसेनहूजैसे
नेईसीसुनियीनरहोइनोकेसवकैसेहूहाथनछूजै आपुगीरागुनजोसिषवैतऊकाकनकोकिलज्योक
लकूजै सुंदरस्यामविरामकरौकछुओवकीसाथनआंमलीष्ठजै २८ वार्ता सषीनाइकसोंकहतहै
हेकृष्णऔरनाइकानिकोजोतुमवाम्हगनेनीसमसुहलगावतेहौसोअैसेनहूजीऐ हेकेसवजोपीनरसोंने
ईसीहोइतौभीवाकोकिसप्रिकारहाथसोंनपकरीये औरकाकवेजहूपआपसरस्वतीगुनसिषावेतोभीका

र. क. टी. १२३ 123

ककोकलाकीन्याईकलसंुदरसवदकोनहीकुजनक्रावोलन देसुंदरसिश्रामकुसलतमविरामक्राबिश्राम
करो श्रोबकीसाथरक्काश्रावलीसौनहीघ्रीहोन गुननामडेराकोयातेपटयन व्यतरेकाश्रलंकार श्रो
बलीमै मूल दोहरा नैनबैनमुषसैनकरिकहेसषिनकेमरम केसवकहोकछकुअविनिनकेकोवि
दकरम २५ वार्ता मरमकाभेद इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचतायांरसकप्रियायांसषी
जनवरननंनामद्वादशोध्यायः १२ अथसषीजनकरमवरननं मूल दोहरा सिछाबिनैमनाइवोमि
लवहकरहसिंगार कछुकश्रहदेहउराहनोपेमिनकेव्युहार १ सुगम अथराधकाकोसिछा मूल सवै
या नाऊलगेमुहसौनदहेंदिननाहीलगेउषदेहदहैगो नाहीश्रवैसुषदेतिहेकेसवनाहसदासुषदेत
रहेगो नाहीनेनाहीरीनाहीमलाईभलीसबनाहहीनेजुकहेगो नाहिसोनेहनिवाइवलाइलियोनाही
सौनेहकहानिबहैगो २ वार्ता नाइकानाहीनाहीकरतहैताकोसषीसिछादेतहै हेराधकेनाहनाइक
जोनेरसुषलगैतौतहेदिनप्रतिसौनननिकोटहैगी काजरावेगी श्रोरनाहीकेलगेतेकामिलेनतेरीदेहको
दुषदहैगो श्रोरयहनाहीनोतोकोश्रवहीसुषदेतहै नाहिसदासुषदेइगो नेरीभलाईइसनाहीसोनही
है जोकोऊभलीकहेगोसनाहहीनेभलीकहैगो योनेहेनेरीवलाइलियोतेनाहसोनेहनिवाहु श्रोना
हीसोनेहनेरोकहांलोनिबहैगो सिछाप्रगटहीहै विलाइलियाकहनहेयोनेथाइकीसिछाजांनीऐ व्य
नरेकाश्रलंकार मूल कवित अथश्रीकुसलजीकीसिछा कुंकमउवटकुमकुंमाकेन्हवाइजलसोधौसि
दलाइयाहिल्यापेकहारामसमैं चेदनचढाइफूलफूलपहिराइभूलवेहीकाजश्राजमाजकीनीहैमका

समै केसवकष्टरष्टरकाहेकोषवावौंपानजोपमनमगनहैंअैसेईविलासमै वाहनमनावोहरिहाहाकरिया
इपरसबहीसुवासबसैंजाकेमुषवासमे ३ वार्ता सषीनाइकाप्रतिकहतिहै हेहरिकुंकुमजोकेसरहै
ताकोउवटनोकरकेअोकुंमकुमाग्रुलाबकेजलमौनुवाइकरकेयाकोरासमंडलमेकहांल्यायेहो यह
ईहांकेल्याइवेमाफकनहीं अोरुचंदनचढाइकरकेफूलेफूलपहराइकरकेतुमनेमलकेयहनाइका
अोजमाजकरकेवेहीकाजकहीऐहयाहीप्रकासमेकरीहै अोरुयाकोकष्टरसोष्टरकेकाहेकोपानषवा
नहो जोतुमारोअैसेईविलासमेमनमगनहैंइसोविलासकोचाहनेहो तोतुमहाहाकरकेपाइपरके
वाहीकोकंचुनहीमनावते मनावो जाकेमुषवासमेसकलसुगंधवसतहै मुषवासकेवरननतेजनी
कीसिछाजांनीऐवाहराधाकोमनावो यहसिछा विसेषोक्तिअलंकार कारनसवहोइकारजसिधनहो
इ ईहांकुंकमआदिकारनभयोपरिनाइकानिकारजसिद्धनभयो अथराधाकोविनय मूल सवैया
अैसेहीकंचुपहैरहहोसषिहोसहिहोसनचाहटसौलो कंसरहैमिलवेविननोहतऊमिलहैमिलऐरि
नजोलो केसवकोरकरोउपचारमिलेकोकहामिलहैसुषतोलो देषयोअगनआरसीलैमिलहैयी
यसोमनहीमनकोलो ४ वार्ता नाइकासोसषीकहतिहै हेराधकेतेरेक्रोधकेभेइकरकेमैयाहीतरह
आगेकोकंचुपहैरहोगी जैसेअविअथवायाछेचुपहैरहीहो मैतेरेसोवासेकरोसनरादताईसहोगी
सनराहटकहीऐषोटेवचन मेरेकहेनेतोतंमिलतनहीहै येतोकोमिलेविनाकेसेसहैगो तोभीतेअे

र॰
क॰प्रि
टी॰
१२४
124

कोमिलैगी पैंजौलगएदिनजोवनकेहैंतौलगमिल करोरउथाचारकंतुनकरो मनहीमनमिलेतेमि
लेकोसुषकहामिलहे निमिलहैंजौलौअंगनकरनमिलीऐतौलौ औअपनेअंगनकोआरसीलेकर
कैतौदेषमुषनेअ्नमैचाहलगरहीहैंमिलवेकी सोतूमनहीमनमेंकौलगपीयकोमिलैगी हौंतेरोस
नराहटसहोंगीयहीविनय आरसीपदतैंनाउनकीविनयजानी काकोक्ति अलंकार मिलवेकोसुष
मिलहैनमिलहे अथश्रीकृसकोविनय कवित्त कंजकेसेफूलनेनदारियोसेदसनअैनलालसेअ
यरहासमसुधासौसुधाल्योहे बेनीपिकबेनीकोत्रिवेनीसीबनाईबीरवारसौंवारीककरहाकोकरहाल्यो
हे कीनेकुचअमलकलपतरुकेसेफूलकेसेदास्यौतेविधसुगथविचास्यो देख्योनगुपालसषिमेरीको
रमीरसमभसोनेतैसवारमनमेनमोसवास्योहे ५ वार्ता सषीकोबचननाइकप्रति हेहरिजाकेनेअकम
लनकेफूलनसमहे औअैनतिअेदाटमअनारसेदसनदेतहैजोके औलालजवारहोतहैतिनसेअध
रहे औजाकोहासमसुधाअमृतसोसुधाल्योहैकावयोहैब्रह्माने औपिकपिकवैनीकोवेनीवावरसोत्रि
बेनीजोहैगंगाजमुनासरस्वतीतिनकेसमहैकाहेतेहैस्यामहेलालहै औवारसीवारीककरहाकवा
कमरताकोकरकेहाल्योहै ब्रह्मा औनिरमलपनरुमेजाकेकुचकीएहै औयावारताते ब्रह्मासुगध
कामुरषविचास्योहैमे मेरोसषीकोसरीरतुमानेनहीदेष्योदेष्योहे काकोक्ति विथब्रह्मानेसवरन
सोसवारकेफेरमनमेनमोमसोकोमलरच्योहै मेनसोमनककह्यायामेविनयताकही व्यासउस्तान

अलंकार सोमसोमननिंदामिसउक्ति अथराधकाकोमनाइवो मूल सवैया रीफरिफाइफरोषनकां
करही मुषदेषदिषाइमाही वोलनआऐअवोलीभईअवकेसवअसीहमैनसहांही मैवहूतेवहरा
ईहै सौसीरीतहवहरावतसोहहयाही यौंहीसियानसदाचलहैहरिसोंहसहांकरैसोहीसोंनाही ९
वार्ता नाइकासोंसषीकहततहै हेराधकेतैआपऊरोषामेंफाककरकेंओनाइककोमुषदेषकरकेरीय
रहीहै औअयनमुषकोदिषाइकेंनाइककोरिफाइरहीहैं अवमेंतोकोवुलावनआईहो सोतंवुलावन
आऐनेअवोलीभईहै क्यावोननहीहै सोतेरीऐसीवातेमोकोसंदनहीलगतहै औरुमैनेरोसीवहूतव
हराईकाठगीहै तूमोकोंहयाहीवगतहै सोयाहीप्रकारतेरोसदास्यियानचलेगोनहीचलेगो जोतूहरि
सौंतोहसकेहांकरतहै औमेरेईसोनाहीकरतहै यहस्यियाननचलैगो मोहीसोंहांकरनाहीमनकरयही
मनाइवो विभावनापंचमीविरुधसौंकारजहोइरीफरीफसौनाहीउपजी अथफूलकोमनाइवो मूल स
वैया भूषनभेदवनाइकेकेसवफूलवनाइवनाइकेवागे भागवढाइसुहागसवढाइकैरागवढाइहीऐअ
नुरागे पाइनलागनसोंथोंसचढावतपानषवावनहीनिसजागे काहूचलोउठिवैठकहामनभूसपराइयो
वहूसनलागे ७ वार्ता सषीकोवचननाइकप्रति हेकेसववानारकाकेअगनमेंभूषनोकोवनाइकरके
औफूलनकोवनाइके औवागेवनाइकै औभागवढाइकरके औसुहागकोवढाइकरके रागप्रेमअथवा
गाइनविद्याकोवढाइकेहीऐमेवाकेअनुरागेवासनेहसहतिभऐ पाइनकोलागतेऊऐसोथेकोचढावतेऊऐ

र॰
क॰ प्रि॰
टी॰
१२५
125

पाननकोघवरावनेहुऐसेवनिसामैंवाकेसंगजागेहौं सोअविमानकरकेकहांबैठरहेहो उठिचलो कुंपराऐ
मनकोमूसकेवाघासकेअवरूसनलागेहोयहजोगनही मनाइवोप्रगटहीहै वनाइबनाइमेलाटाअनुप्रास
अथराधकाकोमिलन मूल कवित्त जोहौगनोश्रीगुनतितौतेगनेगुनिगनजोहौगनेगुनतौतेश्रीगुन
केगनमैं केसोदासअैसीप्रीनछिपावतछलनमैंजैसेछिनछविछूटजातछपैघनमैं भारीहैनिठुरनि
सभादोकीभआवनीमैंसोकोंवमैघनजाकोपीयवसेवनमैं वैठेतेउठावेउठिचलेतेमचलरहेसोईप्यारीकुं
नकहेजोईतेरेमनमै ८ वार्ता नाइकासोसषीकहतहै हेप्यारीजोमैकृस्नकेश्रीगुनोकोगनतहोंतौतूउनके
गुनोकोगनवासंहहताकोगननतहै जोमैउनकेगुनगननतहौंतौतूश्रीगुनोकेगनसमूहमैहोतहै सोतेउन
छलोंमेप्रीतकोअैसेछिपावतहैजैसेछिनछविवीजुरीछिनकमैछुटकेवाप्रकासकरकैघनमेघमेंछि
पैजानहै वाछिपहीजातहै अथवाछिपेतेजातरहतहै छिनकप्रीतकोप्रकासकेछिपाइलेतहै औ
भारीभयावनीजोभादोकीनिठुरकठोररातहैतामैसोइस्त्रीघनेकुंवसेजाकोपीयवनमेवसे अथवातूवडी
कठोरहै जोघरमैबैठरहीहै हेतीयजोमैवैठजातहौंतौतूमोकोउठावतहैकिचलकृस्नपास जोमैउठकैच
लतहौंतौतूमचलवानहीचलतबैठरहतहै हेपियारीसोईवातौतूकुंनहीकहतजोतेरेमनमैहै ईहासषी
लैनआईहै सोनाइकाविलाससकरतहै मोननहींकुंमोनमैगुनकोगनवोनहीहोत यातेमिलवोहीहै
दृष्टातालंकार जैसेवीजुरीछपैयहदृष्टांत अथकृस्नकोमिलवो मूल कवित्त सिषैहारीसषीडरपा
इहारीकोदंबनीदामनीदिषाइहारीदिसअथरातकी फुंकिफुंकिहारीरतिमारमारहारीमोमारहारीफकफो

रतित्रिविधगतवानकी दई निरदई दई वाहकाहे ऐसी मनजारतजुरेनदिन दाह ऐसे गातकी केसेहू न
मानेहौं मनाइहारी केसो बाइ बोलहारी कोकलाबलाइहारी चातकी ॥ ९ वार्ता सषी को बचन नाइक प्रति हे
केसो राइ वा नाइका को सषी जे हैं ने सिछा दे करके हारी है औ का देवनी जो मेघमाला है सो भी डराइहारी औ
दिसा विषे आधी रात की जो बीजुरी है सो भी आपने रूप को दिषाइ के हारी अथवा सषी ही सिछा दै के मेघमा
ला सो डराइ के दामनी दिषाइ के हार गई वाने मान न छाड्यो रति प्रीत सो भी षिफषिफ के हारी मारका
मदेव सो मार मार के हार्‍यो औ त्रिविधि तीन प्रकार की जो बात पौन की गत है सीतल मंद सुगंध सो फकफो
रती का फट के दिरीडुई हारी हे सषी दई परमेसर ने ऐसी जो है निरदई वा कठोर ता सो वा नाइका को काहे
को दई जिसने का रज हू न सर्‍यो आगे या में ऐसी कठोरताई ती जो सो तन को सुष मान को तज के भी हर करती ॥
सो अविवह निरदै रता भी है तऊ मान नही त्यागयो औ मन क्याबुद्ध सो भी वा को जरावत है रैन दिन मैं दाह सो तऊ
नही जरत ऐसे कठोर गात की नाइका है सो वह किसी प्रकार नही मानत मैं भी मनाइ ना हारी औ कोकिला
भी बोल कही ऐ बुलाइ हारी चातकी पपीहे की इस्त्री सो भी बुलाइ हारी पैवाने मान न हीन त्यो याते तुम ही
मिलो यह मिलाइवो बिसेषोक्ति अलंकार यो सर्व कारन मान छुडावन के हैं पै मान न छूट्यो याते अथ श्री
राधा को जु को सिंगार ॥ मूल सवैया दीनो मै पाइ कावाद महावर आंजी मैं अंजन आंष सुहाई भूषन भूषनकी
नेमै के सब माल मनोहर मै पहिराई दरपन लै अवदी यत देष सषी सब अंग सिंगार सिंधाई बंक विलोकन औ

स. कलेयानधवावेकोकान्हकुमारकीम्यान् १० वार्ता सषीनाइकासोंकहहतेहे हेप्यारीतेरे पांइनकोमेरुचाइकें
क. रकेंक्यामांजकरके महावरलगायो अरुमेंनेरीसुहाई सुंदरजोहे औषसो अंजनकरकेंआजीक्यारंगी औ
टी. रम्भूषनभूषतक्यासोभाइमानकीए अथीयहियहिराए औमनोहरक्यासुंदरजोहेमाला सोमेंतेरेगल
विषेयहराई अवहेप्यारीतेरे सर्वअंगमेंजोसिंगारकीसियाईकहीएसियताहे तिसकीदीपतकोक्यासोभा
१२६ कोसुंदरयपालेकेदेष औरतोसरवसिंगारमेरचेअववंकबिलोकनसेंअंकक्यागोदीमेंलेकेश्रीक्रस्नकी
126 न्याईतोकोयानकोनषवाए यहवाततोवेईकरेंगे सिंगारकरमप्रगटहीहे समअलंकार जथाजोगकेसं
गते पाइमहावरइन्यादमे अथश्रीक्रस्नकोसिंगार॥ मूल सवैया पागवनीअरुवागोवन्योयटुवापटु
कीकटराकटनीको सोयोवन्याअतिचारुचढावतहारवन्योंउरभावतोजीको वीरावन्योमुषषाजमनोहर
मोहसिंगारलग्योसभफीको मालमलीवियजोलोगुपालकीयोउहवालवनाइनटीको ११ वार्ता सषीना
इकासोंकहतहे हेहरियागभीतुमारेसिरयरवनीहे औरवागोवन्योहे औवटुवावन्योहे औपटकाओ
रसूयोसुगंधचढावतेहुऐअनंतसुंदरवन्योहे ग्रिषसाथेमेंतोसुगंधहुतोयेईहेजेगानकीसुगंधमिल्यो॥
औमनभावतोहारउरमेंबन्यो औहेमनोहरमुषमेंषातेहुऐवीरावन्योहे येमीकोसिंगारसर्वतमारे
फीकोलग्योहे जुजोलगहेगुपालतुमारेभालक्यामस्तकमेंउसवालबाइस्त्रीनेंवनाइकेटीकोनही
कस्योहेतौलग याकोभावयहिटीकोतुमकरतहोंअयनेयरसुथारवहदेनही सिंगारप्रगटहीहेउहांइ

समग्रलंकारहारउरमेंबीराग्रधरमे अथश्रीराधकाकोफुकवो मूल कवित्त फिरफिरफेरफेरफेर्‍योमैहरिको
मनमनफेरेफेरीगुनभागकीभलीचरी पलपलपाउनपरनङ्तीजिनकेसुपर्‍योपीयतेरेपाश्पीकेपाङ्होयरी व
वडीबधुनकीवड़ीऐवडांई मेटकेसोदासवडिनमैंमेजुतवडीकरी होंतोजान्योमनाऐमोरागुनमानहैमेयहीको
मनाईतेजुमोहीसोमनीथरी ११ वार्त्ता सषीनाइकासोकहतहै हेराधकेमैनेहरिकोमनवारवारफेरफेरके
सौतनकीतरफनेतेरीधारफेरियो श्रोरमनकोफेरकेफेरमैतेरेभागकीभलीचरीफेरी कातेरेमिलावने
कीचरीप्रापतकरी जिसपीयकेतूपलपमैपाउनपरनङ्ती सोपीयतेरेपाङ्परयो श्रोयावातकेलीएप्रियम
मैतेरेपीयकेपाङ्परी वडीवडीजेवधू हैरस्त्रीतिनकीवडीजोवडाईहैतिसकोमेटकरकेमैंतूवडीनमैंवडीक
री मैंतोयहजान्योहोकिमनाऐतेरेरोगुनमानेगी श्रोरुतेजोमेरीईसाथमनीथरीहैसागरकीयोहैसोमैंतूयाही
कोमनाईङूनी ईहोयाङ्नपरहीजयहफुकवोपदहै विषमग्रलंकार मैमनाईहीकिमेरोगुनमानहैयहइ
छुहैसोमोसोमनीथरीग्रनिष्टभयो अथश्रीक्रसकोफुकवो मूल सवैया नासोंकहाकहीऐकहिकेसव
कामलतानरुनैंङरई विथकीविथलोपीनजाइग्रमलकलेमनिसीसभुजंगदई अपनोमुषदेषङ्ग्रारसीलै
पुनवातेकहोयरमानलई वृषभानुसुतापरुश्रोरुसुहागनवाहूजहांलगजीभगई १ वार्त्ता कहूंनाइकने
कहिग्राहोकिवृषभाचसुतापरश्रोरुसुहागनकरेगेनवनाइकापच्छकीसषीकहतहै तिसब्रह्मासोकहाव
साइजिसनेकामलताकाकलपवृच्छकोवेलतेहवृच्छसोरईकामिलाई अथकिप्रियाकामलताहैतुमतेहहो
श्रोग्रमोलकमनिसरपकेसिरपरदीनीहै सोविथकीविथजकतलोपीनहीजानहै श्रोतमग्रपनेमुषकोग्रा

र॰
क॰
टी॰
२२७
127

रसीलैकरदेषोअयहतुमारोमुषक्कोटोहै तोतेअैसीवडीवार्ता मतकहो परमानसैारईका मिलीवार्ताकहोओ
रुसुहागनकोहषभानसुतापरदेहूजहालगतुमारीज्ञीभपडूचीतहोलगा अथवामेरीज्ञीभजहांताईपडूचीनहो
लग अपनोमुषदेषडूयहरुकवो अन्योक्तिअलकारकामलताअरुतैहूंहछ अथश्रीराधकासौउराहनो मूल
कवित्त केसोदासकोनवडीरूपकुलकानपेअनोषोऐकतेरेईअनषउरओलीये आपनेसमानकाहूमानसेनमो
नैनतेगुमानकेविमानचढयोमव्योमडोलीये अेडसौअेडाइअतिअवलउडाइअेसी छोडअेडमैंडचितवननिरमो
लीये दीनोमनहाथजिहहीरासोहरषकेताहरिसोहरननैनीहरेहूतोवोलीये १४ वार्ता कहूनाइकसोनाइका
कठोरवोलीहै तासौसषीउराहनोदेतहै रूपमैंकुलमेंकानमेंकौनवडीनही अर्थकिसवहीवडीहै पेऐकते
रेईउरमेअनोषोका अदभुतअनषक्रोधओलीऐहैकाप्रायतहैं औरतेंआपनेसमानमानसमेंकामनमेंकाहू
कोनहींमानत औगुमानकागरवकेविमानमेचढीहुईआकासअकासहीमेफिरतहै भूममेपेरहीनहीलगात
यहकहनावतहै अमुकेकोचरनअवजिमीमैनहीटिकत मैंडवक्रतासौअेडानहेअतत सोतेसोअचलउडतहै या
तेअेसीअेंडवक्रताईकीजोमेंडकामरजादाहै तिसकोतूंछोड औसिरमोलमोलरहनचितवनकोछोड अर्थकि
नाइककीतरफकोदेषजोतेरीचितवनकोमोलहोइ वेगुनपहिचानवेमेचतुरहै जिसहरनेहरषकामसेनहूके
हीरासोमनतेरेहाथदीयोहै तिसहरिसोहेहरननैनीजोओरकछूनकरीऐतोहरेकाहोलेतोवालीऐ यामेयही
उराहनोप्रगटहीहै सुभावोकितअलंकार अेडसोअेडाइवोइत्यादिसुभावबरननते अथश्रीकृस्नकोउराहनो
मूल सवैया मोहनकोसोचनसकोचनकाहूवीचकीकोयोछोप्यारेयीकयोचलोचनकिनारेकी माषनकीचा

रीकीहै थोरीथोरीमोहूसुथज्ञानतवहेकिसोरीजोरीहैजुबारेकी मेरीऐकुमतऔरकहाकहोकेसोराइलागतहै
लाललाजरईहांपाउथारेकी ऐतीहैदिठाईवहअवहीरूवाईतुमकारहूतोछुटीनाहूपाइनकेपारेकी १५ वार्ता क
हूनाउकनेकह्यौतेनाउकाकोयमिलाइदेइ नवमषीनाइकुप्रतिकहतहै तुमकोसोहनकीमोचविचारनहीहै औ
तुमकोकिसीवीचकीकोसंकोचनहीहै किहमारेमनावनमेवडीवीचपरीहै अवतोअपराधनकरेयहसंकोचन
ही औलोचनकिनारेकीजोयीककीलीकहेयोचाक्सावुरीनाकोतुमयोछोकाहूरकरो नाइकादेषहै औमान
घनकीचोरीजोतुमानेकरीहैतिसकीमोकोथोरीथोरोषवरहै वहीकिसोरीनाइकाज्ञानतहै जोवालकअव
स्याकीतुमारीजोरीहै अर्थकिमेतुमारेगुनोतेमहरमनहीहो वहतीकीभोतजोनतहै प्रिथमतेसंगहीरही
है हकोसाराइकुसनातेमेरीजोकुमतहैजोअज्ञानहैवीचपरीतुमारे औरूमेकहांकहो सोहैलालमोकोत
मारेईहांपाइथारेकीलाजलागतहै जोतममेरेग्रहआऐहो विचारोइतनीभीढिवाईकहूंहोतहै जितनीतुमारे
मेहै क्युंअवहीरुठाइदईवहनाइका अजोनाईपाइनमेयाऐकीतुमारेमसनकविषेनक्षारधूरनाहूरभीनहीभई
है तातकालहीफेरसायराथक्षैआऐ मेतोअवहीवांकेपाइनमेयाऐड्रते अर्थकियवहीमनाईऊतीफेरमान
वतीकरी फेरकाहेरूठाईयहउराहनो हेतअलेकार लाजकोहेतहेपाइथारवो कवित्त आयौसीधाइहेदाई
दवारसीदासनकेउषदेहदहीहै तापकेतलनवारनिमालननाइननाहकेनेहनहीहै तेरीसोतेरीसोमेरीस
वीसुतिनेरीअकेलीकोआसरहीहै काहूमिलाउकिमोहनपाइहेआयनेजीकीमेतोसोकहीहै ८ वार्ता जहां
उहूंओरकीप्रीतहोतहैतहांपूरनसिंगारहोतहै यातेयहतीअकीचाहकोकवित्तयसो पाछोनाइककीचाह

र. क. टी.
१२८
128

कोकहही आयेहे नाइका सषीसोकहतहे हे सषीयाद्दनोआथीसीहे ओदाईदवारसीहे दवार भीतकोनामहैते
सीहे माजठहे ओदासीयोकेइ ष्यनैदेहदही हे माजराईहे नंवोरनीमालतीनायरकेहलकावशेवरहे स्र
योकितयावनहेइ षीकरतहे ओहेताइननाहजोहे नाइकसोताकेहीअकहीयेहिरदेनामेनेहकाप्रेमसोतको
अर्थनहीहे कंचु वठोरठोरफिरतहे एकतंमिलावेतौ मिलावे हेमेरीसषीसोकोतेरीसोहहेतेरीसोंहहे मेति
सचेकहतहो माकोअवनेरीओअकेलीकी आसरहीहेतं हीमिलावेगी यातेतं काहकोमिलाइ अथवा मोको
नहीयावेगीजोनहीमिलावेगी अर्थयह मेप्रानननकोत्यागदेवांगी यहअयनेजीअकीवारतामेनेरेपासकहदई
हे ईहांलयतोउपमाअलंकार ओथीसीयाइदाईदवारसीयमेलप्रा मल दोहरा इहवियस्यामसिंगाररसव
ऊवियबरनोत्योर चारिवरनचऊआस्त्र मनकहतसुनतसुषहोइ १७ वाती स्यामहूसकोसिंगाररसअथवा
स्यामबरनहे जाकोओसोसिंगाररसताकोइसप्रकारबरनो यारायाकुसकोआलेबनकरकेवरनो जाकेकह
नेऊऐओर सुननेऊऐचारबरनकौनसेब्रह्मन १ छत्री २ वेस्य ३ सूद्र ४ ओचारआस्रमकोनसेग्रहमती १
ब्रह्मचारी २ वानप्रस्त ३ संन्यासी ४ सर्वकोसुषहोतहै इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचितायांरस
कप्रियायांसषीजनकरमबरननंनामत्रियोदशोध्यायः १३ अथहासरसलच्छनबरननं मल दोहरा नैन
बैनकछुकरतजेहमनकोमोदउदोत चतुरचित्रपहिचानीएतहांहासरसहोत १ वाता नैनमेकछुचेष्टाको
ऊकरेमाआकृनवनावेकछुकरत माकछूकीकछुमाकरेहेओरुअरुवनावेओरुयहकछुसवदमेयुति ओवेन
मेकछुचेष्टाकरकेकछुकेकछुकहेतासोमनमेसादआनेदहोइसोहरसपेसर्वरसएकसिंगारहीमेवरनेहे नाते

मुष्यतासर्वमैसिंगारकीहै हास्यभेद मूल दोहरा मंदहासकलिहासपुनकहिकेसवअतिहास कोविदकविवर
नोसवैअरुचौथोपरहास २ सुगम आगेनामलच्छनकहेहै अथमंदहासलच्छन मूल दोहरा विहसहनेनक
पोलकछुदसनवसनकेवास मंदहासतासौंकहतकोविदकेसवदास ३ वार्ता जहांकछुथोरेसेनेनओकपोलविग
सेकाप्रफुलतहोइ ओकछुदसनबसनअधरोंकेवासइस्थानविगसेका अथरभीविगसे अथवाकेसोहासहैजिस
केवासजोहैअस्थानसोअधरनकेहै साअधरनमैरहतहै ताकोकोविदपंडतमंदहासकहतहै मूल दोहरा वर
ननवाढैग्रंथयहकहेनकेसवदास ओसेरसइसजानीयइ्सवैप्रछिनप्रकास ४ वार्ता जैसेसिंगारवरन्योहैओसेस
वैरसनहीकहे ग्रंथवढनते पैसर्वरसनकोओसेईप्रछिन्नप्रकासकरकेजानीयो अथरायकाकोमंदहास मूल
सवैया जानेकोयांनषवावतकंुहूगईलगअंगुरीओठनवीनेतै चितओतवहीतिनभांतिनिलालकेलोचनलील
सेलीने वातकहीहरयेहसिकेसुनिमैसमफीवेमहारसभीने जोनतहौंपीयकेजीयकेअभिलाषसभैपरसरन
कीने ५ वार्ता सषीकोवैननाइकासो हेराधकेतेरेओठनकोअीछ्लसकीअंगुरीकिसीतरानवीनक्यानऐपा
ननकोषवावतेहोऐलगगई सोइसवारताकोकोनजाने किकैसेलगगई सोजवनाइकनेतेरेओठकोप
परसकरयोतवतैनेकटाछनसौतवहीहरिकीतरफतिसभांतिसोदेष्यो मानोलालकेलोचनलीललीषसो
निगललीऐसोकोअर्थमानोनिगललीऐकोअर्थवसकरलीऐ फेरनाइकनैतोसोवातकही ईहांधुनकरके
सुरतकीअथवाविपरीतकीवार्ताकहीजानीऐ सोतैहरेहसकैकियहोलैतेहसकैवहवार्तासुनी ईहांसुनि
कोसुनीओसेअर्थकेलीयेकीजै सोवहवार्तातेरेहसननेमैभीसमफलीनी किसुरतहीकीवार्ताहैहै ओनाइ

र. कौ. टी.

न

१२८

129

कनेरे हसननेरसभीनेभए किहमारीवामेंमानलीनी याते मैंजाननहो पीयकेजीयकेजोअभिलाषहैसोतेपू
रनकरेहै ईहांहरैहसननेनेत्रकपोलहीविगसेजानीए औअधरनहीमेहांसीरहीयातेमंदहासभयो सुभा
वोक्तिअलंकार सुभाववरन्योयोंते अथश्रीकृस्नकोमंदहास कवित्त दसनवसनमहिदरसैदसनदुतिव
रसमदैसरकरतअचेतहौ फांईफलकनलोललोचनकपोलनमैंमोललेतमनक्रमवचनसमेतहो भौंहै
कहिदेतभावकहोमेरीभावनीकेभावतेछबीलेलालमौनकोनहेतहो केसवप्रकासहासहसकहालेऊगे
जूऐसीयेहसनतेहियहहरिलेतहौ ६ वार्ता सषीनाइककोकहतहै हेकेसवकृस्नप्रकासहासकोहस
केकहांलेऊगे ऐसेईहसनकरकेवामंदहासकरकेहीयकोहरलेतहौ कैसोहैमंदहास जिसकरकेद
सनवसनवाअधरोमैदसनदेतनकीदुतिवासोभादरसतहै तिसदुतिसोमदनकामकेबाननकोवर
षाइकेतुमअचेतकरतहौ फेरतिसहसनकरकेलोलचंचलनैननकीफांईकहीएप्रतिबिंवसोकपोलन
मैफलकतहै मनक्रमवचनोकेसमेतसोफांईमोललेतहै हेमेरीभावनीकेभावतेछबीलेलालकृस्नहो
तुमकिसहेतमौनरहतहो तुमारेमनकेभावकोवारसअनुकूलविकारकोतोभौंहैंहीकहिदेतहै ईहांहू
हसनमैमनकेमोदकोनेत्रआदिप्रकासकरतहै योंतेहास्यरस नेत्रकपोलअधरइनहीमेहैप्रकासन
हीभयो यातेमंदहासजान सुभावोक्तिअलंकार दरसैदसनदुतियहज्ञात भौंहभावकहेयहसुभाव
अथकलहासलछन मूल दोहरा जहसुनीएकलधुनकछूकोमलविमलबिलास केसवतनम
नमोहीएवरनऊकविकलिहास ७ वार्ता जहांविमलविलासकरकेअथवाविमलविलासआनंदमैको

मलश्रोकलमनोहरधुनसुनीऐ जिसधुनतेतनमनमोह्योजाइ सोकलहास अथरायकाकोकलहा
स मूल सवैया काहूकेसितासितकोछनीकेसवपानुरजिउपुतरीनविचारो कोटककटाछनचैगतिमे
टनचावतनाइकनेहनमारो वाजतहैमरहासमदंगसुदीपतदीपनकोउजीयारो देषतहोहरिदेषतु
मेयहहोतहैआषनमाहअषारो १ वार्ता सषीनाइकप्रतिकहतहे हेहरितुमकोदेषकरकेयहजोअ
षारोनाइकाकीआषनमेहोतहै ताकोमैदेषतहो अथवातुमदेषतहो अषारोकोवरननतेनमेकीजे
पुतरीहैनेईपातरहैवेस्याहै औरुजोसेतताहैस्यामताहै ताकीकाछनीकछेहैयहदेऊऐहै केटनेककटाछहैतेईगा
तकेरुयालिरनकेभेदहैतिनसोनचेहैनाचतहैनाचतहै लहाछेह उउपा तिरफ इत्यादिगतभेदहै नेहजोहैसो
ईनाइकनचावनवारोहोसोनचावतहै औरुतन्यारोयहपदआगेलगाइकेअथकरीऐ नन्यारो बाजतहैमरुदुह
सम्रदंग आषनमेतोअषारोहे पेमुषकोजोहैमरदुहासकियाकोमलहाससोईम्रदंगहे सोनन्यारोकहीयेजुदो
हीबाजतहै अषारेकेवरननमेन्यारोकहवोबननहीहै केउराजसभामेपंडत जोतसी कवि ऐन्यारेईवैठतहै यातेम्रदु
हासम्रदंगन्यारोबाजनकह्यो औरुसुकहीयेभलीजोहैदीपतसोईदीपनकोउजारोप्रकासहै औसोअषारोनेननमेहो
तहे ईहांम्रदुहासमेकलधुनिसुनीनी औनाइककोतनमनमोहतभयो यातेकलहास रसकअलेकार अषारे केरु
पकते अथकलकोकलहास मूल सवैया आजसषीहरितोसोकहूवडीवारलोवातकहीरसभीनी मेलगरेपटुका
पुनकेसवहारहीयेमनुहारसीकीनी मोहअचंभोमहांसुहहाकरवाहुकहावडीवारलोलीनी नेसिरहाथधरयोउन
कैउनगांठकहांहसअंचलदीनी १ वार्ता सषीकोबेननाइकासो हेरायेआजतोसोहरिनेकवहूरसभीनीवारताबडीवार

र॰ क॰ त्रि॰ टी
१२०
130

लोकरी फेरगाढ़िविषेयट्ठकायाइके औद्दीयेमेहावकरकेंतेरीमनहासीकरी सोमोकोबडोअचरजहै तेवडीवातीई
हाहाकरूनेकरकेजोउनकीबांहयकरीसोवाकोकारन मेनहीसमझ्यो अर्थयहजबनाइकनेहाहाषाहीतवतेबांहग
ही फेरतेउनकेसिरपेहाथधस्यो उनोनेहसकेतेरेअचरकोगाढदीनी सोमेनहीसमझीवावातकरी ईहांह
सकेगाढदीनीयामैतोहसवोओरुवानकहीसोसषीनेसमझीनही याहीतेप्रछतहै ईहांज्ञात्योकिकलधुनहीसु
नीहै यातेश्रीकृस्नकोकलहास औरुनाइकनेबांहगहाई किवाहगहो तेसिरपेहाथदीयो यामैसोंहषाई कि
सोहहेमोकोअबमानछाडो संकेतमेमिलहे फेरनाइकतेरेगाढदई सुधराषवेकेलीए ज्ञातअलंकार अथ
अतिहासलछन दोहरा जहांहसेनिरसंकह्वैप्रगटेसुषमुषवास आधेआधेबरनपदउपजतहै अतिहास
१ वार्ता जहांदंपतिनिरसंकह्वैकेहसे औतिनकेमुषतेसहजहीकोजोबासस्वगंधहैसोप्रगटै औजहांबरनो
केपदआधेआधेकहनमैआवेनहो अतिहासउपजतहै अथप्रियाजूकोअतिहास मूल कवित्त तेसीएजग
तजोतसीसुसीसफूलनकीझलकनतिलकनतरनुतेरेमालको तेसीपेदसनदुतदमकतकेसोदासतेसोईलसत
लालकेठकंठमालको तेसीपेचमकचारुचिबुककपोलनकीफलकनतेसोनकमोतीचलचालको हसेहहे
हसिनेकचतुरचपलनेनीचितचकचौधेमेरेमदनगुपालको ११ वार्ता सषीनाकाप्रतिकहतहै हेचपलनेनी
नेककहीपेरतीकन्हेहसेहसेहस तेरेहासकीचमककोदेषकेमेरेकृस्नकोमनचौंधतहैं जैसीतेरोहासहै तै
सीपेजोतसीसपरसीसफूलकीजागतहै औहतेसोईतिलकफलकतहै एतनहूनीद्रमीतेरेभालमसनकको
औतेसीपेदसनकादंतनकीसोभादमकतहै औहुतेसोईकंठमेकंठमालाकोलाललसतहै औहतेसीअमचितु

ककयोल्लनकीचौहक्कासुंदरचमकरै औरहैतैसोउनकमोतीझलकतहै चंचलचालको हहांहरैहरैहस
याकहनतेअतिहासजानो याहीमेआधेआधेअषछरनकेपदअनुमानसोंजानीऐ अनुगुनअलंकार
हासकोचमकइतीपेईसोभूषनोतेअधिकभई अथमध्यहासकोअतिहास कवित्त गिरगिरउठिउठि
झरीझलागेकंठबीचबीचन्यारेहोनछविन्यारीन्यारीसो आपसमेअकुलाइआधेआधेआषरनआछी
आछीवातैंकहेंआछीएकयारीसो सुनतिसुहाइमनवसमझीपरैनकछुकेसोराइकीसोडुरदेषेमेडूस्यारीसै
तरननतनूजातीरनरवरनरूवाठेतारीदैदैहसनकुवरकान्हप्यारीसो १२ वार्ता सषीसषीवचन हेसषी
गिरगिरकेफेरउठिउठिकेऔरीझरीझकेकंठकोलागतहै औरूबीचबीचमेन्यारीन्यारीछविसोन्यारेहो
तहै फेरआपसमेअकुलाइकेआधेआधेआषरनसोआछीआछीवार्ताकरतहै सोइष्टमित्रनासों वेवांनेसु
नेतेसुहातहै सामनकोरुचतहै औसेसरनसमझीनहीपरत आधेआधेआषरनकीहैयाते मेडुरकेवा
छिपकेडूस्यारीसोवथानीसोदेषेहैं हेसषीतरनजासूरजकीतनूजापुत्रीजोहैश्रीजमनाजीतिसकेतीरकि
नारेकोजोहैनरवरउत्कुलताकेतरेगवेंश्रीकृसनतारीदैदैकेपियारीसोंहसतहै अतिहासप्रगटहीहै जातम्र
लंकार गिरगिरउठउठइत्यादि अथपरहासलछ्छन मूल दोहरा जहपरजनसभहसउठतजदेपत
कीकान केसबकोनहबुद्धिबलसोपरहासबषान १३ वार्ता जहांदेषतजोहैनाइकनाइकातिनोकीका
नतजकेसंहसनपरजनकोनसषीजनहसउठेतहाकिसीवुद्धकेवलकरकेपरहासवरनतहै अथप्रियाको
परहास मूल सवैया आईहैएकमहावननैंतीअगावनमानोगिरायगयारी सुंदरताजगुकामकीकामिनवो

र. क. टी. १३१

131

लकह्योवृषभानदुलारी गोपीकेल्याईगुपालह्निवेअकुलाइमिलीउठिसादरभारी केसवभेदतहीभरअं
कहसीकरतारीदैगोपकुमारी १४ वार्ता ईहांकोईसषीगोपालकोगोपीकोभेषवनाइकेल्याईहै तहांको
ईसषीसषीप्रतकहतहै हेसषीराधाजूसौंआनकेसषीनैकह्योहैराधेएकइस्त्रीमहावनतेआईहै सोगी
तनकोगावतहै कैसीहैमानोगिरासरस्वतीनेचरनधास्योहै अर्थयहसरस्वतीआईहै औसुंदरताविषै
मानोकामकीकामनीइस्त्रीरतिहै तववृषभानदुलारीराधाजूनेकह्योवोलवावुलाइलेउ सोवेसषीगोपाल
कोगोपीकरकेलेआईथी तासौंराधाजीउठकेवडेआदरकेसहतअकुलाइकेमिली जवअंकभरकेभेटीतब
वसषकरतारीकाहाथनकीताडीदैकैगोपकुमारीहसउठी यातेपरहासभयो ईहांविसेषअलंकार
वड़ूविसेषताईयहेतुरीबसनरसविसेष सोईहांहसनेतेजान्योकिश्रीकृस्नहै अर्थश्रीकृस्नकोपरहास मूल
सवैया सषीवातसुनोइकमोहनकीनिकसीमटकीसिरराषीयलै सुनवायलयेसुनएनतनारकहूकहूंहू
दकरीकूलकै निकसीउहगैलइतेजहमोहनलीनीउतारजवैबलकै परुषीयरकाहूषिसाईरहेउत
वालहसीमुषअंचलकै १५ वार्ता सषीसषीप्रतकहतहै हेसषीएकवारतामोहनकीसुनो आजमेरीनीक
हीएषालीओमटकीलेकेअपनेघरतेनिकसी सुनहेसषीसोमटुकीमेवाथलई फेरनतनिमुतासोंताहू
गरवानएनीवेकरीहै ओकहूंकहूंमटकीयेकूलकरकेहूंदेकरीहै असेमटुकीकोलेकैजिसमारगमेमोह
नहूतेउसीमारगकोगई गैलमारगकोनाम तवमोहनश्रीकृस्ननेवहमटकीवलकरकेजवहीउतारलई
अथवाजवेश्रीव्रह्हीउतारलई हेसषीजवधरकेवहमटकीदेषीतवउथरकाहूनेषिसानेभएवालजनभए

उधरबालजोहेगोपीअंबरमेसुषकरकेहसी ईहांहास्यरसप्रगटहीहै पारजायोक्तिअलंकार छलकरसाध्यो
रहयहयरयायोक्तिविचार साउनकोहसकरनोरहहै याछलसोरहसाध्यो अथकरुणारसलच्छन मूल
दोहरा प्रियकेविप्रियकरनतेआनकरुणारसहोत असोवरनवषानीयेजैसोवरनकपोत १९ वार्ता प्रियप्या
रेकेविप्रियकावियोगतेउपजे करुणारसकोरंगकपोतकेसोकहतरकेसवरन्योहै प्रियाकोकरुणारस कवि
त तेजसुरसेअपारचंद्रमासेसुकुमारसंभुसेउदारउरूउरूधरीअतहै इंद्रजूसेप्रभुपूरेरामजूसेरनसूरेकाम
जूसेरूपरूरेहीयेहरीयतहै सागरसेधीरगनपतिसेचतुरअतिअैसेअविवेककेसेदिनभरीयतहै नंदमतिमे
दमहाजसुदासोकहोकहोअैसेसुतनपायपसुपालकरीयतिहै १० वार्ता नाइकाकोवचनसषीप्रति हेसषीजो
हरिअपारतेजकरकेसूरजसेहै फेरैचंद्रमासेसुकमारसोभाइमानहै संभुसिवकेसमानउदारकादाताहै फे
रउरउरमैकामनमनमेधारीयतिहै सबकेमनमेवसजातहै फेरिहरणाप्रभुइंद्रकेसमहै फेररामचंद्रकेसम
रनमेसूरसुभटहै फेरकामकेसमरूपमेरूरेसुंदरहै हृदैकोहरीयतहैजिनकेदेषेते देषनकोअर्थअथहार
सोजानीये फेरसागरसेधीरसाथेरजमानहैवागंभीरहै फेरगनपतगणेसकेसमाअंत्यंतचतुरहै औरुचतुर
हैगनेसजीअत्यंतचतुरहै हेसषीअैसेअविवेकअज्ञानसोदिनकेसेभरीयतिहै साविदीनकरीयतहै असे
अज्ञानसोंतोदिनवितावनेकवनहै वेकैसेवितावतहै नंदतोमहामतिमंदहैमूरषहै औरुमेजसोदासोकाक
हौं अैसेसुतनपायकेफेरिपसुपालकरीयतिहै सागाइनकेचरावनवारेकरीयतिहै यहजोगपनहीं सुतपवित्र
औपुतपुत्र ईहांसिंगाररसमेकरुणारसहै सोयाहीभांतिवरनीऐहै पसुचारनमैवियोगहै औरुअैसनकोअै

मेनचाहीये यामेविप्रियकरनहै ईहांसर्वश्रेष्टउपमाअलंकारहै अथश्रीकृस्नकोकरुणारस मूल कवित्त
चंपेकीसीकलीभलीकेसवसुवासभरीरूपकीसीमंजरीमधुपमनभाईये देवकीसीवानीअतिबानीतेसियानी
देवराजकीसीरानीजानीजगसुषदाईये कामकीकलासीचपलासीकामअवलासीकमलासीदेहधरेपूरेपु
न्यपाईये कोनकीनीनियटकुंजनरग्वालदेषोअेसीराधकाकुंवरपहिगोरसविचाईये १८ वार्ता नाइकसषीप्रति
कहतहे हेसषीजोराधकाभलीश्रेष्टचंपेकीकलीकेसमसुवाससुगंधसोंभरीहे फेररूपकीमंजरीकासिटी
समहे ओमनरूपीमधुपकोभावतहे फेरदेवजोहेदेवतातिनकेसमजाकीबानीहे सुदअर्थवाबदाइक फे
रबानीसरस्वतीतेअतिसियानीचतुरहे फेरदेवराजइंद्रताकीरानीजोहेइंद्राणीताकेसमहेसोभनहे फेर
जगतमेप्रसिद्धसुषदाइकहे फेरकामकीकलाकेसमहे फेरचपलाबीजुरीसमहे फेरकामकीअवलाइ
स्त्रीरतिताकेसमराजतहे फेरदेहधरेसाम्रतवंतकमलालछमीसमहे फेरअेसीपूरेपुन्यकरिपाईअति
है हेसषीयहस्सियटअतिसेकुंजानषोटीजानग्वालनकीकिसनेकरीहे देषोअेसीराधकाकुंवरपासतेगो
रसविचाईअतिहे यहजोगनही ईहांहूकरुणारसवाहीभांतिजानीये अलंकारईहांपूरणउपमाहे कहू
लुप्तोउपमाहे चंपेकीसीकलीसुवासभरीराधायहतोपूरणउपमा चपलासीकामअवलासीयहधरमलुप
तोउपमा अथरौद्ररसलछन मूल दोहरा होइरौद्ररसक्रोधमेविग्रहउग्रसरीर अरुनवरुनबरननसबै
कहिकेसवमतिधीर १९ वार्ता रौद्ररसक्रोधमेहोनहे उग्रावडाजोहेविग्रहजुद्धकेमोहेसरीरजिसका
ओलालवरनरंगहेजाको अथप्रियाकोरौद्ररस कवित्त केहरकीहरीकटिकरीमृगमीनफनिसुकपिक

कंजषंजरीटबनलीनोहै म्रदुलम्रणालविंबचंपकमलालवेलकुंकमदाडमकऊंहूनोदुषदीनोहै जार
न नकनकतननतेकतनकसमवदनचदनवेधुजीवेगंधहीनोहै केसोदासदासभयोकोविदकुवरकाहूगाथ
काकुवरकोपकैनपरकीनोहै २ वार्ता सषीनाइकाप्रतिकहतहै इननेउपमानजेहैतिनपरकोपक
र्यो तिनकीतोयहअवस्थाभईक्याअवस्थाभई सबवनैवनबासलीनोहै तहांकेहरिजोहैसिंहताकीकटिकी
सोभातेरीकटनैहरी करीकाहाथीकोसुंडकीसोभातेरीजंघननैहरीजंघनैनेहरी म्रगओमीनकेनैननिकी
सोभानेत्रोनेहरी फनिसरपकीसोभावेनीनेहरी सुकतोतेकीसोभातेरीनासिकानेलीनी पिककोकला
केबैनकीसोभाबैनोनेलीनी कंजकमलनकीसोभाहाथननेलीनी औरुषंजरीटममोलेतिनकीचंचला
ताकीसोभातेरेनैननकीचंचलाईनैहरलई यातेसबननैवनवासलीयो बनकेहैअर्थजलओबराभीनक
मल इनोनेजलवासलीयो औम्रदुलकोमलजोहैम्रणालभिहताकीसोभाभुजानैहरी विवकेंहूरीकीसो
भाअधरोनैहरी चंपककीसोभादेहदुतिनेहरी मरालहंसकीचालकीसोभागतनेहरी वेलकीसोभासरी
रनैहरी कुंकमकेसरकीसोभारंगनैहरी दाडमअनारताकेवीजनकीसोभादंतननैहरी यातेअनारकोहू
नोदुषदीयोहै कंबुबनवासकोदुषतोसबकोबरावरै औरुदाडमकोउदरफटजातहेयहदुषअधिकदीनो
यातेहूनोकह्यो औरुकनकजोहैसरनसोतनकीकांतनेहारकेअपनेतनकोजरावतहै औचंद्रमामुषनेहा
रकेतनकतनककाथोरोथोरोकबीवढतहैकबीघटतहै औअधरसोहारकेवंधुजीवदुपहरीएकोफूल
सोगंधहीनहूगयो फेरकोविदपंडतजोहैकुवरकाहूसोतेरोदासभयोहै अबतेकोपक्रोधकौनपेकीयोहै

र. क. टी.
१३३
133

जुगनसोप्रियाजूकोकोपसषीमिटावतहे ईहांक्रोधतेरौद्ररसभयो उत्प्रेक्षाअलंकार मानोघोहीतेइनोनेव
नवासलीनोहे अथाकृसकोरौद्ररस मूल कवित्त मीडमास्योकलहवियोगमास्योवोरकेमरोरमास्योअ
भिमानभारोभेमास्योहे सवकोसुहागअनुरागलूटलीनोदीनोराधकाकुवरकडुसभसुषसान्योहे कपट
फटकडास्योनिपटकेओरनसोमेटीपहिचानमनमेहूपहचान्योहे जीत्योबलरनमथ्योमनमथहूकोमनके
मोराइकौनयरवोसउरआन्योहे २१ वार्ता सषीचातुरजतासोकहतहै हेक्रसतुमनेकहाकरवेरह्योसभ
रव्याकेकारजकरवुकेअबकोपकोनपेकस्योहे वेकारजसषीकहतहै कलहजोहैकलसमीडमरद
मास्यो वियोगकोवारकेडवोइकेमास्यो अभमानगरवताकोमरोरकेमास्यो औभारीजोहैभेइताकोभीभा
न्योकाहूरकीयो औसर्वजोहैगोपीनिनकोसुहागऔअनुरागसनेहलूटकेलीयोसोश्रीराधाजूकोदीयो
केसोसुहागअनुरागहे सरवसुषसोमनियोहैवामिल्योहे फेरकपटछलकोफटकडास्यो औनिपटअ
निसेकरकेओरनसोपहिचानमेटदईहे तुमारोमनमेहूपहिचान्यो औरननेनही फेरतुमनेरनहूपीजो
रनजूहहेसोभीजीतिओ औरमनमथकामताकोभीमनमथ्यो अबकोनयैरोसकीयो नाइककोअति
अपमानतेकोपहोतहै सोसषीमिटावतहैजुक्तसो दूसरीपारजायोक्तिविष्यात अथवीररसलच्छन॥
मूल दोहरा होइवीरउतसाहमैगौरवरनदुतिअंग अतिगंभीरउदारकहिकेसवपाइप्रसंग २२ वार्ता
बीररसउतसाहमेहोतहै जाकेअंगकीदुतगोरवरनकीहै फेरअत्यनगंभीरहै औरुउदारहैकेस
वकविप्रसंगपाइकेकहतहै अथप्रियाजूकोबीररस कवित्त मतगजबाजसाजदेहकीदिपनवाजहावरथ

भावयतिराजचलचालसोकेसोदासमंदहासअरुसिकुचभटभिरेभयेप्रतिभटभेटभालेनषजालसो ला
जसाजकुलकानसोचयोचभेभानभोहैधनुतानिवानलोचनविसालसो प्रेमकोकवचकसिसाहससहा
इकलैजीतीवतरनोआजमदनगुपालसो २२ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीआजमदनगुपालसोना
इकारतुपीरनमेंऐसीसेनाकेवलसोजीती सोसेनाकोनिवाहतामेगजजोहेसोईगजहाथीहै ताकोसज
के औदेहकीजोदीपतसोभाहैसोईबाजसाजघोराहै हावजोहैसोरथहै भावजोहैतेपतराजसापयादन
कीपंगतहै तिनकीचलवाचेचलचालसोजीती औमंदहाससोईअसकाषडगहै औरुजेप्रतिभटभये
कामसत्रभये तिनकोभेटकेकुचरूपीभटभिरेहै याते कुचरूपीभटनिकोप्रतिभटनसोभिराइकेजीती औनष
जालकेवासेहहकेभालेकरकेवानेजेकरकेभिराये औपोचवुरीजोहैसोचताकोऔभेरकोभांनिकेमोवकेजी
ती भोहैरूपीधनुकोतानके औविसाललोचनरूपीजेवानहैतिनसोजीती औरप्रेमरूपीकवचकोकसके औ
साहसथीरजरूपीसहाइककोलेकेजीती ईहारतननाइकानेउतसाहससोंसेनाकोसंगलेकेजीसोयातेवीररस
भयो सेनाकेरूपकअलंकार अथश्रीकृस्नोवीररस मूल कवित्त अयज्युउदारहोज्युवकज्युविदारहो
जूकेसज्युकेसोराइकेसीज्युपछारहो हरहोकिप्राननाथहतताकेआननज्युवननेकिवनमालीकालीज्यु
निकारहो करहोविमदहवनवाहनज्युघनस्यामकाहूसोनिहोरहहरि याहीसोकंुहारहो वेहीकामकामवदह
जकीकुमारकानमारतहैनंदकेकुमारकवमारहो २२ वार्ता सषीनाइकसोकहतहै हेहरिहजकीकुमारका
नकोकामदेववेहीकामकीविनाप्रयोजनमारतहै सोवाकोतुमकवमारहुगे फेरवाकोअर्थजोहैअर्थान्तर

र. क. टी.
१३४
134

निसकीमाइउदारङगे कादाहोगे अथवावकवकासुरकीन्याईविदारङगे अथवाकेसकेसीकीमाईय
छ्कारङगे अथवाहेग्राननाथपूतनाराछसीकेप्रानोकीन्याईवाकोहरङगे अथवाहेवनमालीकालीनाग
कीन्याईवाकोवननेनिकारङगे वनकेहेअर्थ जलग्रोवाग अथवाहेघनस्यामघनवाहनइंद्रकीन्या
ईवाकोविमदकामदनेरहनकरोगे तुमतोकिसीतेआगेहरिनही याहीतेकेहारङगे ईहांजेजेमारेहे
तेसरबउतसाहसोमारेहेसोस्तुनवीररसहोतनहीहे उपमाअलंकारसरवत्रहे अथभियानकरसलच्छ
न मूल दोहरा होइभयानकरससदाकेसवस्यामसरीर जाकोदेषतसुनतहीउपजपरेभभीर २३
वार्ता भयानकरसकोसदास्यामबरनहोतहै औजाकोदेषतेओसुनेतेभेइकीभीरउपजतहै अथेरा
यकाकोभेयानकरस मूल सवैया भुवमंडलमंडनकेघनघोरउठेदिवमंडलमंडगटी घहरातघ
टाघनबानकेसंघटघोषघटेनघरीहूंघटी दसहूंदिसकेसवदामनीदेषलगीपीयकामनिकं
वनटी जनुपंथहपाइपुरंदरकेबनपावककीलपटेझपटी २४ वार्ता घनजोहैमेघघटीसासेम
हसोभुवमंडलकाप्रिथीमंडलताकीमंडनकरके औघोरकेकागरजकेऔदिवमंडलजोहेआकास
मंडलताकोमंडकरकेउठेहै फेरघनमेघनकीअथवासघनजोहेघटासोवातकहीएपवनकेसंघ
टतेकामिलायतेघहरातहैगरजतहे ताकोघोषजोहेसहसोघरीहूंघरीमेघटतनहीबढतहै ता
ममैदसोदिसामेदामनीवीजुरीकोदेषकेकामनीइस्त्रीपीयाकेकंठइसथानकोलगी ताकीउतप्रे
छ्याकरतहै मानोपंथमेंरागकोपाइकेअथवाअरजुनकोपाइकेपुरंदरइंद्रकेवनकोपावककअगन

कीलपटहीलगीहै ईहांभेयानकरसप्रगटहीहै उत्प्रेछाअलंकार॥ अथश्रीकृसकोभेयानकरसम मू
ल कवित्त गिसमेरसकेबोलविसमेसरसहोतजानेसुप्रबलपितदोषैजिनचाषीहै केसोदासदु
षदीवेलाइकभएवतमआजलंडजीमैजाकीआषेअभिलाषीहै सुधेहैसुधारवेकोआएसिषवनमो
हिसुधेहूमेसषीवातेमोसोउनभाषीहै अैसमैहोकेसेजाउदुरहूधेदेषोजाइकामकीकमोनसीचढाइ
भौहैराषीहै २५ वार्ता सषीनाइकप्रतकहतहै कहूनाइकनेकहीहोमोकोनाइकाकोमनाइदेहु
तवसषीकहतहै हेहरिरिसक्रोधमेरसकेजोमीठेवचनहै सोविसजहरतेभीअधकहोतहै इसवार
ताकोसोजानतहै जिसगुरषनेप्रवलपित्तज्वरमेदोषषाईहै दोषहैतोमीठीपरतिनकेषाएतेपित्त
ज्वरकोविसेषकोपहै अैसेईरसकेबोलरिसमैविसतुल्लहोतहै हेकेसोराइकृसजाकीआषेआज
हूसोंअवनाईतुभनेजीमैअभिलाषीचाहीहै ताकोअवतुमदुषदेवेलाइकभयेहो अविसूधेहैकरके
अपनेकारजसुधारवेकोअथवानाइकाकेसुधारवेकोमोकोसिषावनकोतुमआएहो सोतुमवाको
तोजानतहो उनिकवहूसूधेहूमेसषीवानमोसोभाषीहै क्यानहीभाषीहै कोकोक्ति अवतोवहरो
सभरीहै अैसेसमैविषेमैवाकेयासकैसेजाउ तुमछिपकेतोजाइकेदेषो वानैतोकामकीकमोनसी
आपनीभौहेचढाइराषीहैकोपकरके ईहांभौहेधनुषकोचढावनोभेइकोहेतहै सोसुनकेनाइकाको
भेयानकरसभयो कोकोक्तिअलंकार अथवीभत्सलछन मूल दोहरा निंदामेबीभतसरसनी

र. क. टी
१३५
135

लवरनवपुन्नामस केसवदेषतसुनतहीतनमनहोइउदासरूप वीभतसठसदे नीलेहैरंगजाको अथप्रियाको
वीभतसरस कवित्त मानाहीकोमासतोहूलागतहैमीठोमुहूपीवतिपिताकोलोहूतैकुनअघातहै भईअति
केकंठनकोकाटतनकसकततेरोहीयोकेसोहैज्युकहतसिहातहै जबजबहोतभेटमेरीभैरीभहूतवतवअै
सीसोहैदिनउठिषातननिघिनातहै प्रेतनीपिसाचनीतिसाचरीकीजाईहैतूकेसोराइकीसोकहितेरीकोनजा
तहै २० वार्ता सषीनाइकाप्रतिकहतहै हेतीयतोकोमानाकोमाससुषमेमीठोलागतहै औपिताकेलो
हूकोपीवतीऊईनेकथोरीभीगलाननहीकरत औरहूमतीअनकेकंठाकोकाटतीऊईतूदरदनहीकरत
तेरोकेसोहीयोहैजोकहतेऊऐसिहातहै प्रसंनहोतहै हेभटूजवजमेरीभेटहोतहै सोजवजवमेतोसोमि
लतहोतवतवतूअैसीसोहैनितउठकेषातहै त्रियतनहीहोत सोतूप्रेतकीपुत्रीहै अथवापिसाचनीकीहै नी
अथवानिसाचरीराछसीकीजाईहै तोकोकेसोराइकीसोहहैतूआपनीजातकोकऊ ईहांमिलवेकेली
ऐसोहै अैसीअैसीषातहै जिनसोवीभतसरसउपजे परतिष्ठवीभतसहै स्वतिष्ठवैरागमेहोतहै औरहूनिं
दातमकवीभतसरसहै अैसीसोहैषोनतेनाइकाकीनिंदाभई यातेनाइकाकोवीभतसरसभयो ईहांवीभत
सरसवतात्र्अलेकारप्रनलहै रसमेहोइसोरसवतात्र्अलेकारकहीऐ अथप्रियकोवीभतसरस कवित्त हूटे
टाटघुनघुनेधूमधूमरसेनसेनफीगुरछगोडीसायवीछनकीघातजू कीटकलतत्रिनवलतवरीयतलिति
नकीतलपतलताकोललचातजू कुलटाकुचीलगातअंधतमअथरातकहतसकतवातअतिअकुलातजू
छेडीमेंबुसेकवरईयनकेघनस्यामपरघरनीनघरजाततविनातजू २८ वार्ता नाइकानाइकसोकहतहै

देहविदूटदोएहेदारवामूअजिनकेओधूमकाधूऐसोहै ओधूरसोहै सेनजोहैजालेसोजिनमेसनेहोएहैसामि
लेहोएहै फेरजिनमेजीगरकावीउहै ओछेगोडीकामकडीहैजिनमे फेरजिनमेसापनकीओविछूओकी
घातकामारहै अथवाघातकादाउलगाइरहेहै फेरकैसोहै सेनाकंटकजोहैकंडेतिनसोकलनकासंजुगतहै
ओत्रिनासोवलितकाछाईहोईहै ओविगंधजलजोहैकामजलतिनोकीतलपजोहैऐसीसेजातिनकेतलको
तुमचाहतहो फेरवेपरस्त्रीकेसोहैजिनोकीऐसीसेजाहैकुटलाविभचारनीहैकुचीलअयविभ्रहैगातजिन
के तिनपैआधीरातकोजोअंधतमहैकावडोअंधकारहैतामेजातहो तहोकछुवारतानहीकाहिसकतहो
ओअत्येतव्याकुलहोतहो छेडीकापघरकोघर अथवाछटीओकोघर तिनमेघुसतेहो कारथनकेघरवि
षेघुसतेहो ऐसीअवस्थाहोतहेपरतोभीउनोकेघरजातेहुऐतुमगिलाननहीकरत ईहांहूपरनिष्टवीभत
सरसभयो कुचीलअसथानकोवरननभयो ओरुनाइककीनिंदाभईयातेनाइककोवीभतसरसभयो जात
अलंकार जैसोकुचीलइस्थानकोइपडुतोतैसोकह्यो कुचीलइस्थानकोवरननभयो अथअदभुतरसवर
नन मूल दोहरा होइअचंभोदेषसुनिसोअदभुतरसजोन केसवदासविलासनिधपीतवरनवपुमान २९
वानी जाकोदेषकेअथवासुनिकेअचरजहोइसोअदभुतरसजानीऐ सोकेसोहैविलासकीनिधहै ओ
पीतवरनजाकोवपुसासरीरहै अथप्रियाकोअदभुतरस कवित केसोदासवालवैसदीपतितरुनतेरी
वानीलहुवरननवृद्धपरमानकी कोमलाअमलउरउरजकगेरजोतिअवलापैवलवीरवंधनविधानकी
चंचलचितौनचितअचलसुभावसाधुसकलअसाधभावकामकीकथानकी वेचतफिरत्दधिलेततिनेमोल

र॰ कं॰ टी॰ १३६ 136

तेतिअदभुतरसभरीवेटीवृषभांनकी ३॰ वातो सषीकोबचनताइकाप्रति हेवृषभांनराजाकीबेटीश्रीराधा
जीतेअदभुतरससोभरीऊइहै हेराधेतेरीवेसअवस्यावालहैतामैंदीपनसोभानरूनज्वानहै वालवैसमैन
रुनदीपनकोह्वैवोअदभुत फेरतेरीवाणीलघुक्यासूछमहै औवुद्धकीजोहैबरनउन्नतसोप्रसोनकी
नहीहै अर्थयहबडीहै यहअदिभुत४। वडीवुद्धवारेवऊतविषआनसौकहतहै फेरतेरीहृदेकोमलश्री
अमलहैतिसतेउरजकुचकठोरकरकेजातिउपजेहै यहअदभुत कोमलतेकोमलनहीउपजे फेरहैतेरे
अवलाइस्त्रीपैवलवीरजोहैरूसतिनकेवंधनकीवियानवियअथकाक्रूयाकीकोअर्थकरीहैतेने का
वलवीरकोवसकीयोहै अथवातिनकेवंधनकीविधानकोअर्थकरनवारीहै सोजोमेवलनहोइसोवल
वीरकोकैसेवसकरैयहअदभुत फेरचितैनोनचंचलहै औचित्तनिहचलहोइ यहअदभुत जाकीचंचल
दृष्टहोतहै ताकोनिसचलचित्तनहीहोत फेरतेरोसुभावसाधुहै औरुभावादिकसंपूरणअसाधुहैजोमोह
तहैयहअदभुत फेरतेकैसीहै कामकीकथानकीहै कामकीकथातेरेमैबऊतहै यहअदभुत कोम
कीकथाजामैवड़ुतहोतहैताकोसाधुसुभावनहीहोत फेरतूदयवेचतफिरतहैजोमोललेतहैतिनके
हूमोललेतहै यहअदभुत मोललैनवोरेनकोमोललैनो ईहादेषकेसषीकोअचरजभयो यातेअद
भुतरसभयो ईहांहूअदभुतरसकरिरसवताअलंकारहै अथच कवित हजकीकुमारकावलीनेसुकु
मारकायढावैकोककारकानकेसवसवैनिवाहि गोरीगोरीभोरीभोरीथोरीथोरीवैसफिरैदेहतासीदौरी
दौरीआईचोरीचोरीचाहि विनहुनतेरीओनमृकुटीकमांनतानकुटलकटाछवानयहैअचरजआहि

ऐनेमानढीठ ईठतेरेकोअदीठमन पीठदैदै मारत यैचूकतनकोऊनाहि ३१ वार्ता सषीनाइकासौ
कहत है हे राधे हजूकीजे है कुमारका कन्याविनाव्याही तेसुक औसारकाकीलीऐडुऐकोकजो है
कामसास्त्रताकीकारकाजोहै फककातिनकोपढावत है निवाहकेकाम्हुरोपढावत है कछुकस
रनहींराषत है फेरिकैसी है गोरीगोरी है भोरीभोरी है औथोरीथोरी है वैसउमरजिनकी फेर
वेदेवतासी दौरीदौरीनाइककोचोरीचोरीदेषआई है तोदेवता मरवकोदेषत है देवताकोकोइनहींदे
षत सोवेनाइककोदेषआई है नाइकनेवेनहीं देषीयातेदेवतासीकही मैतेरीआनसासुगंथकरत
हौं गुनचिह्नविनाजोहै भ्रकुटीकमानतिनोकोकुटिलटेढेजोहै कटाछरूपीवानतिनो सोतानकरकेय
हवडोअचरज है वेऐनेमानकी है थोरेदिनकी है तोभी ढीठहै डरतनहीं तेरे ईठमित्रकोजोअदीठअदिष्ट
मन है ताकोपीठदैदैके मारत है औचूकतनहीं है ईहां हूं अदभुतताजिनाई कुमारकाह्कैकोककारकापढा
वै भोरीभोरीतेचोरीजाते विनुगुनकमान वानटेढेमन अडीठनिसाना पीठदैकेमारवोअनचूकवो ऐस
ववियअदभुत है विसेषअलंकार साधनकारनविकलजहहोइकाजह्कैसिद्द सोसाधनसमविकल है
मोहवोनाइकाकोयहकारजसिद्दहै अथश्रीकृस्नकोअदभुतरस कवित्त माषनकेचोरमधुचोरदयहूथ
चोरदेषोनाहीं देषतही चित्तचोरलेत है हरनपुरानअरुपुरुषुपुसनरनेपुरषपुरानसु कहत कौन हे तहै
केसोदासदेषिदेषिसुरनकी सुदरीविकरनविचारसभसमतसमेतहै देषगतिगोपकाकीभूलजाततिज

र॰
क॰
टी॰
१३७
137

गतिअगतिनकेसेकैपरमगतदेतहै ३२ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीऐक्रुसकैसेहै माषनकेचोरहै औ
मधुमहतअथवाअहूतनाकेचोरहै कहूंतेअहतचुराइकेअधरनेराष्योहै अथवागोपीयोकेअधराअ
मृतकोचोरीसोळपळपकेपीवतहै यातेमधुकेचोरहै औदधदूधकेचोरहै हेसषीतेदेषतक्युंनहीदेष
इनको फेरऐदेषतेई चित्तकोचुराइलेतहै सरनपुरानजोहैअठारोपुरान औपुरषपुरानजोहैलोमसआ
दिकरिषसोसरवइनकोपुरषपुरानकाब्रह्मकहतहै सोकिसकारनसोकहतहैएतोअसेहै फेरइनकोदे
षिदेषकेसुरदेवतानिकीजहैसुंदरीइस्त्रीदेवांगनावेविचारकरतहै कैसीहैवेसुमतजोहै भलीबुद्धताके
सहतहै कैसीविचारकरतहैकिऐक्रुसगोपकाकीजोहैगतचालताकोदेषकेअपनीगतअवस्थाकोभू
लजातहै औअगतिजेहैपापीतिनकोपरमगतकैसेदेतहै ईहाक्रुसकेअदभुतचरित्रहै पुरषपुरानहै
कैचोरीकरै गोपकाकीगतदेषअपनीभूलेफेरअगतिनकोगतिदेहयहअदभुतयातेक्रुसकोअदभुत
रसभयो ईहांविभावनाअलंकार विरुद्धतेकारजकीउतपत जोगतिभूलजैवोवारोअसोहोइ सोगति
देइ अथसमरसलच्छन दोहरा समतेहोइउदासमनवसैऐकहीठोर ताहीसोसमरसकहैकेसवक
विसिरमौर ३३ वार्ता सरवयदारथोंतेमनउदासह्वेकैऐकठोरमैवसैतासोसमरससांतरसकहतहै
अथप्रियाजूकैसोसमरस॥ सवैयो देषेनहीअरविंदनसोचितचंदकीओरनैदकैदतिकाई कामनकामक
याकरैकाननताकेत्रियामकीसुंदरनाई देषगईजवतेनमकोतवतेकछुवाहिनदेष्योसुहाई छाडेगीटे

हजुरदेषेविनाअहोदेहनकाहूकहूंहैदिषाई ३४ वार्ता सषीनाइकसौंकहतहै सोनाइकाअरविंदकम
लनकोनहीदेषतहै औचंद्रमाकीजोआनंददेनिकाईसुंदरताहैताकोभीचितसोनहीदेषत औरवहकाम
नीइस्त्रीकामदेवकीकथाकोभीकाननहीकरत कासुनततनही औरहनताकेत्रियामकीसुंदरताई अर्थ
तीनोलोककीजोहैसुंदरतातिसकोवहनताकेक्यानहीदेषतहै नकारदेहरीदीपक सोतुमेजवतेदेष
गईहैतवहीतेवाकोकछुसुहातनही पेकतुमहीमेमनलाग्योहै सबसोछूटके सोवहतुमारेदेषेवि
नादेहत्यागेगी नहीतातुमवाकोकहूंहैकेदिषाईदेऊ ईहोसरवसोउदासमनह्वैकेहमसमैलगयाया
नेसांतरस परयाईअलेकार ऐकविषेजुअनेककोवासवहेपरयाइ तीनलोककीसुंदरताऐकना
इकाकेअंगमेवसतहै अथाक्रमसेकोसांतरस कवित्त षारकषातनदारमदाषनमाषनहूंसंगमेटीइ
वाई केसवऊषमयूषहिहूषनआईहौतोपहिकाउजिठाई तोरदनछदकोरसरंचकचाषगएेकरिकुहूं
दिठाई तादिनतेउनराषीउठाइसमेनसुथावसुथाकीमिठाई ३५ वार्ता सषीनाइकासोकहतहै तेरेरद
नछदाअथरकोरसरंचकथोरोकिसीप्रकारनाइकहीवताकरकेजादिनतेचाषगएेहैतादिनतेउनोनेसु
थाअमृतकेसमेनवसुथाप्रिथवीकीसरवमिष्टताउठाइधरीहै काहूकोग्रहननहीकरत षारकषाकु
हारे दारमकाअनारऔदाषेइनकोनहीषातहै औमाषनमिश्रीनकोवहुतष्यारोहुतो तासेभीइठाईमि
त्रतामेटदईहै ऊषकागन्नेकोरसऔमयूषअंहृतवाचंद्रमाकीकिरनेतिनकीभीनिंदाकरतहै मैते

र॰
क॰
टी॰
१३८
138

रेपासजिठाईवडपनकोछोडकेआईहौं तेउनकोअपनेअधरकोरसदे ईहांसभकीमिष्टतासौउदासहैकैएक
रदनछदकीमिष्टतामैमनवस्योहै यांतेसांतरस प्रतीयाअलेकार सभमिष्टताकेउपमाननकोनिंदतहै।
यांते अन्यचककवित्र दनुजमनुजजीवजलथलजननिकोयस्योईरहतजहांकालसौसमरहै अनेतअ
जरअजरअमरपरतमरकेसवनिकसजानेसोईतोअमरुहै वजनस्वनस्तुनिसमुरूसवदकरिवेदनको
वादनहीसिवकोउमरुहै भागद्धरेभागोमईआभागनाजुभागपोयरैभवकेभवनमाहिमेरकोभवरुहै ३९
वातो यहसोतरसमैंसिच्छा दनुजदैसमनुजमनुष्य औरुजीवजलथलकेरनसरवकोकालसौसमरजु
ध्यस्योरहतहै अर्थकसरवनामकोप्रापतहोतहै फेरअनेतावाआयारजेहैअजरजिनकोजराहहुतानाही
औअजरब्रह्मासेअमरैदेवते सविऐमरतहै परनिकरजांनेसोवहसहीअमरुहोइ कहायासंसारमैभैरको
भौरुहै याभैरकेभौरुमैतेनिकसेवासंसारसोविरकतहोरब्रह्मग्यानलहेसोजानीऐवहनिकसो वहीस
हीअमरकयो सोयहवचनकहोतेसुन्यो तहाकहतहै सिवकोउमरूजोवजतहैसोउमरूमनिजांने यहवे
दनकोवादहै कहावेदहीसवदकरतहै तहांअर्थविथवजतहैतेस्वनस्तुनि औरुसमरू काविचार कै
सेवजतहै सबदकरकेवाग्रकारकेसोबजतहै सोहैवावेदनकोवादहै नाहीसिवकोउमरूहै तेसिवको
उमरूमानिजाने कोऊऐसेभीअर्थकरतहै यहवेदकोवादनही यहसिवकोउमरूवाजतहै सोवाकह
तहै भागद्धरेजोभागनकरभागपोपरे नाहीतोयहभवकेभवनमांफवासंसारकेग्रहमैभैरकोभौरुहै या

औरु मैं परेन हां व्है यांते भागनते निकरौ यह मिळौ ई हांसौ नरस प्रगट ही है औ यारुकषा तनयाक वित्तमै
ई सिंगार रस सूरन को सो अवद न तुजमनु जते आगे औरु सिंगार रसनहीं है औरु ही प्रसंग चलेगो कवित्तन की
रीत कहैंगे के अवर सकै हैगे यांते या ही कवित्त मैं और प्रसंग आरंभियो सो जांनीऐ प्रतिषेध अलंकार एक
को निषेध करऐ कको थापवो सो सिवको उमरू नाही यह देवन को वाद है मूल दोहरा इह विधवरन द्रुवा
न बहुन वरस रसक विचार वो थो हुतक वित्त की कहिके सब विधचार २२ वार्ता बहुत है वरन रंगनि नके अ
यवा वरनको अर्थ उसनत बहुतन वरसो कीइ सप्रकार वरनो इति श्री मनमहाराजकुमार श्री इंद्रजीत विरच
ता यां रसक प्रिया यां हास रस आदि वरनन नेनाम चतुरद सोध्याइ १४ अथ वृत्तवरनन मूल दोहरा प्रियम
कौ सकी भारती आरभटी मनि भांति कहिके सब सुभ सातकी चतुरचतुर विधजात १ वार्ता ऐचार हते हैं इ
नके लच्छन उदाहरन आगे आवहिगे और अर्थ सुगम अथ कौसकी लच्छन मूल दोहरा कही यति
के सकदा सजह करुणा हास सिंगार सरल वरन सुभ भाव जह सो कौसकी विचार २ वार्ता जहांक
रुणा रस हास्य रस सिंगार रस ऐ तीनो आवै सो कौसकी वृत्त है जथा कवित्त मिलवे कौ ऐक मिली मिली
फिरे हत कान्ह मिलमन मनहि विलास विलसत है बोलवे कौ ऐकवाल बोल सुनवे कौ ऐक बोल बोल
ती रथ निह्रन बसत है देषवे कौ ऐक फिरे देवता सी दौरी देवतान आइ दिन दान मनसत है कीजे कहाक
रमको इह इयमेरी माई ऐतो मेरे कान्ह जके नाम हसत है ३ वार्ता सषी सषी वचन हे सषी मिलवे के

र॰
क॰
टी॰
१३९
139

लीएकाहूसोपतेम्रनेजननहूजवालाकरतहै ऐसेसुंदरहैजिनकोतहनीओ चाहततहै कैसेएकतोमिलवे
केलीएहतकोनसोमिलीमिलीफिरतहै एकमनहीमनमेमिलनकेविलासकरतहै एकवालावोलवेको
फिरतहै एकउनकेवोलसुनवेईकोफिरतहै एकवोलवोलकेफेरवोलवेकोतीरथनमेओहुतनमेवसत
है कातीरथव्रतकरतहै एकवालटेवतासीटोरीरोरीटेषवेकोफिरतहै फेरदेवतानकोमनाइकेदिन
केजोदानहैतिनकोदेतहै अमुकेग्रहकेदिनमेअमुकोदानुचाहीएसोईदेतहै अथवादिनप्रतिदानदेत
है सोहेसषीजिनकोऐसेसवचाहतहैताकेनामलीएहसयरतिहै सोयावातकोकहाकीजे उनकोरूप
सोमहूयजानहूसयरतहै ईहांविलासविलसतहैइत्यादिसवदनमेंतोसिंगाररस कहाकीजेकरम
कोयहकरुनारसहूसवैतेहासरस तीन्योरसमधेयातेकौसकीहुतजानीए ईहांलाटाअनुप्रास मिलमि
लवोलवोलसवटने अथभारतीलछन मूल दोहरा वरनैजामेवीररसरसपतिअदभुतहास कहिके
सवहभअर्थजहसोभारतीप्रकास ४ वार्ता रसयनसिंगाररस औरहस्तुगम उदाहरन मूल कवित्त को
ननकनकपत्रचक्रचमकतचारुख्युजाफिलमिलीफूलकतअतिसुषदाइ केसवक्कबीलोछत्रसीसफूल
सारथीसोकेसरकीआडीआधरायकारचीवनाइ नीकेहीमैनीकोनाकनीकोमोतीकेसरकोएकहीवि
लोकनगुपालतोगएविकार लोचनविसालभालजटितजराइलालमानौवढ्योमीननकेरथमनमथरा
इ ५ वार्ता सषीसषीवचन हेसषीकाननमैजेकनकपत्रस्वरनकेतरवनहैतेईरथकेचक्रपहीआहै ओ

झिलमिलीजोपियलपत्त है सोई ध्वजा है हेदरचमकत है औ अत्यंत सुषदारक है औ सीसफूल सोई छ
वीलो छत्र है औ अथिनी चेजा के सरकी आड राधाजीने वनाइ के रची है सोई स्वारथी रथवान है औ रुनी को हे
सु जो है नाकना को नीको जो है मानी सानाइक के नीके हीये में आइ के उरकत है औ छलसो एकही विलोक
न मै विकाइ गए है फेर नेत्र विसाल है औ भालमसनक मैं जराइ सो जटित लाल है सो मानो मीनन के र
थ मै मनमथ कामदेव जो राजा है सो चढ्यो है नेत्र मीन लाल कामरथ ऊपर कढ्यो है ईहा असवारी के व
रनन सों नो वीररस असवारी मै उतसाह होत है औ एकही विलोकन मै विकाये सो विलोकन जानी मंद
हास सहत है क्यु कि जब हसि चितवैं नाइका तब वस वेगहूं जात है यातें ईहा हासरस भयो विकाइ जेवो
सिंगाररस भयो औ जटत जराइ लाल लाल जो है सो अरुकत है ताको मनमथ थाप्यो सो स्याम है यह अद
भुत है अथवा अथके सरकी आड को रथवान कह्यो सो नीचे बैठ्यो यह अदभुत ईहा मनमथ राजा आरकत
रूपहूं आयो है तौ ईहां याते भारती वृत्त जांनीये उत्प्रेक्षा अलंकार लाल मै नरक करी मानो मनमथ है अथ
आरभटी लच्छन दोहरा केसव जामै रौद्र रस भैर बीभतसक जांनि आरभटी आरंभ यह पद पद जमक वषा
नि ६ सवैया घोरघन घोरत सज्जल उजलक ज्जल की रुचि राचे फूले फिरे इभ से न भयाइ के सावन की पहली
तिथ यो चे चौहूं घ्कदो नेउ नान रयैउर पैवन ताक हिके सवसाचे जा जी मनो वृजराज विना हजऊ परकाल कुदेव
नी नाचे ७ वार्ता सषी सषी वचन अथवा नाइका सषी प्रत कहत है हे सषी घोर कहीरे भिया नै जो है घने क

र. क. टी.

१४०

140

मेघसोघोरतहेगरजतहे केसेहेसेहेसजलकाजलसहितहे पेरउजलजोकजलहेकाअसेतस्यामजोक
जलहेताकीरुचिसोभातासोरचरहेहे फेरकेसेहेइंभहायीसनसेफूलेफिरतहे सावनकीपहलीपंचमी
कोयाइकेफेरचौहंकुंदामाचारोतरफतरताकावीजुरीतरपेहे क्रोधसोकरतहेमारवेको तातेवनतारस्त्री
डरतहे सोकेसवककविसनकहतहे मेयहवानीजानीहेमानोइजराजश्रीकृस्नकेविनाइजकेउपरकालकु
टंवनमीचुआवतहे अथवानीसंवोधन इजमेकालकोकुटंवनाचतहे ईहातरपेहे क्रोधसोमारवेकोक
रतहेयामेरोद्ररस डरयेयामेभेइरस कालकुटंवनसवदयहवीभतसहे औरुहहैअरुविसवदहेश्री
जलजलमेजमकहेयाभांतिआरभटीजांनीये उत्प्रेछाअलेकार इजऊपरतरतातरपेहेसोमानोकालकु
कुटंवनहे यहसंभावनाकरी अथसात्वकीलच्छन दोहरा अदभुतरोद्रसुबीररससमभरसवरनसमांन॥
सुनतहिसमफतभावभनिसोसात्वकीसुजांन ८ वार्ता येरससमानवरोवरबरनीये अथवावरनअछर
जहांसमांनकेहोइसोसात्वकीहत समरसनमसांतरसकोओरुसगम उदाहरन कवित केसोदासलाष
लाघमांतनकेअभिलाषवारदेरीवावरीनवारहीयोहोरीसी राधिकाहरिकीप्रीतसवतेअधिकजानरत
रतनाथहूंमेदष्योरतिप्यारीसी जितमहिमेदनभवानीहूंसोपारिउजाइभारतमेभारतीकीभारतीहे
भोरीसी येकेगतियेकेमतियेकेप्रानयेकेमतियेकेप्रानयेकेमनदेषिवेकोदेहदेहेनेननिकीजोरीसी
९ वार्ता कहूंनाइकानेकहिहेसषीसोमोहिश्रीकृस्नकोमिलाउ औरराधाकृस्नकीप्रीतमेभेदयाउ नव

नतौ पीठी की जो पीठी है ताके सम भयो है कौ अंगन निरवलंभ पै है तांते तुम भोग की जकवाउ देउ व
हि वाल नातु मैं देष कै सभ सुष का दिहै ऐसी सो वसी ठी औ रु चीठी भेजनी सो सीठी का अंगि फीकी है औ ठी
ठी प्रिष्ठता है का है ते जो नाइका सुवनि है मीठी सी ठी वा मैं नीके हूं मैं नीठ कौ हूं कि उहूं सो तौ अवयह अवस्था
है औ रहइ वन सो क्या मित्र न सौ जो दूटी है ऐव मित्र मा ताके सोग की अंगीठी वा के उर मैं उठी है सो कै सो तुम
को हू सकै देष है तौ ईहां भोग मैं सोग बरन्यौ याते विरस भयो इत्या अनुप्रास अथ दुहूं रसं पथानरस मूल
दोहरा एक होइ अनुकूल जहं जहं है जो प्रतिकूल के सबइ हू सं धान रस सो भनत हां सम मूल ८ वार्त्ता अ
नकूल मित्र भाव प्रतिकूल सत्रु भाव जथा सवैया दै दधि दीनौ उधार हौ के सब दान कहा अरु मोल लै षैहै
दीने विना तौ गई जु गई हौ गई न गई घर ही फिर जैहै गो हित वैरु की यो हित है कव वैर की पै वरुनी की कै हैहै
वैरु कै गोरस वेच हुगी अहो वेचो न वेचो तो ढारन दैहै ९ वार्त्ता ईहां नाइक नाइका को परसपर वैन नाइक
बोल्यो अहो अहीरी दै दधि का दही देउ नाइका बोली हम मैं उधारो दीनौ है तव नाइक नै कह्यो दान [illegible] का है मैं
दान देउ तव नाइका बोली कहा अरु या को अरथ औरु कह्यो कै रोगे भिक्षा ही मांगहौ तव नाइक नै क
ही भली हम मोल लै षैहैं का मोल दै के लेहुगे तव नाइका बोली दीने विना का जो हम मैं देहुगी न [illegible] तौ
तुम कै सै लै षाउगे तव नाइका वोल्यो गई जु गई का तौ तुम सौ गई जु कहि के कह्यो प्रतिष्ठा दै के कहा किं दा
न देउगी ये नाइका बोली मैं न गई न गई घर ही फिर जाउंगी तुम में नैं हैउगी तव नाइक कै बोले गो हित का स
नेह ते रागयो तैं वैरु की यो नाइका बोली हमारो तुमारो सनेह आगे कहि विडु तो फेर नाइक बोले वैरु की पै नैवरु

र॰ साकछुकवरुनाईहेसेछनाहे नवनाइकावोलीनीकीहूरेहैवेरुवै। यहवेरुकेसवदवेयोनकहकोईहांअर्थमें
कौ॰ लगाइलीजे कहोंतुमसोंवेरुकरकेनीकीहूवैहैवारहेगी नवनाइककहीगोरससोंवेवहूगी नवनाइकावो
टी॰ लीवेच्यानवेच्योतोदारकहीएगेरसभीनदेहुगी नाइकनैतोजितायोतुमवेचनोहीहैहमहीकोदेऊ फेरना
२४१ इकानेजितायोहमघरैंराषेहैतुमैनदेहुगी ईहां नाइककेवचनअनकूलहैओनाइकाकेवचनप्रतिकूल
141 है यांतेदुहूसेथानरस उरअलंकार अथयात्रदुष्टलच्छन मूल दोहरा जैसोजहांनहूफीएतेसोकरी
एपुष्ट विनविचारजोवरनीएसोरसयातरदुष्ट ९ वार्ता जेहांजैसोनाससमाफीएतहांतेसोईपुष्टकरीए
अर्थयह विनाविचारजोवरनीएसोयात्रदुष्टरसहै जथाकवित्त कयदकूयानीमोनीप्रेसरमलछांनीमां
ननकोगंगाजूकेयानीसममानीए स्वारथनिथा।नीपरमारथकीराजधानीकामकोकहानीकेसोदास
जगजानीए सुवरनउरफांनीसुधासोंसुधारआनीसकलसियोनसानीगानीसुषदानीए गोरश्रीगिरा
छजानीमोमोहेमुनमूढसानीओसीवानीमेरीरानीविषकेवषानीए ११ वार्ता सषीनाइकासोकहतहै हेमे
रीरानीतेरीवानीकेसीहै कपटछलकोछ्यानीथानरवारहै छलकोहूरकरतहैं ओसीमेमानीहे फेरिप्रे
मकेरससोंलपटानीहै फेरआननकोरंगाजूकेपानीसममानीयतहै सीतलअथवापवित्रकरतहै फेरस्वा
रथकीनिथांनीहै जांमेस्वारथरहतहै फिरपरमारथकीभीराजधानी।कावडेराजाकीनगरीहै फेरकाम
कीकहानीहै कामकोवढावतहै फेरसुवरनजेहैंमलेअच्छरतिनसोंउरफांनीहै फेरसुधाकोअहतसों
सुधारकेआनीहै फेरसकलस्यानननसोंमिलीहै फेरसुषदाइकगाईहै जिसतेगोरयारवनीओगिरासुरस

ईहाे बिलासकाै कारजकीयाे निंदा भई अथ नीरसवरनन मूल दोहरा जहां दंपती मुह मिलै सदार
हे रहत न कपट रहै लयटार मन नीरसरसकी प्रीत ४ वार्ता अ जहां दंपती कहा इस्त्रीपुरष मुह मिले ही
सदा रहै मनमै दोऊनके कपट रहे नहां नीरसहोत है जथा सवैया गाहत सिंथ स्यानन के जिनकी म
तिकी अति दहदहेली मोहहसी डुषदाेऊ दई तिनहू माेज नावत प्रेम पहेली जानी हो जानी मिलीसु
हही यनाही ऐ भावत गरवगहेली आज लैा कानन हू न सुनी सुतौ देषचली हम साैनसहेली ५ वार्ता॥
ईहां नाइक सठ है ओर साै मिल्यो हायो है औ नाइका कुलटा है यह ओर साै मिली ऊ ई है साे दाेऊ वे वे है सषी
के आगे रूठीवाते वनाइ वनाइ के अपनी अपनी प्रीतकी अधिकाई कीकहत है नहां सषीकहत है किह
मै तुम वगत है हम कै साै है तिनकी मतकही ऐड हकी देह स्यानन के सिंथ मैगाहत कहीं एत रदीत र
दीद हेली ह्वै गई औ यानी मै वङ्त वार भी जेसी देह दहल जात है ताते माेह हसीडुष माेका हसी हू दे
अरु डुषहू है माेह ठगत हाे यह ताे हसी औरु तुमारे कपट काे डुष है क्युं कि दोऊ दई तुम दोऊ हद ई प्रेम
कीयहेली ही मे स्तुनावत है पहेली मैं कहीए कछु है अरु अरथ औरु निकसत है साे तुमारो प्रेमपहे
ली साे है साे फिर हमारे आगे कहत हाै चतुराई जानावत हाैं ताे जानी हाैं जानी मिलीसु हही वह प्रे
म पहेली तुमारी मुह ही मिली है सु हही की है औरु ही अमै तनके ऐ नाहि ऐ भावत है दोऊ चाहत है नाही
कान मिलाय की ज्ञाे ताे भलाे है जाे मिलायन हाेइ तौ औरु वौरु धुंचीए कैसी है वह नाही गरवगहेली

र० क० टी० २४२ 142

अपनीचतुराईकोगरभलाकरतहेलीलावतीठौररहीहै औरूकोचतुराईकोषबरहीनाही रूरूतहीनाही
यहबातसभकहितबसषीनैऐकऔरूबातदेषीसोकहतहै ऐ[illegible]ऊंहांसहेलीहै सोवहसहेलीकरम
हूंमेंहै औरुनाइकावासोरतकरमिल्याहूंहै सोवहसौतहीहै औरुसहेलीहूंहै सहेलीसौतकोकोऊ
करततनही परियानाइकाकेमनमैंतोईरषानही कंउजोपीयसौसनेहहोइतोऔरुस्त्रीकोईरषाआ
वै यहतौऔरुहीठौरलगीहै यातेवानाइकाकोइनसहेलीकरवाष्योहै सोइतसषीनेकहीआतुर
सीयहबातहमकानतनहूंनहीसुनी सोहमआंषनदेषचलीसौतसहेलीयाभांतिअर्थकीजे ईहांदे
पतीनकोकयटबरन्योयातेनीरसकवितजांनीऐ ईहांपंचमीविभावनाकारजहोइविरुद्धते सौततेस
हेलीकेकरमउपजेयहीविरुद्धतेकारज अथविरसलछन मूल दोहरा जहांसोगमैंभोगकोबर
नकहेकविकोइ केसवदाससुहुलाससोनहीविरसरसहोइ ६ वार्ता जहांसोगमैभोगवरनीएतहांवि
रसरसहोतहै जथासवैया केसोदासन्हांनदांनषांनपांनभूल्योमानगयोज्ञानभयोप्रानपीवकीसी
पीवकीसौंधीवहै छाडऊरसकलालयहजकबहिवालदेषतहीसभसुषतमहिउबीठहै ऐसीसौव
सीठीचीठीसीठीअतिहीठीसुनेमीठीमीठीवाततनजुनीकेहूंमैनीवहै ईठनसौंहूटीईवताकेसोगकी
अगीठीउठीजाकेउरमैंसुकैसेहमडीवहै ७ वार्ता सषीनाइकसोकहतहै नाइकाकीयहअवस्था
है न्हांनदांनषांनपांनपीवनोसवैजाकोभूल्योहै मांनगरबभीगयो औरुज्ञानभीगयो औरुप्रा

सषीकहतहै हेबावरीऐअभिलाषलाषलाषभांतनकेतिनकोवारदेऊ होरीकीमाईतू अपनहूदेकोम
नजराउ अथवामेरेहूदेकोतूहोरीसीमनजरावे राधाकृस्नकीप्रीनसभनेअधिकहैतू यहवारताजोन
रतिओररतिनाथकामदनमेंभीअैसीप्रीतनहीयारीहै हेवावरीराधाकृस्नमेंभेदनोभवानीपारवतीनेभी
नहीपायोजाति ओभारनमेजोभारतीसरस्वतीकीभारनीहैवावानीबाकचातुरीहैसोभीइनमेंभेदपाइ
वेकोभोरीसीहै सरस्वतीकोचारीनेभारनहीमेंभेदपायोइनमेनहीपारसकत उनदोऊनकोएकहीग
तिहैओएकहीमतिहै एकहीप्रानहै एकहीमनहै जिनकीदेषवेकोहदेहहै जैसेनेत्रनकीजोरीहैतेसे
ईहोप्रियमलाषलाषभांतनकेअभिलाषननेहरषनाइकाकेउपजोसोसोबीररसउनसाहमेंवीररसहोत
है जवसषीनेकह्योऐअभिलाषवारीदेरीबावरीमेरोहीयोमनजरावेहोरीसी ईहोरौद्ररस राधकाहरि
कीप्रीतईहोसिंगाररस ओरुदेहहैएकजीवयहअदभुतरसभयो ओरअभिलाषनकेवारदेवेमेवासनाई
व्याकुडाइवोयहसमरसहै अथवाभेदनहीअभेदनावरननयहसमरसहै यातेसानकीहतभई परयाइ
अलंकार अनेकमेएककोवास दोहदेहमेएकजीव दोहरा इहविधकेसवदासकहिसभरसवरनक
वित्त पांचभांतअनरसकहेनाहिनदीजैचित्त १ वार्ता इकप्रकारकेसवकविकहतहै नवरसनकेक
वित्तनकोवरन्यो ॥ इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचितायांरसकप्रियायांचतुरविधकवित्त
रीतवरननंनामपंचदशोध्यायः १५ ॥ अथअनरसवरनन मूल दोहरा प्रसनीकनीरसविरसकेसवदु
फ्तिसंधान पात्रदुष्टकवित्तकोकरैसकुकविवषान १ वार्ता ऐपांचभेदअनरसकेहै सुगम अथप्रसनीक

श्रीराम

र.
क.
टी.
१४३
143

लछन मूल दोहरा जहसिंगारबीभतसमे इवीररहवरनेकोर रौद्रसुकरुणामिलतही प्रत्यनीकरसहोइ
२ वार्ता जहांसिंगारअरुबीभतसमिलाइवरने भेइअरुवीररौद्रअरुकरुणाइनकेमिलेप्रत्यनीकरसहोत
है उदाहरन मूल सवैया हसिबोलतहीसुहसैसभकेसवलाजभगावतलोकभगे वातचलावतघेरुचलै 4
मनआनतहीमनमथ्थजगै तनजुकहैसुडुतीमनमेरेहूजानयहैनहीउमगै हरिसौनैकडीठपसारतहीअ
गुरीनपसारनलोकलगै २ वार्ता सखीकहतहैमैजुनाइककोबोलमिल तबताइकाकहतहैहेसखीनाइ
कसोहसबोलतहीसभलोकहसैकाहसतहै वानिंदतहै अरुलाजकोछेडतेलोकवाजसहमारोभाग
तहै अथवालोकहमसोभाजतहैकाहमेजातसोकाढतहै अरुहरिकीकछुवातचलावतहै तवघेरुका
चरचाचलतहै अरुमनमोल्यावतहीमनमथ्थकामजागतहै हेसखीतेजोवारताकहतहैसोमेरेमन
मीडुतीपैयावातकोजानकेहीयोनहीउमगत हरिकीतरफनेकडीठकेपसारतही लोगअंगुरीपसारन
लागतहैं ईहांसभठौरसिंगारमैवीभतसहै हसिवोलवोतोसिंगार लोगहसैयहवीभतसरसहोतहै फेर
लाजभगावतसिंगार लोगजातमैसोकाढतहै छीछीकरतहैअरुसगलानमैवीभतस वातचलाइवोसिंगार
घेरचलैयहवीभतस फेरमनमथजगैसिंगार हीयोनहीउमगैगलानहोतहै परिपतसोयहवीभ
तस डीठपसारवोसिंगार चेष्टालोगअंगुरीपसारहमैवतावतहैयहवीभतस ईहांसिंगारअरुवी
भतसपैदोऊविरोधीहैइनकेमिलापमैप्रत्यनीकरसरसभयो। जहांविरोधीरसकोमिलापहोइ१
सोप्रत्यनीक अरुसेईमेइवीरमिलेरौद्रकरुणामिलेतहांहूप्रत्यनीकजानीयै परब्रताअलंकार॥

तीलजानी कयालज्यावानभरैहै फेरजिसनेसुन औरमूठ औरुम्पानीमोहेहै ऐसीवानीकोविसुकरके
कथानीअतिहैनहीलषानीयत काकोक्ति ऐहांविषकोअर्थलछनाकरिकेकोडीजानीये ईहांसभव
रननमैविनविचारकपदपरेहै कपटरूपानीकहीकिकपटकोकाटतहै परयहनकछिपीयके
कपटकोकाटतहै सभकेकपटकोकाटेअपनेहूकपटकोकाटतहै ऐसोविनविचारकोपदहै फेर
प्रेमरससैऔगंगाजूकेपानीकीवातईहांऐसोनवूकीऐ सोथल्योस्वारथनिधानीमैंपरतिसेवाहीकीही
नताहै परमारथसोफेरविनविचारकीवातहै ऐसेसभकविन्नमैंजानीये पाखंडछताकही हम्पाअ
नुप्रास अच्छरसमतावारवड्यहि लच्छनहै सोप्रगटहीहै मूल दोहरा केसवकरुणाहास्ययहि
अरुवीभतसस्सिंगार वरननवीरभियानकहि सैतनवैरविचार १२ वार्ता करुणाहास्यकोऔरुवी
भतसस्सिंगारको वीरभियानकको सैतनरिसनिंदंनरइनसनकोइनरसनसौवैरिहै मूल दोहरा भैउप
जैवीभतनेअरुसिंगारनेहास केसवअदभुतवीरतेकरुणाकोयप्रकास १३ वार्ता वीभसततेभआन
कउपजतहै सिंगारनेहास्यउपजतहै औरौद्रतेकरुणाउपजतहै मूल दोहरा इहविधकेसवदास ॥
रसअनरसकहेविचार वरननभलपरीजहांकविकुललेइविचार ४ वार्ता इसप्रकारकेसकवि
नेरसऔअनरसविचारकेकहेहै मूल दोहरा जैसेरसिकप्रियाविनादेषीऐदिनदिनदीन सुही
भाषाकविसवैरसिकप्रियाकरहीन १५ वार्ता जैसेरसिकपुरषप्रियापियारीविनादिनदिनप्रतिदीन

र॰ देषीयतिहै जैसेई भाषाकेहे हरएक विरसिकप्रियाग्रंथविनासौ औरमानननहीदेषीयति मूल दोहरा

क॰ वाढेरतिमतिश्रतिवढै जौनैसभरसरीन स्वारथपरमारथलहैंरसिकप्रियाकीप्रीत १९ वार्ता रसिक

टी॰ प्रियाकेपढेरतिप्रीतवढतहै मतबुधिअत्यंतवढतहै औरहूसवरसजेहैनविरसतिनकीरीतजानै

२४४ औरस्वारथ मायाकेपढेचातुरतावढैनवसभराजाप्रजाकोप्यारोहोइ याभांतितोस्वारथलहै औ

144 रश्रीराधाकृस्नकोवरननहैयामैतिनकेध्यांननेपरमारथलहै याप्रकाररसिकप्रियाकीप्रीतनेस्वा

रथपरमारथदोऊलहे मूल दोहरा सुरभाषासोंअधिकहैब्रजभाषासौहेत ब्रजभूषनजाकोस

दामुषभूषनकरलेत १० वार्ता सुरभाषासौंकासंसकृतभाषातासौंब्रजभाषामेअधिकसनेहहै कौ

ब्रजभूषनश्रीकृस्नजाकोसदामुषकोभूषनकरलेतहै ब्रजभाषाश्रीकृस्नकेमुषकोसोभाइमानक

रतहै प्रजोजनयहयाकेपढेतेमुषकीसोभाहोतहै ॥ इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचिता

यांरसिकप्रियायांअनरसवरननंनामषोडसोध्याय: १६ ॥ इतिरसिकप्रियासटीकासंपूर्णम् ॥ ॥

शुभमस्तु ॥ लिषितंकेवलरामकश्मीरी पठनार्थंहिरदारामजी ॥ संवत् १८४४ ॥

कार्तिकसुदीत्रतीयांभौमवार ॥

364

[illegible]

1694 [illegible]